प्रकारक रविकास हो परिना कावाह मो के कप्यक्त-एंद्योपन विद्यासका गुजरात विद्यासका का, धमरावाद

भावति पहेठी

मि. चे **१** ४

হত ১

€ B 3563

की इद गॉच

मुहकः वक्तारी प्रवासाई द्वास वस्त प्रिनिटर प्रेस वीकांट रोव रिमिक हॅरिएयक साथे वक्तमाईनी वार्वी धमदानाव

# निवेदन

गुजरात विद्यासमाना भो जे. अध्ययन—संशोधन विद्यामवनमां जे संशोधन—प्रथो तैयार करी प्रकट करवामां आवे छे तेनुं एक अंग जुदा जुदा धर्मों अने सप्रदायोनुं साहित्य संशोधननी शास्त्रीय दृष्टिए तैयार कराववानु छे आ कार्यमा शेठ पूनमचंद करमचंद कोटावाळा ट्रस्टना वहीवटदारो शेठश्री प्रेमचंद क. कोटावाळा अने शेठश्री भोळाभाई जेशिंगभाई एमणे आ संस्थाने नीचे जणावेळी शरते जैन साहित्यना ग्रंथो तैयार करी प्रकट करवा दान कर्युं छे ए माटे भो. जे. विद्यामवन ट्रस्ट एमनुं आभारी छे

## शरत

"जैन संस्कृतिना तमाम अंगोनु—जेमके द्रव्यानुयोग आदि "चार अनुयोगोनु, तेमज काव्य जिल्प कळा इतिहास आदिनु "साहित्य तैयार करावी प्रकट करवु. आमां मूळ संस्कृत "प्राकृतादि प्रथोना शिल्प आदिना सचित्र इतिहास वगेरेनो "समावेश करवो "

उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग अगे सशोधननी योजना विचाराती हती त्यारे गुजरातना इतिहासने महत्त्वनुं स्थान आपवामी आव्युं हतु उपलब्ध साधनोने आधारे इतिहासने फलित करवानुं काम अने नवां साधनोने उपलब्ध करवानु काम—ए वे कार्यदिशाओ स्पष्ट हती. पहेली दिशामां थयेला कामनी नींध लेतीं जणायुं के ई सं १८५६ मा प्रकट थयेल रासमाळा अने ई स १८५६ मां प्रकट थयेला वां में सेहिटयर प्रथ १—खंड ए १ वे अप्रजीमा लखायेला ग्रंथोनुं हजी पण महत्त्व ले रासमाळानो गुजराती अनुवाद गुजरात विद्यां सभाए १८६९—७० मां प्रकट कर्यो हतो. गेझेटियर उपर्थी गुजरातनो

प्रधानक हो परिवा प्रधानक हो परिवा क्षमाह मो वे क्षमानक-संबोधक विद्यासकन प्रवास विद्यासका प्रवास विद्यासका

जावति पहेनी

क्च ५

को ६ पौच

R. e. e 4

E # 1553

मुद्दकः जम्मणी कस्त्रमन्द्री दुशहात वृद्दित शिक्षित्व श्रेस्त श्रीकांद्रस धेरे नित्रकंत वृत्तीसदस्य द्वाने कंद्रसम्बद्धी वादी कमहत्त्राह विशेष स्वरूपे विचारणा करवामां आबी हती. श्री रत्नमणिराव मीमराव गुजरातनो सारकृतिक इतिहास लखता काईपण जानसाधन रही न जाय एनी तकेदारी राखे छे. श्रो अबुझफर नदवीए पण मुस्लिम वधा साधनोनो उपयोग करी सारकृतिक इतिहास लखी राख्यो छे.

सामग्री उपरथी इतिहासने फलित करवानी दिशामां पिष्टपेपण करतां विज्ञेप प्रगति करवी होय तो हवे नवा साधनोनी जोध करवानो अने एने उपलब्ध करवानो प्रयत्न थवो जोईए एम लागवाथी संगो-धन विभागे प्रारंभमा आ बीजी दिशामां कार्यक्रम योज्यो. १९३३ मा आचार्यश्री मुनि जिनविजयजीए गुजरात साहित्य सभाना मानाई सभ्य तरीके प्राचीन गुजरातना सांस्कृतिक इतिहासनी साधनसामप्री उपर विचारप्रेरक अने वृत्तिप्रेरक व्याख्यान आर्प्युं हतुं. ए मार्गे पोते असाधारण श्रम उठावी कार्य करे छे अने सिंघी जैन प्रंथमाळामा अन ए पूर्वेना एमनां प्रकाशनोमा पोते सशोधित संगृहीत सामग्री प्रकट कर्ये जाय छे सशोधन विभागनी योजनामां वे खाणीमांशी साधनो वहार काढवानो अमारो कार्यक्रम ए ज दिशामा वीजो फाटो छे एक खाण ते पुराणो अने बीजी जैन आगमो-निर्युक्तिओ-भाष्यो-चूर्णिओ. आ वने आकरोमां इतिहासना सावनो माटे जे 'खोदकाम' थवुं जोईए ते थयेछं नहि, एथी आ दिशामां भो जे. विद्यामवन तरफथी आदरवामां आवेली प्रवृत्तिना प्रथम फळ त्तरीके अध्यापक उमाशकर जोबीए तैयार करेल पुराणोमां गुजरात ए प्रंथ १९४६ मा प्रसिद्ध करवामा आव्यो, त्यारे वीजुं फळ ते आ जैन आगम-साहित्यमां गुजरात प्रसिद्ध थाय छे.

जैन आगम साहित्यमांनु लगभग पाच लाख श्लोक पूर संस्कृत प्राकृत साहित्य जोई वळी स्थळप्रतीको तार्ववानु भिन्न भिन्न आगमो-अने ए उपरना साहित्यमाना उल्लेखोने एकत्रित करवानुं, इतिहास रेलाक्षये भा व सत्थाए १८९८ मां प्रकट कर्ने हती था भरसामा चे नवी सामग्री एक्टी बती हती तेना उपयोग करी कन पहेलां संग्रहीत वयेळी सामग्रीना नवेसरथी विश्वार करी इतिहास स्थानने शवकाश हती, को तेवी आ संत्वार १९३७—१८ मां 'गुबरातनो गप्पकालीन रावपुत इतिहास' वे मागमी प्रकट कर्यों कने १९४५ मां 'गुबरातनो सांस्तृतिक — इतिहास '—इस्लामधुग— पहेलो माग प्रकट कर्यों ए पत्नी १९४९ मां प्रो असुक्तपर नववीना उद्मां स्थाना गुबरातना इतिहासना १ सा संबनो अवसन भनुवाद २ मागमा प्रसिद्ध कर्यों

प्रो क्रोमिनेरियेट भैप्रेबीमां गुबरातनां मुस्किम राज्योमो इतिहास १९३८ मां स्वतंत्र रहित प्रकट कर्मो

गुजराशनां सामनीन साथी असे पना उपराधी मुस्किम राज्य पहेंग्रंग इतिहासना पहेंग्रे सरहो तैयार करवानो यस स्व हा सम्बानकां इंग्रंजीन छे अन मुस्किम गुज्योनो इतिहास सस्वामां मुस्तवासो का सा फक्कद्रन्याह इत्युक्त्याह फर्मिनी मोटी मन्द्र हतो, पूम गरोटियर उपराधी सलाय छे स्व रणकोहमाई उदवाने रासमाउटा 'नो अनुवाद करतां अनेक मुजारावधारा अने पूर्विमा मूळ प्रवाना समयना इतिहास माठे वणी सामणी संशोधित करी छे भी दुर्गाणकर कार्जीय गुजरातनो राज्यात गुपनो हतिहास कस्वता तमान सामनीनो क्यामण उपयोग क्यों छै; अने हमणां व नवी आइतिनी वैवारी करी अप्यार मुखीनां नवां संशोधनांनो पण समावेश करी मान्यों छ जे हवे पद्मी बोडा सरममा प्रसिद्ध वही भी इस्ताना मान्याहित है वही स्वतान सम्वाना सम्वाना स्वतान मान्याहित है वहां स्वतान सम्वाना सम्वाना स्वतान सम्वाना सम्वाना स्वतान सम्वाना स्वतान सम्वाना स्वतान सम्वाना स्वतान सम्वाना सम्बन्ध सम्वाना सम्वाना सम्बन्ध सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्बन्ध सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्बन्ध सम्वाना सम्बन्ध सम्वाना सम्बन्ध सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्वाना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्वाना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्वाना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्वाना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्वाना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्याना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्याना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्याना सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्यान सम्बन्ध सम्बन विशेष स्वरूपे विचारणा करवामां आवी हती. श्री. रत्नमणिराव भीमराव गुजरातनो सास्कृतिक इतिहास छखतां कांईपण जानसाधन रही न जाय एनी तकदारी राखे छे. प्रो. अवुझफर नदवीए पण मुस्लिम वधा साधनोनो उपयोग करी सास्कृतिक इतिहास छखी राष्ट्रयो छे

सामग्री उपरथी इतिहासने फलित करवानी दिशामां पिष्टपेपण करता विशेष प्रगति करवी होय तो हवे नवा साधनोनी शोध करवानो अने एने उपलब्ध करवानी प्रयत्न थवी जोईए एम लागवाथी संगी-वन विभागे प्रारंभमा आ बीजी दिशामां कार्यक्रम योज्यो १९३३ मां आचार्यश्री मुनि जिनविजयजीए गुजरात साहित्य सभाना मानाई मभ्य तरीके प्राचीन गुजरातना सांस्कृतिक इतिहासनी साधनसामप्री उपर विचारप्रेरक अने वृत्तिप्रेरक व्याख्यान आप्युं हतुं, ए मार्गे पोते असाधारण श्रम उठावी कार्य करे छे अने सिंघी जैन ग्रंथमाळामा अने ए पूर्वेना एमना प्रकाशनोमा पोते सशोधित संगृहीत सामग्री प्रकट कर्ये जाय छे संशोधन विभागनी योजनामां वे खाणोमांथी साधनो वहार काढवानो अमारो कार्यक्रम ए ज ढिजामां वीजो फांटो छे. एक खाण ते पुराणो अने बीजी जैन आगमो-निर्युक्तिओ-भाष्यो-चूर्णिओ आ वने आकरोमां इतिहासना साधनो माटे जे 'खोदकाम' थवु जोईए ते थयेछं नहि, एथी आ दिशामां मो. जे. विद्यामवन तरफथी आदरवामा आवेली प्रवृत्तिना प्रथम फळ तरीके अन्यापक उमाशकर जोषीए तैयार करेल **पुराणोमां गुजरात** ए प्रंथ १९४६ मा प्रसिद्ध करवामा आब्यो, त्यारे वीजुं फळ ते आ जैन आगम-साहित्यमां गुजरात प्रसिद्ध थाय छे.

जैन आगम साहित्यमांनुं लगभग पाच लाख श्लोक पूर संस्कृत प्राकृत साहित्य जोई वळी स्थळप्रतीको तारववानुं भिन्न भिन्न आगमो—अने ए उपरना साहित्यमाना उल्लेखोने एकत्रित करवानुं, समामवानु, अने एक ज नाम भरावता जुवां जुदां स्वळो क्षने स्पर्कि-ओन अस्म अस्म पाच्यानु इत्यादि काम वणी घोमस चीतट सन र्शागवर मागी छ छ भा दरकन अवतरण प्रमाणोबी पुष्ट करी प्रत्यक भिगतन एना प्राप्य प्रामाणिक स्वस्थामां नाधवानु विपुष्ट-धमसाय्य कार्व प्रा हो मांगीलाल संदिसराण साम्युं छ साम करती वेट्यप भिन्न भिन्न विद्वानीय रज् कररा मतो भन प्रमाणीनी विश्वचनपूर्वक

समानाचना करी शक्य होय त्यां पोतानो मस भा विद्वान संशोधके प्रमाणवर सर रज इसी छ का कीमती प्रत्म पुनमचंद क कोराबाळा रस्ट्नी सहायभी प्रसिद्ध भाग हर तथी छाड़ी पनी समिशप सामार नाम मेरे 🕏

रशिकसाय हो गरीव ग्रवसन विचासमा

# प्रास्ताविक

गुजरातना इतिहासने लगती सामग्रीना साधनग्रन्थो तैयार कराववानी गुजरात दिषासभानी योजना अनुसार, 'पुराणोमा गुजरात'-ना अनुसंधानमां आ 'जैन आगमम।हित्यमा गुजरात ' तैयार थयेल छे जैन साहित्य अने तेमां ये जैन आगमसाहित्यनु शासीय दृष्टि-कोणशी अन्ययन अने संशोधन हजी वाल्यावम्थामां छे, ए साहित्यनी तथा एनी साथे संबंध घरावती परंपरांची तथा अनुश्रुतिओनी अनेक रीते तपास हजी हवे करवानी छे, अने ते कारणे, प्राचीन भारतीय संस्कृतिना अभ्यास माटे विविध दृष्टिए नवीन लागती माहिती तथा सशोधनना अनेक कोयडाओना उकेल माटे प्रयत्न करवा प्रेरे एवा रसप्रद मुद्दाओ एमाथी प्राप्त थाय छे. आ ग्रन्थमा आगमसाहित्यमांथी मळती प्राचीन गुर्जर देशना राजकीय अने साम्हतिक इतिहासना अभ्यासमां उपयोगी थाय एवी, भौगोलिक स्थळो, व्यक्तिविरोषो तथा अन्य विषयो—' नेम्स ॲन्ड स॰जॅक्ट्स '—ने लगती सामग्री सूचिना रूपमां संकलित करी छे.

प्रारंभमां आपणे ए जोवुं जोईए के 'जैन आगमसाहित्य' एटले छुं साहित्यरसिकोमां पण केटलीक वार 'जैन साहित्य' अने 'जैन आगमसाहित्य' ए वन्नेनी भेदरेखा पर्त्वे एक प्रकारनो सम्नम प्रवर्ते छे एम जोवामा आन्युं छे 'जैन साहित्य' एटले जैनो द्वाग रचायेलु साहित्य, जेमा जैन धार्मिक विषयो उपरात विविध विनधार्मिक विषयो उपर पण जैनोए संस्कृत, प्राकृत, अपभंश तथा प्रादेशिक भाषाओमां रचेला साहित्यनो समावेश थाय छे. प्राचीन भारतीय वाङ्मयना लित तेमज शास्त्रीय तमाम प्रकारोना नम्नाओ आपणने जैन साहित्य-मां प्राप्त थाय छे 'जैन आगमसाहित्य' एटले जैनोना मूल धार्मिक प्रन्थो—'स्किप्चर्स' अथवा 'केनन'—तथा ते उपरनु भाष्यान्मक अने

११ भग (मूळ १२ अग, एग एमोर्च नात्मुं कंग बीधवाद ' कुख मई गयेख हावामी ११ भँग ) १२ उपाग, ६ छेबसून ४ मूख्यून, १० प्रकीर्णक, तथा 'अनुबोगदार सूत्र' अने 'नित्सूत्र' ए २ छूटो सूत्रो मळी कुछ ४५ भागमधा बो गणाकवामी भावे छे बोधी एक गणत्तरी अनुसार ८४ भागमो पण छे अही ४५ भागमबाळी गणत्तरी अनुसारना प्रको छीपा छे

उपर कर्य ते प्रमाणे, 'भागमसाहित्व मां मूळ भागममधी उपरांत ते उपरना समाम टीकारमक साहित्यनो समावेश बाय छे टौडालक साक्षिय बार प्रकारने हे निर्युक्ति माप्प, वृणि कन इति मुक्त प्राची सचा तं उपरतां था चतुर्विय विवरणोनो वर्ष पकसानटो स्पक्त करवा मारे केरलीक बार 'पंचांगी' शम्बनी प्रश्रीम करवामां काने छे मूछ भागसप्रत्यो कार्य प्राकृत मापामा छे, भे सामान्य व्यवहारमां 'नर्थमागभी कडेवाय छे आगमोने बैदराग-सर्विकरनी वाणी राणवामां भावे छे अने परंपरा प्रमाणे, ते मणधरमापित सर्वात सपर्मा-स्वामी भेवा महावीरना गणधर भववा पहांशम्य वढे म्याकत छे। छतां माना निक्रपर्णाति, रीसी, गवपवना मेदो भगेरे अनेक रीने आगमोर्गा भनक बरो माद्यम पढे छे । नविस्तत्र १, वरावैकासिक सत्र १, १ भनुगोग दार सूत्र असे 'प्रशापना सूत्र' बेबा आगमी तो बैम परंपरा प्रमाणे ब अनुक्रमे देवर्षिगणि क्षमासम्मग, शन्यमञ्जूरि, आर्थ रक्षितसूरि अमे आर्य स्वाम भेवा स्वक्तिविशेयोजी स्वनाको गणाव छे माबाहास पृषकरणना भोरणे ' उत्तराध्यवन सूत्र ! 'बाबारांग सूत्र ! 'दशतैका शिक स्त्र ' चेवा सामग्रमध्योते सौधी प्राचीन गणवानं विद्वानोनं बन्छा छे अने एवा प्रभ्योनो सकसमासमय सगवान महाबीरना निर्वागदी झाझो अर्वाचीन नहि होय एवं अनुमान थाय छे पण एकदरे जोतां, कोई निश्चित प्रमाण न होय तो आगमप्रन्थोने अमुक चोक्स जता-व्दीमां ज म्कवानु मुक्केल छे वळी मगधमा, मथुरामां अने वलमीमा एम नण वार आगमोनी संकलना थई हती अने छेवटे ई स. ४५४ मां वलभीमा वधां भागमो लेखाधिरूढ थया हतां -ए दघा समय दरिमयान थयेला भाषाकाय अने बीजा परिवर्तनो ध्यानमां राखवाना छे ( जुओ भा प्रन्थमां देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, वलभी, स्कन्दिल आर्य, इत्यादि ). भागमी अत्यार सुधीमा अनेक भार छपायां छे, पण तेओनी शास्त्रीय, समीक्षित वाचनाओ हजी तैयार थई नथी, ए पण एक मुक्तेली छे. भागमसाहित्य अने प्राचीन प्रन्थभडारोना आजीवन ध्यम्यासी पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए ए माटेना महाभारत कार्यनो प्रारंभ थोडांक वर्ष पहेलां कर्यों हो अने आपणे आशा राखीए के आपणने नजदीकना भविष्यमा आगमोनी तथा ते उपरना तमाम टोकात्मक साहित्यनी समीक्षित वाचनाओ मळशे.

निर्युक्ति धने भाष्य ए मूल आगमप्रन्थो उपर प्राकृत गाथामां थयेलां सिक्षित विवरणो छे. मुद्रित वाचनाओमां तेमज हस्तिलेखित प्रतोमां पण घणी वार निर्युक्ति अने भाष्यनी गाथाओ एटली मेळसेळ थयेली होय छे के तेमने निर्युक्ति अने भाष्य तरीके अलग करवानुं काम घणुं मुश्केल छे चूर्णि ए प्राकृत गद्यमा—कोई वार सस्कृत अने प्राकृतना मिश्रण जेवा गद्यमा —मुळ प्रन्थोनु विवरण छे वृत्ति अथवा टीका ए संस्कृत गद्यमा थयेला विवरणो छे जूनामां जूनी उपलब्ध संस्कृत टीकाओ आठमा सैकामा थयेला आचार्य हिरिमडसूरिनी छे त्यारपछी शीलांकदेव, शान्तिसूरि, अभयदेवसूरि, होगाचार्य, मलधारी हेमचंद्र अने मलयगिरि जेवा महान आचार्योए प्रमाणभूत संस्कृत

१ अत्यारे केटलाक शिक्षितो वातचीतमां अर्धे देशी भाषामां अने

धराहण कैंद्रा सुची चास रहेशी है, बने होई होई दासकामां देउ धर्मधीन काउमां पण देन धाचार्योए व्यागमप्रभी उपर सरहत टीकाओ रचेशी है संस्कृत टीकाओमां पण रष्टाखों कथानको धने बीखां धरसरणो पणुस्तर प्राहृतमां आवे हैं ध प्राधीनमर रचनाकोमांची सम्दश केवायां इसे एई बनुमान बाम हे मुकाबके धर्माचीन काउमां रचार्यकों संस्कृत टीकामों पण मा तेमम बीजी भनेक सीते प्राचीनतर पर्यस्ताओनी कृषी है अने य कारणे एमन सुम्म ते ते

समयमां रचायेका बीमा सामान्य प्रत्योनी तुसनाए पणु बपार छे 🕛

वनीस करहरनो एक न्योक ए गणन्तरी प्रमाणे समाम उटक्क्य बैन आगमसाहित्य आहार साहाउ छास न्योकप्रमाण छ सने १९२२ ना जुझाईमा गुबरात विवासमाना अनुस्नाठक अने सहाधन विसागमां (हुने चेठ जो. जे विवासबनमां) अध्यापक सरीके हुं जोहायो स्वासी आगमसाहित्यनांथी प्राप्तीन साहाना संस्ट्र हिक अन्यास माठेनी सामग्री सक्षित्र करवानु कार्य आरंग्यु हुई स्थामन समाम छुदित आगमसाहित्य-बेनुं प्रमाण आरंग्र सवायांच साल ओह्यायाण करागं क्षेत्र कार्य याय छे-सने १९५० सुपीमां बालाई गर्यु प्रमाणि प्राप्तीन गुबर देश स्था ठे साथ सबेच पराच्या विवयानी माहिती असम शरानी आ प्रथ्य वैसार क्यों छे

भागर सना साम साह्यमाण चेटल भागममादित्व हवी समित्र छे पर्मो केटलीक महत्वनी पूर्णिमा, टोकामी अने घोडाक मीत्रिक मंधीनो पण समारेस बाय छ पर्माची मळती सामगेनुं प्रकारन मा पुस्तकनी पूर्विस्य करी सहाय

सगवान मदावीरनु जन्मध्यान तेमच प्रवृत्तिकेत्र सगप इतुं, जैन सुतनी सबसना माटे सी पहेस्रो परिस्त पण सगबना पाटनगर पाटिस- ्रेपुत्रमा वीरनिर्वाण पछी वीजी शताब्दीमां मळी हती जैन आगमनी मूछ प्रन्थो पण स्वामाविक रीते ज मगधमां रचायेळा छे. मुख्यत्वे आ कारणे आगमना मूळ प्रन्थोमां गुजरात विशे थोडा अळडता उल्लेखो मळे छे, अने ते पण गुख्यत्वे वाबीसमा तीर्थकर नेमिनाथना जीवन अने यादचोना इतिहास साथे सवय घरावे छे प्राचीन गुर्जर देशमां रचायेळी टीकाचूर्णिओमांथी ज आपणने विशेष माहिती प्राप्त थाय छे

वळी आ पुस्तकमां संकिलित थयेछी सामग्री जेम प्राचीनतम मूळ प्रन्थोमाथी छे तेम १७ मा-१८ मा सैकामां रचायेछी टीकाओ-माथी पण छे. अमुक वस्तु जे रचनामांथी मळे छे ते रचना (मात्र मूळ आगमोना अपवादने वाजुए राखता) कया समयनी छे तेनी नोध संदर्भसूचिमा करी छे, जेथी वाचकने काछानुक्रमनो ख्याल आवे, ज्या चोकस साल नथी मळती, पण अनुमाने समय नक्की थई शके छे त्यां ए प्रकारनो उल्लेख कर्यों छे.

जैन आगमसाहित्यमा गुजरात "पण गुजरात एटले! गुज-रातनी सीमाओ तो समये समये वदलाती रही छे वळी एक चोक्सस प्रदेशने आपणे अभ्यासिविषय बनावीए तोपण तेने पूरी रीते समजवा माटे आजूबाजूना प्रदेशोनो पण परिचय आपणने होनो जोईए एटले, आ पुस्तकमां, आजे आपणे जेने गुजरात नामे ओळखीए छीए ते प्रदेशनी सीमा उपर ध्यान केन्द्रित करवानी साथे साथे, आसपासना प्रदेशोना . . उल्लेखोनो पण समावेश कर्यों छे

'' टूंकामां स्चवी शकाय के गिरनारना, ई स. १५० ना, क्षत्रप राजा रुद्रदामाना, शिलालेखमां जे प्रदेशो गणावाया छे ते वधा ज प्रदेशोने आवरो लेवानो ख्याल राख्यो छे. अलबत्त, लंबाण टाळवा माट प्रधानगौर्णविवेक जाळववा पड्यो छे आजना गुजरातमा परिसीमित थता प्रदेशोने अपायुं छे तेटल महत्त्व पडोगना ने दूरना प्रदेशोने हमेगां वापी शकायु नश्री."

प्रत्येक अरात्यना विधान मारे मूळ साझित्यनो कापार मात्यो छे, जोधी कर्त्यासान ते ते रथान जोबानुं सरळ पढ मध्यनुं शीर्षक स्वाचे छे ते प्रमाणे निक्त्यण शुरूयाचे जैन भागमसाझित्यमाधी प्रान्त यती सामगीन अनुस्थान कर्युं छे, छशां ए ज विधाने समझी सामगी अथ्य साचनोमांथी भनायासे प्रान्त थहु छ त्यां तेनो पण सुस्नारमक विभियोग कर्यों छ

भा संबक्षनामा प्राधीन भारत भाग प्राचीन गुर्बेर देशना इतिहास पराने ने शास्त्र्य बस्तुमी छ त मार्र जिशास बानको प्रस्तुत विपयोगी शीर्यको स्रोता सञ्चमण छ पण पर्मानी प्रधानपणे क्यासी आकृत फेटलाक सुरामा प्रस्य भा प्रस्ताननामां स्मान संघनानुं परित बाणास छ

सी पहेलां जातिको देशनाम अमे स्थळनाम खर्रप भातिकोनां माग उपाधी देशनाम पहेलां छ ए दृष्टिए बन्नेने सामे छनामा एह प्रकारनु मौक्तिय पण छ

भागिर बाहिनी बसाइता उचरीवर दक्षिण दिशामी ससनी बढी इढी एवा 'पुराणार्मा गुजगत' (ए ४५) ना भनुमानने बैन भागमसादिष्यमां श्री स्था भनुमीरने मळे छ भागीर देश दिश्या-पबमां इढी एवं विचान कही छ पदस समादि रागामा छ ए पण के नारते भागकु कायट तगरा हस्यादि रागामा छ ए पण दक्षिणायना छ (१२०) भाग छठी भग्यत एव मानीरी हुढा; धनके इच्छमां भागीरो बैग-बर्गानुसादी होशानु इसू छे (१५) 'सुक्टांग सूत्र नी सीमां बैग-बर्गानुसादी होशानु इसू छे (१५) 'सुक्टांग सूत्र नी सीमां बैग-बर्गानुसादी होशानु इसू छे (१५) 'सुक्टांग 'किगट' जन शास्त्रमें होड करेता ए सुबने छे के शीमांड

९ डमासकर बीची । प्रश्चीमां बुधराव अस्तानिक, पू. ९९

देवना समय सुधीमां 'आभीर' शन्दनो अर्थ हलको बनी गयो हतो (पृ. २१).

मालव जाति प्राचीनतर अर्वति जनपदने 'मालव' नाम आपवामां कारणभूत छे. ए जातिना छोको त्या छट्टफाट माटे अक्तमण करता, मनुष्योनुं अपहरण करता, अने तेमने गुलाम तरीके वेची देता (पृ १३८-४०). आगमसाहित्यमां कविचत् 'मालव' अने 'बोधिक' जातिने अभिन्न गणी छे (पृ १३८). एमने विशेनी प्रकीण माहिती टीकाओमांथी सारा प्रमाणमां मळे छे (पृ. १२०-२१). यादवी अने एमनी गणसत्ताक राज्यपद्धति विशे पण केटलुक जाणवा मळे छे (पृ ८७). कुशावर्त अने शौरिपुर वे हतां एक उत्तरमां अने वीजुं पश्चिममा (पृ ४९) नवा स्थानोने जूनां नामो आपवानुं स्थळान्तर करती जातिओनुं वलण एमा जणाय छे. आ नामोनो संबंध यादवोना स्थळान्तर साथे छे.

'वृहत्कल्पसूत्र' ( उद्देशक १, सूत्र ५०) अने ' निशीधसूत्र' जेवां छेदसूत्रोमाथी जाणवा मळे छे के भगवान महावीर ज्यारे साकेत नगरना सुमूमिभाग उद्यानमा निवास करता हता त्यारे तेमणे उपदेश कर्यो हतो के " निर्प्रन्थो अने निर्प्रन्थीओने पूर्वमा अग—मगध सुधी, दक्षिणमा कीशांबी सुधी, पश्चिममा स्थूणा सुधी अने उत्तरमा कुणाला (उत्तर कोसल) सुधी विहार करवो कल्पे छे एटल ज आर्यक्षेत्र छे एनी वहार विहरतुं कल्पतुं नथी. पण एनी बहार ज्या ज्ञान दर्शन अने चारित्र्यनी वृद्धि थाय त्या विहरी शकाय " ए पछी केटलोक

<sup>9</sup> आ सूत्रना अतिम वे वाक्यों क्षा प्रमाणे छे 'एताव ताव भारिए खेते णो से कप्पइ एतो वाहिं। तेण पर जाय नाण-दसण-चिर्ताइ उस्सप्पति ति वेमि।' उपर में करेलो अर्थ 'गृहत्कल्परृत्त 'ना टीकाकार आचार्य क्षेमकीर्तिने अनुसरीने, छे डा जगदीशचन्द्र जैने एनो अर्थ जरा जुदी रीते कर्यों छे 'इतने ही क्षेत्र आर्थ क्षेत्र है, बाकी नहीं, क्योंकि

शहान्यामी बाद सशास्त्रा पीत्र राजा सप्रतिना भाग्नसभी जैन धमणी इर इरना प्रदेशोमो विषया छाप्या भन भान्य, इविड, महाराष्ट्र धन कुडुक (कुर्ग) स्वांपूर्वे सायुभा जता नहासा स्यां पण धमणोनो सुरुषिद्वार प्रक्रवीं प्रसमयभा नीच प्रमाणे साद्वीराणीस भाविदेशा गणाबा छाग्या चेनो मोघम उल्डेख पण भागमग्राद्विस्यमां वारेवार मळ छे मगभ (राजभानी राजगृह् ), बैग (चैपा ), देग (सामस्मिति ) कृषित (क्रांचनपुर ), काशी (बाराणसी ) कोशस्त्र साकेत ), कुरु (गअपुर-इस्तिनापुर) इदानित (शौरिपुर) पांत्रास्र (काम्पिस्य पुर ), आग्रस्त ( शहिष्णत्रा ) सुराष्ट्र ( द्वारवती ), विदेह (मिथिला), बस्स (कौशांबी) शांडित्य (निर्देपुर), मस्त्य (महिसपुर) मरस्य (बैराट) धरणा (अध्या) दशार्ग (सृचिकावती ), चंदि (शुक्ति गती ) सि च-सीबीर (वीतिमय ), ध्रसेन (मधुरा ) मेगि (पामा) बहा ( मार्थपुर्ग ) कुणाला ( भावस्ती ), साद (क्रोटिवर्प), केक्रमीनी मर्पभाग ( भौतिका )

था ध्रिमां भान्त्र महाराष्ट्राव्हि प्रदेशोनो उस्केल मधौ ए ध्यान लेखे छ कोंकण क स्यां वैन छाचुओ विचरता हता एतुं नाम एण एमां नशे, गुवरात को राजस्थानना चे प्रदेशो पाछळभी बेन धर्मनां प्रभुक केट्रो बन्धा ए गण एनां नशे न्या प्रकृतेर एम कही छाकार के दंशितना रामण्डाळ प्रकृता छमयमां नारतमां कैन धर्मना प्रमावनो सर्वसामान्य नक्ष्मी ए राजु कर छे

रखों केशोंने निगरण निश्च और सिश्चनियों के काम-पर्केच और पारित्र
सञ्चल एइ बढ़ते हैं। ( जारत के प्रत्योत मित तील ए १४)
इस पर्वत को पारित्यती पृद्धि पत्ती होन तो स्थितेश भी बहुए
दिख्या पूर्व एको एको प्रत्योत जीव्यापरित्रों कर्म मेले तप्तत कारों के
सामेशेल भी बामादिक स्थिति कैन ग्रामुलेशा करक सामारायकनने
स्मुक्त हती एन के नेम सम्म प्रतेकोद्यों देन परीत्रों प्रचार बहो
केस तेम निराहिकानों निराहित एन बच्चों

हिन्दुस्तान माटे 'हिन्दुग देश' एवं नाम ई स. ना सातमा शतक आसपासनी 'निशीय सूत्र'नी चूर्णिमा मळे छे (पृ २१८) अत्रत्य साहित्यमां आ नामना आटला प्राचीन उक्लेखो विरल छे

े गृहस्थो रहेता होय एवा मकानोमां साधुओ रहे ए वस्तु कच्छमां ढोपरूप गणाती नहोती (पृ २२) ए वतावे छे के साधुओने रहेवा योग्य मकानो—उपाध्रयोनो त्यां अभाव हरो मरु देशमां खनिज तेल होवानो निर्देश (पृ. १२६) ठेउ भाष्य जेटलो जूनो होई खूब अगत्य धरावे छे भ

पालि साहित्यमां निर्दिष्ट अरिष्टपुर उपरांत महाराष्ट्रमां वोजुं एक अरिष्टपुर हतु (पृ ५) धर्कस्थली अने कालनगर ए वे आनदपुरनां पर्याय नामो हतां ( १ १४, १९ ). आनंदपुर कोई काळे सूर्यपूजानुं केन्द्र हरो एवो तर्क करवाने 'अर्कस्थली' ए नाम प्रेरे छे. आनंदपुर नामे बीजु एक नगर विन्ध्याटवी पासे हतुं (पृ. १९). ते उत्तर गुजरातना धानंदपुर-वडनगरथी भिन होवुं जोईए, शूरसेन जनपदना पाटनगर मथुरानुं वीजुं नाम इन्द्रपुर हुतुं (ए. २३); जो के मथुराथी भिन्न एवु इन्द्रपुर नामनुं अन्य नगर पण हतुं (ृ २४) उत्तर मथुरा अने दक्षिण मथुरानो पृथक् निर्देश छे (पृ १२२, १९२) उत्तर मथुरा ते शूरसेन जनपरनी अने दक्षिण मथुरा ते मदुरा. क्षेमपुरी ए सीरा॰ट्रनुं नगर छे (पृ ५८), पण ए कयुं ते नक्को धई शक्युं नथी पादलिप्तपुर (पालीताणा)नी स्थापना 'तरंगवती' कथाना कर्ता आचार्य पादलिमना स्मरगार्थे थई होवानी अनुश्रुति छे (पृ ९९) श्रीकृष्णना चरित्रवर्णन साथे सवध घरावतु शंखपुर ए उत्तर गुजरातनुं शंखेखर संभवे छे (पृ. १७३-७४). 'सूत्रकृताग सूत्र 'नो शीलाक-

९ ए तरफ केन्द्रीय सरकारना 'िकचोलाजिकल सम्हें'नु ध्यान खेचवामा आव्यु छे अने ए खाताए आ माहितीनो सामार स्वीकार कर्यो छे ए नोंधवु अप्रस्तुत निह गणाय,

प सौराप्टनु सिंहपुर-शिक्षोर इसे के बनारस पासनुं सिंहपुरी (प्

५०१) द विचारवा वको प्रथ छे य व हाछरहामां निर्दिष्ट हस्तकप्प के हस्तिकृष्य ए नि शहपणे माबनगर पासनुं हायव छ (पृ २१५), जे एक काळ विशेष राजकीय सगस्य परावतु **होतुं नोर्दे**ण को**र्सुया**-रण्य ए वृद्धिण गुम्रशतमां कोसमा भासपासनो समृद र्थगरहिस्तार हे (पु.६-५७) जेनी आसपास भूळनो प्राकार होय पना गामन 'सट (प्राञ्चत 'सेड ') कहेता (पु६१-६२) समय जतां 'खेट' सामान्य नामगांची विद्येपनाम बनी गयु, डेम के संद्रा जो के गुजराती, मराठी मन हिन्दी-पंजाबीमां सेहुं', 'सेहें 'मने 'खेडा' शस्त्र 'गाम 'ना सामान्य अर्थमां पण छे 'सेट' अथवा धनो तदमद श्रमा भगभूत होय एवां स्थळनाम पण सनक स्बळे छ (पृ६१–६२) चक्त कने स्वस्न एम वन्न मार्सीए ज्याँ वई शकाय एवा नगरने 'बोणमुख 'कहे छे पना उदाहरण सरीके मरुक्रफ, ताधिक्षीत सने रवानक-बाणा सापवार्मा आवे छ (पू ७९, ११०, २११) इच्छमां दोग 'नामे एक गाम छे एनी स्पुष्पचिगत सम्भ कोणमुन्तर्गाता होण सामे **इ**से ! माळवाना दशपुर (मेदस्रोप्त) नगरर्नु नाम सिन्धु—सीबीरना राजा उदामनना सहायक दर राजाओप ए स्वळे पहाव नास्मी हतो तथा प्राकार बांध्यो हतो ए उपम्बी पढ्यु एवी अनुभूति नोंधाई छे ( ८१–८२) पर्मी अने संपदायों बौदो अने बैनो वच्चे क्यां स्पर्धा अने बादविवाद भासतो (प ५९-६१, ६८-६९, १९५-९६) गुञ्चरात भन राजस्थानमां वैनो उपरांत बौद्योनी बसती सारा प्रमाणमा हती पत्रुं सापार भनुमान महं सके छ महक्ष्यमाँ एक बीच स्तुप हतो. ए नगरमां जैनोना सुप्रसिद अधावबोध तीर्बनो कवजो बौद्रोए भीभो हतो ते सपुराचार्ये भोडाव्यो हतो गोविन्दाचार्य नामे बीद मिक्षु जैन आचार्यने पराजित करवा माटे जैनोनी विद्या शीख्या हता, पण पछी पोतं ज जैन थई 'गोविन्दिनर्युक्ति 'नो रचना करी हती (पृ ६८-६९) मथुराना 'देवनिर्मित स्तूप' उपर बौद्रोए आधिपत्य जमार्व्यु हर्तुं, एनो कवजो मथुराना राजाए जैनोने पाछो सोंप्यो हतो (पृ. १२०–२१)

वौद्ध उपरात अन्य मतोनी पण वात आने छे आर्थ रक्षितना मामा गोष्ठामाहिले मथुरामा एक अक्रियाबादीने पराजित कर्यो हतो, पण पछी तेओ पोते ज अवद्भिक नामे निह्नव थया हता (पृ. ६९)

प्राचीन भारतना लोकधर्मोमां यक्षपूजा घणी लोकप्रिय हती. आनंदपुरमां यक्षनी अने नागविष्ठकामां नागनी पूजा थती (पृ ९४), मथुरामां मृतगुहा नामे व्यंतरगृह-यक्षायतन हतु ( पृ. १२२ ) अने द्वारका पासे नंदन उद्यानमां सुरिप्रय नामे यक्षनुं भायतन हतुं ( पृ २०३) सुराम्चर नामे यक्षनुं आयतन शौरिपुरमां हतुं (पृ २०३) भरुकच्छ पासेना गुडशस्त्र नामे नगरमां यक्ष साधुओने उपद्रव करतो एने खपुटाचार्ये शान्त कर्यो हतो (पृ ५९) एक ब्राह्मणे 'सुह्चि-रसर 'नामे व्यंतरनी उपासना करी होवानी कथा मळे छे (प् ११४) मरुकच्छथी उज्जयिनी जवाना मार्ग उपर आवेला नटपिटक गाममाः नागगृह हतु (पृ ९१) अर्थात् त्या पण नागपूजा थती भनेक नगरोना परिसरमा आवेलां उद्यानीमा यक्षायतनो हतां भने त्यां लोको यात्राए जता. एना थोडाक उदाहरणो आपणे आगळ नौंधीशुं.

मरुकच्छयी दक्षिण।पथ जवाना मार्गमा 'मञ्जीगृह ' नामनु भागवतोनुं एक मन्दिर हतु अने एमां 'भल्ली'—बाणथी वींघायेली कृष्ण वासुदेवनी मूर्ति हती (पृ ५७. ११३-१४).

स्रप्निपूजकोनो उल्लेख पण क्वचित् आवे छे गिरिनगरमा एक अग्निप्जक विणक दर वर्षे एक घरमा रत्नो भरीने पछी ए घर सळगावी

कावितुं संतर्पण करतो इतो एम करतां एक वार आर्स्ट नगर कटी गर्स इत् (पृ ६६)

वैत भावारता इतिहासती हिश्च भागायता पण एक वे टल्डेक्से भा प्रत्यमां छे धप्पातर—दसति भावतार कीले गणवो प संवधनां भाराबार्येनो मल नामायेको छे (पू १६२—६६) छाराबार्य, पमता नाम उवराधी, छारता वतती होते एम अनुमान साम छ दशपुरतो राखा कराब ध्याय रिश्तते बीक्षा नहि छवा दे प असमी सोसछिपुत्रावार्थ रिश्तते छर्देने सम्बन्ध बाल्या गया हृष्टा प जैन सनुभूति प्रमाणे पहेली शिष्मचोरी हृती (प ८०) उद्यानो जैन समणो भणी भार नगरपनिसर्ग धावेख उद्यानोमी निवास करता परक हुने उद्याना विरोग भोडाक उन्हेस्सो जोईण

इक्षुगृह उपान दरापुरमां भावेछ हुते त्यां रहीने भावरक्षिण भादुमीस क्रमी हतो (प २२) ए प्रदेशमां शेरहीनं बानेटर मर्द्ध हरी पत्री **अटक्**ळ था. उपानना नाम उपरक्षी. **फ**री शकाय**े**. कार्रटक उपान महक्षण्डना ईशान खुणे हर्से ( पू. ५५ ) कोर्टक भववा कटि। हरियाना इ.मनीय छोड्य भो उपाधी था उपानने नामकरण धर्य हरी उम्मियनीमा स्तपन उपानमा पण साञ्चभी ऋतरहा (प २११) ' स्नवन ' माम स्यो कोई स्नानागार इसे पत्रो, तर्क करना बेर छे द्वारका पास नाइन उचानमां स्रश्रिय बद्धर्त बायतन इतं ए आपणे उपर आई गम प उपान दारकाने ईशान खुणे रैनतकनी गास दहीं ( प ९१ ) केटलांड सुशेनां रेवतकतो उन्हेस पर्वत सरीक छे. न्यार पटीना समयनी केटखेड टीकाबोमां यूनो उन्डब्स उपान सरीके छे ( प १५० ) सिन्धु-जीबीर देशना पाटनगर वंधितमबनी पूर्व दिशामी मृगदन नाम ज्यान हतु ( पृ १७० ). सारनाथ पासेना उपानन पानि सादियमां मुगदार । इदेस छ ते साथे भा नाम

सरंखावी शकाय जैन तेम जै वौद्धं साहित्यमां बीजां अनेक उँधानोना उल्लेख छे

उत्सवो उद्यानोनी साथे उत्सवो पण संकळायेला हता 'संख्रिड' एटले उनाणी आनंदपुरना लोको शरदऋतुमां प्राचीनवाहिनी सरस्वती ना किनारे जई संखिंड करता (पृ १९) प्रभासतीर्थमा अने अर्बुद पर्वत उपर यात्रामां संखडि अती (पृ १५, १०६) मथुरामां मंडीर यक्षनी यात्रामा लोको गाडां जोडीने जता (पृ. ३३, ११९ ). कुंडलमेंठ नामे व्यंतरनी यात्रामा भरुकच्छना लोको संखिड करता ( पु ४४, ११०-११ ) लाटदेशमा गिरियज्ञ अथवा मत्तवाल-संखिंडि नामें उत्सव थतो (पृ १६१). एनु वीजुं नाम भूमिदाह हतुं ए उत्सवनु वर्णन मळतुं नथी, पण कींकणादि देशोमां गिग्यिज्ञ नामे उत्सव दररोज संध्याकाळे थतो होवानो उल्छेख अन्यत्र छे ( पृ ५३ ), ते ए ज हरो एवु अनुमान थाय छे. महाराष्ट्रमां भादरवा सुद पडवाने दिवसे अमणपूजानो उत्सव थतो, एमा छोको साधुओने वहोरावीने अद्वमना उपवासनु पारणु करता (पृ १३५). उज्जयिनी, माहे यरी, श्रीमाल वगेरे नगरोना लोको उत्सवप्रसंगोण एकत्र थईने मदिरापान करता ए मदिरापान करनाराओमां ब्राह्मणोनो पण समावेश-थतो (पृ २०).

रीतिरवाजों जैन साधुँओ आखा देशमां पगे चालीने पर्यटन करता. चोमासाना चार महिना वाद करतां वाकीना आखा ये वर्षमां मोटा भागना साधुओ सतत परिवजन करता 'वृहत्कल्पसूत्र'ना भाष्यमा 'जनपदपरीक्षा ' प्रकरणमा कह्युं छे के जनपदिवहार करवाथी साधुओनी दर्शनिवशुद्धि थाय छे एमां साधुओने विविध देशोनी भाषाओमा कुशल बनवानुं कह्युं छे, जेथी तेओ लोकोने एमनी पोतानी भने देशिक परिरियतिथी माहितगार भवानं पण सुबन एमां करेई छे भा बर्चा कारणे भारतवर्षना विविध प्रदेशीना रीतरियाजाने सगती प्रकीर्ण पण मून्यवान सामग्री भागमसाहित्यमांची प्राप्त भाग से ए प्रकारना भोडाफ साधाणिक उन्छेखो भाई। जोडप क्षेत्रणवासीमो पुष्प भने फळनो प्रसुर प्रभाणमां उपयोग करता. उत्तरापद भने बान्हिकना क्षोको सन्तु खाम छ तेन कॉक्शनवासीको 'पेन्वा' (सं पमा) भर्षात् चोखानौ राव के छ स्वां मोजनना प्रारंभमां च राव भपाय छे ( प्र ५२ ) बस्यार पण कों इंगमा सुदय स्ताराक चांशा हे ते सा शाचे प्यानमां राखवानुं हे सोपरफना व आवकामां एक शाकटिक (गार्ड पद्मावनार) भने भीमो वैकटिक (दाक गाळनार) हरी (प १८०-८६) प बताने छे के बैक्टिको महिप्तत महोता पहोसना महाराष्ट्रमां पण कसमो बहिन्द्रत गणता नहोसा; एटछ ब नहि, पण प्तमी सामे बीजाको मोजन सर्व शक्ता (पू १३५) को क दक्षिणापनमां इन्हरू भने कोहकार अध्ययम गणाला ( पृ १६०) महागष्ट्रमां सबनी दुकासमां सच होय के न होय पण नेनी उपर भाग फरकाववामां भारती के अर्धने मिशाबर भाषि त्यां बता गर्द्ध (पू १२४) चे प्रकारना बीमोना पहेरवेशने सारवासीमो 'इन्छ ' कदेता एने महाराष्ट्रीओ 'मोनडा ' कदेता स्नीमो आह-पणबी मांडी स्त्र बया बाद संगमी बतो सुधी क्रफ बांस्टी संगमी थना पत्नी भोजन करणामां भाषतुः स्वजनोने बोहाशी वक्षा पाधरवामां भावतं, सने ए समभवी इच्छ वीषवानुवय वर्त (० १६०) महरबंध सादि रेताळ प्रदेशोगी मार्ग मुसो न बदाय माटे मार्गमा भौकिकामो ठोकवामां व्यवद्यो एका उल्केलो हे (पृ१२४) महरभक्ता पहेरवेशने ध्यती पण फंटकीड रसिक माहितो मळ छे (प १२५). इसेडपटियो महोसब प्रसी पोजना सकान उपर

कोटिपताका चडावता (१ ६४). 'केटिप्ज ' तथा एमाथी ब्रुखन्न थयेला गुजराती शन्द 'कोटिप्ज 'नो संबंध आ साथे जोडाय छे. सतीनो निवाज कोई काळे चौछ हयोगा विशेष प्रचलित हशे एम एक मुभाषित उपग्यो छोगे छ (१ ७१-७२) आ उपगत आभीर, मालव आदि जातिओ, आनदपुर, डिंभरेलक, ताप्र-लिप्ति, द्वीप, मथुरा आदि नगरो तथा कांकण, बन्नासा (बनास नदी) आसपासनो भाग, महाराष्ट्र, लाट, मिन्ध्र, मुराष्ट्र आदि प्रदेशोनी विशिष्टताओ तथा लाक्षणिक रीनिर्वाज माटे आ प्रन्थनां ते ते शीपको जोवा विनंति छे.

वाणिज्य : घाणिज्य विशे पण केटलीक अगत्यनी माहिती मळे छे त्रिमुवननी सर्व वस्तुओं जेमा मळे एवा वस्तुभंडागे—' कुत्रिका-पण'—विशेना उत्हेखो खाम व्यान खेचे छे. उज्जियनी अने राजगृह जेवा प्राचीन भारतना महान नगरोमा एवा भंडारो हता एमां वस्तुनु मून्य खरीदनार व्यक्तिना सामाजिक दरव्जा प्रमाणे छेवामा आवतु ए वात खूव रसप्रद छे (पृ २६—२७, ४४—४५) कुत्रिकापण साथे संबंध वरावती केटलीक लोककथाओं नोंपायेली छे (पृ ११२, ११५—१६) ए वतावे छे के लोकमानसे एनी स्पृतिने केबी रीते संवरी हती. भरुकच्छ पासेनु भूततडाग कुत्रिकापणमांथी खरीदायेला एक मूते वांखुं हतुं एवी अनुश्रुति छे.

वेपारना एक मथक तरीके 'द्रोणमुख'नी व्याख्या उपर स्थळनामोनी चर्चा करता आपी छे वेपारनु केन्द्र होय एवा नगरने 'पत्तन' पण कहेवामा आवतु 'पत्तन' वे प्रकारना होयः ज्या जलमार्गे माल आवे ते जलपत्तन, जेमके द्वीप (दीव) अने काननद्वीप, ज्यां स्थळमार्गे माल आवे ते स्थलपत्तन, जेमके मथुरा अने आनंदपुर केटलाक टीकाकारोप प्राकृत 'पट्टण' शब्दनां 'पट्टन' कन 'प्रचन' पर्को में संस्कृत रूपी स्वीकारीने बेनाजुदा कर्ष आप्या क्षे (पृ९७)

मारुष भाविना छटाइको मनुष्यनु इरण फरीन एमन गुस्नमो सरीके देवसा ए उपर इन्धुं छे। गिरिनगरनी त्रण की भी उम्बयस उपर गई इसी स्पोर चोरो एमनु हरण करी गया हता अने पारसक्छ -इरानी भसासना फिनारा उपर क्षेमने वेची हती (पृ ६६) मरुक्षभारं भावेछ। एक परदेशी वेपारीए इपटी बावकपर्णु घारण करीने केटलीइ ऋपवती साध्वीभोने वहाण उपर बोलावी प्रमन् इरण इस् हतुं (१ ११२) मधुरामां 'देवनिर्मित स्तूप'नो मदिमा करवा माटे केटमीक व्यविकामी साधीमोनी साथ गई हती एमन हरण करवानी प्रमास बाधिक बादिना छटारुमोप कर्यो हरो, पण एक सांघु बेम्प्रे पूर्वाधनमां राजपुत्र इता, तेमोए एमने छोडावी इती (पू १२१). का क्या २९३ सो गुरुमोना केपार उपर प्रकाश पाढे छे जैन सुप्रोमां कत्यत्र (दात 'शक्षप्रभीष'स् ८३, पृ १२७) जुदानुदा देशोगांत्री आवेडी दासीओनोः यादी सापी छे एनांबी पण बगउमरमां म्यापेसा गुमामोता बेपारने सूचन थाय छ

वेपा(ओली प्राचीन 'क्षेणी'ओ (guilds) ने हमता वक्त
महत्त्वनी बनुवृत्ति मळे छे सीपारक ए मारतना प्रतिम किनार
वेपारने मचक हुनुं अने व्या बनुवृति प्रमाणे, त्यां वेपारीआंनो पांचसा
कुनुंगे हुनां द वेपारीओने एक महाजन हुनुं. प महाजन पासे
पोतानी कचेरी अने पूर्वा नोई समायह हुनुं, जेवां पांचसी पृतळीको
हुनी कचेत्र अने पूर्वा नोई समायह हुनुं, जेवां पांचसी पृतळीको
हुनी कचेत्र पर्वा सामायह विश्व कच्छानी स्त्रिय पण तांचपार हुन्न
पक्षना मात्र बयेखा कर राजाए केवा पार्यों ए सामे विशेष करतां
वचा बेपारीओ मरण वाम्या, ए बरन्न जूनी महाजनीना संगठनना
प्रतीक बेबी ए (१००८)

्र उञ्जयिनीमां एक बार मोटी आग लागी हती अने नगरनो घणो भाग बळी गयो हतो त्यारे जे वेपारीओए नगरनी बहार बखारो राखी हती तेमणे पोताना मालना अनेकगणां नाणां उपजाव्यां हतां (पृ २८) ए बात पण ध्यान खेंचे एवी छे

त्रण दिशाए समुद्रथी वींटायेल सौराष्ट्रमां बहोट्टो वेपार चालतो हतो. (पृ २०४)

प्राचीन सिकाओ विशे ठीक माहिती मळे छे सिकाओनु नानुं सरखुं कोष्ठक आपेलुं छ अने एक प्रदेशना सिकानी वीजा प्रदेशना सिकामा केटली कीमत थाय ए पण केटलाक दाखलामां जणावेलुं छे (पृ. ८९, १८०-८१) 'कािकणी' एक नानो सिको हतो अने एनु मृत्य गीस कोडी बराबर थतुं पण राजपुत्रोना संबंधमां प्रयोजाय त्यारे 'कािकणी' शब्दनो अर्थ 'राज्य' थतो ए नाधपात्र छे (पृ ३४, ४३) चक्रवर्तीनां रत्नोमा कािकणीरत्ननो पण समावेश थतो ते उपरथी एम हशे ?

स्थापत्य अने कला अधिमागध ए स्थापत्यनो एक विशिष्ट— कढाच मिश्र—प्रकार हरो एम लागे छे (पृ १५) अर्धमागधी भाषानी जेम ! अभिनयने घंघा तरीके स्वीकारनार नटोना जुदां गाम हतां, एम: रोहकनी वार्ता बतावे छे (पृ २८) नटिपटक गाममा (पृ ९१) नटोनी वस्ती हरो एम एना नाम उपरथी कल्पना थाय छे कोकास अने, एना यंत्रकपोतोनुं कथानक (पृ. ५०—५१) प्राचीन भारतमां यंत्रकलाना अभ्यास माटे जोवा जेवुं छे 'राजप्रश्लीय सूत्र मां चत्य अने संगीत विशे विस्तृत अने 'अनुयोगद्वार, सूत्र मा संगीत विशे संक्षित निर्देशो छे ते आ विषयना अभ्यास माटे घणा उपयोगी छे, जो के आ पुस्तकनी मर्यादामां एनो समावेश थई शक्यो न्थी.

विद्याध्ययन प्राचीन विद्यास्त्रवननी क्या अगरमनी पर्रपरामी -सास करीने जैनोन संबन हे रयांगधी-जागमसाहित्यमां समयायेछी छे वेदोना परपरागत संक्रमणनी जेम आगमोनां सुक्रमन अने संगोपननी पाइन्छ स्पृति कने बुद्धिना महान पुरुपाची रहेका छ। प्राचीन काळकी मोडी भागमधायना (प्र. ८३. ८४. ९४.) ए गैसीर अध्ययनने पात्र विषय छै जागमानी रचना पूर्व भारतमां यह पग ए छेसाभिरूप पश्चिम मारतमां वर्षा ए पण चैन भर्मना इतिहास भने तेनां दशान्तरो मारं एक नीभग इकीकत छे मध्यकाळमां गुबरातनो संस्कारिसानुं तेमत्र गुवरातमां जैन धर्मनु प्रमुख केन्द्र भणहिस्साइ पाटण इतु. मानाम हरिमदनी टीकामो सिनाय मागमो उपरनी वर्षा मुक्य टीकामो भणिक वाह के व्यासपासना प्रदेशमां र गायेकी के (पू ८-९) भागमोना विशेषनमाँ रोकावेसा पंडितो परस्पर सङ्कारमी कार्य करता इता नवांगी इतिकार अनवदेवसरिनी टीकामोनी सहाय विना पश्चीना बाळमां गमे हैदा प्रकृष्टि पेक्षित माटे पण भागमीना सर्वी समयवानु मुझ्केस वर्ड पहला. प्रानी ए टीका मोर्नु शोधन दोगापार्थे कर्ये हुतुं (पू १०--१२) डोगाभार्वनी सहामगंपह पेंदित परिचय हती बोजापार्य ए पाटणना चौस्तरव राजा मीमदेव पहेसाना मामा हता अने तेमणे पोते 'ओपनियुक्ति ' उपर टीका रची इती (पुट३) 'ब्राचारीय सूत्र' अने सूत्रकृतीय सूत्र' उपर टीक्रमी रूसनार शीवाचार्य समया शीवांक ते पाटणना श्वापक बनराजना गुरु शोक्ष्मणभूरि एवी एक जनुकृति छे, एटके अजहिए बादमां भागमोनुं भव्ययन ओआमां कोह्नं ए नगरनी स्वापना चेरखं जुनु छ भने पनी बारसी इतिमदाबार्य भावि राजस्थानमां अयेका टीकाकरो वरकथी मझेडा छे पारणमां वयेस्य सागमीश बीजा महान टीकाकारो मस्त्रपारी देवपंत्र (किकाससम्बद्ध देवपंत्रपी मिन) भने भाषायं मध्य गिरि छे सखतारी हेमर्चदने मळवा माट राजा सिद्धराज जयसिंह वारंवार एमना उपाश्रये आवतो (पृ. २१९), एमना हस्ताक्षरवाळी एक ताडपत्रीय पेथी खंभातना भंडारमां मोजूद छे. आगमो उपर गुजरातमां प्रमाणभूत संस्कृत टीकाओ ठेठ अराढमा अतक सुधी रचाती रही छे अने आज सुधी खागमोना अध्ययननी प्राचीन परपरा अहीं अविच्छिन्नपणे चालु रहेली छे.

विद्याच्ययनने लगता बीजा पण केटलाक अगत्यना उल्लेखों अहीं संघराया छे. भरुकच्छना वज्रम्ति आचार्य विशेनु कथानक गुजरातना एक प्राचीन किव विशे थोडीक माहिती धापे छे (पृ. १६५-६६). कालकाचार्य आजीवको पासे अष्टांग महानिमित्तनो अभ्यास कर्यो हतो (पृ ४०). आजीवको नियतिवादी हता, एटले निमित्तशास्त्रना अभ्यास प्रत्ये एमणे खास घ्यान आप्यु हशे, अने एथी ज कालकाचार्य जेवा महान आचार्य ए माटे एमनी पासे जवाने आकर्षाया हशे. मूळ आगमोमा (दा त 'उत्तराध्ययन सूत्र'नुं १५ मु अध्ययन) साधुओ माटे ज्योतिष तेमज वैद्यकनो अभ्यास वर्ज्य गणेलो छे, पण मध्यकाळमां चैत्यवासीओए ए बन्ने शास्त्रोने लगभग पोतानां करी लीधां हतां ए पण समयनी बलिहारी छे

उज्जयिनीनो विद्यार्थी अस्नविद्या शीखवा माटे कौशाबी जाय छें अने शंखपुरनो त्रिद्यार्थी वाराणसीना कलाचार्य पासे शीखे छे (पृ. १) ए उल्लेखो विद्याभ्यास माटे देशान्तरोमा जवानी प्रमाणमां ज्यापक प्रवृत्तिना सूचक छे. अहण महानु कथानक प्राचीन भारतमां मह्यविद्याना इतिहास उपर सारो प्रकाश पांडे छे (पृ. ६—८)

खुप्त ग्रन्थो . नष्ट थई गयेला अनेक प्राचीन ग्रन्थोना उल्लेखो अने क्वचित् एमाथी अवतरणो आगमसाहित्यमां मळे छे आ पस्तकः- मां नापायका एवा प्रत्या दिश बाईए चौद पूर्व-दाट्यार विशेना उन्केखा र ठेर मळ र 'निन्त्र्य'मां तो पनी अनुक्रम पण आप्यो छ पूर्वो पणा सैहा पदेखां नाश पामी गयखां होया छवां – बाबता कराच ए झारणभी – पटीना झाटमां तमाम जैन प्रत्यकारां सवा सामान्य जैन प्रजाना मानस उपर पण पनी अरसून महिमा अक्टित यसका रही छ

सातवाहन हामना प्राष्टत सुमानिससंभद्ध ग्रायासात्रातो 'तां पृत्रक्रिताचार्यनो गायाको उद्शुल व्यवेसी छे (२ ९९) से को ले सर्गनवर्ग 'मांबी होम जवना एमनी बीमी कोई हरिमांबी होम 'म्योतिक्यरका' उपरती पार्वाक्तावार्यनी हिंच नट बयेसी मनातो हती, पत्र ते बेसक्सीरना मन्त्रमेक्तरमांबी बोहा समय पहेसां पू सुनित्री पुण्यविक्ययबीने मन्त्री छे (पू ९८) एव प्रमाने 'बोबुडीप प्रवित्री पुण्यविक्ययबीने मन्त्री छे (पू ९८) एव प्रमाने 'बोबुडीप प्रवित्री पुण्यविक्ययबीने मन्त्री छे (पू ९८) एव प्रमाने 'बोबुडीप

१२९, १७७, इत्वादि ) कवानित् एमनी सुविशद अने विस्तृत टीकाओं व पूर्वेक्सनि टीकाभोनी विलुतिमां निमित्त महि बनी होस ! टीकाकारोएं नोव्युं छे (पृ १२८), परन्तु ए वृत्ति पण जेसलमेरना भंडारमाथी जडी छे.

भाषाग्रास्त्र भारतीय आर्य भाषानी देती यक भूमिकाना अभ्यास माटे विपुल सामग्री भागमोमांथी मले एमां न शुं आश्वर्य नथी ववा ज मूळ आगमप्रन्थो प्राकृतमां छे एटली हकीकत ए विषयमां एमनु महत्त्व वताववा माटे वस छे आ प्रस्तावनाना प्रारंभमां ज कह्युं छे ते प्रमाणे, जुदा जुदा सूत्रप्रत्थोनी भाषाना स्वरूपमा केटलोक नौषपात्र तफावत छे. वळी आगमसाहित्यनी पहेली संकलना मगधमां थई अने त्यार पछीनी संकलनाओ ईसवी सननी चोथी शताब्दीमां एटले के वीरनिर्वाण पछी नवमी शताब्दीमा मथुरा अने वलभोमां थई अने सर्व आगमो एनी ये पछी एक सैका बाद देवर्षिगणिना अध्यक्षपणा नीचे वलभीमां एक-सामटा लिपिवद्ध थया, ए वधा समय दरमियान तेमज त्यार पछी एनी नकलो अने नकलोनी पण नकलोनी जे अनेक शाखाप्रशाखाओ यह तेने परिणामे ए प्रन्थोनी भाषामां अनेकविध फेरफारो थया हशे, तोपण भारतीय आर्थ भाषानी प्राकृत मूमिकाना अध्ययन माटे एक तरफ जैन आगमसाहित्य अने वीजी तरफ पालि साहित्य ए वन्ने मळी परम महत्त्वनी सामग्री पूरी पांडे छे मूळ आगमो तथा ते उपरना निर्विक्ति अने भाष्योनी आर्ष प्राकृत, चूर्णिओनी आ करता भिन्न तो पण आर्षनी कोटिमां ज गणवी पडे तेवी प्राकृत-जेमां संस्कृतन् पण विलक्षण मिश्रण थयेलु घणी बार नजरे पडे छे, अने मध्यकाळनी संस्कृत वृत्तिओमानां प्राकृत कथानको, जेमनी भाषा केटलीक वार चुर्णिओनी छगोलग आवी जाय छे तो केटलीक वार स्पष्ट रीते प्रकृष्ट महाराष्ट्री प्राकृत होय छे-आ सर्वेनु पूरुं अन्वेषण हजी ययु नथी. आगमसाहित्यनी सभीक्षित वाचनाओ वहार पडे त्यारे ज ए कार्य थई शके वळी आगमोनी संस्कृत वृत्तिओमां आवता शब्दो अने रहिंद- प्रकारनी 'मित्र संस्कृत' होई मौदोनी 'गाभा संस्कृत' साथे प्रनी द्वसना वह शके-जूना गुजरातीनी असरबी चे परिकायित होई गुवरातीना सामान्य झान क्लिंग ए समजाय पण माग्येज, ए कारणे इटेंस खेवा क्यिने खेमे 'प्रादेशिक संस्कृत' (Vernacular Sanskrit) कही छ, पूनी स्पन्तिवत भाग्यास एक करता वर्ष भन्यो सभा छ एवा विशास विषय हो, अस बैन कवासाहित्य तेमन मक्त्मसाहित्समा पण ए च प्रकारनी सरक्रतना प्रवोग होई एनी मम्यासमर्यादा भागमसाहित्यनी बहार पण विस्तरको छे सरकृत उपर प्रादेशिक मात्राभीए करेकी भसरना राधिकोणबी ए सर्व साक्षिपर्य

क्क्कोकन फळवायी नीवहरी। संस्कृते छोक्रमाणांनी साथे केन्द्रे समाधान सार्ध्य ए जेम प्रमांत्री सजाही तेम ओकगावानां पण अनेक मुख्येसमें करपो अने अधीनी सेमस ए करपो तथा अर्थीनी पाछळ रहेकाँ पण आ पुरतकती मर्यादार्भा भा वनी बरत्कमोनी समावैश करबाने असमय इत अड़ी हो राजकीय मने सांस्कृतिक अगत्मनी बस्तुभानी साबोसाय माधाकीय भगत्यना पण वे मुद्दा नींधाया छ रोमांना केटसम्ब सरफ ध्यान दोर्य से पणानतुं भूष स्थान (मुक्तान), सौराष्ट्रतुं स्थान (थान), भने मुंबद पांपेनु स्वानक ( वाणा ), पर्माना 'स्वान ' स्था<del>गक</del> ' पदान्धोनो समेप मापा भने सामाबिक इतिहासनी दक्षिए विचारवा चेवो हे मुस्सान कम बान हो सुर्यपुत्रामाँ प्राचीम केलो हो. बाणा

विसे वर्षु संशोपन सावस्यक छे (४ २११) धारतना प्राचीन नगरोन अति साववो संस्कृत । इत ! भने प्राकृत ! कड ! पदान्त तथा भावा केवी मारतनी प्राचीन वसम्बतीनां केटकांक नगरीनां नामीनी

मामसिक क्छोनी एमांबी माळ मळशे

'कर्त ' पदान्त, ए सर्वनु साम्य पण ए ज रीते ध्यान खेंचे छे ( पृ. ४६–४७ ). ' गिरनार ' अर्वाचीन भाषामा पर्वतवाची विज्ञेषनाम छे, पण एनुं मूळ सस्इत 'गिरिनगर 'मा छे ( पर्वतनुं नाम तो उज्जयत छे ), अने 'कोडिनार', 'नार' वगेरे अन्य स्थळनामोमानो 'नार' पण संस्कृत 'नगर 'मांथी प्राकृत 'नअर ' द्वारा ब्युत्पन्न थयेली छे ( पृ. ६६). आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंगोमा, पुराणोनी जेम, अर्वाचीन भरूचने माटे, 'भरुकच्छ ' प्रयोगनी व्यापकता छे ए वस्तु मृचवे छे के ' भरूच 'नी व्युलित, सामान्य रीते मनाय छे तेम, संस्कृत ' मृगु-कच्छ 'मांथी निह, पण ' भरुकच्छ 'मांथी ' भरुखच्च ' द्वारा साधवानी छे (पृ ११०-१२). 'खेट' अने तेनी साथे संबंध धरावता नामोनी चर्चा अगाउ करेली छे. कुडुक ( पृ १५९ ), लाट ( पृ. १५९-६०), कोंकण (पृ ५३), महाराष्ट्र (पृ. १३५) आदि प्रदेशोनो भाषाना लाक्षणिक शब्दप्रयोगोनी नोंघ टीकाकारोए वारवार करेली छे एक प्रदेशनी भाषाना शब्दो वगर समज्ये वीजे बोलनार केवी रीते हास्यपात्र थाय छे ए पण वतान्युं छे ( पृ १३५ ).

लोकवार्ता अने पुराणकथा किन साहित्यनो एक मोटो भाग कथाप्रधान छे आगमसाहित्यना चार अनुयोगों पैकी एक कथानुयोग छे. मूळ आगमो तथा ते उपरनी चूर्णिओ अने टीकाओमां अर्ध-ऐतिहासिक कथाओं अने लोककथाओंनो विपुल मंडार छे. जैनोना कथासाहित्यना उदभव अने विकासनो तुलनात्मक अभ्यास ए एक स्वतंत्र विषय छे, अहीं केवळ आ पुस्तकने अनुलक्षीने प्रस्तुत कथ-यितव्य रज् कर्युं छे.

अगडदत्त (पृ १-५), अष्टण (पृ.६-८), इन्द्रदत्त (पृ.२३), कोकास (पृ.५०-५२) आदिनी कथाओ लोक-वार्ताओ छे, जो के एमा ऐतिहासिक अनुश्रुतिओना अंशो रहेला छे प्रभोवस भरकप्रनी उत्तरे आवेश मुसहद्वागन सगती वार्सा ( प्र ११५ ) तथा बौदो अने बैनोनी स्पर्धनि स्थातो केटसीक बार्तामो (कात प् १७२~७३) प्पण छोइन्डमाओ ज छ पादि जिला भाग (प ९८) भन नटपुत्र रोहकनी (पुरूप७-५८) हासर सवाबीनी वालोगांनी केटखीक पछीना समयमां राजा भोत्र सने कवि कास्टिश्त समा शक्यर अन विरवसने नामे चडेसी हाजरववानीनी वादी है भोरशासना प्रणेक्षा गणायेखा मुख्येबने हगती भिन्न भिग्न कबाओं (पु १८४-८८) पण छोक्त्यार्ताभोनी कोटिमां बहो, जो के मुसदेव पोते एक पेतिहासिक व्यक्ति हुए। पूर्व केटलाक विद्वानीर्न मेंत्रव्य के सर्वतिसकुमाछ, सशकुदापिता बाबच्चापुत्र आदिनों कथा-नको से स्रोहर जैन पुराणकवा (Mythology )ना जैश बनी गर्बा छ एमा पण होकबार्तानी तरका मिकित सबा हरा एवं स्वामाविक अनुमान बाब हे जैन भने बीद साहित्यमां छोकक्यामोर्नु न पम-कवामोमां स्रपान्तर करवामां भान्युं हे ए सिद्ध हकीकत है। मागळ वजीने एम पण कही शकाय के दुनियासरनी पुराणकवाओ अने देव-दबामोनो समादिबाळची होक्कवाओ साथे सैवंध रहेंहो छे यात्रबक्ळमां वयेछ। वागीसमा शीर्थेकर अरिष्टमेनि अववा

कवामोनो क्यारिकाळ्यो छोककवाको साथे सेकंप रहेको छे

यारवक्ष्यमा वर्षेका वार्षोसमा छीभँकर लारिकीम क्षवशः

अभिनाव क्रिकेना उन्केको का पुस्तक्ष्मां क्ष्मेक श्वके (यू २६, १९—
५०, ८ —८१, ९६, इस्वादि ) बोबामां क्षावशे छेको बीहण्यना
काकना दौकरा हता जैन साहित्यमां स्ववंत्र वारवक्ष्यकनो इतिहास
मीमनावना परिश्रनी कासपस गृंवायेको छे शक्षा पुराणोमां वारवोनो
इतिहास मुस्स कीशोमां देन साहित्यमां अपायेका क्षणायन साथे साथो स्वादि छे आत्र नेमिनावना केलाल्य, त्रानो मामोककेल पण प्रमां
मळतो गयो। बैन पर्मनी स्वापना महावीर करी नहोतो, महावीर हो
नवीन पर्मना प्रवरंक करलां प्रापीन सर्मना सुवारक क्षेत्र समुद्रासक
इता तेमनी प्रवेत्र वेत्रीसमा ठीककर पार्यनाय नि गृंकपणे ऐनिहासिक

व्यक्ति पुरवार थ्या छे अने ए सिवायना वावीस तीर्थंकरो पैको केटलाकनी ऐतिहासिकतानां प्रमाणो मळे तो नवाई जेवुं नथी चौद्ध ग्रन्थ 'महावग्ग' (१ २२. १३) अनुसार वुद्धना समयमां राजगृहमां सातमा तीर्थिकर सुपार्श्वनाथनु मन्दिर हतुं ए ज प्रन्थ जणावे छे के आजीवक संप्रदायनो उपक नामे तपस्वी अनंतनाथनो उपासक हतो. जैनो अने आजीयकोना गाढ ऐतिहासिक संपर्कनो विचार करता आ अनंतनाथ ते चौदमा तीर्थकर संभवे छे अलवत, आवां प्रमाणो तार्किक दृष्टिए सुपार्श्वनाथ के अनुतनाथनी ऐतिहासिकता पुरवार करे के केम ए विशे मतमेद रहेवानो, पण महावीरना समयमां तेमज ए पूर्वे प्राचीनतर तीर्थंकरो प्जाता हता ए हकीकत तो एमाथी निर्विवाडपणे फलित थाय छे नेमिनाथना विषयमां वात करीए तो, मात्र पछीना काळनां चरित्रोमां ज नहि, परन्तुं भाषा छंद तेमज अन्य दृष्टिबिन्दुए सौथी प्राचीन पुरवार थयेला मूल आगम्प्रन्थोमा नेमिनाथ विशे तेमज याद्वोना इतिहास विशे पु॰कळ सामग्रो मळे छे 'वसुदेव-हिंडी' जेवा प्राचीन कथाप्रन्थनो ठीक मोटो गणी शकाय एवो अश ए वृत्तान्त वडे रोकायेलो छे, ज्यारे वीजी तरफ पुराणादिमां भागवत संप्रदायना कथियतव्यने रजू करवामा उपयोगी श्राय एटले ज अंशे यादवकुळना वृत्तान्तनो विनियोग करवामां आव्यो छे आ वधुं जोतां नेमिनाथर्नु इतिहासमां अस्तित्व नहि होय अने तेओ केवळ देवकथानी ज व्यक्ति हरो एवो तर्क भाग्येज साधार गणारो पुराण-कारोए श्रीकृष्णना चरित्रनी कास्पास यादवकुळनो इतिहास ग्रंथवा माटे नेमिनाथना जीवनवृत्तान्तने जाणी जोईने पडतो मूक्यो हशे एवी कल्पना थाय छे.

जैन कथाओमा आवतां सावना तोफानो श्रीकृष्णनां वालचरित्रोनी याद आपे छे (पृ १८९-९२)

गुजरातना मध्यकाछीन इतिहासने छगती एक अनुश्रुति प्रमाण-

मां क्योंचीन कही शकाब एवी एक टीकामां नोपायसी छं भागीय स्त्रीनो कामना करतां मनुष्य हु सी बाय भने सीनी प्राप्ति यदा छवां पुत्रादिनो माध्यामी दुःसां बाय, ए सबदमां राजा सिदराज समस्टिन् उदाहरण टीकाकारे लाप्यु छं (पृ १९५), ते सिदराज माटे भा प्रकारनी किंबरत्ती कोकप्रसिद्ध हुए। एम स्वयं छे

भंते, मर्वादेश समयमां एकले हाये बहुं भागमसाहित्य समस बानो प्रमत्न ए दियो बहोळवा चेतु एक साहस हांद्र साथे शिक्षण अने सशोधननां बीजां कार्यो पण चालु रासवानां हतां चा वर्षा कारणीए तेमज मारी कणसमज के सरत्युकने कारणे का पुस्तकमां बूटीओ रहेवा पामी हते ते विद्यानी बतावणे सो उपह्रस बहुंस समाददर्शन

#### जाना स्वयान

बा पुस्तक तैगर करवाने काम सी पदेश मारा विवासक प् मुनिश्री पुण्यविश्वयातीने सोपार्ध्य इतं पण तेमोप मागमवामनार्म् भगीरम काम इावमां भीचे तथा कुगमग ए अरसामां गुबरात विभा समाना अनुस्नातक विमागमा नेगारी निमण्क बई पटक ए काम मने सोपायुं. भा कामने भैंगे वधा समय तमना तरफवी सूचना तेम ब बोईतां पुरवकोनी सहाम मळती रही हतो ए बदक तेमनी ऋणी भू मो च विद्यासकतमा सम्पक्ष औ. रसिक्कास छो. परीसने व्या भारते पुरतक छापना भागता पहेलां साचन्त नतान्यं हतां तेमतां सूबनाने परिणामे पुस्तदर्भुं मूस्य बच्धुं छे एम कद्देवामां 🛔 केदामात्र बायुकि करता नथी. भाषाम श्री जिनश्चिमजी बन पं सुसस्रक्रजी संपन्नी साथे पण भा कार्य भीग वसताननत चर्चा नई हसी और उमार्यकर जोगीहत 'पुरामोमां गुजरात' वा पहेलां प्रसिद्ध अमेर्छ छे पनी योग्रनातो साम स्वामाधिक रीते कही मने मञ्च्यो हतो. धने एकत्रित सामगीनी स्परस्थानी सम प्रमाणमां इछको धयो इतो था पुस्तकनी तैयारीनां प्रारभनां केटलाक वर्ष दरमियान अमे वन्ने भो. जे. विद्याभवनमां सहाध्यापको हता त्यारे एमनी साथे वारवार उपयोगी विचारविनिमय, अन्य उपरांत, आ काम अंगे पण थयो हतो. प्रूफ जोवाना तेमल मुद्रणनी व्यवस्थाना कार्यमां विधासमीना क्युरेटर अने गुजरातीना अध्यापक श्री. केशवराम का. शास्त्रीनी सहाय घणी मृत्यवान हती तथा डा हरिप्रसाद शास्त्री अने अन्य सहीध्यापिको साथे पण केटलाक अगत्यना मुद्दाओ अगे चर्चा-विचारणा थई हती. तपस्वी मुनिश्री कान्तिविजयजीए केटलाक प्रन्थो पूरा पाँडेचा हता तथा श्री घीरुमाई ठाकरे 'निशीथ चूर्णि 'ना टाइँप करेला पांच दुर्छम प्रन्थो उपयोग माटे मेळवी आध्या हता श्री. अंबालाल भाशाराम जेतलपुरियाए केटलुंक आगमसाहित्य तपासवामा सहाय करी हती, वडेादरा युनिवर्सिटीमा मारा सहकार्यकर श्री इन्द्रवदन अंवालील द्वेए आ पुस्तकनी सृचि काळजीपूर्वक तैयार करी आपी छे. ए सर्व सज्जनो प्रत्ये आ स्थले हुं कृतज्ञमाव व्यक्त करं छु

' अध्यापक निवास ' प्रतापगंज, चडोदरा ता. ११-४-१९५२

मोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा

### संक्षेप-सूचि

- भनु अनुयोगद्वार सूत्र मध्यारी हेमचन्द्रनी ष्ट्रिंसमैत प्रकाशक भागमेदय समिति, शुंबई, ई. स. १९२४
- धनुष् अनुसोगदार स्प्र-प्णि प्रकाशक श्रवमदेवजी केशरीसङ्खी श्रीतीवर संस्था रवसाम
- भनुहा अनुबोगदार सूत्र-हारिमदीना इति (ई स नो ८ मो सैको) प्रकाशक ऋषभदेवत्री केशरीमकश्री स्वेतीबर सैरबा. स्तकाम
- भनुदे भनुसीमदार स्व-मध्यारी देमअन्त्रनी इति (इ.स. नी १२ मी सेको) प्रकाशक भागमेवस समिति, मुबई, ई.स. १९२४ (उपर 'अनु 'बडे निर्दिय संस्कृत्य)
  - भरा अभिमान राजेन्द्र मन्त्र १ मी ७ संपादक विजयराजेन्द्रस्रि, रतसाम, ई.स. १९१६—१४
  - भाष् आदस्यक सुत्र-पूर्णि पूर्वमाग अने उत्तरमाग प्रकाशक ऋषमदेवजी देशशिमस्त्री श्वेतांवर सरवा, रतजाम भानि भावस्यक सुत्र-निर्मुक्ति (नीचे 'आम' बडे निर्दिट सरकरण)
  - शान शावसक सूत्र-नानुक्र (नाच लान बहानाइट सहस्त्य) शाम शावसक सूत्र-आशार्य सहस्वितीत इति (ई.स. नो १२ सो सैको) मान १ घो १ प्रकारक शामनोदय समिति, सेवई ई.स. १९२८-३०
  - मुबर् इ.स. १९२८-घ>
    भाशी भाषारीम सूर-शीडांकरेवनी शृषि (८ मा सैका भासपास),
    माग १-२ प्रकाणक भागमेरम समिति सं १९७२-७२ एतं पुन्तपुरण नेतानंद पुरवकालय, मृत्व तरफ्बी
    बर्षु छ
    भागुच् भाषारीम सूत्र-वृत्ति कर्ता जिनदासमणि महत्तर (ई

स नो ७ मो सैको ) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांवर संस्था, रतलाम, सं १९९८

आह : आवश्यक सूत्र-हरिभद्रसूरिनी वृत्ति (ई. स. नो ८ मो सैको): प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फड, सुगई

आहेहा: मलधारी हेमचन्द्र (ई स. नो १२ मो सैको) सूत्रित हारिभदीय आवश्यकवृत्तिटिप्पण: प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्वार फड, सुबई, ई. स. १९२०

स्रोनिद्रो : ओवनिर्युक्ति-द्रोणाचार्यनी वृत्ति (ई. स. नो ११ मो सैको) : प्रकाशक भागमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७५

ओनिभा · ओवनिर्युक्ति—भाष्य, ( उपर 'ओनिद्रो' वहे निर्दिष्ट संस्करण )

औसूअ शीपपातिक सूत्र-अभयदेवस्रिनी वृत्ति (ई स. नो ११ मो सैको ) प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७२

अंद अंतकृत्दशा सूत्र: प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७६ अंदब् अंतकृत्दशा सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई स. नो ११ मो सैको)

( उपर 'भद' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

उ : उत्तराध्ययन सूत्र

( नीचे 'उशा' वहे निर्दिष्ट सस्करण )

उक 'उत्तराध्ययन सूत्र—उपाध्याय कमलसंयमकृति टीका (सं १०४४=ई स. १४८८) सपादक मुनि जयंतविजयजी उच्च उत्तराध्ययन सूत्र—चूर्णि अकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांवर जंग्या प्रवलाम मं १००८

विन : उत्तराप्ययन स्त्र-निर्मुष्ठि ( मीच 'उद्या' बढे निर्दिष्ट संस्करण )

उने उत्तराज्यस्य सूत्र-नेसिक्श्द्रती इति (सं ११२९=ई स १०७२) संपानुक विद्यस्टमंगसूरि, सं १९९३

तका उत्तराध्यक्त सूत्र-काल्तिस्राती कृषि (ई.स. नो ११ मो सैका) श्रकाशक दें स्मृधिन पुरतकोद्धार फड, माग १ सने २,सं १९७२, माग १,सं. १९७३

ककि कम्पसूत-उपान्माय मर्गसागरक्त किरणावकी टीका (सं १६२८=ई स १५७२) सेपायक पं दालीयजय, मादनगर, सं. १९७८

कको कम्पसूत-अपान्माय सातिसागरकृत कोमुखो होका (सं १७०७-ई स १६५१) प्रकारक कपमदेवजी केसरी-मस्त्री श्वेतांबर संस्का, रहस्रम, स १९९२

कर्ती कामसूत्र-त्रमवित्रपहरा क्रियका टीका (स १९७८=ई स १९२१) संगयक पं मध्यक्षक कोरपंत, प्रकारक महोपाप्पाम मशाविक्रम पुरकक्किम, रामसपुर, सं १९०१ कस : कामसत्र-त्रपाप्पाम विस्मविकायका सकोधिका सीका (स

क्ष्मः कम्पत्त्र-द्याच्याय वित्तमिकसम्बस्य स्वोधिका टीका (स १६९६⊏ई स १६६०) अकाशक दे का बैन पुरतकोतार केंद्र, स्तृत, सं १९६७

क्रम् कन्यस्य-सरसराष्ट्रीय जिन्त्रमस्रिकत सर्वहरियोगिन टीका (स १९६८—ई स १६०८) संपादक प हीरस्थाछ इस्तास कामनगर, स १९६९

चै चैताविकाम प्रकीणोक ( प्रकीणकात्रशक्त मां गुनित, प्रकाशक

आगमोदय सिमिति, मुंबई, सं. १९८३). अलग पण छपायुं छे ' संपादक विजयक्षमाभद्रसूरि, पाटण, सं १९९७ जिरको ' जिनरत्नकोश हरि दामोदर वेल्लणकर, भाग १, पूना, ई. स १९४४

जीकचू : जीतकल्पचृणिं : सपादक मुनि जिनविजयजी, अमदावाद, सं १९८३

जीकचूच्या जीतकल्पचूर्णि: विषमपद व्याख्या—कर्ता श्रीचन्द्रसूरि (सं. १२२७=ई स ११७१) (उपर 'जीकचु' वडे निर्दिष्ट सस्करण)

जीकमा: जीतकल्पभाष्य:

( नीचे 'जीकसू' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

जीकस् जीतकल्पस्त्र-कर्ता जिनमद्रगणि क्षमाश्रमण (ई. स. नो ७ मो सैको) संपादक मुनिश्री पुण्यविजयजी, अमदावाद, स. १९९४

जीम जीवाभिगम सूत्र—आचार्य मस्यगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२ मो सैको) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई

जेस्: जेसलमेर भाडागारीय प्रन्थस्चि प लालचंद्र भगवानदास गांघी, वडोदरा, ई स. १९२३

जैसाइ जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास श्री. मोहनलाल दलीचंद देसाई, मुंबई, ई स १९३३

जंप्र • जबुद्दीपप्रज्ञपि

( नीचे 'जैशा' वहे निर्दिष्ट संस्करण )

जंप्रशा · जबुद्दीपप्रश्नि-वाचक शान्तिचंद्रनी वृत्ति (सं. १६५० = ई. स. १५९४) प्रकाशक दे. हा जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं १९७६

ज्ञाभ आताममैक्या सूत्र

(नीचे झाधन वडे निर्दिष्ट संस्करण)

ज्ञापक आतापर्यक्रभा सूत्र-समयदेवस्तिनी इपि (स ११२० व्हर्ष १०६२), प्रकाशक भागमीद्रय समिदि, सुबई, ई स १९१६ अयोकम अयोगिक्दरंबक-मस्त्रमिनितनी इपि (ई स नो १२ मो सेको) प्रकाशक जन्मदेवयों केस्त्रीमस्त्रस्ती वेर्नासर

सरबा, रतसमा, स १९८२ मोडि ऑफ्रीफिकप डिवशनेरी बीफ बेंग्स्मन्ट बोड मिडीक्स इस्टिया नैरकस्ट हे, स्टन, ई स १९२७

दवै दशवैकाधिक सूत्र ( नोचे 'दवैद्वा' वहे निर्दिष्ट संस्कृत्य ) दवैज्ञ दशवैकाधिक चूर्णि-विनदास्त्राणि महस्तरुत्य (हैं स नो

भो तैका) : प्रकाशक व्यवपदेवजो केशारीमस्त्रची
श्वेतावर सैर्या, रतसाम, स १९८९
व्यवस वरावेकास्थिक स्व-समयसुन्वरकत टीका (सं १६९०
व्यवस वरावेकास्थ्य स्व-सामयसुन्वरकत टीका (सं १६९०
वित्यवस स्वि १९७०
व्यवस वरावेकास्थ्य स्व-सारिमर्शमा वृष्टि (ई स मी शास्त्रमा

हैको ) प्रकाशक दे का जैन पुरस्कोद्धार प्रेड, से १९७४ तिम् मिशीस सुज-पूर्णि (टाइप करकी नक्का) : संपादक कापार्थि

निवस्त्रेतसूरि साग १ वी ५ सं. १९९५-९६ निमा निशीय सुब-भाष (उपर 'निष्य' यहे निर्देश संस्कृतण) नंचू ' नदिसूत्र चूर्णि-जिनदासगि महत्तरकृत ( ' स. नो ७ मो सैको ) प्रकाराक ऋषभदेवजी केरारोमळजी श्वेतावर संस्था, रतलाम, रे. स. १९२८

नंम : निद्सूत्र-आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स नो १२मो सैको ) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९२४

नंसू : नंदिसूत्र

( उपर् 'नम' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

नंहा ' नंदिसूत्र-हारिभद्रीया वृत्ति ( ई स नो ८ मो सैको ) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, ई स १९२८

पाय : पाक्षिकसूत्र-यशोदेवसृरिनी वृत्ति (सं ११८८=ई स. ११२४) प्रकाशक दे हा जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुबई, सं १९६७.

पिनिम : पिंडनिर्युक्ति-भाष्य अने मलयगिरिनी टीका ( है. स नो १२ मो सैको ) सिंहत प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं १९७४

पुगु पुराणोमां गुजरात : उमाशंकर जोबी, अमदावाद, ई स १९४६ प्रच : प्रमावकचरित ( सं १३३४≔ई स १२७८ )—प्रमाचन्द्र-स्रिकृत : सपादक मुनि जिनविजयजी, अमदावाद-कलकत्ता, ई. स १९४०

प्रम ' प्रज्ञापना सूत्र-मलयगिरिनी वृत्ति ( है. स नो १२मो सैको): प्रकाशक भागमोदय समिति, मेसाणा, पूर्वार्घ-उत्तरार्घ, सं १९७४-७५

प्रन्या • प्रश्नन्याकरण सूत्र ( नीचे 'प्रव्याक्ष' वडे निर्दिष्ट संस्करण ) प्रम्माभ प्रशन्याद्ररण सूत्र-अभयदेवस्रिनी वृति (ई स नो ११ मा सैको ) प्रकाशक भागमोदय समिति, मेसाणा, र्स १९७७

प्रस् प्रज्ञापना सूत्र प्रकाशक मागमोद्रय समिति, मेसाणा, पूर्वीर्य न्तरा**घ स १०७४-७**५

**वकः बहुत्करूपसूत्र स्वादकः मुनिधी बहुरविशयश्री अने मुनिश्री** पुण्यविजयमी, मारा १ थी ५, मावनगर, है स १९३३-३८; इहो प्रन्थ हुनै पछी प्रसिद्ध यहो.

बढ़हे। बहुत्हम्पसूत्र-भाषार्ये धेमद्रोतिनी श्रुति (सं १३३२**ः**ई स १२७६) ( उपर 'युक्र' यहे निर्दिष्ट संस्करण )

वक्षमाः वृहरकत्पस्त्र-संपदासगणि क्षमाश्रमणास्त भाष्य (है स ना ६डा संडा भामपास )

( उपर बक्त बड़े निर्दिष्ट संस्करण )

बद्धमः बद्दस्टप्पगूत्र-भाषार्यं सप्तर्यागरिनी पीठिका इष्टि (ई. स. मो १२मो सङ्ग )

( उपर 'बर्फ' बड़े निर्दिए संन्करण ) मप मन्त्रपतिता मदीगक ('प्रकीर्गक्दशक मां मुदित ) प्रकाशक

भागमोर्य मर्मिन संबर्ध सं १९८३ बन् मगरनो स्वः प्रचाणक शाममोदव समिति माग १-२,

भगवाबाट सं. १९८२-८५ मगुच मगरतेस्य स्मापतेचम्सिती वृति (सं ११२८=६ स

1000)

#### ( उपर 'भस्र' वडे निर्दिष्ट सस्करण )

मस . मर्णसमाधि प्रकीर्णक ( 'प्रकीर्णकदशक 'मा मुद्रित ) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं १९८३

राप्रम राजप्रश्नीय सूत्र—मलयगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२ मो सैको) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं १९८१ विको विशेपावस्यक भाष्य—कोटचाचार्यनी वृत्ति (ई स. ना ८मा सैका आसपास) प्रकाशक ऋपभदेवजी केशरीमलजी

श्वेतांबर संस्था, रतलाम विभा : विशेषावश्यक भाष्य—कर्ता जिनभदगणि क्षमाश्रमण (ई स ना ७ मा सैकानो प्रारंभ ) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरी-

विस् विपाक सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई स नो ११मो सैको): प्रकाशक आगमोदय समिति, सं १९७६

मलजी येतांवर सस्था, रतलाम

वृद ' वृष्णिदशा (निर्यावलिका 'मां मुद्रित ) प्रकाशक आगमोदय समिति, सं १९७८

ववृ ' वन्दारुवृत्ति-श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र उपर देवेन्द्रसूरिनी वृत्ति ( इ स नो १३मी सैको ) प्रकाशक दे ला जैन पुस्तकोद्वार फंड, मुबई, सं १९६८

व्यमा व्यवहार सूत्र-संघढासगणि क्षमाश्रमणकृत भाष्य (ई स ना छड़ा सैका आसपास)

( नीचे 'व्यम' वहे निर्दिष्ट संस्करण )

व्यम व्यवहार सूत्र-मलयगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२मो सैको ): संपादक मुनि माणेक, अमदावाद

श्राप्तर श्राद्वप्रतिक्रमण स्त्र- रत्नरोखरस्रिनी वृत्ति (सं १९४६=

ई स १४४०) प्रकाशक दे ला जैन पुरसकोदार फंड, मुम्ह सं १९६८

सस्यमः समकायांग स्व=-वमयदेवस्तिनी दृति (सं ११००० ई स १०६४) प्रकाशक लागमोदम समिति, सुवर्ध स १९७०

श्चकच् स्वकृतांग सूत्र-चिनवास्ताणि महत्त्वाक्त वृणि (ई.स.नो ७ मो सैको ) प्रकाशक ऋषमदेवत्री केशसीमस्त्री वेणीवर सस्या रतस्त्राम स १९९८ सक्त्रा स्वकृतांग सुत्र-सीम्पोक्टेवनी वृत्ति (ई.स.ना ८ मा सैका

आसपास) प्रकाशक भागनेष्ट्रम समिति मेसाणा स १९७३ सुमनः सुर्वेत्रज्ञनि-मक्सपीगिती इति (ई.स.नो १२मो सैको)

प्रकाशक आगमीत्व समिति, स १९७५ संग्र संस्तारक प्रकार्णक ('प्रकार्णकत्वक 'मां मुद्रित) प्रकारक

शारामोत्रम समिति, ग्रेवा स १९८२ स्वास्म स्वानीय स्प्र-जमयदेक्युनिती दृष्ठि (सं ११२०=ईस १०६४) प्रकाशक शारामेदय समिति भाग १--२,

से. १९७६

## सन्दर्भसूचि

[ षा पूर्वे निर्देशायेला उपरात उपयोगमा लेवायेला महत्त्वना मन्योनी सूचि ] आगमसाहिन्य

अनुत्तरोपपातिकदशा सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स.नो ११मो सैको) समेत प्रकाशक आगमोदय समिति, स. १९७६

उपासकदशा सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स नो ११ मो सैको ) समेत प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७६

दशाश्रुतस्कन्ध-संपादक उपाध्याय आत्मारामजी पंजाबी, जैन शास्त्रमाला नं १, लाहोर, स. १९९७

निर्याविका (किप्या, कप्पवडंसिया, पुष्फया, पुष्फचृिलया, विद्विद्या, पुष्फचृिलया, विद्विद्या, प्राच सूत्रो )—श्रीचन्द्रसूरिनी वृत्ति (सं. ११२८=ई स. १०७२) समेत प्रकाशक आगमोदय समिति, सं १९७८

प्रकीर्णकदशकम् (चरसरण, आतुरप्रत्याख्यान, महापरिज्ञा, मक्तपरिज्ञा, तदुछवेयाछिय, संस्तारक, गच्छाचार, गणिविद्या, देवेन्द्रस्तव, मरणसमाघि ए दश प्रकीर्णको ) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं १९८३

श्रमणप्रतिक्रमण सूत्र वृत्ति-पूर्वीचार्यकृत . प्रकाशक दे छा जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं १९६७

#### इतर साहित्य

धर्लो हिस्टरी बाफ इन्डिया विन्सेन्ट स्मिथ, ४ श्री बावृत्ति, बाक्सफर्ड, ई स १९३२

अलंकारसवेस्व (रुध्यककृत) संपादक प. गिरिंजाप्रसाद द्विवेदी, २ जी आवृत्ति, मुंबई, ई स १९३९ बातु, भाग १ ध्रांत अयंत्रविजयकी, उर्वेत, ई स १९६६ इतिहासनी केटी : भोगीलसम्ब अ साबिसरा, वजीवरा, ई स १९६५

इन्हिया विश्व दिस्काइम्ड इन भी सहीं टक्स्ट्स विक्त मुद्रिक्षण वेग्ड नैनिक्रम विभवायरण वेग व्हान, ई.स. १९४१

इन्डो-भायन के द हिन्दी सुनीतिकुमार चेटरची, समदासाद, ई स १९७२

उण्डियनी इन ब्रॅड्स ट इश्विया विमक्तापरण हो, कल्कणा, ई.स. १९४४

के कर्पोरिटिव भेग्ड इटिमोडे/जिक्छ दिवसनरी भेग्फ थी नेपासी

सेंग्वेज राम्फ छोड़ी टर्नेर खड़न ई स १९३१ को हिस्सी बीफ इंडियन सिटर्बर बेल्यूस र ज़ु केंस

बिटानिस, बस्क्सा, ई.स. १९३३

के दिग्दरी के क इंग्योर्टर केंग्स्मन्ट राज्यस केंग्ड सिटीस इन गुमरात के इ कारियाबाइ अनेत सदाशिष सप्टोकर सुबई है स १९२६

कैसिक्।सिक संशायन दुर्गाशकर केवन्द्रशम शाका), मुंबई, ई स १९४१

कर्तिगाईं स अस्यग्ट स्थोजको आफ इन्डिया : संपादक सुरेन्द्र नाथ मजमूतार शासी कसकता, है स १९२५

करकद्दरित (कनकामरहत) सेपाइक होगमास जम् कार्यका है स १९३४

कार्या इ.स. १९२४ कार्यसी (बानमाइट्टा) निर्णयमाणर प्रेसी साटणी भाषाति, सर्वार्टम १९२८ कान्यानुशासन (हेमचन्द्रकृत), भाग २ जो, प्रस्तावनाः रसिकलाल छो परीख, मुंबई, ई स १९३८

कुमार (मासिक)

१९३२

कॅम्ब्रिज हिस्टरी ओफ इन्डिया, बेन्युम १ ( ॲन्स्यन्ट इन्डिया) संपादक इ जे रॅप्सन, कॅम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, ई स १९२२

खंभातनो इतिहास : रत्नमणिराव भीमराव जोटे अमदावाद, ई स १९३५

गुजराती साहित्यसंमेलन : १२मु अविवेशन अहेवाल अने निवंधसंग्रह, अमदावाद, ई स १९३७

गाथासप्तराती (सातवाहन हालकृत) संपादक पं मथुरानाथ शास्त्री, ३ जी आवृत्ति, मुंबई, ई स १९३३

गुजरातनो मध्यकाछीन राजपूत इतिहास, भाग १–२ दुर्गा-राकर केवळराम शास्त्री, अमदावाद, ई स १९३७–३९

गुजरातना अतिहासिक छेखो. भाग १ . संपादक गिरिजाशंकर: वह्नभजी आचार्य, मुंबई, ई स १९३३

चतुर्भाणी : संपादक एम. रामकृष्ण किन अने एस रमानाथ शास्त्री, पटणा, ई स १९२२

चत्वारः कर्मप्रन्था (देवेन्द्रसूरिकृत ) : संपादक मुनि चतुर-धिजयजी, भावनगर, ई. स १९४७

जर्नल ओफ घी ओरियेन्टल इन्स्टिट्यूट (त्रैमासिक) जैन साहित्य और इतिहास: नाथुराम प्रेमी, मुंबई, ई. स. १९४२ जैन साहित्य संशोधक (त्रैमासिक) जैनिसम इन नार्थ इन्डिया सी जे शाह, मुंबई, ई स टाइन्स इन अंश्याट इन्डिया विसस्प्रमरण छो, पूना, ई स १९७३

हाइनस्टिस ओफ भी कृष्टि पत्र लेक इ पार्किटर, भीक्स्फर्ड गुनिवर्सियो प्रस, हे स १०१३

दिक्शनरी बीक्त पासि प्रें।पर नेम्स, माग १-र भी पी मखास-सेकर, कंडन, ई स १९६८

तत्त्वार्भसूत्र (बाचक उमास्वातिकृत) संपादक प सुल्ल<del>णाव्यी,</del> २ भी आकृति, समयाबाद है स १९४०

संबोपाल्यान संपादक सोनशित शाको, विवेन्दम्, हे स १९३८

क्षिपरिशासकापुरुपवरित्र (भावामे हेमपण्यकरः) आधनगर, हैं स १९०६-१६

दशकुमारभरित (देशीकत) : सेपादफ नारायण बाङकण्य गादशके भन टी. वेंकटराम शास्त्री ८ मी भाषां मुन्ही ई स १९९७

नेश्वामृर्विप्रकरण भने स्रपमेदन संगादक उपेन्यमेख्न संस्थि शीर्व करूकण, है सं १९३६

इयाम्य महाकाम्य (भाषार्य हेमचन्त्रकृत ), प्रश्व १०२ र्रुपारक मावायो विष्णु कायवटे, मुंबई १९१५-२१

पूर्णान्यान (हरिमद्रस्रिक्त ): संपादक आदिनाथ नेमिनाध उपाया सुवह इ स १९७७

निपंदु भादश पूर्वाचे-क्सरायं वैय बायासास ग शाह, हांसीट, इ.स. १९२७-२८ निर्वाणकिका (पाटलियाचार्यकृत) स्वादक मोहनलाल भग-वानदास झवेरी, मुंबई, ई स १९२६

निह्ववाद . मुनि धुरंधरविजयजी, भावनगर, ई. स १९४७

न्यायावतारवार्तिक वृत्ति (पूर्णतलगन्छोय शान्तिमूरिकृत) संपादक पं. दलपुख मालवणिया, मुंबई, ई. स १९४९

न्यु इन्डियन एन्टिक्वेरो (मासिक)

पाइअ-सद-महणावो . पं. हरगोविन्ददास त्रीकमचंद शेठ, कलकत्ता, ई. स. १९२३-२८

पुरातन प्रवन्धसंप्रह : संपाटक जिनविजयजी मुनि, कलकत्ता, ई स. १९३६

पोलिटिकल हिस्टरी ऑफ ॲन्श्यन्ट इन्डिया हेमचन्द्र राय-चौधरी, ३ जी आवृत्ति, कलकत्ता, ई स १९३२

पंचतंत्र : संपादक अने अनुवादक भोगीलाल ज सांडेसरा, मुंबई, ई स १९४९

प्रतिज्ञायौगन्धरायण (भासकृत) स्पादक टी गणपितशास्त्री, त्रिवेन्द्रम, ई स. १९१२

प्रवन्धकोश (राजशेखरसूरिकृत) संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई स. १९३५

प्रबन्धचिन्तार्माण (मेरतुगाचार्यकृत) स्पादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, दे स १९३३

प्रमेयकमलमातिंड ( प्रभाचन्द्राचार्यकृत ) · संपादक प महेन्द्र-कुमार शास्त्री, २ जी आवृत्ति, मुंबई, ई. स १९४१

ं प्रेमी अभिनंदन प्रन्थ, टीकमगढ, ई. स १९४६

टाइम्स इन जेंद्रमण्ट इन्डिया निमलायरण स्रे, पूना, ई स १९७३

द्वाइनेस्टिम लेकि थी कांस एक लेक इ पार्किटर, नौक्स्फर्क युनिवर्सिटो प्रस ई स १०१६

डिक्शनरो झेंग्ड पाछि प्रोंधर नेम्स माग १-२ जी पी. मछाप्र-सेकर, खंडन ई. स. १९३८

ठावाधसूत्र (यायक उमास्वातिकत) सेपादक प सुसरकारणी, २ जी भारति, समयाबाद, ई. स. १९४०

तंत्रोपाइन्यान संपादक सांबक्षित शास्त्री शिवन्त्रस्, ई स १९३८

त्रियष्टिशनाकापुरुषपरित्र (भाषासै इसचन्द्रकृतः) सावनगर, है स १९०६-१३

दशकुमारचरित (वैश्वीकृत) । संपादक नारायण मानकृष्ण गाडवाके भन टी बेक्टराम शास्त्री ८ मी आइति प्रवर्ध है स १९१७

देवतामूर्तिप्रकरण भन ऋषमंद्रन सपादक उपेन्द्रमोहन सांस्य तीर्थ करकता है स १९३६

हचासम महाकाम्य (काषार्व हेमअन्तकत ), पत्व १०२ : संपातक मावाजी विष्णु कावक्टे सेवर्ड १९१०-२१

पूर्तांक्यान (इरिमन्द्रस्टिक्त ) । संपादक आदिनाय नेविमाय उपाप्ये संवर्ध ई स १९२२

निषंटु आदर्श पूर्वर्थ-उत्तर्गके वैध वापास्त्रक ग शाह, हांसीट है स १९२७-२८ वसुदेव-हिंडी : प्रथम खंड (संघदासगणि वाचककृत) : भाषान्तर : भोगीलाल ज. सांडेसरा, भावनगर, ई स १९४६

वसुदेव-हिंडी प्रथम खंड (सघदामगणि वाचककृत) मृह संपादक मुनि चतुरविजयजी अने मुनि पुण्यविजयजी, भावनगर, ई. म १९३०-३१

वसंत रजतमहोत्सव स्मारक प्रन्थ, अमटावाद, ई. स १९२७

विविध तीर्थकरप (जिनप्रभम्रिकृत) संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई स. १९३४

वीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना । मुनि कन्याणविजय, जालोर, सं. १९८७

शाखेश्वर महातीर्थ मुनि जयंतिवजयजी, उज्जैन, सं. १९९८

श्रमण मगवान महावीर . मुनि कल्याणविजयजी, जालोर, सं. १९९८

श्रीकालककथासंप्रह संपादक पं अवालाल प्रेमचंद शाह, अमदावाद, ई. स १९४९

सन्मतिप्रकरण (अनुवाद अने प्रस्तावना) पं युखलालजी सघवी अने पं वेचरदास दोशी, अमदावाद, ई स. १९३२

सरस्वतीपुराण संपादक कनयालाल भाईशंकर दवे, मुंबई, ई. स १९४०

सिलेक्ट इन्स्त्रिप्शन्स वेरिंग ञान इन्डियन हिस्टरी ॲन्ड सिविलाइझेशन, वॉ. १ सपादक दिनेशचन्द्र सरकार, कलकत्ता, ई स १९४२ बुद्धिरट इन्डिया रहाइस केविक्क, न्यूयोर्क, ई.स. १९०६ बृद्ध कथाकीस (हरिपेणायामें इन्त ) संगादक काविनाव नीमनाय उपाच्ये, प्रवर्ष ई.स. १९४२

मानत के प्राचीन केन वीर्थ हो जनदीशस्त्र जैन, बनारस, ई स १९५२

भारतीय विशा (अंग्रेजी मासिक)

मारतीय विवा (हिन्दी-गुजराती वैमासिक) मराठी स्पूरविकोश कण्णाची पांडरंग कुछकर्णी, संबर्ध है स

९९६ महाबीर कैन विशास्त्रय रचत महोत्सव प्रत्य, मुंबई, हूँ सः १९२९ मास्त्रिया कैमेमोरेशन बेल्यूम, बनारस हिन्तु, श्रुनिवर्सिटी, ई

माकविया क्रेमेमोरेशन बेल्यूम, बनारस दिन्तु शुनिवर्सिटी, ई स १९६२

मेमदूर (कास्त्रिमक्ति) सपादक बासुदेव सरमण शाकी पणशीकर १४ मी बाइचि, सुर्क्स, ई.स. १९३५

मोदेश मणिकान मूळचेत्र मिक्सी, बहोदरा ई स १९३९ स्मार्क इन चेन्द्रमाट इन्डिया यह डिपिक्टेड इन वी जैन

केनत समरीशक्त सेन, मुंबई ई स १९२७ सहरू आफ देमकलापार्य : से ध्योर्क स्पूक्त, अनुवादक से

मिनिस्त पटेस कान्तिनिकेतन, ई.स. १९३६ सीकादह ब्हा (कोठहरूबत) । संपारक हो। ए एन उपान्ये

मुक्ट, हें सं १९४९ केसपबित संपादक सी, की, व्हाल, बडोदरा, हें सं १९३९

बदनगर कनैमाशास माईएंकर दवे, बहोदरा, ई स १९३७

वसुदेव-हिंटी प्रथम खंड (सघदासगिण वाचककृत) : भाषान्तर : भोगीछाछ ज. साडेसरा, भावनगर, ई. स १९४६

वसुदेव-हिंडी प्रथम खंड (संघटासगिण वाचककृत) म्ह संपादक मुनि चतुरविजयजी अने मुनि पुण्यविजयजी, भावनगर ई. स १९३०-३१

वसंत रजतमहोत्सव स्मारक प्रन्थ, अमदावाद, ई स १९२७

विविध तीर्थेकल्प ( निनप्रमस्रिकृत ) : संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई स १९३४

वीरनिर्वाण संवत् और जैन काछगणना मुनि कन्योणविजय, जालोर, सं १९८७

शालेश्वर महातीर्थ मिन जयंतिवजयजी, उज्जैन, सं. १९९८

श्रमण मगवान महावीर . मुनि कल्याणविजयजी, जालोर, सं. १९९८

श्रीकालककथासंग्रह संपादक पं अवालाल प्रेमचंद शाह, अमदावाद, ई. स १९४९

सन्मतिप्रकरण (अनुवाद अने प्रस्तावना) पं सुखळाळजी संघवी अने पं वेचरदास दोशी, अमदावाद, ई स. १९३२

सरस्वतीपुराण संपादक कनयालाल माईशंकर दवे, मुंबई, ई स १९४०

सिलेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स वेरिंग जान इन्डियन हिस्टरी ॲन्ड सिविलाइझेशन, वा. १ सपादक दिनेशचन्द्र सरकार, कलकत्ता, ई स १९४२ बुक्तिर हिंदग रहाइस बेविड्स, स्पूर्याके, हे स १९०२ बृहत् कमाकोल (देरियेणाचार्य इत) संपादक आदिनाम नेमिनाच त्याच्या, ग्रावह है स १९०२

सारत के प्राचीन जैन तीर्ष हो अवद्यीसक्त्य कैन, बनारस, ई स १९५२

भारतीय विद्या ( सीमेजी भासिष्क ) भारतीय विद्या ( हिस्सी-गुष्तराती श्रैमासिष्क )

मराठी न्युत्पविक्रोश कणानी पांतुरंग कुककणी संबंह है स १९२६

महाबीर बैन विचाक्य रजत महोत्सव रूप, मुंबई, हूँ स १९४१ माम्रविया केमिमीरेशन वेस्त्यून, बनारस दिन्तु गुनिवर्सिटी, है स १९३२

मेपर्त (काष्टिशासकत) सपायक वासुदेव स्टब्स्मण शाकी

पंगतीका १६ मी बाइति, गुंबई ई स १९६० मोदेश मणिकाल मृत्यंदि मिली, बहोदरा ई स १९६५

बाइफ इन भेन्द्रमाट इन्द्रिया एक विधिकटेड इन भी द्रीन केनम अवस्थापक केन्द्रमाट प्रकारिक केन

केतन संगत्रीशमन्त्र जैन, सुन् हें स १९८७ समय केन्द्र नेगान्त्रतामक के के

सन्दर्भ भोतः हेमपन्तापार्य है। भ्योर्क स्पूक्त, अनुवादक है। मिलस्स परेख शान्तिनिकेतन, है स १९३६

माणसम्ब परेख साम्बिनिकेटन, ई.स. १९३६ बीधनद कहा (कोटदंबक्टन) स्थानक हो। ए. एन उपान्ये,

अबर, ई. स. १९४९ असम्बक्ति संगानक सी. जी दकाल, नडोदरा, ई. स. १९१५

वडनगर कनैयाशास माईर्यक्त तके, बहोतरा, ई स १९३५

## शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पक्ति	सञ्द	शुद्ध
S	26	मारी	मारी
२३	<b>ਹੋ</b> ੜੀ	नाम	नाग.
३८	4	पारमकुल	पारम कूल
४३	80	π	अ
५१	३	इर्प्यान्त्र	ईर्प्याञ्ज
६१	v	हती	हतो
७०	१४	टिकाकारोए	टीकाकारोए
१३०	<b>१</b> १	'जंबुद्दोपप्रज्ञाप्ति'	'जबुद्रीपप्रजिभ'
१८२	ц	तथा तथा	तथा
१८३	4	'वसुदेव विंडी'	'वसुदेव-हिंडी'
१९६	२०	<b>अर्वाचीत</b>	अर्वाचोन
१९९	१२	ताम्रलिप	ताम्रहिप्ति

स्टोरी बेंग्फ कालक नोर्मन बाउन, बोविंग्टन, ई स १९६६

रमविरायछित्ररित जमना वरिद्रिग्ध पर्व (भानार्य हेमनन्द्रहरू) संपादक इमन याकोशी, २ वी आइंडि क्रम्कचा, ई. स. १९१२

स्यादादममरी (मल्फिपेणकृत ) सपादक आनंदरीकर बापुमाई धव, सर्वा, ईस १९३३

इम्मीरमदमदेन नाटक (अयसिंहसुरिक्त ) संपादक चिमनसास बाद्याभाई दस्रख वडोदरा, ई.स. १०२० हेमचन्द्रामार्थ भूमकेतु मुंबह है स १९४०

हैमसमीका मञ्चल्यन मोरी, अमदावाद, ई.स. १९०२

~(A)(A)

# जैन आगमसाहित्यमां गुजरात



#### अगहद्त्र ं

अगडदत्तनी कथा उत्तराच्ययन सूत्र (अध्ये. ४) उपरनी शान्तिसूरिनी वृत्ति (पृ २१३-१६)मा तथा ए ज सूत्र उपरनी नेमिचन्द्रनी
वृत्ति (पृ ८४-९४)मा भाने छे. शान्तिसूरिकृत वृत्त्यन्तर्गत कथा
प्रमाणे, अगडदत्त उज्जियनीना जितशत्रु राजाना रिथक अमीघरथनो
पुत्र हतो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, शंखपुरना राजा युन्दरंनो पुत्र हतो)
पिताना मरण पछी अखिवधा शीखना माटे ए पिताना एक मित्र पिसे
कौशाबीमा गयो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, अगडदत्तना स्वच्छंदाचारथी कंटाळी
राजाए एने देशवटो आप्यो, वाराणसीमां पवनचंड नामे एक कलाचार्य
साथे परिचय थतां एने त्यां रही अगडदत्त अभ्यास करता लाग्यो).
त्या निद्या गछी गुरुनी आज्ञा छई पोतानी प्रवीणता दर्शाववा
माटे ए राजकुलमा गयो, नगरमा अश्रुतपूर्व सिवच्छेद करता—खातर
पाडता एक चोरने पकडी लाववानी राजाए सूचना करता एणे युक्तिपूर्वक ए चोरने तेम ज एणे एकत्र करेलो मेडार साचवनारी एनी
बहेनने—बन्नेन पकडी लीधा

शान्तिस्रिनी वृत्तिमा अगडदत्तनी कथानो आठलो ज अंश आवे छे, पण नेमिचन्द्रदाळी कथामा प्रसगिवस्तार लांबो'छे. चोर पकडवाना एना पराक्रमथी प्रसन्न थईने राजाए अगडदत्तने पोतानी पुत्री कमल-सेना परणावी कमलसेनाने तथा अगाउ कौशाबीमा अखविद्या शींखतां जेनी साथे पोताने प्रेम थयो हतो ते, श्रेष्ठी बंधुदत्तनी पुत्री मदनमंज-रीने साथे लईने मार्गमा अनेक पराक्रम करतो अगडदत्त घरा जाय छे अने सुखपूर्वक रहे छे, पण एक वार पोतानी परनीनु दुधारित जाण-वामा आवता निर्वेद पामी दीक्षा ले छे



#### अगहदत्त

अगडदत्तनी कथा उत्तराव्ययन सूत्र (अध्यं, ४) उपरनी शान्ति-सूरिनी वृत्ति (पृ २१३-१६)मां तथा ए ज सूत्र उपरनी नेमिचनद्रनी वृत्ति (पृ ८४-९४)मां आवे छे. शान्तिसूरिकृत वृत्यन्तर्गत कथा प्रमाणे, अगडदत्त उज्जयिनीना जितशत्रु राजाना रथिक अमोघरथनी पुत्र हतो (नैमिचन्द्र प्रमाणे, शंखपुरना राजा सुन्दरंनो पुत्र हतो) पिताना मरण पछी अस्रविद्या शीखवा माटे ए पिताना एक मित्र पासे कौशावीमां गयो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, अगडदत्तना स्वच्छंदाचारथी कंटाळी राजाए एने देशवटो आप्यो, वाराणसीमां पवनचंड नामें एक कलाचार्य साधे परिचय थतां एने त्यां रही अगडदत्त अम्यास करवा लाग्यो). त्या विद्या गीएया पछी गुरुनी आज्ञा छई पोतानीं प्रवीणता दशीववा माटे ए राजकुलमा गयों, नगरमा अश्रुतपूर्वः सिवच्छेद करता स्वातर पाडता एक चोरने पकडी लाववानी राजाए सूचना करता एणे युक्ति-पूर्वक ए चोरने तेम ज एणे एकत्र करेलो भंडार साचवनारी एनी बहेनने-बन्नेने पफडी डीधा

शान्तिस्रिनी वृत्तिमा अगडदत्तनी कथानो आटलो ज अंश आवे छे, पण नेमिचन्द्रवाळी कथामा प्रसगिवस्तार लाको छे. चोर पेकडवाना एना पराक्रमथी प्रसन थईने राजाए अगडदत्तने पोतानी पुत्री कमल-सेना परणावी. कमलसेनाने तथा अगाउ कौशाबीमा अश्वविद्या शिखतां जेनी साथे पोताने ग्रेम थयो हतो ते, श्रेष्ठी बंधुरत्तनी पुत्री मदनर्मज-रीने साथे लईने मार्गमा अनेक पराक्रम करतो अगडदत्त घेरा जाय छे अने सुखपूर्वक रहे छे, पण एक बार पोतानी परनीनु दुधारित जाण-वामा आवता निवेंद पामी दीक्षा ले छे [ अवस्थित स्पन्न के के कम्ने कृषिकोर्ण आफेडी अगस्वयुक्ती कथा है

विभिन्न परपरामाने अनुसर छ शानित्यरिनी इतिमानी क्या मिंड संकेपमां, सरस गयमां रज् बयेसी छे, ज्यारे नेमियन्द्रनी टीकावांनी क्या २२९ पर्योगां क्रियोकी होद्र एक स्वतन कृष्टि बनी रहे स बन्नेय संस्कृत टीकाभोगां था क्यांनी से प्राकृतमां च छे ए दशनि हो

v 1

के सुख्नाए पछीना समयनी टीकाभोमां बन्धुं छे तेम, का कवाको प्राचीनतर मूछ प्रभोगांची समावत् उद्धत करेखी छे उत्तरास्मयन स्व उपननी चूर्णि (इ ११६)मां चारक पंक्तिमां बगाददत्तनी कमाउं प्राच स्वन करवामां वातेष्ठं छे बीद असवा माझण साहित्यमां वसांस वनाददत्तनी कवातुं स्वष्ट

स्परूपात्तर बाधार्म बावतु नथी पूर्व स्वरूपात्तर प्राप्त याय हो मूळ कवानुं स्परूप तेम ब समय नक्षी करवामां प अवस्य उपयोगी बाय, केम के पूर्वो स्पष्ट छे के बैन कर्नाप् एक पराक्रमी क्षत्रिय पुष्कर्मा साद्शेनु निरूपण करती छोक्कबाने परिक्षानुं रूप बान्तु छे बैन बागमेतर साहृत्यमां सगद्दश्यनी कवा प्राम्न सीबी प्रार्थीन

चैन आगमेतर साहित्यनां आगहरूतनी क्या पना सौषी प्रायिन स्वरूप सम्त्रासगणिशत बृहत् प्राष्ट्रत क्यायन्य 'बहुदेवहिंदी' (हैं स ना पांचमा सैका आसपास) से गुणादचना छुत चृह क्यापंत्र केन स्पाप्तर छ तेमां (१ १७-३९) छ शान्तिस्तिए से क्यानक उद्देश की तेनां तर 'बहुदेव-हिंदी'मी स्पष्ट स्वसर छे सने केटकेक स्थान हो देखीर्सु शास्त्रिक साम्य हे, म्यारे मेमिकांट उद्शेख

कवामसंगी स्वव छ से प्रमाण, कोई सुदी परंपराने कनुसरे छ कमादर्यनी कथा जक छोक्रीयय दैन बनक्या गणहीं छे ए विशे सम्द्रमां एक कमादर्य पुराण' रवाई छे, कम कैन गुर्कर सादियमां कमादर्य विशे कनक मानी मोटी कृतिको प्राप्त वह छे ?

क्यानक, पात्रो धन स्थानोत्रो भिन्न नामो सथा केटसक भिन्न

१ उत्तराध्ययनभी उपर्युक्त वे टीकाओमा सचवायेली अगडदत्तनी कथानी वे विभिन्न पाटपरपराओनो समावेश डा याकोबीए Erzahlungen in Maharastri ए प्रन्थमा कर्यो छे, तथा ए वन्नेना केटलीक युरोपीय भाषाओमा अनुवाद पण थया छे 'वसुदेव-हिंडी '-अतर्गत कथाना अनुवाद माटे जुओ ए प्रन्थनु में करेल गुजराती भाषान्तर, पृ ४५-६० उत्तराध्ययन-टीकाओमांनी कथाओ साथे 'वसुदेव-हिंडी'माना चथानकनी तुलना माटे जुओ 'न्यू इन्डियन ॲन्टीकचेरी,' वो १ (पृ २८१-९९) मा डा आल्सडार्फनो लेख 'ए न्यू वर्झन ऑफ धी अगडदत्त स्टोरी '

२ जिरको, पृ १ ३ जुओ 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग १-२-३

#### अचलग्राम

अचलप्रामना भदिक कौटुम्बिकोए यशोधरमुनिनी पासे दीक्षा लीधी हती. आ अचलप्राम ए ज आभीरदेशमा आवेलु अचलपुर के एथी भिन्न ए नकी थई शक्य नथी

१ मस, गा ४४९-५१

#### अचलपुर

आभीरदेशमां कृष्णा—वेणा नदीओना सगमस्थान पासे आवेछुं नगर कृष्णा—वेणाना संगम आगळ आवेछा बह्मद्वीप नामे द्वीपमा वसता पांचसो तापसोने आये वजना मामा आर्य समितसूरिओ प्रति-वोत्र पमाडचो हतो, ए प्रतिबोध पामेछ तापसोथी जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक नामे शाखानो आरंभ थयो हतो.

### जुओ आभीर

१ आचू, पूर्व भाग, पृ ५४३, आम, पृ ५१५, कस, पृ १३२, कसु, पृ. १३४, स्वि, पृ १७१, कसी, पृ १४९-५८, नसू, पृ ५१, विनिम, पृ. १४४

#### अजयेरु

अजमेर अजमेर पासेना, राजा सुभटपाल—शासित गाम हर्ष-पुरमा ब्राह्मणा यज्ञमां बकराने मारता हत

٩ ] **विश्वमर** मंत्रशक्तिकी सकराने वाचा अर्पी, बाह्मणोन वोष भाष्मी हतो.

१ कहा है ५०९-१। इस्कि हु १६९ इसी हु १४८-४९.

अरूप भाग ए उज्जीवनीतो एक सजेय मुझ हतो. सोपारकनो सिंह मिरि राज्ञा मन्छोनी साठमारी करावसी बने जे जीते पने पणु वस्य

भापतो भट्टण प्रतिवर्षे सोपारक जर्दने विजयनिष्क सरीके पराका स्प्रै आवतो काथी सिंहगिरि राजाप एक माठीनुं वळ पारसीने एने पोप्यो, क्षत्रं प्रमास्त्रिक-माछी सङ्घ सरीके कोळसायो बीजै वर्षे आहण माम्बो व्यार मास्यिक गर्स्ट एने इरावी दीयो. एक युनके पोठाने

हराम्मो तेवी मानमँग वयेको बहुण मुराष्ट्रमां पनी बराबरी करे एवा बीबो मझ छे एम सामळीने एनी शोधमां सापारकयी झुराष्ट

तरफ बसो हतो ध्या भागमां महकुष्क पाने एण एक संदूत ओयी. ए पक हाथे हरू चड़ावती इसा भने बीजे हाय फड़ही-कपास चूंटवा हतो (एनेय इत्मेण इस बाहेति, एक्केंगं फुछहीओ उप्पादेह) भारण सुराष्ट्र अवानो विभार शीडी वाळ्या शन ए खेडूराने भनवान बनाबबानी शासप भाषी पोतानी साथ उज्ज्ञविनी सर्द गयो धन एने मञ्जीवा दोसावी ए मह फर्मडीमङ तरीके प्रसिद्ध बर्मा पहाँ एका करने सोपारक भारता त्यां फरहीमहा साचे मारित्यक महाने युद्ध वयु

भक्त बोद्याना शिष्य फर्व्याने पुत्रमु के तार्रा क्या भंग दुखे हे हैं भने पड़ी तेल कब्रु त्यां पन खूब मर्दन इशवीन ताबो क्यों बीबी बाजू , सिंद्यगिरि राजाण पोताना मारियक महत्ने एवो अ श्रम कर्यो त्यारे एणे गर्वश्री उत्तर भाष्यों के पास्त्री विभागी फोण ही है एना बापनो पग पराजय इसी शहुँ एय हुँ । बाधी बीजे दिवसे बजे महोति सम युद अर्थु कने त्रीवे दिवस मास्त्यिक महा हार्यों कने मरण

पदेका दिवसे सन्क्युदना कंई निर्णम वई शक्तमा निद्धे ए सन्नि

पाम्यो, तथा अङ्ग सत्कार पामीने उज्जियनी गयो (आवश्यकसूत्र उपरनी चूर्णिमां सहीं सुधीनुं ज कथानक साम्युं छे.)

उज्जियनी गया पछी एणे मह्युद्धनो त्याग करी दीधो वळी वृद्ध थई गयो होवाथी संबंधीओ एनं अपमान करवा छाग्या. आधी संबंधीओने समाचार आप्या विना ज ए कौशांबी चाल्यो गयो ग्यां एक वर्ष आराम छईने रसायणो खाधां तथा बिह्छ थयो. पछी एक वार एणे कौशांबीना राजाना मह्य निरगणनो मह्युद्धमा पराजय करीने एने मारी नाल्यो पोतानो मह्य मरण पाम्यो एथी राजाए अह्णनी प्रशंसा करी निह्, अने तेथी सभाजनोए पण न करी आथी अहणे राजानी जाण माटे कह्युं के

# साहह वण संज्ञणाणं, साहह भो संज्ञणिया संज्ञणियाणं। जिह्नो णिरंगणो अहणेण णिक्तित्तसत्येणं।।

[ अर्थात् हे वन ! पक्षीओने कहे, अने हे पक्षीओ ! बीजां पक्षीओने कहो के जेणे शस्त्रों छोडी दीघां हता तेवा अहणे निरंगणने मारी नाख्यों छे ]

आ उक्ति उपरथी राजाए एने अट्टण तरीके ओळएयो अने एनो सत्कार कर्यो, तथा जीवन पर्यंत चाळे तेटल द्रव्य आप्युं, द्रव्यलोमथी संबंधोओ पण अट्टण पासे आव्यां परन्तु 'आ लोको फरी पण मारी पराभव करहो 'ए समजीने तथा पोतानी जातने जराप्रस्त जाणीने 'सचेष्ट छुं त्यांसुधी ज धर्म थई शकहो ' एवी समजपूर्वक अट्टणे दीक्षा लीधी."

का कथा, जेमा वास्तविक सामाजिक स्थिति होक्वार्वाह्ये निरूपण पामी होय एवो संभव छे ते प्राचीन भारतमा मह्नविद्याना इतिहास माटे घणी अगत्यनी छे, केम के हरिवश भागवतादिमा कृष्ण-वहरामना तथा कसना चरित्रप्रसंगमा तथा महाभारतादिमां दुर्योघन

4 ] | श्राज्ञमेर्व मत्रशक्तिकी वकराने बाजा अपीं, ब्राह्मणोने वीम काप्यो हत्ती.

१ बद्ध १८ ५ ५-१ - ब्रोड, ४ १६९ व्यो ४ १४८-४६

अट्टण

भरूण ए उम्रामनीनो एक भजेम महा हुतो। सोपारकनो सिंह

गिरि एवा मत्छोनो साठमारी करावतो भने जे औत एने पणु हम्म भापतो. भट्टण प्रतिवर्षे सोपान्क बर्दने विश्वयमिद्व तरीके पताका सर्दे नावतो। नाथी सिंहगिरि राजाए एक मार्छीतुं बळ पारसीने एने पोष्पी, सने ए मास्त्यक—माडी मछ सरीके ओळखामो **बीबे बर्वे** सङ्गण

काच्यो त्यारे मास्यिक मस्थ पने इरावी दौषो. एक युवके पोताने हराम्यो तेथी मानर्मन भयेको भट्टण सुराष्ट्रमा पनी बराबरी करे एको बीबो सछ हे एम सांमळीन पनी शोधमां सोपारकथी सुराष्ट करफ बता इतो स्था मार्गमां मरूक्रफ पास एण एक सेक्टूत जोसी प् एक हाथे हुछ प्रसारतो हता धने बीचे हाथे फुन्ही-कपास पूँटतो

इते (एगेज इत्येव इल बाहेति, एक्कें फस्हीओ सपावह) भइण सुराष्ट्र भवानो विचार मोडी वाञ्चो भन ए खेडूसने धनवान बनाबबानी शास्त्र भारते पोठानी साथे रुज्यसिनी सई गयो का पने मक्कविया शीसवी ए मक्क फन्म्डीमक वरीके प्रसिद्ध थयो पछी एका

बन्न सोपारक आप्या त्यां फलहीनहा साथे मास्त्यक महन् गुन्न बयु पहेला दिवसे मन्कपुदमो कई निर्णय गई शक्यो नहि ए सबि बहुण पोदाना शिष्य फुब्रहोंने पृत्रमु के 'तारां कुमां खेग हुन्हें हैं !' अने पद्मी तेण क्रये त्यां एने त्युत्र मर्दन क्रावीने हान्नो क्र्यों बीजी वाज् , सिंहगिरि राजाप पोतामा मारियक मझने एवा अ. प्रश्न कर्यो त्यार पणे सर्वभी उचर आप्यों के फलड़ी विश्वास कोण छे हिं जना बाउनो पन बराञ्चम करी शकु छन **हुई** श्रामी बीमें दिवसे बने मछोतुं सम पुद वर्षु कर श्रीप्रे दिवस मारिन्यक मछ हासी धन मरण पाम्यो, तथा अद्गण सत्कार पामीने उन्जियनी गयो (आवश्यकसूत्र उपरनी चूर्णिमां अहीं सुधीनुं ज कथानक आर्युं छे.)

उज्जयिनी गया पछी एणे मह्युद्धनो त्याग करी दीघो वळी वृद्ध थई गयो होवाथी संबंधीओ एनुं अपमान करवा छाग्या. आधी संबंधीओने समाचार आप्या विना ज ए कौशाबी चाल्यो गयो त्यां एक वर्ष आराम छईने रसायणो खाधां तथा विष्ठ थयो. पछी एक बार एणे कौशांबीना राजाना मह्य निरगणनो मह्युद्धमा पराजय करीने एने मारी नाख्यो पोतानो मह्य मरण पाम्यो एथी राजाए अङ्ग्वानी प्रशंसा करी निह, अने तथी सभाजनोए पण न करी आधी अङ्ग्वे राजानी जाण माटे कह्युं के

### साहह वण सडणाणं, साहह भो सडणिगा सडणिगाणं । णिहतो णिरंगणो अट्टणेण णिक्तितत्तसत्येणं ॥

[ अर्थात् हे वन ! पक्षीओने कहे, धने हे पक्षीओ ! बीजा पक्षीओने कहों के जेणे शस्त्रों छोडी दीघां हता तेवा अहणे निरंगणने मारी नाख्यों छे ]

भा उक्ति उपरथी राजाए एने अट्टण तरीके ओळल्यो अने एनो सत्कार कर्यो, तथा जीवन पर्यंत चाळे तेटल द्रव्य आप्युं. द्रव्यलोमथी सबंधोओ पण अट्टण पासे आव्यां परन्तु 'आ लोको फरी पण मारी पराभव करहो 'ए समजीने तथा पोतानी जातने जराप्रस्त जाणीने 'सचेष्ट छुं त्यासुधी ज धर्म थई शकहो 'एवी समजपूर्वक अट्टणे दीक्षा लीधी व

मा कथा, जेमा वास्तविक सामाजिक स्थिति छोकवार्तारूपे निरूपण पामी होय एवो समव छे ते प्राचीन भारतमा मछविद्याना इतिहास माटे घणी अगत्यनी छे, केम के हरिवंश भागवतादिमां कृष्ण-बलरामना तथा कसना चरित्रप्रसंगमां तथा महाभारतादिमां दुर्योघन भीम आहिता चरित्रप्रसामां भागता सह अन सहयुद्धता निर्देग बार करीय तो ए प्रकारना उन्हेंसो क एमानको प्राभीन साहित्यमा बिरह छे मह्वविचाविषयक स्वतंत्र रचनाभोमां हमणां जाणवामां आवेखं एक 'मह्वपूराण' तथा कच्याणाना चीछ्त्रय राजा सोनेभरकत् सर्वसम्हात्मक संस्कृत सम्भ मानसाद्धात' (ई. स. नो बारमो शैको)-मानु 'मह्वविनोद' नामे प्रकरण गणावी शकाम प्राभीन गुमें देशमों सहविचाना इतिहास माटे जुको गुजरात विचासमा-प्रकाशित मारी पुल्लका 'येग्रीमष्ट श्राति अने मह्युराण,'

उपर टांकेकी कवानां माशानां मास्त्रियक अने फरस्टी ए नामी केम विदाय नामो नभी, पण अनुक्रम जातिवायक अने क्रियाद्यक छे तेम अहण पण विदोप नाम छागतुं नधी, केम के 'अहण'नो अबे व्यायाम छे, अन प उपरक्षी बही सरत स्मायाम करनार एक सुप्रसिद मछ माने 'अहण' नाम प्रचक्ति यसु हरो पूर्व अनुमान कभारे पहुंदी नथी.

१ समे १८ ७९ जसा ६ १९१

१ नाम्, उत्तर सान १ १५२-५३ वहा १ १६१-६ उमे ५ ४८-४६ सम्री हाले लाम १ ३ व्यक्तिम ने महाराणी वा कशासकारी पर सानी है साम्या जा बनायब सारित्यक सालर्च साम् साम के लोड़ियों के लोड़ी के

#### सम्बद्धिशाटक

13

कर्णाहरूबाइ पारण उत्तर गुजरतमां सरस्तिन क्रिमोर कावेक काक्काराम नाममा प्राचीन गामने रक्षाने चाक्का वंदाना वनराजे स ८०२≔ई स ७४६मा पोतामा मित्र कार्णाहरू मरबाहना नाम उपरची बसावेक्ट नगर से मध्यकालीन हिन्दु गुजरातनुं पाटनगर, सबा ईसवी सनमा दसमाबी तेरमा सैकाना कंत सुपी पश्चिम भारतनुं प्रमुख नगर कने संस्कृतिकेन्द्र €सुं सैन कामगसाहित्यना अम्धकः चुच्चि ] [ ९

इतिहासमा पाटणनु विशिष्ट स्थान छे. आगमनां मूळ प्राञ्चत सूत्रो मगधमा

रचाया तो ए उपरनी सौथी प्रमाणमूत विद्यमान संस्कृत टीफाओ, एक मात्र हरिभद्रसूरिकृत टीकाओना अपवादने बाद करीए नो, अणहिल-वाडमा अथवा आसपासना प्रदेशमां रचाई छे. आचाराग अने सूत्र-कृताग सूत्र उपरनी भीलाकाचार्यनी सुप्रसिद्ध टीकाओ पाटणधी थोडाक ज माइल दूर आवेला गंभूता (गांभू)मा लखाई हतो. विऋमना बारमा शतकना प्रारममा अर्थात् ईसवी अगियारमी सदीना उत्तरार्धमा नवागीवृत्तिकार तरीके जाणीता थयेला अभयदेवसूरिए जैन आगमना नव अग उपर प्रमाणभूत टीकाओ पाटणमा रची अने ए ज नगरमा वसता बीजा एक प्रकांड पहित दोणाचार्ये त्या ज ए टीकाओनु संशोधन कर्यु. सं ११२९=ई. स १०७३मा दोहिड श्रेष्टीनी वसतिमा रहीने रचायेली नेमिचन्द्रनी उत्तराध्ययन उपरनी वृत्ति, सं ११८८=ई स ११२४मां सीवर्णिक नेमिचन्द्रनी पौपधवाळामां रहीने रचायेली पाक्षिकसूत्र उपरनी यशोदेवसूरिनी वृत्ति, तथा सं १२२७= ई. स. ११७१मा जोतकल्पसूत्र उपरनी श्रीचन्द्रस्रिनी ब्याख्यानी रचना पाटणपां थई शान्तिस्रिनी उत्तराध्ययन वृत्ति, आचार्य मलय गिरिनी सरल अने शास्त्रीय वृत्तिओ, द्रोणाचार्यकृत ओघनिर्युक्ति वृत्ति तथा मलधारी हेमचदकृत टीकाओ पण पाटणमा रचाई होवी जोईए एम एकंदरे पुरावाओनो विचार करता अनुमान थाय छे आगमेतर विषयोमां पण गुजरातनी जे सवीगीण साहित्यप्रहित्तु पाटण सैकाओ सुधी केन्द्र हतु तेनी चर्चा करवानुं आ स्थान नथी वधु माट जुओ अभयदेवसुरि, द्रोणाचार्य, नेमिचन्द्र, मलयगिरि, यशोदेवसूरि, शान्तिसूरि, शीलाचार्य, श्रीचन्द्रसूरि, हेमचन्द्र मलधारी इत्यादि

यदुकुळना भौरि राजाना ५त्र, एओ भौरिपुरमां राज्य करता

अन्धकदृष्णि

हता अने पाछन्त्रभी प्रयोग हारकामां आवीने राज्य स्वाप्ते हर्तु प्रमने सुमान राजीको समुद्रविषय बगेर दश पुत्रो बमा हृता, प्रमेग दश दार्णाह सरीके भेन्द्रस्वाया प्रमण पोलाना मारा पुत्रन राज्य सेपिन दोला सीपी हती.

- १ सुभो द्शार्थ
- १ शेद वर्षे १

#### अभयदेषस्रि

भंद (पाष्ठक्रभ) सरतर ) गण्डना आवार्य जिनेसरस्रि छवा यमना माई द्विद्यागरस्रिना शिष्य आवार्य अमर्थदेवस्रिए जैन शामकान्त्रो पैक्षी नव भंग उपर संस्कृत टीकाओ रची अन तथी समो नवंगीन्तिकार सरीक भोडन्याया नीचे प्रमाण नव अंगो उपर पणनी टीकाओ छे ज्ञातापर्यक्रभा (स ११२० व्ह स १०६२), स्वानांत (सं ११२०), समावांत्रांत्र ११२०) मगवती (सं ११२८ व्ह स १०५२), उपासक दशा अतकरद्वरा, अनुसरोपपिक दशा प्रमम्पाकरण अने विपास औरपारिक टीका अने प्रधापति समयदेवस्तिय यस सम्ब्रणी गावा १३३ एगनी रचनांत्रों छे का उपरार्थ समयदेवस्तिय विनेयस्तिकृत यहरुषान स्वान स्वान स्वान स्वान प्रधापति समयदेवस्तिय विनेयस्तिकृत प्रदर्भात्रक्ष स्वान स्वान

भगयदेवस्तिभी उपर्युक्त भगमामन्त्रो उपरानी इस्तिभोगी प्रधा-रिवर्गा उम्लेख मळ छेते प्रमाणे य इश्विकार्त्त संबोधन निर्कृतिकुत्रमा प्रोणाचार्षे वर्ष्युं इद्धं बळी प्रशस्तिको उपरानी अनुमान बाव छे के प्रोणावर्षि बेर्मा सुरूप हता तेनी युक्त पंत्रिवपरिक्त का बुस्तिकाना संशोधनमां रस छेती हती. भगवतीवृत्तिना छेखनमां जिनभद्रना शिष्य यशश्चेद्रे अभयदेवने सहाय करी हती.

स्थानांगवृत्तिनी प्रशम्तिमां अभयदेवस्र्रिए पोतानी वृत्तिरचनाना मार्गमा रहेली मुश्केलीओनो निर्देश करतां उत्तम संप्रदाय—अध्ययन-परपरानो अभाव, उत्तम ऊहनो अभाव, वाचनाओनी अनेकता, पुस्तकोनी अशुद्धि आदिनो उल्लेख कर्यो छे. खास करीने भगवती सूत्र उपरनी वृत्तिमां एमणे पोताना पूर्वकालीन टीकाकारोना निर्देश कर्या छे, अने ए निर्देशोनु स्वरूप जोतां ए स्पष्ट छे के ए पूर्वकालीन टीकाओ पैकी अमुक तो एमनी सामे हती, एटलुं ज निह पण चूर्णिथी ते भिन्न हती.

आ संवधमा वीजी एक अनुश्रुतिनी नोंघ करवा जेवी छे 'प्रभा-वकचिरत' (सं. १३३४=ई स. १२७८)ना अभयदेवसुरि—चिरत'मां शासनदेवी अभयदेवसुरिने कहे छे के 'पूर्वे निद्धिष एवा शीलांक अथवा कोट्याचार्य नामे आचार्ये अगियार अगो उपर वृत्ति रची हती, तेमां काळे करीने वे सिवाय वधा अंगोनो विच्छेद थयो छे, माटे सघ उपर अनुग्रह करवा माटे ए अगोनी वृत्ति रचवानो उद्यम करो' आ उपरथी अभयदेवसुरिए नव अंगो उपर वृत्ति रची."

आ अनुश्रुतिमाना शोलांक आचार्य ते शीलाचार्य होवा जोईए एने आधारे कहीए तो शोलाचार्यनी आचाराग अने सृत्रकृतांग सिवाय बीजां ११ अंगो उपरनी वृत्तिओ अभयदेवस्र्रिना समय पहेलां नाश पामी गई हती आधी अभयदेवस्रिए सृचित करेली वृत्तिओ कोई बीजा विद्वाने रचेली होवी जोईए.

आगमसाहित्यना सौथी प्रमाणभूत टीकाकारोमां अभयदेवसूिग्नी गणतरी थाय छे ए टीकाओनी सहाय विना अगसाहित्यना रहस्य समजवानु पछीना समयमां गमे तेवा आरूढ विद्वानो माटे पण छगभग भराष्य बायु होत पठीना समयना टीक्नाकाम भन अञ्चासीओप निरंतर अमयदेवसूरिनो भाषार छीषां छ "

कप्रमदेवसुरितु पर्रपरागत परित्र 'प्रमायकपरित <sup>१</sup>ना 'अभय देवसुरि—बरित'मा निरूपद्धं छ

स मतिस्र ' उपर तत्ववोधिवशिवनी' व्यवा 'बाइमहार्जव' जामे टीका सस्तार कमयदेवस्रि राजगण्डना होड् मर्वानीहिसकरथी भिन्न हे एक काळ असय'व नाम चैन सासुकामां सूच प्रचित्त हर्षे, अन समय'वस्रि नामना दश आवार्षो करवार सुपी जाणवार्या

ण १ ब्रावम प्रसरित १ स्थासूम प्रश्नरित ३ समूच प्रसरित

४ मसूत्र प्रणस्ति ५ **वे**सू ४ ९१

६ निर्देशसङ्कमभारतकणम्ह्रोत्रास्त्रसृतिसृत्यतः । बन्तित्यमेन गुमर्वनित्रस्य स्टोबिता चसम् ॥

हायम प्रहरित को १ प्रस्ताम प्रशस्ति को १ तक प्रस्तुतानुकोत्मसोविकान सीदोक्तवार्वपमुख्याविकत्वयदे-

स्वापुण प्रधारित साम्राविण्यंत्रद्वीरमाध्ययस्य विद्वस्यमुभ्यत्वस्य स्वस्य स्थाः ॥ धीर्मिर्वृत्यस्यक्रमस्यवस्यप्याः शीर्मित्रम्यस्याः ॥ सोवित्रस्य श्रीतिममां मुख्ये विद्वस्य सहस्यमुद्धेतः ॥

क्षीवदश्यः श्रेताममा वृत्यः विद्याः महत्त्वमूहितः । श्राम्याचित्रम्यविक्यवद्यसम्बद्धसम्बद्धाः ---मसूत्रः अवस्तिः, स्रोः ९-९

कार्यक्रमारकारारे भीमक्त्रोचारुवसूरिमुक्तेन । वस्थितमणैन द्वावनित्रकार्य संसोधिता चेवस् ॥ भीसभ प्रचरित स्टो ॥

मस्म प्रचरित की. ५−८

क्टरप्रश्माद्दीकमान् स्ट्रस्य वियोगतः ।
 क्टरप्रश्माद्यान्यस्थादेशस्थातेन से ॥

वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामश्चित् । सूत्राणामितगम्भीर्यान्मतमेदाच कुत्रचित् ॥ क्ष्मणानि सम्मवन्तीह केवल सुविवेकिमि । सिद्धान्तानुगतो योऽर्थ सोऽस्माद् प्राह्यो न चेतरः ॥ —भस्भ, प्रशस्ति, 'छो १–३

९ 'क्षायचणिओदएण'ति इह टीकाञ्याख्या-आतन्यनिकोदक कुम्भकारस्य यद्भाजने स्थित तेमनाय (१) मृन्मिश्र जर्ल तेन । — ए ज, पृ६८४

क्विचिट्टीकावाक्यं क्विचिद्पि वच्च म्चौर्णमन्धं क्विचिट्टी वृत्तिं क्विचिद्पि गम वाच्यविषयम् । क्विचिद्द्द्द्द्राच क्विचिद्दपि महाशास्त्रमपर समाश्रित्य व्याख्या शत इह कृता दुर्गमिगिराम् ॥
—ए ज, २५मा शतकनी वृत्तिने अंते यद्द्राइमहामन्दरमन्थनेन शास्त्राणवादुच्छिलितान्यतुच्छम् । भावाधरतानि ममापि दृष्टी यातानि ते वृत्तिकृतो जयन्ति ॥
—ए ज, ३०मा शतकनी वृत्तिने अंते

१० प्रच, १९-श्लो. १०४-१३

११ उदाहरण तरीके जुओ कम्रु, ए २०-२१, किकि, ए १२, जंप्रशा, ए २०१

१२ जुओ जैसाइ

#### अभीचि

सिन्धु—सौवीरना राजा उदायननो पुत्र, उदायन राजाए महावीर पासे दीक्षा छेतां पोताना पुत्र प्रत्येनी श्रेयवुद्धिश्री राज्य तेने निह आपतां पोताना भाणेज केशीने आप्यु हतुं आश्री रिसाईने अभीचि पोताना अंतःपुर साथे सिन्यु—सौवीरनु पाटनगर वीतभय छोडीने चपामां कृणिक राजा पासे चाल्यो गयो हतो े

आमा आवर्तो कृणिक ते महावीरनो समकालीन मगधनो राजा, जेने वौद्धो अजातशत्रु कहे छे एनु अैतिहासिकत्व नि सदिग्ध छे, रेष्ट] [अमीचि

आमां भावती बाबी स्यक्तिमां केशी, समीचि वर्गेरे पण कैतिहासिक हांवा समन छ

ा मस् ततक १३ वर्गेशक ६

यरिष्टपुर

महाराष्ट्रन एक नगर

पाछि साहित्यमां शिविराजाना राम्यनी रावधानी वरीके एक शरिश्रुरानो उच्छेल छे, पण ते मिथिसाबी पांचाछना मार्ग उपर कावेछ होस एम अणाय छे प्रश्नन्याकरणहरिंग को 'वसुदेवहिंदी'मा' अनुक्रमे शरिश्रुर को रिश्रुरानो उच्छेल छ, पण एनो स्वानिर्णय ए उपरक्षी कई शक्को नभी शरिश्रुर ते ब रिश्रुर, एम पण एटछा उपरक्षी निश्चित्यणे कही शक्काय नष्टि

कताच मधुरानी जेम अरिवपुर पण वे होय-एक उत्तरमां सन बीधुं दक्षिणमां

अभा रिष्टपुर

शम्मारित यहाराष्ट्रेष्णरियपुरपत्तवम् ।
 तत्र त्रिकोणनी राजा वसूद सुनि विभूतः ॥

—4¥. ⊽ €v

९ मध्यक्तेष्ठर प्रतिक्र शोपर मैम्स

इ.सम्बाभ प् ८८

४ मध्यमेत दिंशी ए ७

### **अर्कस्य**सी

बातंत्रपुर्तुं बीजुं नाम अर्करवाडी नामनु निर्वेषन एक वा रिते शक्त छ बाने से ए के कोई काळे अर्करवाडी पण कोटवार्कनी बेस अर्क-सर्वेनी प्रवार्त केल होस

निगप्रमस्रिना 'विविध तीबैक्स्प'मां वर्णवेकां मसुरानां नीध प्रमाणे पांच स्वळोमां एक अर्क्षस्वक छ-वर्ष्यस्वक, बीरस्वज एव स्थल, कुशस्यल अने महास्थल. जो के आमांनु अर्कस्थल ए आपणुं अर्कस्थली नथी.

१ खेत्तविवजासो दुणामे कए, जहा-आणदपुर अक्रत्यलीं, अक्रत्यिलं आणदपुर, निच्न, उद्दे॰ ११. जुओ आनन्दपुर.

२ 'विविध तीर्थकल्प,' पृ १८

## अर्धमागध

अर्धमागध—धी जेम प्राकृत भाषानुं एक मिश्र स्वरूप छे तेम स्थापत्यनी पण एक पद्धति होय एम जणाय छे अमुक प्रकारना मिश्र स्थापत्यने अर्धमागध नाम आपवामां आवतु हरो

१ जप्रनी वृत्तिमा उतारेलो वर्णक-धवलहर श्रद्धमागहविद्यममसेलद्ध-सेलसिटेभ तथा ए उपर शान्तिचन्द्रनी वृत्ति- ववलगृह सौधं अर्धमागध-विभ्रमाणि-गृहविशेषा शेलसस्थितानि पर्वताकाराणि गृहाणि, जप्रशा, पन्न १०७ अर्बुद

गुजरातनी उत्तर सरहदे भावेलो आबुनो पहाड, जैंनोना मुख्य तीर्थो पैकी एक.

प्रभास तीर्थमा अने अर्बुद पर्वत उपर यात्रामां संखिड (उजाणी) करवामां आवती हती रे

१ कोंडलमेंड पमासे, अब्बुय० ॥३१५०॥ प्रमासे वा तीयें अर्बुदे वा पर्वते यात्राया सखिंड कियते । मृक्क्षे, वि ३, पृ ८८४. "पमासे अब्बुए य पव्वए जत्ताए सखडी कीरित" इति चूर्ण विशेपचूर्णी च । — ए ज, पृ. ८८३ टि

## अवन्ति

उज्जयिनी जे जनपदनी राजधानी हतुं ते प्रदेशनुं-माळवानुं प्राचीन नाम जो के जैनधर्मनु ए एक प्रमुख केन्द्र हतुं, पण जैन आगम साहित्यमां जे 'आर्यक्षेत्र' तथा एमांना साडीपचीस आर्यदेशोनो उल्लेख छे तेमां अवित नथी.

शननि

जुओ चन्नियनी, मालव

१ अवाहरमः तरीके-सन्तीजयवण उपनेथीए सन्तीए सन्तनाने साहको समोत्तिया अने प्र. ४ अन्तीकपरए पत्रकीवस्य रूप्यो मंती क्षंडकच्यो बाम स्थम पू. ९३ अनामा लोकामा पदावि अवस्थानामि वेपु ते सक्ष्यका सबस्थाक्ष्य । भागी ए. १३१ प्रयापि अस्यो एस सौ era Der

९ अजो बक्सू उर् ९ सू ५ तमा एउपरनी क्रेक्फीर्चिनी -6

### अवस्तिवर्षन

उज्जीवनीना पाछक राजानो पुत्र राजाप दीशा छेतां अवन्ति वर्षतने राज्य सोम्युं हर्तुं भने बीया पुत्र राष्ट्रवर्षन (राज्यवर्षन)ने युव राख बनाव्यो हतो. अवन्तिवर्षने पोताना मार्छनी श्रीने वश करवा माठे माईने मारी नाइमो इहो। पण पाउन्छवी पश्चाचाप वर्जा माईना पुत्र सबन्तिसेनने राम्य सांपीन पूणे दीक्षा सीधी हती

महाबोरना समझाबीन, उज्जयिमीना राजा प्रयोतने वे पुत्रो हता-पालक बने गोपासक, पासक बने सर्वास्त्रकीन राजाना उस्केखो परा-णादिमा पण छे (जुओ केमिज हिस्टी भेएक इन्डिया, वो १. प्र ३११)

जुको पासक, मिष्यम, राष्ट्रपर्यन

९ आप चलार मान १८ १४९-९ वर्की वर्ष १८ ९०-९६ अवन्तिसङ्गास

उज्यमिनोनी भद्रा नामे शेटाणीती पुत्र आर्थ सहरती बिहार करता पनी मानशान्यमां भाषीने बस्या एता. एक बार सैक्याकाळे जबतिसङ्गाउ पोतानी बनीस फ्लीओ साथे रमण करतो इतो। स्पोरे निविनीगुस्स सप्ययननुं व्यावचन इत्रता भाषाँयने एणे समिट्या काथी एने जानिस्मरण बयु अमे ए जापार्यनोधिष्य सबो. पडी कवित मुद्रमाठे काचार्य-१ व्यनुप्ता सर्वे, स्मशानमां बर्वे व्यनशामपूर्वेद कायो

त्सर्गे क्यों, एना मुकुमार पगमाथी छोही टपकतुं हितु तेनी वासथी पोताना वन्चां सिहत आवेछी एक शियाछणी अवंतिसुकुमाछनु शरीर खाई गई अने ए कालधर्म पाम्या एक सगमां पत्नी सिवाय एमनी एकत्रीम पत्नीओए तथा माताए दीक्षा छोवी सगमी वधूथी जन्मेछा पुत्रे पोताना पिताना मरणस्थान उपर एक देवमन्दिर करान्युं, जे महाकाल तरीके ओळखाय छे '

१ आचू, उत्तर माग, पृ १५७ आगमसाहित्यमा अन्यत्र अविति-सुकुमालना उल्लेखो माटे जुओ व्यम, पृ ८०, तथा मस (गा ४३५– ३८), सप्र (गा ६५–६६) अने भप (गा १६०) हेमचन्द्रे आ प्रसगतुं वर्णन वधु विस्तारयो कर्यु छे, जुओ 'परिशिष्ट पर्व,' सर्ग ११, श्लो १५१–७७ अबन्तिसुकुमालना मृत्यनु स्थान आचूमां 'स्मशानमां कथार-कुडग' अने मसमा 'वशकुडग' वतावेछुं छे आज पण ए स्थळे कुडगे-श्वरतुं स्थान छे एम मस (गा ४३८) नोंधे छे कुडगेम्सर' अथवा 'कुडुगेश्वर' एवां नामे आ स्थाननो निर्देश अनेक प्रयन्धासमक प्रन्थोमा छे 'विविध्तीर्थकन्त्र' (१४मो सैको)नी कोई कोई प्रतोमा एनो 'कुदुनेश्वर' एवो पाठ छे (अरा, माग ३, पृ ५७८) आ 'कुदुनेश्वर' नाम स्कन्दपुराणना आवन्त्यखंडमा पण छे ए सूचक छे (पुगु, पृ ३०) महा-काल अने कुडगेश्वरनी एकता संवधमा जुओ 'विकासस्पृतिप्रन्थ'मां डा शालोंटे काउक्षेनो लेख 'जैन साहित्य और महाकाल मन्दिर'

### अशकटापिता

आभीर जातिना एक साधु एमनु नाम अशकटापिता पट्युं ए विशे आवी कथा आपवामा आवे छे ज्यारे गृहस्थावस्थामां हता त्यारे एमने त्या अत्यत रूपवती पुत्री जन्मी हती ए मोटो थया पछो एने गाडानी आगळ वेसाडीने एओ जना हता, ते समये ए तरुणीने जोवा माटे पाछळ आवता आभीर तरुणीए आगळ पहोंची जवानी स्पर्वामा पोताना गाडा उत्पत्र उपर छई जता गाडां भागी गयां आथी लोकोए ए तरुणीनुं नाम 'अशकटा' अने एना पितानुं 'अशकटापिता'

**ब्रह्मकटा**पिता

पारमु ना प्रसगमी निर्मेद पामी अशहरापिसाए पोतानी पुत्रीने परणाबीने बीधा भीषी

१ उता ४, १२९-३ (सिर्जुन्ड गा १२१) तिष् वरे १ अन्यसेन पाचक

धा होई दार्शनिक छे, धन 'वाचक' पदबो उपस्यी सैन होम एम बानुमान माम छे विकासना धारियारमा शतकामां मरोद्धा धावारी शानिसम्हित् पोतानी 'उद्धराप्ययन' टोकामां प्रानी मत टास्यो छे ' एटके सेम्पो एबी प्राचीनतर छे धायसेन वाचक विशे कई विशेष सराजामां नकी

१ वर्षः कारवेगरानकेन-सारमध्यस्य आसान'-मिरवादि जनावे त हायोवर हरि भारतीस्तुम्पते नायमप्यश्चनी नतस्त्रीकोत्तस्य (१ व बारतीय तत् सर्वे नहुपा यत्र रामते, हरवादि वणा ४ १३२

### वानन्दपुर

उत्तर गुड्यासमां भिनेक्षे बहनगर पूर्व मीनुं नाम सक्त्रेष्टी ह्यूं (शुणो अर्कस्मार्स्टी) जमीन मार्गे बेशार्यु ए मोडु मदक होगायी हेने एक्टमदन कर्युं हे भा नगरना फिल्मो हिंगो बनलो हती " सानवपुर केन पर्योग्ने मोडु केन्द्रश्वान हार्युं बार्ट्स, आनंत्रपुरबी मयुरा अने मयुरामो आनंत्रपुर जना सिन अ भामब्युरमा बसता सायुओना सनेक उत्त्रकेलो मळे हे "योगिनराम ९८०मां (अबबा ९९३मां) स्ट्रम १ १ (समझा १६०)मां धुबक्तेन रासाने पुत्र बोरनेनना मराणी पर्योग्डा साक समानदा मार्ग आनंत्रपुरामो समा समझ 'क्रिय सुत्र' बोपबामां साध्य हत्तुं यहा उ हेस 'क्रय्यस्थनी विविध रोक्षामोनां ह

पुणनब सुदूर भार्तन्युरमी साग बनता हता तथा वेन्स (त्र प्राहत अन्तुं वेदिम वर्षु सन्दर्त रूप टीकाकाने भाग छ) छटके के बलादिना वेदमधी बनावसी वृत्तद्वीभी बगैर माने वण ण प्रस्यात हतुं. शानंदपुरमां थती यक्षप्जा जाणीती हती शानंदपुरना लोका शरदऋतुमां प्राचीनवाहिनी सरस्वतीना किनारे जईने संखिडि — उजाणी करता हता प्राचीनवाहिनी सरस्वती उत्तरगुजरातमां सिद्धपुर पासे छे, ज्या हजी पण कार्तिकी पूर्णिमानो मोटो मेळो भराय छे अने आसपासना प्रदेशना लोको एकत्र थाय छे. वळी उपर्युक्त उल्लेख वतावे छे के आनंदपुर ए प्राचीनवाहिनी सरस्वतीयां अदूरवर्ती होवुं जोईए, जे हालना वडनगर साथे ठीक वंब वेसे छे

आनदपुरमा प्रचलित केटलाक धाराधोरणोनो पण निर्देश मळे छे, जेम के कोईना उपर खड्गनो प्रहार थवाथी ए मरी जाय तो मार नारनो अँगी रूपक दंड थतो, प्रहार थाय पण मरे निह तो पांच रूपक, अने मोटो कलह करवा माटे साडातेर रूपक दड थतो "

आनदपुर संवैधमां केटलीक लोकवार्ताओ पण आगमसाहित्यनी टीकाचूर्गिओमा संघराई ले

आनदपुरमा एक ब्राह्मण पुत्रवधूनो सहवाय करतो हतो अने पछी उपाध्यायने कहेतो के— आजे स्वप्नमां मने पुत्रवधूनो सहवास थयो हतो.' आनदपुरनो बोजो एक चतुर्वेदो ब्राह्मण कच्छमां गयानो उल्लेख छे ' आनंदपुर ब्राह्मणोनु केन्द्रस्थान हतुं ए वस्तु आमांथो पण फल्रित थाय छे.

आनद्पुरनु 'कालनगर' एवु पर्याय नाम एक स्थळे आपेलुं " हे.

सेंकडो अने हजारो हा रीओथी संकुल विन्ध्य नामे अर्ण्य आनंदपुरनी पासे आवेछ हतुं एवो एक उल्लेख 'पिंडनिर्युक्ति 'नी टीकामां छे <sup>१४</sup> आ आनदपुर ए उत्तरगुजरातनुं वडनगर नहि पण विन्ध्याटवी पासेनुं बीजु कोई आनंदपुर होवु जोईए

१ एना स्यान विषेनी साधारण चर्चा माटे जुओ पुगु मां आनन्द्पुर. विविध साधनो उपरथी सक लेत करेला वडनगरना सक्षिप्त इतिहास माटे जुओ श्री कनैयालाल दवेकृत पुस्तिका 'वडनगर' **१०**] [ आनग्वपुर

१ यत्र हा स्थलप्येन धक्याची स्थापित साम्यमानाति तत् स्वतं-पत्तमम् वर्षा सामन्दपुरम् । – सुबन्धे प्रस्त १ पृ ३४२ वसी निव् साम १ पृ. ४११

१ दशकासकः प्राक्षारी क्याऽऽसन्बद्धरे, युक्ये प्रत्य १ ४,१५१

४ विश्व मागरे १८ ५३४ व्यक्त साय ३ १८ ८६ एव (उद्देश्य बनावी इति) १८ ४४ सूक्तव् १८ १५३

े ५ वस छ ११०-१९, वस्ति, छ ११९-११ वसी छ १११-१५ वस छ १४५-४४

्रसम् ६ ४६ मध्ये ६ १३ **म**ख्या ४ ४

ण्याष् ६३११ ८ क्यो स्मा पत्र ८८३-८४

1 स्थ्य साथ 1 प्र ५–६

१९ माम १८ ५८५ पार १८ ११

१६ मार् उत्तरमाय प्र.१९१

१३ क्सनि ए ११६ शुभो व्हास्त्रनगर

) श्रासम्ब नाम पुर तम् रिपुनरेशे नाम राजा तस्य मध्ये धारिणे तस्य प पुरस्य प्रत्यस्था गण्डक्षण्यतस्थितं सम्बन्धस्यः । धिनम् पूर्व

### भागीर

(१) बिध्यायसमां इच्या अने बेचा नदीनी आंसपासनी प्रदेश धर्मा अवस्तुर, बेगास्टर समग्री कारे नगरा आवेखां हतां आमीर बाति उपस्थी नतुं गाम परेखे स्न तथा आमीर प्रभेश मान जुदां जुवां पुगरामां न स्थ्यतिबेंस स्न कातां लगा स्न के आप्रमानी बसाइसी उसरीसर प्राप्त काता स्मानी इनी जिन आप्रमानी आभीनेदेश सरिगारसमी दोगाना निर्वेत रा आप्रमानस कन आवेबर भा प्रभागा गया दना

**ं** २१

'कल्पमृत्र'नी विविध टीकाओमां जुदां जुदां राज्यो अने देशोना नामोनी एक मूचि छे तेमा 'आभीर' पग छे <sup>६</sup>

[२] वर्तमानकाळमा 'आभीर' प्रदेशनाम तरीके रह्यो नथी, 'आहीर' जातिमा टकी रह्यो छे जुढा जुढा वर्णो नाटे खीजमा दप-राता कच्दोना निर्देश करतां 'सृत्रकृताग स्त्र' उपरनी शीलांकदेवनी वृत्तिमा कह्यं छे के— बाह्मणने 'डोड,' व्याणकन 'किराट' तथा ब्रह्मने 'आभीर' कहेवामा आवे छे '

आभीर जातिमा प्रचिल्त दियरवटाना रिवाजनुं सूचन पण एक कथानकमा करवामा आव्युं छे सुरप्राममा यगोधरा नामे कोई आभीरी हती, तेनो योगराज नामे पित अने वत्सराज नामे दियर हता दियरनी पत्नीनुं नाम योधनी हतुं एक वार देवयोगे योधनी अने योगराज समकाळे मरण पाम्या, एटळे यशोधराए पोताना दियर वत्सराज पासे याचना करी के 'हु तमारी पत्नी थाउं' पोतानी पत्नी मरण पामी हती ए विचारीने वत्सराजे पण एनो स्वीकार कर्यों ' कुलाचारनी वात करता आभीगेनी मंथिनकाशुद्धिनो खास निर्देश कर-वामा आव्यो छे, ए वस्तु एमनी गोपालनप्रधान जीवनप्रथानी धोतक छे.

कच्छमा जैन वर्म पाळता आमीरो हता एम एक स्थळे कह्युं छे आनदपुरनो एक दरिष्ट चतुर्वेदी ब्राह्मण कच्छमां गयो हतो अने त्यांना आभीरोए एने प्रतिबोध पमाडचो हतो <sup>१°</sup>

१ आभीरदेशेऽचलपुरासन्ने कन्नावेन्तानद्योर्मध्ये ब्रह्मद्वीपे पश्चशती तापसानामभूत्, कम्रु, पृ ५१३, सहेज जुदा शब्दोमा आ ज उल्लेख माटे जुओ किंक, पृ १७१ तथा कदी, पृ १४९

२ जुओ वेणातट

३ जुओ तगरा

४. जुओ पुगुमा आभीर

६२ ] [बामीर

५ बाबु ए. ३९४ वटी तुमी बज्ज सार्य तथा समित मार्य इ.स.स. १. ४५० वर्षि ए. १५२ वर्षी ए. १८१-८२

् सुनु पूर्व अब्द पूर्व क्या हु १८१-८१ अ वायरवर्ष वायरवर्ष ये बचा अवस्थितः पदार्थात्तामाधिद्व द्वांस्मास्य वायर्षसम्म द्वाचाह्म बोस्मिति सूरास्या वर्षियँ दिस्मामिति ब्रामाधिरिति स्थान वायासीस्यादि त्या कार्यस्ति त्या बार्च उन्दे वदममित्यादि त्या इस्टिनं स्थितं यो सन्त दोषाते त्रित् स्थारवर स्थार यः च वायर्थमायी। सुन्देशी पूर्व १३४ सुन्दी सारतीय विचार मार्च-एविक १९४० में सारी केक्ष ए शेर केल्य वी वर्ष विद्यान-ए विचीयपुक्त मर्पेटन स्था सुन्धी पुच्याती सारित्य परिवय प्रस्तीव्य मारा वर्ष कार्यस्ति वंचतेन प्र. ११-१२ दिल्य त्या

एको जपोन्दगात इ. ४३-४४ डिप्पण ८ पिकिस इ. ६४

ৎ কুজন্মন — কুজনাটো বৰা ক্ষানা বিস্মুহি আনীংকাৰ্যা মাননিকান্ত্ৰীয় প্ৰস্থানি হ-১১

१ आपू उत्तरभाग, प्र.२९१ हम्रो करक

#### **मापारमृ**वि

उन्निमोनां भाषाब भाषा आपस्त्रमृति नामे भाषावे हता इन्ह्यमी पामता एक सामुन तमणे क्यु हतुं के 'तु देक्छोक्नमं काय हो ममे दर्शन भाषते' या पत्री उत्मारी यहा आचार्यन देक्छोक्नमं गराक्ष पेका सामुण चमकारपूर्वक प्रतिकोप पमाहणो हतो एवँ क्यानक छें

१ कियु भाग १ ए. १९-२ मध्यर ए. ३

### इस्ट्रास्ट स्थान

क्षा टचान दशपुरमां मावेख हतुं त्यां नहींने भार्म रिक्सी पातु भीन कवी हता.

मारा क्या कार ह्युग्यह'नो सकरार्व 'शासीनु पर' पयो बाब सो बा प्रमेशानां य काळ सेरटीनुं वादेतर यह दशे एकी भरकळ करो सकाय ! जुलो इस्युर

### १ व्यस्म, पृ ४१-४२

### इन्द्रदत्त

चिरकाळप्रतिष्ठित मथुरा नगरीमां इन्द्रदत्त पुरोहित हतो प्रासाद-मां वेठेला एणे नीचे थईने जता जैन साधु उपर पग लटकतो राख्यो अने ए रीते एने माथे पग मूक्यानो संतोष मेळच्यो. एक श्रावक श्रेष्ठीए आ जोयुं, अने क्रोधायमान थईने एणे पुरोहितनो पग काप-वानी प्रतिज्ञा करी ए माटे ए पुरोहितनां छिटो शोधवा छाग्यो, पग एमा सफळता नहि मळतां एणे साधुने वात करी साधुए कह्युं के 'आगां पूछवानु छुं छे र सत्कार-पुरस्कार परीपह तो सहन करवो जोइए.' श्रेष्ठीए कह्युं. 'पण में प्रतिज्ञा करी छे.' साधुए पूछ्युं 'पुरोहितने घेर अत्यारे शु चाळे छे १' श्रेष्टीए उत्तर आप्यो 'प्रासाद कराव्यो छे, एना प्रवेशमहोत्सव वखते ए राजाने भोजन आपशे ' भाचार्य बोल्याः 'ज्यारे राजा प्रासादमां प्रवेश करतो होय त्यारे तमारे एने हाथ खेंचीने आघो करवो अने कहेवु के-प्रासाद पडे छे एटले ए समये हुं विद्याथी प्रासादने पाडी नाखीरा.' पछी श्रेष्ठीए ए प्रमाणे कर्युं अने राजाने कह्यु. 'आ पुरोहित तो तमने मारी नाखवा इच्छतो हतो ' कुड थयेला राजाए पुरोहित श्रेष्ठीने सोंपी दीघो श्रेष्ठीए पुरो-हितनो पग इन्द्रकीलमां मूक्यो अने पछा कापी नाख्यो रै

विक्रमना तेरमा सै हामा गुजरातमा मत्री वस्तुपाछे एक जैन साधुनुं अपमान करनार, वीसछदेव राजाना मामानो हाथ कापी नाख्यो हती—एवी प्रबन्धोमां मळती अनुश्रुति आ कथानक साथे सरखाववा जेवी छे

१ उन्ना, पृ १२५-२६, उने, पृ ४९

### इन्द्रपुर

मधुरानं वीजं नाम जो के मथुराथी भिन्न एवं इन्द्रपर नामे

एक नगर हतुं एवो उन्हेम्स पण अन्सत्र छे आ बीखुँ इन्दर्भिर ते उत्तर प्रदेशमां बुछइशहर जिल्लामां दिमाई पासे आवेल इन्दार होतें पटे, स्थांची स्कृत्यपुष्तनु गुत स १४६ (ईच्च. स ४६६)नु साम्रपन्न मळल छे प साम्रपन्नमां च ए स्थाननु इन्द्रपुर नाम आयु छे (जुन्ना दिनशक्त्य सरकार, सिलेक्ट इन्सिकिश्वास', नै २७), जेमांबी प्रा इन्द्रदर्भ दाना 'इ'दोर' ब्युपम बाय १ इस महुपए वेन बीय याम ईर्युर छि। बाक् बत्तर माय

PERT

१ शास्त् पूर्वसाय ६८ ४४४८-५ जास, ६८ ४५३०-५४

मोत्रवृध्यिना पुत्र कर्न केंसना विता एमना बीजा संतानो

**ए**ग्रसेन

28 1

श्रतिमुक्तक राश्रीमधी भर्गेर हती, अमणे द्वीशा छीभी हती चरासभना सम्बंधी नासीने प दृश्यनी साथे द्वारकामां श्राच्या हता उपयेननी दृष्पान्त भनक भैन परित्रत्र बोगां बावे छे पण श्रामसाहित्यमां तो एमने विदेशना केमळ प्रकीणे प्रासमिक उल्लेखी व प्राप्त बाय छे

 त वाहरण गरीक इद (यु. १८-४१) आदिमा हारवरीको वर्णक; कसूनी दिनिच बीकामोमा मेसिनायमो चरित्रकथेय इत्यादि

गिरनार पर्वेठ पना स्थान अमे नाम विशनी भर्जी माटे जुमी

रुखयन्त

पुगुमां उज्ज्यन्त' जैन जाराम साहित्य अनुसार उग्ज्यवेतनु शिस्सर २२मा तीर्वेक्ट नेमिनाभनो दोशा केरसकान अने निकामधी पवित्र मयेख छ नेमिनाभना निकामका मनापार सामळीने विकामी पांडुमधुरा

ठींबेब्द्र नीमनाबना दोशा कैनस्त्रान कर्न निकामने पांदेन प्रयेखें छ नेमिनाबना निर्वाचना मगापार सांमद्रतेने दक्षिणनी पांदुनपुरा मांबी सुराष्ट्र बाजु भावेमा पांद्रका उद्भयत उपर भावी घणुं सप करीन सिक्रियां गया हता. उज्जियिनी ो [ રૂલ

उज्जयंत, वैभार वमेरे पर्वतोने कीडापर्वत कहेवामां आन्या छे. डेज्जयंत उपर घणा प्रपात—जळघोत्र हता <sup>४</sup> हाल तो गिरनार घोष माटे जाणीतो नथी, पण गिरनारनी तळेटीमां अशोके वंधावेछं धुदर्शन तळाव पु॰कळ पाणी भरावाने कारणे वारवार फार्टी जतु एमां जूना काळना आ धोधनो पण हिस्सो होय

उज्जयंतादि तीथोंमां प्रतिवर्ष यात्राओ-उजाणीओ थती हर्ना. जुओ गिरिनगर तथा रैवतक

९ शाघ, पृ २२६-२७, वर्. पृ ३०, आम, पृ २१४, इसु प्ट ३९९ थी आगळ, ककी, प्ट १६९-७०, इत्यादि

२ ज्ञाघ, पृ २२६-२७

३ भस्थ, शतक ७, उद्दे. ६

४ बुकक्षे, भाग ३, ष्ट. ८२७, भाग ४, ष्ट. ९५७

५ उज्जेंत णायसडे सिद्धसिलादीण चेव जत्तास ।

समत्तभाविएसु ण हुति मिश्छत्तदोसा उ ॥३१९२॥

उज्जयन्ते ज्ञातखण्डे सिद्धिशलायामेनमादिषु तीर्थेषु या प्रतिवर्षे यात्रा -सद्भुखयो भवन्ति तासु गच्छतो मिथ्यात्विस्थरीकरणाद्यो दोषा न मवन्ति। एज, भाग ३, ५ ८९३

## उज्जयिनी

अवन्ति जनपदनु पाटनगर सम्राट् अञोके पोताना पुत्र कुणालने उर्जायनी कुमारभुक्तिमा अ।प्यु हतुं, अने कुणालना पुत्र सप्रतिए त्यां रहीने आखा दक्षिणापथ तेम ज सुराष्ट्र उपर आधिपत्य जमान्युं हतु ै

उज्जियनीमा जीवंतस्वामीनी प्रतिमा हती, तेने वंदन करवा माटे आर्य सुहस्ती उज्जयिनी आन्या हता आ सिवाय आर्य महागिरि, चण्डरुद्राचार्य, आर्य रिक्षत, भद्रगुप्ताचार्य, आर्थ आषाढ वगेरे अनेक आचार्या उज्जयिनीमा आवता हता उज्जयिनीना

۹٤ ] गर्देमित्स राबाए कारुकाचार्यनी यहेन सरध्वतीन हरण कर्ये हुन्नु तेची कालकायार्थ शक होहोने तही छाम्या हता ए कैतिहासिक अनुश्<sub>वि</sub> पण द्याणीती हे<sup>ै</sup> उज्जयिनीमां स्वयन नामे उद्यान **भानेसं** 

[सञ्जयिती

हम, व्यां सामुणी आश्रास करता े उर्जायनीमां एक काळे पांपसी **अपाक्षयो हता** " एण उज्जयिनी केवळ जैन धर्मनुं के 🗈 🚓 एम नहिं भारत वर्षना इत्यमागमा कावेल होत प केम एक संस्कृतिकेट हुई होन

वेपारने पण मोद्र सवक इत् दूर दूरना प्रदेशना श्रीको कार्यवसाय २.जमिनी भावता तज्जिभिनीना प्रयो**त** राजानी भाण म**रु६५**७ उपर पण हती. पटके साट अन समियनीनो संबंध तो स्वामाविक है मरुक्तभूमांथी एक भाषार्थे पातामा विश्वय नामे शिव्यने प्रयोजन-बशाद उन्नीयनी मोक्स्यो हतो. ै दण्काळना समयमा सराप्टनो ५६ खपक रजयिनी जवा नौकळघो हतो धने मार्गमा एने रक्त्यट

(बीस) मिश्रुकोनो संगाय वह गयो हतो " कामीर देशना अवसप्त कन उप्पतिनी वण्ते पण प्यो स सर्वप हतो अने एक समुदायना सामुओ आमीर देशनी नगरीमां तेम स उज्जीयनी भास-पासना प्रदेशमा विहरता " उज्जिमनी सने कीशांबी बच्चे पुण भवरजवरनो भणो समंघ इसो (जुमो तशा, पू१११) जो के मार्गमा गार भटंबीमांबी पसार बबार्नु होनाबी प्रवासनां शिष्त वर्णा हतां एम 'उत्तराप्यवन 'नी नेमिशन्त्रनी शृतिमां श्रमा 'वसुदेवहिंशी'

मां भावता सगद्धवत्तना प्रवासवर्णन उपरयी जणाय छे कृतिक' सर्भात् विमुचननी कोई पण वस्त खेमां मळे एवा

मापण' भर्मास् मोडा बरदुभहारो- कृत्रिकापण ' प्राचीन भारसमी वे महानगरो–उम्रायनी हैम स रासगृहमी हता " राजा प्रबोतना राम्पकाळ वरनियान उम्मयिनीमा नव कुत्रिकापण हता आ भद्रारोमां बरतुमी कीमत ते सरीदनारना सामाबिक वर्ज्य प्रमाणे केवामां आवती. जे माणस दीवा छेवानो होय ते पोतानां जरूरी उपकरण, पोते सागान्य मागम होय तो कुनिकापणगांथी पाच न्हिपयानी कीमते खरीदी शकतो, जा ते इभ्य (लनाधिपति) अयवा मार्थश्रह होय तो तेने एक हजार आपवा पडता अने जो ते राजा होय तो तेने एक लाख रूपिया आपवा पटना एवी कथा छे के तोसलि नगरवासी एक वरंणके उज्ञयिनीना कुत्रिकापणमांथी ऋषिपाल नामे एक व्यंतर खरीयो हतो अने पछी तेने प्रसन करीने एनी प्राप्ते ऋषितटाग नामे एक तळात्र वयात्युं हतुं भ ए ज प्रमाणे भरकच्छ-वासी बीजा एक विभिक्ते कुत्रिकापणमाथी एक मृत खरीयो हतो अने तेनी पासे भृततडाग नामे तळाव चंधाच्युं हतुं. े त्रिभुवननी कोई पण सजीव के निर्जाव वस्तु—भृत मुझा—कुत्रिकापणमां अलभ्य नहोती एवु आ कथानको स्चवे छे अने छोकमानसमां उज्जियनो सने राजगृह जेवा नगरोनी वाणिष्यसमृद्भिए केवुं स्थान जमान्युं हतुं ए बतावे छे.

प्राचीन भारतना साथै मार्गो—'ट्रेड रूट्स'—ना एक महत्त्वना संगमस्थान उपर उज्जयिनी आवेछं हतुं

एक मोळा पितने तेनी पुंधली पत्नी ऊंटना लॉडां वेचवा माटे उज्जयिनी मोकडे छे अने पछी पोते विटसेवा करे छे एवुं कथानक पण मळे छे <sup>१८</sup>

औहिक समृद्धि साथे जोडायेला मोजशोख अने भोगविलास पण् स्वाभाविक रीते ज उज्जियिनीमा प्रवर्तमान हता. 'बृहत्कलपस्त्र'-वृत्तिमाना एक कथानक प्रमाणे-एक देवीए विधवानु रूप धारणे' कर्यु अने दासीओथी वींटायेली ते उपाश्रयमा जावी साधुने बंदन करीने वेठी साधुए पूल्यु के 'श्राविका! तुं क्याथी आवी छे १' स्यारे ते बोली के 'पाटलिपुत्रमा हुं जन्मी छुं अने साकेतना एक २८ ] [ इस्त्रविशी

भेड़ी साथे मार इमन बर्धु हार्सु पतिनु मरण बर्ता सीर्वयाशाना मिर्फ्स वडीकानी रहा कर्र्नि मोगनी आक्षांचा करती हु उन्निवनी बाउ हुं में सांमञ्ज्य छ के उज्जीवनीमा परीष्ट्रकी पराधित बयेडा प्रणा साञ्जूमी छ पण इवे समने जोया पत्री माई मन ब्यामञ्ज बवानी ना पाढ के <sup>178</sup>

सर्वगिमहाप्रधान देवदचा उज्जयिनीनी गणिका हसी अने दिदोगी प्रधान मुख्देव पण अजयिनीमा बसतो हतो."

उक्रियती, माहेश्वरी, श्रीमाछ वर्गेर नारीकोमां छोको उपस्क प्रसंगोप एकप्र बहुने मरिशपान करता हता " कने पवा सोकीमां बाहणोनो का समावेश मधी हता "

उम्मिनीमां भने तैनी शासपासमां राजाओ भने भनिकोर्नु सभारापन करनारा बगौनी पण वस्ती हता उम्मिनीनी पासे गटोनुं एक गाम हतु के उम्मिनीनासी आरणानन्तनुं कबानक पण भा राज्य समान्न के "

टम्पिनीमां एक बार मोटी जाम लगा हुती जन नमनी पूजी माग बळी माने हुतो आबी के वेपारीभीए नगरनी बहार पोलानी माम माने हुतो तेमणे क्षेत्रकाणा नाजा उपकारना हुतां

मान्य बादिना जान्नमणकारो उन्मिनी जने आस्पासना प्रदेशो उपर पणी बार बुम्बम करता जने माणसोनुं इरण करी बता तथा हैमने गुजाम स्रीके वेची नासता "समन वर्ता मान्य आदिना कोकी क्ष्मिक्तनद्वां कर्ता इसे जने तथी ए प्रदेश रण पाकड़की 'मान्य ने नामबी बोळलायों इसे स्ततमा-अध्यम हैकाबी जनित मान्य तरिके बोळलाय है 'येचो केटलाक विद्यानीनो सार से सम्बद्धिकार दिसे बोळलाय है 'येचो केटलाक विद्यानीनो सार से सम्बद्धिकार दिसे बोळलाय से मान्य स्वाप्त है से स्वाप्त स्वाप्

नोंघ — जुरा जुरा सापनो उपरथी रचायेला उज्जियिनीना कालानुकिमिक इतिहास माटे जुओ विमलाचरण लें। कृत ' उज्जिथिनी इन
एन्स्यन्ट लिटरेचर' जो के ए इतिहास मुख्यत्वे बौद्ध धने वीजा साधनोने
धाधारे लखायों छे जैन साधनमन्यों एमना ध्यानमां हुलनाए छोछा
आव्या जणाय छे

- १ वृकक्षे, भाग ३, ५ ९१७, भन्हा, ५ १०.
- २ एज वळी निचू, भाग २, पृ. ४३८
- ३ वृकक्षे, भाग ३, प्ट ९९८
- ४ जुओ महागिरि अर्थ.
- ५ जुओ चण्डरुद्राचार्य
- ६ जुधो रिक्षत आर्थ,
- ७ जुओ भद्रगुप्ताचार्य
- ८ जुओ आषाढभूति
  - ९ जुओ कालकाचार्य
  - ९० उने, पृ ४
  - ११ क्षाचू, उत्तर भाग, पृ १९६
  - १२ एज, पृ २०९
  - १३ एज, पृ. २७८
  - १४ उशा, पृ १००

१५ वृक्तभा, गा ४२१९, वृक्त्मे भाग ४, प्र ११४५ आ विशे जुओ सातमी ओरियेन्टल कोन्फरन्समां मारो लेख 'ए नोट ओन घी कुन्निकापण'. एना गुजराती सार माटे जुओं 'इतिहासनी केही'मा 'कुन्निकापण-प्राचीन भारतना जनरल स्टोर्स 'ए लेख, वळी जुओ कुन्निकापण.

- १६ वृक्छे, भाग ४, ए. १ ४५-४६
- १७ ए ज
- १८ दवैहा, प्र ५७; स्थासूञ, प्र. २६१
- १९ वृक्सा, गा ५७०५-६, बुक्से, भाग ५, पृ ९५०९
- २० उता, पृ. २१८; जुओ मुलदेव

[ उस्रिमी

२१ मासद् / ८. ३१३

१२ वस, १८ १११

ेर तंस पूर्व १४५ उण्डाहित पालेना एक सामना तड़नी हाजर अवाधी संबंधी ताले विशे जुमी अवाधेषु-गुजरात समाचार, सीरीप्तडी अंक सं १ ६ मो सारो सेख बटपुत्र रोहड कमें राजा

२४ शको अटल

१५ वृक्त माग ५ इ. १३६१-६३

२६ मोनियो ४. १९, मान् ४. १८६ उद्या ४. १९४ हलाहि

१० हरिस इंप्डिया प्र. २० व्येर्गाह प्र. १३

१८ सुनो शासन

#### चद्यन

34)

दासदेशनी राज्यानो कीशांतीनो राजा सहसानीकानो पौत्र शतानीक भने मुगानदीनो पुत्र, वैशाष्टीना गणसण्यक राम्यना गायक चेटकमा माणेक भने सबनी भमणोपासिकानो मनीको. बीणावा-दनमा निपुणताने कारणे त 'बीणावासराज' तरीके भोळसातो हती. अवित्ता सावा प्रयोग अधवा पंडमचेके पोतानी पुत्री वासवदणाने वीणा सिक्या मारे उदयनने पुत्रिमी केद कर्मी हतो परंतु उदयन साववदणाने साथे कर्द केदमाथी नासी सुट्या हता ' उदराप्यन सुत्र ' उदरान्या समेनी हथिमां एक बंगाविकेपन बनाववानुं प्रमाण कार्यदे छे भने बासवदणार उदयनमुं विक हरी क्षेत्रा माटे का विकेपननो उपयोग कर्मी हती एम कसु है "

कसराम उदयन बान बासबदण बानेक संस्कृत कान्यनाटकोमां गायक—नामिका तरीने बाने के ए सुम्पसद के पुरायोगी राजवस्य बडीओमां शतानीक पढ़ी उदयनतुं नाम बाने के (पार्किटर 'बाइने टिट्स ब्रेंगक व किंक एक,' पू. ७, ९६ ८२) पाकि साहित्वमां पण बनेक स्वाठे उदयन—बासबदण विहोनां क्यानक माठे के पलकच्छपुर ] [ ३१

उदयन ए वुद्र अने महावीरनी समकालीन अतिहासिक व्यक्ति तरीके पुरवार थयेल छे जुओ पद्योत

१ भसू, शतक १२, उदे, २

२ उशा, पृ १४२

३ आचू, उत्तर भाग, पृ १६१-६२

४ उशा, पृ १४३

५ जुओ मलालसेकर, 'पालि प्रोपर नेम्स '

६ जुओ ' केम्ब्रिज हिस्ट्री ओफ इन्डिया,' वो १,,पृ ३०८-१०

**उदायत** 

सिन्धु—सौवीर देशनो बळवान राजा ते वैशालीना राजा चेटकनी पुत्री प्रमावतीने परण्यो हतो. ते सिन्धु—सीवीर आदि सोळ जनपदीनो, वीतभय आदि त्रेसठ नगरोनो अने महासेन (चंडप्रयोत ) आदि दश मुकुटबद्ध राजाओनो अधिपति हतो. उदायने पोताना.भाणेज केशीने राज्य आपीने महाबीर पासे दीक्षा छीघी हती केटलाक समय पछी महाबीरनी अनुजा छईने ते पाछो वीतभय आन्यो त्यारे आ पीतानु राज्य पार्छुं छेवा आब्यो हरो एम मानीने केशीए तेने विष खवरावीने मारी नाख्यो हतो.

१ असू, शतक १३ उद्दे० ६, उने, ए २५२-५५, प्र ५८७

**धाच्, उत्तर माग, पृ. ३६–३**७

एछकच्छपुर

दशाणीपुरनु वीजुं नाम दशाणीपुर एलकच्छ तरीके ओळींबीयुं एना कारणमां नीचे प्रमाणे कथानक आपवामां आवे छे—दशाणीपुरमां एक श्राविकानो पति मिथ्यादृष्टि हतो एना उपर कोपायमान यहन एक बार देवताए एनी आंखो फोडी नाखी, पण आंथी अविकानो ३१ ) ( पळकच्छपुर भपवश बहो यम बाणीन घेटानी लांखा ( 'चलतरस संस्थिति' ) सावीन

बेसाडी दोषी सबारे प् माणसो शका छहेबा छाउवा के 'छारी बांसी एकक-वेटा जेवी छ ' छोकीना आयो पण प्रवाद बयो कोई पूछे 'क्यांबी बाबो छा '' हो यने बताब मळतो 'स्यां पछो एककण ('पेटा खेवी बांसवाळा') छ स्याथी.' बा प्रमाणे दशार्णपुर्त

एकच्छ मान थयु भा नगर वश्वमा नदीना किमार भावेखुं हुतुं ै गवाश्यद सीवे पण एकच्छनी पांचे हुतुं आर्थे महागिरि विविद्यामी जिनप्रतिमानं

पंतन करीने ग्रामायम्य तीर्थनी यात्रा माने एसकच्य गया हता हाति विस्त्रामां मोध तहेतीसमां सावेल प्रस्क ते आ एसकच्य होते पत्रो केटसक्ता मा तह तीसमां

जुबी गमाप्रपद, दशार्गपुर, स्थापर्त १ भाव कतर मान ६ १५८-५० भारत ६ २२६

र आयू उत्तर जान इ. १५६-१५० शासूब् इ. ११६

१ दो वि वाचा वहविधि कहा तत्त्व विकासिय विविध्य अस्य सञ्जूषिरि एकस्थ्ये महा धवागत्त्वं वेदस्य आयु, उत्तर साय इ. १५६-५७

४ वयसीसकार केन काहक इत एनदस्य हन्दिया ४, १८९ करात

भरत पणनर्जाना विविध्ययक्षीनमां तेणे कच्छ देश उपर विवय क्यों होबानो अल्डेस छे :

रुष्टमां बानीरो बैन वर्गानुबाबी हुठा व्यानंदपुरतो एक दरिह बाइएग रुप्टमां गयी हुठो तेने ए व्यानीरोय प्रतिबोध पमाहचा हुठो. देशाचारती नेप करता कहाँ है के रुप्टमां गृहरूबी रहेठा होय प्रस

आवासमां सामुको रहे ए दोक्कर गणातु नवी भुजो भामीर

- १ जप्र, पृ २१८, जप्रशा, पृ २२०
- २ भाचू, उत्तर भाग, पृ, २९१
- ३ वृक्ष (विशेषचूणि), भाग २, पत्र ३८८ टि 'कच्छ'नी मूळ धर्य 'समुद्र अधवा नदीकिनारे आवेलो भीनाशवाळो प्रदेश ' एवी छे प्राकृतमा पण एनो एवो अर्थ छे. सर॰ मालुयाकच्छ (झाध, भु १, अध्य १), भरुकच्छ आदि कच्छ विशेना पौराणिक उल्लेखो माटे जुओ पुगु

### कमलसंयम उपाध्याय

खरतरगच्छना जिनभद्रस्रिना शिष्य कमलसयम उपान्याये सं १५४४=ई स. १४८८मां 'उत्तराध्ययन सूत्र' उपर 'सर्वार्थिसिद्धि' नामे वृत्ति रची छे. कमलसंयमे स १५४९=ई. स. १४९३ मां 'कमस्तव' नामे कमप्रन्थ उपर विवरण रच्युं छे. आ सिवाय जूना गुजराती गद्यमां 'सिद्धांतसारोद्धार सम्यक्त्वोल्लास टिप्पन' ए तेमनी कृति छे व

- १ जुओ उक, प्रत्येक अध्ययनने अते पुष्पिका
- २ जैसाइ, पृ. ५१७

### कम्बल-सम्बल

मथुराना जिनदास श्रावक पासे कंबल-संबल नामे बे उत्तम बळद हता एक वार मथुरामा भडीर यक्षनी यात्रा हती, त्यारे जिन-दासनो एक मित्र तेने पूछचा सिवाय ए बळदोने गाडे जोडवा लई गयो, अने तेणे बळी बीजाने आप्या ज्यारे पाछा लाववामां आज्या त्याये कंबल-सबल खूब थाकी गया हता अने थोडा समय पछी तेओ अनशन करीने मरण पाम्या. तेओ मरीने नागकुमार थया ,हता; सुरिम्पुर जती वस्तते गगा पार करतां महाबीर जे नावमां बेठा हता तेने थयेलो उपद्रव ए नागकुमारोए टाळ्यो हतो एवं कथानक छे.

जुओ जिल्लाम

१४] [सम्बर-सम्बर

१ सीप्, पुर साग प्र २८१ आणि वा ४६५-७१ बुक्ते सरा ५ ६ १४८६ कम्न, प्र २०६-७ कक्षि प्र १ ५ क्षी प्र ९ विष् साग ४ ६ ८२४ मी आ क्षतानक छे गण स्त्री फैंक्स-धैतन में सामन्तिकेंग्र नवी

### क्सेक्मवी

ए नामनी मदौ. यू पणी प्रसिद्ध हुई। यने निशेना युक्त मात्र उपलब्ध उन्हेंस वरस्थी बनुमान साथ छ के को सो यूनो वाणी रहेरी महोदी समना यू पाणी बेस्ताद हुई।

मा नदीनो उल्डेस सरुष्टप्रवासी वज्रमूति भाषायमा संबंधमाँ भावे छे <sup>\*</sup> एबी छाटमाँ अधवा आसपासना प्रदेशमां स मावेसी हरो

रावरोलरनी 'काम्ममीमांसा' (श्रीवी माहरि, ए ९९ सवा परिचित्र ए २८४)मां तेन व बन्धन पाराणिक मुगोळ वर्णकर्ता मारतवर्षना मब मागोमां एक 'क्सटमान' प्रदेशनो उन्छेख छे, पण

एने का करेडमती नवी साथे की संबंध होय एम सामर्तु मधी. १ दिश्र वि करेडमती पीचे ते चायिक वर दश्र बाम न बंदक्य। वन करेड बाम बढी। तकाः अध्योदायीय। उत्तर व प्रविद्यानद्वारं सन्दाः जनीवनित् केट। क्या (सा. ग. १८-५९ क्याफी बति).

यस्याः भगवामात छन्नः। स्वयः ( इ १ इसी वज्राभृति सावार्यः

#### र दशः वज्ञभूति आह्या काकिणी

पक नानो तिको. बीस कपर्यक-कोडी सरावर पक काकियो धरी. प तिको छोबानो हुवो धने दक्षिणापबर्मा पण तेनो स्पवहार पाछतो हुनो पक मिलारीय स्पष्क बटाबीने कावियोक्षो करी हुनी धने दररोप्र एक-एक काविया है बागरता हुनो पूर्व कुबानक 'उत्तरास्थ्यन सुत्र नी शानिसद्दिनी बृत्तिमां छे स्थान धर्मा समुप्रत्रीनी

वावतर्मा कितियो 'सम्दनो वय 'सम्ब' प्रवाबतो इतो जैन

मान्यता प्रमाणे चऋवर्तीनां रत्नोमां 'कािकणी' रत्ननो पण समावेश थाय छे.

कािकणीनी कीमत रूपकना अंगीमा भाग वरावर हती एम डा याकोवीए केटली टीकाओने आधारे कह्युं छे ' 'कािकणी 'नुं वीजुं नाम 'वोडी ' हतुं एम सं १४४९=ई स. १३९३ मां पाटणमां लखायेला 'गणितसार 'ना गुजराती अनुवादमा आपेला तोल, माप अने नाणानां कोष्टको उपरथी जणाय छे ' हलकी कीमतना सिका तरीके आचार्य हेमचन्द्रनां अपभंश अवतरणोमा 'वोिक्क 'नो प्रयोग छे "

- १ 'काकिणि ' विंशतिकपर्दका, उशा, पृ २७२
- २ ताम्रमय वा नाणक यद न्यविहयते यथा दक्षिणापये काकिणी। वृकक्षे, भाग २, पृ ५७४
  - ३ उशा, पृ २७६
  - ४ जुओ कुणाल
- ५ उ नो अप्रेजी अनुवाद (सेकेड बुक्स ओफ ध इस्ट, प्रन्य ४५), पृ २८
- ६ '२० कडडे कांगिणी ते भणीई घोडी '— धारमु गुज धाहित्य-समेलन, अहेवाल, इतिहास विभाग, पृ ४०
- ७ 'केसरि न लहह बोड्डिश वि गय लक्ष्वेहिं <sup>'</sup>घेप्पति'-' प्राकृत व्याकरण,' ४. ३३५

## काननद्वीप

ज्या जुदी जुदी दिशाओमांथी जळमार्गे माल आवतो हतो एवा जलपत्तन तरीके काननद्दोपनो निर्देश छे एमां बहारथी नावदारा आवतुं धान्य खवातुं हतुं धा द्दोपनुं कालणद्दीप एवु नाम पण पाठफेरथी मळे छे व

आ द्वीपनु स्थान निर्णीत थई शक्यु नथी

१ क्षासूचू, पृ २८१, उद्या, पृ. ६०५ वद्यामा का साथे स्थलपत्तन सरीके मधुरानो उल्लेख छे

काननद्वीप

11 ]

र कड़ों माग रे प्र. १८३०-८४ ) भाराप प्र १८१

कान्यबस्त

कतीज हाहेर काम्यकुम्ज नगरना राजा साचे एक जैन सुरिनो गोष्टिप्रवय 'आवस्यक शुत्र उपरनी मस्यगिरिनी वृत्तिमां 🗗 प्रस्तर राजा ते कान्यकुम्बनो प्रसिद्दार्रवंशीय लाग राजा अवदा नागमंत्र बीजो

(सं ८६४ – ८९० चर्नस ८०८ – ८३४) अने णस्रिते बणभस्तिर्म् होवा घटे. मोनेराधो कान्यकुम्ब धने शान्यकुम्बनी मोदेरानां बप्पमहिसरिनां पर्यटनो तथा काम राजा साथेनी तैमनी गोपि इरबादिनं वर्णेन 'प्रमाक्कचरित'-अंतर्गत 'बप्पशक्तिरिचरित्त 'मां प्राप्त बास से

कान्यकुम्ब ए नि शक रीते मध्यकासीन आरक्षमां सीवी समृद मगरो पैडी एक इसुं 'सूत्रकृतांग सुत्र ' उपरनी शीकाचार्यनी इसिमां उद्धत करवामाँ आवेशा एक हास्सहामा मक्ष्म हस्तक्रम्य गिरिपचन, सिंहपुर कुक्षिपुर, भाषामुख भने घौरिपुरनी साथे काम्यक्र्यनो पण निर्देश छे रहसा बाळकन था बर्चा नगरोना रामा सरीके वर्णवीने धर्म राखवानी प्रयास एमी छ<sup>®</sup>

१ अध्य प्र ९१-५३

९ प्रकारी अमेरी केंद्र बोध्य गुर्वर वेख की ३ ४ ५९ ७५ भोशा राज्यताने का इतिहास संद १ प्र. १८७

) राजावस्तरिकाः बन्ती स्थनं शार्वं बाजावत सेरवारकाववेष-प्रभारिकापनै: तक्क-- कविजो है। बनारत व बद्धारस्त व इस्व क्रममिरियानधीरपुरस्य य बन्नवस्य विभास्य व इधिवसुरस्य स कन्नपुरुष वानसारकोरिक्यरस्थे व इस्की प्र. ११९ कार्तवीर्य

इस्सिनापुरनो राजा चे पुराणो प्रमाणे माहिष्मसीना सहस्रार्जन तरीके प्रसिद्ध से

जमदिम ऋषिनी पत्नी रेणुकानुं हरण कार्तवीर्यनो पिता अनंतवीर्य करी गयो हतो, एथो जमदिमना पुत्र रामे—परश्ररामे एने मार्यो. आधी कार्तवीर्ये जमदिमनो वध कर्यो, परिणामे परश्ररामे सात वार पृथ्वी नक्षत्री करी, जेना बढलामां कार्तवीर्यना पुत्र सुमूमे एकवीस वार ब्राह्मणोनो संहार कर्यो.

सुभूमे एकवीस वार ब्राह्मणोनो संहार कर्यो ए वस्तु पुराणोमां क्यांय नथी ए नोंधपात्र छे.

१ सूक्त्रशी, पृ १७०

## कालकाचार्य-१

तुरुमिणी नगरीमां रहेतो भद्रा नामे ब्राह्मणीना तेओ भाई हता. तेमनो भाणेज—भद्रानो पुत्र दत्त ए नगरना राजाने हांकीने गादी पचावी पड्यो हतो एणे घणा यज्ञो कर्या हता. तेनी समक्ष कालका-चार्य यज्ञोनी निन्दा करवाथी दत्ते आचार्यने केद कर्या हता. आचार्यनी भविष्यवाणी अनुसार, राजा पाछळथी भूडे हाले मरण पाम्यो हतो. आ कालकाचार्ये उन्द्र समक्ष निगोदना जीवो सबधी व्याख्यान कर्युं होवानी पण कथा छे

आ कालकाचार्य गर्दभिल्लनो नारा करनार कालकाचार्यथी भिन्न तेम ज एमना पूर्ववर्ती होवानो मुनि कल्याणविजयजीनो मृत छे. भा प्रथम कालकाचार्यनो समय तेमणे वीरिनर्वाण स ३०० थी ३७६ (=ई. स पूर्वे २२६थी १५०)नो गण्यो छे.

> १ क्षाम्ब् , पूर्वे माग, ष्ट ४९५-९६; आम, ष्ट ४७८-७९ <sub>,</sub> २ 'प्रमावकच्चरित,' प्रस्तावना, ष्ट्र २३-२४

३ एज

## फालकाचार्य−२

ं उज्जियनीना विषयी राजा गर्दभिछनो नाश करावनार तथा पर्युषणपर्वने भादरवा सुद पांचमने बद्छे चोथना दिवसे करावनार तरोके था भाषांचे चैन इतिहासमां प्रसिद्ध छ प्रवस कालकावांचे ब्राह्मणपुत्र हुता, उमारे था द्वितीय कालकावांचे, 'प्रमावकवारत' अनुसार, भाराबासनगरना खप्तिय राजा बीरसिंहना पुत्र हुता 'प्रमान जीवनकाळ मुनिश्री कम्माणविवयदीना मत प्रमाण, बीरनिर्वाणनी वांचमी शासन्दोमां कर्षांच् ईसबी सन पूर्वे १ सी सदीना बरसामां छे

उद्यक्तिना गर्दमित्र राजाए कासकाचार्यनी मुबान बहेन सरखती वे पण सामी इसी तेर्नु हरण इसीने एने मेत पुरमां वासफ करी हती. भाषी कासकाचार्य पारसकुछ-ईरानने किनारे वाईने शकाने क्षिन्दकदेश-हिन्द (जुओ हिन्दक्तदेश) उपर आक्रमण करवा गाउँ तेही सम्या हता पहेलां सो तेमी वधा सरार्टमां मान्या वरसादनी समय होनाकी त्यां रोकाई जतुं पहच्च, पछो भोमास पर यतां कालकाभार्ये शकोने गर्दभिष्ठ उपर साक्रमण करवा माटे प्रेमी साटना राजाको क्षेत्रन् गर्देभिन्छे अपनान कुर्य हत् तको पण साथे मळ्या. भन बपाए मळी उजस्मिनीने घेरी मास्यो भा बाज गर्विमिक राजा गर्वमीविधानी साधना करतो हतो गर्वमीना स्वक्रपर्मा ए विधा भावीने मोटो भवाज करती एटडे शबुसैन्यमां जे कोई एमो अवाज सांगळ ते र्जापर बोकतो परती उपर पडतो कास्कापार्वे था रहस्य जागीने सनेक नागावळी योद्याओने तैयार रहेवां कर्ज़ के गर्दगी पोतानु मों पहोले करिने सम्द को त्यार पहेकां समारे से बागवर्षांची पूरी देते ' तेजोप तेम कर्यु, पूरके गर्दमी कोबायमान वर्ष धर्दमिल स्पर विद्यासक करी, तेने कारा भारीने चाकी गईं अबळ बनेहा गर्देशिक्षांनी नास इतीने उज्जीपनी इयज केवामां शावी, तथा कास्कामार्थे पोतानी बहेममे पाछी संयममां स्थापित दरी."

पर्युफारवेना विविधित्वर्धेन संबंधमां भागमोळ कथानक भा प्रमाण छे सरुकप्छमां बरुमित्र राजा हतो, भने हेनो माई मातुभित्र युवराज हतो, तेमनी बहेन मानुश्री नामे हती, जेनी पुत्र बलमानु हतो कालकाचार्य एक वार विहार करता त्यां आव्या अने तेर्मनी देशना सांभळी बलमानुए दीक्षा लीघी आशी रुष्ट थयेला बलमित्र-भानुमित्रे कालकाचार्यने निर्वासित कर्या. वळी बीजी एक प्राचीन परंपरा प्रमाणे, बलमित्र—भानुमित्र कालकाचार्यना भाणेज हता. तेमणे पोताना पुरोहितनी शिखवणीथी तेमने निर्वासित कर्या हता. ज्यारे त्रीजा एक मत प्रमाणे, राजाए आखा शहेरमां अनेषणा करावी हती-एटळे आचार्यने क्यांयथी मिक्षा मळती नहोती. आथी तेमणे नगर छोडी दीधुं वर्षाकाळमां ज आचार्य प्रतिष्ठान जवा नीकळ्या अने त्यांना सघने तथा श्रावक राजा सातवाहनने अगाउथी पोताना आगमननी खबर आपी त्यां जईने आचार्ये भादरवा मुद पांचमने दिवसे पर्युषण करवानु कहुं, त्यारे राजाए कहुं, 'ते दिवसे तो मारे लोकरूढि अनुसार इन्द्रमहोत्सव करवानी होय छे, माटे पर्व आपणे छठने दिवसे करीए ' आचार्य बोल्या के 'पर्वनु अतिक्रमण न शर्ह शके ' आथी राजाए चीथनुं सूचन कर्युं अने ते आचार्ये स्वीकार्यु, त्यारथी चोथना दिवसे पर्युषणनी उजवणी शरू थई.

अविनीत शिष्यना परित्यागनुं एक कथानक पण कालकाचार्यना संबद्मां छे ए समये कालकाचार्य उज्जियनीमां रहेता हता. तेमनो कोई शिष्य भणवा इच्छतो नहोतो, आथी नाराज थईने, एमना बहु-श्रुत प्रशिष्य सागरश्रमण सुवर्णभूमिमा विहरता हता त्या, कोईने खबर आप्या सिवाय तेओ चाल्या गया हता सागरश्रमणे कालकाचार्यने ओळख्या विना गर्वथी व्याख्यान करवा मांडचुं पाछळथी बीजा साधुओ आवी पहोंचता रहस्यस्फोटन थयु अने कालकाचार्य सागरश्रमणे प्रज्ञापरीषह सहन करवा—ज्ञाननो गर्व नहि करवा विशे उपदेश आप्या कालकाचार्य आजीवको पासे अप्टाग महानिमित्तनो अभ्यास करवा माटे गया होवानो उद्धेस सथदासगिमना 'पचकक्य'

थ**ः** ] [काळकाचार्च−१

मान्यमा छे, प्रदेश बीमा अनेक प्राचीन देश आचारोंनी जेम तेको नैमिषिक-म्योष्टियी हता बळी निमिष्टशासमां केन बाबायों करती पण ए काळे बाबीबको चित्रयाता हता एम बा उन्हेस पुरवार करें छे

कारकार्नार्व एक मन्यकार वण हता पनो पुरावो मळे छे सुप्रसिद बैन कवारम्य 'बसुरेव-हिंदी'ना प्रांसमां 'प्रयमानुनोग'नो भाषार टांत्रयो छे भने 'बसुरेव-हिंदी'नो कवानो सारांस 'प्रयमानु योग' मन्यनांची उद्गुत ययो होतानुं स्वन्त त्यां करवामां भार्त्यु छे सम्बद्धासाणिना 'पेक्कर' माप्य प्रमाणे 'प्रयमानुयोग'ना कर्ता धार्म कारक हता बारमा भेग 'इडिवाद'—संतर्गत 'मूख प्रयमानोग' भेनो सांक्रत्य उद्धेस 'नंदिस्त्र'मां मुख्याननु स्वदूप वर्णकर्ता कर्म छे ते सुर्वंबद प्रन्यक्रमे नय पतां तेनो पुनस्त्रात धार्म कारके कर्मो होस एस अनुमान बाय छ पण धार्म कारकतो पुनस्त्रत 'प्रयमानु-योग' पण धार्म पणा सेका थयां नाग पानी गयेको छे

योग ' पण काबे घणा सैका बया नारा पानी गयेछो छे कालकानार्व विरोना प्रासंगिक उन्हेस्सो पण आगम साहित्यमां कानेक स्वर्क छे

भागमोदर साहित्यमां पण काक्काबार्यनी कथा प साहित्यस्था माने एक खूब च लेकप्रिय विषय रही छे संस्कृत, प्राकृत तीन च जूनी गुबरातीमां-राचमां तेम च पबमां मोटी संस्थामां मुत्रा खुवा झात तेम ब कहात छेलकोने हस्ते काळकाबार्यना कबाको रचाई छे भनं कुल्यसूत्र तेम ब 'उत्तराध्यसन' जेबा शाममसाहित्यना परित्र

प्रविभी केंग 'कारफाश्यां' कवा'नी यण सचित्र इस्तप्रसी मळ छे "
प्रश्चापमा सूत्र'ना कर्ता आर्थ स्थापने केटलाक विद्वानो कालका
पार्विची अभिम गणे हे

पाक्षभा आश्रम गण छ उपर्युक्त ने कास्कामार्थ उपरक्ति ए व नामना तीवा एक कालणद्वीप ]

भाचार्य पण थया होवानुं भनुमान जैन शास्त्रो अने स्थिवरावलीओं ' उपरथी केटलाक विद्वानो करे 'छे <sup>१२</sup>

१ प्रच, ४-श्लो ३-७

२ प्रच ( अनुवाद ), प्रस्तावना पृ २३-२४

३ निचू, भाग 🤾 पृ ५७१-७२

४ निच्नो टाइप करेली प्रतमा क्षष्टी भरकच्छेने बद्छे उन्जियिनी छे, पण अन्य भूळ प्रन्थोमी भरकच्छ छे एटले निच्ना पाठमा केईक भ्रष्टता होवानु अनुमान थाय छे.

५ निचू, भाग ३, ए. ६३३

६ उचू, पृ ८३-८४, उशा, पृ १२७ (नि गा १२०), उने पृ ५०

७ प्रच ( अनुवाद ), पृ २३

८ 'वसुदेव-हिंसी ' ( अनुवाद ) पृ ३६

९ व्यम ( उद्दे १० ), पृ ९४, खुकक्षे, भाग ५, पृ ११४७८ तथा १४८०, खुकम, भाग १, पृ ७३-७४; कसु, पृ ५२४-२५; कदी, पृ ११३-१५, किक, पृ १७३, १७६-७९, कदी, पृ ३-५, कसंवि, पृ ११८-१९, श्राप्तर, पृ ७, इत्यादि

१० कालकाचार्य विशेनी जूनी कथाओ माटे जुओ सारामाई नवाब-प्रकाशित 'श्रीकालक-कथासम्ह' एमां नथी सघराई एवी सोळमा सैकानी गुजराती गद्यमा लखायेली कथा माटे जुओ 'प्रस्थान,' फागण-चैन्न,' स १९८८ मा भारो लेख 'कालकाचार्यकथा' कालककथानी द्वायप्रतीमा मळता चित्रोना अभ्यास माटे जुओ नार्मन न्नाउनकृत 'स्टोरी ऑफ कालक '

११ जुओ स्याम आर्य

१२ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, ए. २३, 'कालकक्ष्यासम्ह,' प्रस्तावना, ए ५२-५३.

## कालणद्वीप

ε

जुओ **कानन**द्वीप

#### कासनगर

मानंदपुरनुं बीजुं नाम त्यां ध्वषेन राजानो पुत्रमरणनो सोक दामावता माटे 'कल्पसूत्र'नी दाघना वर्द हती.'

### जुणे आनन्दपुर

१ प्रस्केनगुरस पुत्रमालातंत्रस धकाविध्यावामुमानन्त्रपूरं, ध्यति इकानगरमहात्त्रास्त्रस्या स्वे धमाध्यस्य मन्त्रो वावविद्यात्रस्य इति । क्यंति ए. ११८-१९. मा उनकेवने धन्यकः त्योकपीए तो क्यंतिका कर्या विज्ञानस्थित धमस्य (१४ मो धैश) वालंबपुर स्वाकन्या कर्मा विकास क्यांत्रस्य विकासमान एटका माटे हे हे वैत के अन्य धाहित्यां उत्तरस्य वर्षा स्वतंत्रपुर्वा सनेह मानोयां का माम वर्षा कारमत्रोधिकः.

मपुराना वित्रशत्र राज्याना काला नामे वेदमाधी मयेला पुत्र. बीखा भ्रीमा पत्नी पिदार करता तेली सुद्रारिकपुर न्यांना हृत्वात्र राज्या साये तेमनी बोहेन परणांची हृती त्यां गया हृता त्यां प्रतिमा—कामो-त्यां व्यानमां रहेला हृता त्यारे एक शिवाकणीय तेमने फाडी सामा हृता

मगवती सूत्र '(शतक १ उरे॰ रे)मां पार्यार्फस कालस्य वेशिपुत भागगारनी इत्तान्त आवे छे से भाषी मिम छे के केम प करेल मुस्तेख छे

९ भा केन पारिज्ञापिक सन्द छे अने शृतिनाकक धर्वस्थापारण प्रतिशा सन्दर्भा निक से.

र बबा ए. १११ छो ए ४०

#### **कुकुण**

जुओ कोङ्गण

कुठभरावर्त

कुंत्ररावर्ष अने रभावत्त ए वे पर्वत पासे पासे आवेद्धा हता

£8 ]

जुओ रथावर्त्तगिरि

कुडङ्गेश्वर

क्रणाल ो

उज्जियनीमा अवतिषुकुमालना देहो सर्गना स्थान उपर तेना पुत्रे वधावेल मन्दिर.

जुओ अवन्तिसुकुमाल

कुणाछ

सम्राट् अशोकनो पुत्र अशोक तेने उज्जियनी कुमारभुक्तिमां आप्यु हतुं. ते आठ वर्षनो थयो त्यारे अञोक तेना उपर एक पत्र पाठन्यो अने तेमा लख्युं के—'अधीयतां कुमार'' (कुमार विद्याभ्यास करें) पण कुणालनी अपर माताए ए उपर अनुस्वार मूकीने 'अंधीयतां कुमार'' (कुमारने अंध बनाववामां आवे) एम करी दीधुं. कुणाले तो पितानी आज्ञा शिरोबार्य गणीने तपावेली सळीथी आंखो आंजी अने अंध बन्यो आ वात जाणीने राजाए उज्जियनी अन्य कुमारने आपी, अने कुणालने बीजां गामडा आप्यां. कुणाल संगीतिवद्यामां निपुण हतो एक वार अशोक पासे आवीने पडढा पाछळथी गान करीने तेणे अशोकने प्रसन्न कर्यों अशोके पृछ्युं, 'तने शु आपु 2' त्यारे कुणाल बोल्यों

चंदगुत्तपपुत्तो य विंदुसारस्स नत्तुओ । असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागिणि॥

(चंद्रगुप्तनो प्रपोत्र, बिन्दुसारनो पौत्र अने अशोकश्रीनो अंध पुत्र काकिणो मागे छे )

अशोके पुत्रने ओळल्यो अने आलिगन कर्यु अमात्योए कहुँ के 'राजपुत्रोनी बाबतमा काकिणीनो अर्थ राज्य थाय छे.'' पछी कुणालना पुत्र संप्रतिने राज्य आपवामा आव्युं के आ बृत्तांतमानी बधी व्यक्तिओ ऐतिहासिक छे

**१**२ ] [ कुपांड

जुमी संप्रति

१ शुक्रो क्यादिको क्यकिनी मां राजस्थी वर्ष हो क्या स्थापाली व सारी शक्ते

२ हाकमा या २९१-९४ हाकम साम १ छ ८८-४९ हाकके साम ३ छ ९७ अनुहा छ १ –५५ क्रोके छ १६४-६% धरवाति

### कुण्डसमेष्ठ

कुंडसमेंठ नामे ब्येतरनी यात्रामां मरुक्ष्यनी आसपासना पणा होको सस्वद-उवाणी करता हता '

#### **इ**शिकाफ्य

हुनिक प्रष्टे तर्ण मुक्तनी वनाम बस्तुका देमां मळे प्या सापण प्रष्टे हुकात ठे कुविकायण कुविकायणमां बस्तुकं मून्य सरीदनारमा सामानिक दरमा प्रमाणे ठेवामां भावतुं से मागस दौधा भवानो होग ये पोठानां बक्ती उपकरण, पोते सामान्य मागस होग तो पांच सर्पेषमानं कोमले स्तरित्तं सकतो, जो हुन्य (स्थापिपति) भववा सार्वेगाह होग तो तेमे एक हमार भाषवा प्रकृता भने, सो ते

हो पाव, स्थापमान कामन स्थापी रहता, जो हम्म (क्वापियांत) भवना धार्षपाइ होय तो तेणे एक हजार भाषणा पहला कमे, जो ते शाजा होय तो तेणे एक कास भाषणा पहला राज्यहर्गा क्षेणिकमा राज्यकाळमां पनिक नेटीचुन शास्त्रिमंद्र देशा केशी बसते पोतार्चे रजेक्ट्रण लगे पान क्ष्ट्रीकालणांची देशे माने एक कास लापीने स्रतीयां हता महास्थारलायोग्य कमाह श्रीव्यकुमार ज्यासिक दोस्ना लीधी त्यारे तेम ज राजा श्रेणिकना पुत्र मेघकुमारे दीक्षा लीधी त्यारे पण एटली ज कीमते पात्र अने रजोहरण कुत्रिकापणमांथी खरीदवामां आव्यां हतां

राजा चंडप्रचोत ज्यारे अवन्तिजनपद उपर राज्य करतो हतो त्यारे उज्जियनीमा आवा नव कुन्निकापण हता, तथा राजगृहमा श्रेणिकना राज्यकाळमां पण कुन्निकापण हतो वळी कुन्निकापण साथे केटलीक लोकवार्ताओ पण जोडाई छे, जेमां कुन्निकापणमां भूत पण मळता एम कह्युं छे. आ प्रकारनी लोकप्रसिद्ध वार्ताओ कुन्निकापणना वृत्तान्त साथे वणाई गई छे ए वस्तु ज बतावे छे के कुन्निकापण ज्यारे केवळ भ्तकाळनी वस्तु बनी गयो हतो त्यारे पण लोकमानसे एनी स्मृति केवी रीते संघरी राखी हती.

कुत्रिकापण जेम त्रिभुवननी सर्व वस्तुओनो भंडार हता तेम इच्छित वस्तु संपादित करवानी छव्धियाळा अथवा सकल गुणना मंडार साधुने 'कुत्तियावणभूआ ('कुत्रिकापण जेवा') कहा। छे ट

िनोंध —कुत्रिकापण विशेना आगमधाहित्यना केटलाक प्रासिगक उस्लेखो माटे जुओ 'अभिधानराजेन्द्र,' प्रन्थ ३ वळी सातमी अखिल भारत प्राच्यविद्याः परिषदना अहेवालमार मारो लेख 'ए नोट ओन धी कुत्रिकापण' तथा 'इतिहासनी केडी मा प्रन्यस्य ययेली लेख- कुत्रिकापण अर्थात् प्राचीन भारतना जनरल स्टोर्स ' जोनो ]

९ बृकमा, गा ४२,१४ तथा ते उपरथी क्षेमकी तिनी ब्रुत्ति; मसूध, शतक ९, उद्दे ३३

र बृकमा, गा. ४२१५ तथा ४२२०-२२, वृक्हे, साग ४, पृ ११४४-४६.

३ ए ज

४ मस्, , शतक ९,, उहे. ३३

५ हाघ, प्ट ५३

६ बृक्तमा, गाः ४२२०, वृक्के, पृ ११४५-४६.

. ७ वसे डस्डकिती

सुनो डक्जियिनी

### क्रमारपाछ

W ]

गुजरातनो प्रसिद्ध चोल्लसम्बर्धाम राजा (स ११९९-१२२९
च्हाँ स ११९२-११०६) चैनवर्म प्रत्येनु एनुं वरुण वाणिहों हे
कुमारगलना बहेन बने बनेदी एकदार पूछ रमठी इस्रो सेमा बनेदीए
'मृहियामे मार' एम कहोने बैंक साधुनी मरस्टरी कुरी इसी एमांभी
भीर बेरना बीज ववामां इस्रो

ণ মামনুত ৭২৬

#### **कुम्भकार्**कट

पंपानगरीना (केटडाइना मत गुजन, आबस्तीना) रकन्तुक राजार पोतानी बहेन पुरद्दावशा कुंन्फारकटना राजा दंबको साथे परणाबी हरी. केटडाफ समय पत्नी न्वन्यके बीका खेली धन बिहार करता ते कुमकारकट वह पहोच्या, न्यां वंदकोना आदेशबी पत्नी वय करवार्गा लोक्यो. रकन्द्रक मरीने लॉन्कुमार देव बयो बाने तेल बाह्युं ये नगर बाळीने मरम करी नास्युं. बाम बुंमझारकट नगरने रवाने लस्ख कर्युं बाने वंदकना नाम उपराधी बंदकारकर तरीके लोळसाई पे

दक्षिण गुकरतमां बांगकी शरू बता बने गोशावरी गर्नामां बासपास सुधी दिस्तरोखा करचने देवकारच्य गणवामां बादे छे बड़ी कुंगझाकटने बेटे बाहती 'कट पदान्त नांधपात छ घो के बैन संस्कृतमां ए प्रयोजाय छे बने प्राहृतमां एनुं 'कट' प्रयुं हर कपास कुम्भकारप्रक्षेप ]

11:

छे, छतां मूळे ते सस्कृत 'कृत'मांथी न्युरपत्र थयेल छे. प्राचीन अने मध्यकालीन भारतमां सैंख्यावैंध नगरोनां नामने अंते 'कट' पदान्त मळे छे, जेमके कोएकट, भोगकट, वशकट, वेणाकटक, इत्यादि पैचासरना जयशिखरी उपर आक्रमण करनार भुवड कल्याणकटकनो राजा हतो ए जाणीतु छे. ओरिसाना पाटनगर 'कटक 'नुं नाम आवी रीते मूळ कोई आखा नामनो सक्षेप हरो—जेम 'अणहिलवाड पाटण'नो सक्षेप 'पाटण' छे तेम जावा वगेरे भारतनी प्राचीन वसाहतोमां 'जोग्यकर्त,' 'जकर्ते' वगेरे नगरोमां नामोने अंते 'कर्त' पदान्त छे, ए संस्कृत 'कृत'मांथी छे, जेमांथी उपर्युक्त 'कट' पण न्युप्तन्न थयेलो छे. गुजरातनां 'कडु' 'कडी' वगेरे स्थळनामोनी ब्युप्तत्ति आ रीते कृतकम् र सस्कृतमा 'कटक'नो एक अर्थ 'सैन्यनी छावणी' एवो थाय छे, ए आ साथे सरखावी शकाय जो के त्या पण ए शब्द प्राकृतमांथी संस्कृतमा **छेवामा आव्यो होय ए ज सं**भवित छे

# जुओ दण्हकारण्य

१ वृकमा, गा ३२७४, उत्तू, प्ट ७३, उने, पृ. ३६, उशा, पृ ११४-१६, निचू, पृ १११३.

२ कदी, पृ ११८

३ उशा, पृ ८५

४ 'गुजरातना कैतिहासिक लेखों,' भाग १, न. ५४, ६०,८८

५ 'तंत्रोपाख्यान,' पृ १२, 'पचतत्र' (अनुवाद), उपोद्घात, पृ. ३९

६ चेटरजी, 'इन्डो-भार्यन ॲन्ड हिन्दी,' पृ ६९

# कुम्भकार्प्रक्षेप

ंवीतमय नगरनु बीजुं नाम ए सिनवल्लीमां आवेलुं हतु. सिन्धु— सोवीरनो उदायन राजा जे साधु बनी गयो हतो केले कर्न — कुंभकारना धरमां निवास क्यों इता. गश्चाना मालेज केशीय धने हेर भाषी मारी नास्त्रों इतो, आधी देवीय श्रद्धावात पेदा करी भारता नगरना नाश करी नास्त्रों पर्माधी एक मात्र कुंमकारतुं पर अ पेयु स्याखी ए स्पन्न कुभकारप्रकृष (मा कुंभ्यगारपत्रकेष) तरीके प्रसिद्ध ध्य '

'बातक' (में ४६३)मां रेतीना सोफानधी कुंमवती नसरीनो नास बयानो उस्केस छे ते उपर्युत क्यानक साथे सरसाबी शकाय जन्मो जहायन, बीतमय नगर भने सिनवाडी

९ माचू उत्तर माग १. ३०

#### इपस्यमामा क्या

वाकिष्यांक उपोजनसूरिए शक स. ६९९ (ई. स. ७००) गा छेडा दिवसे सावाजियुर (बालो) )मां रचेजी विरुद्ध प्राकृत प्रमेषण सारतना बीजा प्र<sup>2</sup>शोना बासीभानी जेम स्प्रदश्तीको जने गुर्नेरो<sup>नी</sup> मापानी साखणिकता पण पूर्मा सुचनरूरे बर्जबेडी हे थे स्वास ठो पनी प्राचीनताने काले नोष्पात हे

श्रममदेवस्हिए 'कुबलयमाम कवा ना महेन्द्रसिंह नामे एक पात्रनो 'स्मानास्त्रत्र बृतिमां निर्देश कवों छे र

१ हमी वसन्त रजत महोदन स्मारंड प्रन्त वो आवार्य विस्तिवयवधीनो केंद्र इनकस्मावा साठ्या हैन्द्रानी एक वेयस्त्रा,

१ वोजीरो क बोर्थरात छ। एव एकटकेव वडीक्टा पुत्रका प्रतिकारी क्या उत्तकमात्रकारको प्रदेशकिश्चानिकारो राजध्रत श्रूको स्वतान प्रभाग

### -

इषावर्ष केन शाहुकोर विदान करना योग्य साम्रोधनीया हैको कार्यकेन -मैकोना एक देश जेनु पाटनगर शीरियर हार्ष १ , 'वहुदेव-हिंडी 'ना कथन प्रमाणे आनर्त, कुशावर्त, सुराष्ट्र अने शुक्रगण्ट्र ए चार जनपढ़ो पश्चिम समुद्रने किनारे आवेटा हता, अने ए जनपढ़ोनी प्रधान नगरी द्वारवती हती हिने, प्राचीनतर शौरिपुर यमुना नदीना किनारे हतुं अन शौरि राजाए पोताना नाना भाई सुवीरने ते सोंपीने पश्चिममा कुशावर्तमा जईने शौरिपुर नामे नगर वसाव्यु हतुं अने यादवो पण जरासंधना भयथी पश्चिममां, द्वारवतीमा जईने वस्या हता आ उपरथी अनुमान थई शके के कुशावर्त तेम ज शौरिपुर वे हता—एक उत्तरमा अने वीजुं पश्चिममा. स्थळान्तर कर्या पछी नवा स्थानोने जूनां नामो आपवानु जातिओनुं वटण जाणीतुं छे.

१- वृक्तभा तथा वृक्क्षे, भाग ३, १ ९१२-१४, स्क्रुशी, १ १२३. २ 'वसुदेव-हिंडी' (मूल), १ ७७, अनुवाद, १ ९२ ३ जुओ शोरिपुर

# कृष्ण चासुदेव

जैन पुराणकथा प्रमाणे, नव वासुदेवो पैकीना छेला—नवमा वासुदेव, यादवोना नेता, बाबीसमा तीर्थकर नेमिनाथना काकाना दीकरा माई एमने माटे देवोए पिधम समुद्रने किनार द्वारवती नगरी वसावी हती कृष्ण वासुदेवनो प्रतिवासुदेव जरासध हतो प्रधुम्न, सांब, भानु, सारण, जालि, मयालि, उत्रयालि, पुरुषसेन, वीरसेन आदि कृष्णना पुत्रो हता

श्रीकृष्णनु संपूर्ण चरित्र आगमसाहित्यना एके प्रन्थमा नथी 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' जेवा -प्रन्थना 'नेमिनाथचरित्र'माथी तथा अन्य नेमिनाथचरित्रोमाथी तेम ज दिगवर परपराना पण ए प्रकारना प्रन्थोमाथी जैन परंपरा अनसारने एमने चित्र समस्ति स्टि ५०] [ हुस्स बासुदेव

हांके एम के व्यागमसाहित्यमां तो कृष्ण दिशेनां सम्ब्यार्वय प्रासंगिष्ठ कृषानकी बने प्रसतोपात उच्छेस्नो मात्र प्राप्त बाय के रे

१ झींव सच्च १६ सम्बु उत्तर माग १८ १६-१८ वास १८ १५६-५६ सेंद्र वर्ग १ ५ वद १८ ४१ ४२ वे स्त १९१ सस्य स्व १७०० दवा १८ १९ वर्ष १८ ५५ ११ १६०-४१ वर्ष १८ ९, ११ -९१ क्ली १८ ११ १६१-७ व्यक्त १९ १७ ७ -०१ १९९-४४२४ वह ११४-१५, पाद १९ देखी १९०० होस्स्य संवेधीयोगं वृद्धि गाटे हुनो वद. केसी

सिन्धु-सीबीरंग राजा उदायमनो माणेज उदायने महाबीर पास दीखा छोपी ध्यारे पोठाना पुत्र भगीदि प्रस्तनी क्षेयबुद्धियो तेने गायी महि जास्तां केठाने भाषी इती पण पाळळबी केशीए उदायनमें केर भाषीने मारी नास्त्री हती :

जुमो अपीषि <sup>क्षते</sup> **रहा**यन

१ सम् कराव १३ कर्ष ६ उने १८ १५१-५५, वस्तुः १८ ५८० वस्तु उत्तर साथ १८ १६-२०

#### कोड़ास

एक निव्यात यांत्रिक सोपारकना एक स्वकारनी वासीमाँ बाइणायी उत्पन्त वयेको ते पुत्र इतो स्पकारनी वसी विका तेले बीस्त्री सीबो इनो एक बार सोपारकमा तुम्बाळ पढवां ते उन्हांसिनी आप्त्रो. ए वस्त्रेत पारिकपुत्रनो राजा थे काक्त्रक मानाभी कोज्यातो हर्ण, तेले उन्नांसिनी करने करी इती राजाने पोताना भागाननी माण करावना माणे कोमाने मेंत्रकारोठो तैयार करावने तेलनो द्याग सब महेसमांथी गोपपारिक कर्मात् उन्हों आपता हांगर मेळनी राजाप

सहस्रमाक्षा गप्यसास क्यात् छन्। बात्त अल्ला स्वार अल्ला रामाप कोकासने बोसास्मी स्वा तेन इति बांची सापीने सांत्रिक गरूर सेमार करास्मी, कोकास वर्ष ईकारता युगरुष उपर सेसीने राजा देवीनी साथे आकाशमां फरतो. पछी वधा राजाओने पण तेणे आ रीते पोतानो प्रभाव वतावीने वश करी छीधा.

हवे, एक वार राजानी बीजी एक इर्प्याळु राणीए यंत्रने पाछुं लाववा माटेनी खीली काढी नाखी. गरुड आकाशमां ऊडचा पछी आ वातनी राजाने खबर पड़ी कलिंगदेशमां ऋषिप्राणित तळाव आगळ जोरथी कडता गरुडनी पाख मांगी गई, अने सी नीचे पडचां. गरुडनी पांख सांधवा माटे सामग्री मेळववा माटे कोकास नीकळ्यो अने एक रथकार पासे जईने तेणे एनां उपकरणो माग्यां रथकार उपकरण छेवा गयो, एटलामां तो कोकासे तेना रथनुं चक्र तैयार करी आप्यं मा निपुणता उपरथी रथकारे अनुमान कर्युं के आ ज कोकास होवो जोईए तेणे जईने पोताना राजाने खबर आपी राजाए कोकासने तथा काकवर्ण राजा अने तेनी देवीने पकटचां. पछी कलिंगना राजाए कोकास पासे पोताने माटे अने पोताना पुत्र माटे प्रासाद तैयार कराव्यो. आ पछी कोकासे काकवर्णना पुत्रने पत्र छएयो के 'हुं किंगना राजाने मारुं एटले तु मने अने तारां मातापिताने छोडाव ! आ माटेनो नियत दिवस पण तेणे पत्रभां लख्यो. ए दिवसे कलिंगनो राजा पुत्र सिहत प्रासादमां प्रवेश्यो, एटले कोक्कासे यंत्रनी खीली दवावता पुत्रसहित राजा मरण पाम्यो काकवर्णना पुत्रे नगर कवजे कर्युं तथा मातापिताने अने कोकासने छोडाव्यां.

कोक्कासनु कथानक आगमेतर साहित्यमां सौथी प्राचीन स्वरूपे 'वसुदेव—हिंडी 'मा छे. बाल्यावस्थामा ते खांडणिया पासे बेसतो अने डागरनी कुसकी ('कुक्कुसे') खातो, तेथी एनुं नाम कोक्कास पड्युं, एम 'वसुदेव—हिंडी ' नींधे छे जो के उपर्युक्त कथानक साथे तुलना करता एना प्रसंगोमां कईक फेर माद्यम पडे छे 'आवश्यक चूर्णि '- बाळा कथानकमा यांत्रिक गरुड किंग देशमा ऋषिप्राणित तळाव छागळ कतरे छे, ज्यारे 'वसुदेव—हिंडी'मा कोक्कासे वनावेला वाययानने

िकी≋र्ख ધર 1 तोसिंह नगर भागळ उत्तरबानी फरज पद्र हे भा तोसिंह नगर पण

इन्यनाना क्षशो मोटा प्रमाणमां मळहा छे पुरा भा विस्पात शिम्पीना कथानकर्मांची कुरुवाना सूत्र्य भने मगधना साम्राज्य बन्चेना प्राचीन काळभी चाल्पा आवता वेरनु सूचन भाग छे, जेन अशोकना कर्सिंग विजयमांची तथा फर्लिगककवर्ता जैन सम्राट सारवेदना उदयगिरि

१ आपू, पूर्व साम प्र. ५४ -४९ साम प्र. ५११-१३ बड़ी सत्र सुचनक्षे कोशासना निर्देश साटे सुत्रो स्वम उर्दे ५ प्राचीन मारतीन शाहिरनमां अनेक स्वछे। जबता वशुपानविधवक वस्केकीना

उपरनी हापीसंफाना केसमाबी पण अनुमोदन मळे छे

कृक्षिंगमां भावेछ हुतु ए अहीं नांभवुं कोईए सेमां स्रोकवार्ताज य

बान्यास माटे सुत्रो इतिहासमी केरी मां प्रम्यस्य परेकी मारो केरा त्राचीन सारतमां विमानः २ वद्वरेष-हिंदी (मूल) ए ६९-६४ क्लुवाव प्र. ४४:-४४ को≆ण गुजराधनी दक्षिण सरहदने महीन भावेओ कॉक्स्पनो प्रदेश सामुप विद्वार करवा सोस्य २ ता कार्यवेदशोमां कों छणनी समावेश

क्ष्मा नयी धन कोंडणइस एड अनार्य वाति तरीके गणावेसी हैं। छटो मागनसाहि बमां फोंफज विशेना सरुपाबच प्रकीर्ण उस्त्रस्रो मळ छ, ये स्वते छ के समय बतां ए प्रदेशमां जैन धर्मनी ठीइ प्रचार वयो हतो भने त्यां बैन सामुखा वारंबार विवरसा हता 'कॉक्जा' ए प्रदेश नाम कोकणक ' ए आदिनाम उपस्थी पहुंचे बणाय से (भूमो को हुण क)

कांकणवासीको पुष्प बन फर्ज्नो प्रबुर प्रमाणमां उपमोग करधा gai उत्तरापय भन बान्द्रिकना सोझे चेन सर्क साम छ तेम क्रॉक्जनासीओ 'पञ्जा' (सं पेया ) अर्थात पोसानी राव के छ

र्थ्या मोजनना प्रारंभमां ज भा राव भपाय छे। भग्वार पण क्रोक्रणमां

चोला मुख्य लोराक छे ए वस्तु आपणे ध्यानमां राखवी जोईए कोंकगादि देशोमां गिरियज्ञ नामनो उत्सव दररोज संध्याकाळे थाय छे. त्यां पाणीने 'पिच्च' कहेवामां आवे छे संख्यावय अर्वाचीन मारतीय भाषा-ओना 'पिवकारी,' 'पिच(क)दानी' जेवा शब्दोमांना 'पिच' अगनुं संतोपकारक निर्वचन संस्कृतद्वारा थतु नथी, एनो संबंध आ 'पिच्च' साथे हशे. संभव छे के रवानुकारी लागतो ए शब्द मूळं कोई आर्येतर भाषामांथी होय

कांकणदेशोर्मव पुरुषो सहा पर्वत उपरथी गोळ, घी, घडं, तेल, वगेरे माल उतारे छे अने त्या चढावे छे कोंकणदेशमां भारे वरसादने कारणे जैन साधुने छत्री राखवानी पण अनुजा आपवामां आवेली छे कोंकणनी नदीओमा तीणा पध्थरो होंवाने कारणे एमां चालवुं कष्टदायक छे.

कोंकणने एक स्थळे ' असंदीनद्वीप ' अर्थात् समुद्रनी भरतीथी परिष्ठावित न थई जाय एवी प्रदेश कहेवामा आव्यो छे रे॰

'कोंकणार्य 'अयवा 'कोंकणकक्षान्त '—कोंकणवासी साधुनु
दृष्टान्त अनेक स्थळे आवे छे दीक्षा छीवा पछी पोताना पुत्रादि माटे
तेओ चिन्ता करता हता, एमने आचार्य समजाव्या हता.' एक
कांकणवासीनी पत्नी मरण पामी हती, परन्तु एने एक पुत्र होवाथी
फरी वार छन्न माटे कन्या मळती नहोती, आधी तेणे पोताना पुत्रने
कपट करी बाणधी वींधीने मारी नाख्यो हतो,' एवा पण एक कथा
छे. एक कोंकणवासी श्रावकना आदर्श सत्यभाषणातु दृष्टान्त 'आवश्यक
चूर्णि'मां छे, जेमा तेणे पोताना पितानी सामे ज साक्षी पूरी हती

१ जुओ कोङ्कणक

२ वक्षेत्रे, माग २, पू. ३८४ वळी जुओं त्या हिप्पणमा चूणि अने विशेषचूणिमाथी आपेर्छ अवतरण.

३ आजी. पे. ५: दवैच . क . ३०८

⊻ निक्माय **१ ५**६

५ वृक्तमा वा १८५५ वृक्ष्ये, साय ३ पू ८ ७ वृक्ति असे विशेववर्षित अवतरव गण स्वा आफेर्स के

६ स्वासीच के २४ वाव के त

ण **बाहे. प्र. ५५. बा**स प्र. ५९२

८ मासी प्र ३०१

र विच प्र. ८२०

५ ठरत की अध्यक्षकोंने हो द्वियो-करियों अठरीयों न ठर्म करियों आम को क्लिम क्रारेजरि दो स वीरित्रसक्तावन को उन की विकल्पतिन व्यक्तियोंन स क्लिम स प्रारेजरित हो बोरित्रपति अलाह, क्ल्युंको रीवी वहा क्लिक्सिमी कम पू 194-19.

१९ आण् बत्तर साम प्र. ४५ प्र. प्र. प्र. ५६ अहे, प्र. ५ ५६, प्र. भ भेंकनार्मना साम स्वयस्य निर्मेश साने सब्ये बीडव् प्र. १ १४ १५ तथा बीडव्यस्य प्र. ४३

१९ जान बत्तर सागे छ २८२~८३ अस्म छ १३६ इकस बार्च १ छ ५५

#### कोडणक

एक मतामें बाधि, कुक्जा मामभी भोळलाती भाविवासी अना सरत, बणा, पश्चिम सानदेश कोरे बिह्नकोमां वसे के तेने जे जा कोक्जक 'गणवी चोईए, 'कोकण' ए प्रदेशनाम बा। साति नाम उपस्थी पदमें हरो.

1 546, 8, 14

THE THE

#### कोन्पिताका

करोडपांतको सङ्गोसन्त्रसंगे पोलामा मङ्गान उपर सङ्गिस्नुनङ कोटिपताका बडानता

१ बाब् पूर्व मान, प्र. ४४७०४४ बाम, प्र. ४५६.

### कोटयाचार्य

जिनभद्रगणिकृत 'विशेषावद्यक भाष्य 'ना विवरणकार. एमने 'आचारांग,' 'सृत्रकृतांग' आदि उपर वृत्तिओ लखनार शीलाचार्यथी अभिन्न गणवामां आवे छे.

जुओ शीलाचार्य

### कोरण्टक उद्यान

भरकष्ठनु एक उद्यान. वीसमा तीर्थंकर मुनिसुनतस्वामी त्या घणी वार समोसर्या हता. कोरटक आदि उद्यानोमां जईने देवतानी समक्ष आलोचना करी प्रायक्षित्त लेवानुं विधान छे. वाडी देवसूरिकृत 'स्याद्वादरत्नाकर'ना मंगलाचरण उपरथी जणाय छे के आ उद्यान भरकष्ठना ईशान खूणे आवेलुं हतुं.

कोरट अथवा कोरंटक एक वनस्पतिविशेष छे अने प्राकृत साहित्यमां एना उल्लेखों छे (जुओ 'पाइस सद महण्णयो'). हमचन्द्रना 'निषंदुशेष'मां गुल्मकांडमां, नरहरिकृत 'राजनिषंदु'मा तेम ज अन्य निषंदुओमां तेनो 'कुरंटक ' तरीके उल्लेख छे आ 'कोरंटक ' के 'कुरटक 'ने गुजरातीमां 'कांटासेरियो ' कहे छे एनी जुदी जुदी चार जातो छे. 'निषंदु आदर्श 'ना कर्ता थ्री. वापालाल ग वैद्य ए विशे ता १४-१२-५० ना पत्रमां मने लखे छे "आप कोरंटक नामे उद्याननी वात करो छो ए मारे माटे नशे माहिती छे, परन्तु आवो उद्यान होय तो नवाई जेवुं न कहेवाय. आ छोड अने तेमां ये एनी चारे जातो उद्यानमां होय तो एनं हश्य खरेखर रमणीय लागे तेवुं छे ज परन्तु आ छोड छे. वहु सारुं पोपण मळे तो गुल्मनी कोटिमां आवे, परन्तु ख्र तो आ नथी ज—सधन छायादार वृक्ष तो नथी ज परन्तु मरूचना ईशान खूणामा कोरटक नामे उद्यान हतो ए माहिती मने. खूव ज गमी छे. उद्यानमां चीजा वृक्षो तो होय ज, परन्तु आ

६६ ] [कोरण्डक तथान कमनीय छोडोप कोई रसिक कवि के बीजानी दृष्टि लेंची आगे छै

बाने प्रदेशे स वा नाम उद्यानने आप्यु हागे हे " १ तीर्वेक्टन सहमंदक ब्यामन सादे अधेवाही किवायद प्रसीवार्टि"

तीर्थकरमः सहासम्बन्धारमन सारं अद्योगतं किन्।यदं चेसाम्पर्धः ।
 वयं नाम समोसरम के ए जैन पारिमापिक क्षम्ब के एनी स्मुरपि वेसाय सम् + अव + स स्परणी के

। सन्+ अन्न + स. घपरना क्र १ व्याप निप्ताय ३ पू १३७ ः

३ निषंद्र आवर्ष उत्तर्ण हः १९५-२४ <sub>। १</sub>

कोर्सुपारण्य : पक काल्य, ज्यां कराकुमारने क्षण बाग्नवाणी कृष्ण वासुदेव

मरण पान्या ह्वा. देपायन नामे परिशायक थे सांव आदि सुरामच बादवकुमारीने हाथे मरण पानी वारिकुमार देव बया हुठो तेले झरका<u>ने</u> वहन क्याँ

बाग मारी तेमना सम्पर्ने कारण बन्या इतितकृत्य ए प्रावनगर पाधेनुं हावब होना संगद हे " कोस् बारश्य ए उपर्युक्त बर्णन प्रमाण सुराग्ट्रमांची बक्षिण तरक करो चावे छ कान दक्षिण गुक्सत्वर्गा जावेचा कोसना जातवासनी विरक्षार के भावे पण गुक्सत्वर्गा सदस व्यवप्रदेश के ते ज ए होई हाके

**एक पग रासीने सुतेमा शासदेवने पूग घारी तेमना पग उपर मगैरधाने** 

भरुकच्छथी दक्षिणापथ जनाना मार्गमां 'भहीगृह' नामथी ओळलातुं एक मन्दिर हतुं भने एमां भन्छी-वाणथी वींघायेछा पगवाळी कृष्ण वासुदेवनी मूर्ति हती, एम 'निशीथचूर्णि' नोंघे छे, तेथी सा विधानने सबळ सनुमोदन मळे छे <sup>3</sup>

वळी आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्ती एक वार विहार करता 'कोसबाहार 'मां आव्या हता, एम संप्रति राजाना पूर्वजन्मना वर्णन-प्रसंगमा 'निशीधचूर्ण' (भाग २, पृ ४३७) नोंघे छे. पण अहीं 'कोसबाहार' ए 'कोसबी आहार'—'कोशांबी आहार'नो अपभ्रष्ट पाठ छे, अने उपर्युक्त गुजरातना कोसंबा साथे एने संबंध नथी, एम' 'बृहत्कल्पसूत्र' (क्षेमकीर्तिनी इत्ति, भाग ३, पृ ९१७—२१), 'परिशिष्टपर्व' (सर्ग ११) आदि प्रन्थोमांना वर्णननी एनी साथे, तुलना करता जणाय छे.

१ उने, पृ ४०-४१, वद्यु, पृ ६७-६९. नळी जुझो अद्, पृ. १५-१६, स्थासूअ, पृ ४३३. अदमा आ स्थानतु नाम 'कोसब्दणकाणण' (=कोसाबवनकानन ) अने स्थासूअमा 'कोशावकानन 'आप्यु छे

२ जुओ हस्तिकल्प

३ जुओ महीगृह.

४ अन्तया ते दो वि विदृरता कौसंबाहार गता । निचू, 'भाग २, पृ. ४३७

# कौम्रदिका

कृष्ण वासुदेवनी एक मेरी (.प्रा कोसुइआ) सासुदायिक उत्सवोनी घोषणा करवाना प्रसंगे वगाडवानुं ए उत्सववाद्य हतु रे

पुराणोमा चतुर्भुज विष्णुना आयुधो पैकी एक कौमोदकी गदा छे, ए अहीं नाधवुं जोईए

१ हाघ, पृ १००--१०१, हाघअ, पृ १०१,

### क्षेमकीर्चि

द्वस्त वर्गागण्डना स्थापक विश्वसम्बद्धाता वर्णा दिल्यो-म्बद्धात् प्रमुख्यात् अर्थ देमकि स्थित नामे भाषाओं इता ए पैकी सेमकिर्ति । 'बहुत् कम्पस्त्व ' उपरती दृष्टि से पूर्वकाणीन भाषार्थ सम्बद्धारिण अपूरी मुकी हुती ते स १३३२ (ई. स १२७६)मा बयेमां पूर्ण करी ए इतिनो प्रमान्दर्श नयप्रम शांवि सामुकार सस्यो हतो ते

१ तुत्रो सङ्घनिरि

२ इस्को विभाग ६ पू १४१ -१२ प्रणस्टि. श्रीमप्रदी

### क्षप्रुरा

द्वराष्ट्रने एक नगर त्यांना आवक राज्या क्षाराचन्त्रना क्रमार नरदेवनी पर्मकचा 'क्न्यारकृषि 'शां छे '

क्षेत्रपुरीनो स्थाननिर्णय वर्ष शक्यो नवी

१ हेम्पुर्वे झराध्यम् सारावनास्य मृमुवः । परोव प्रानासस्य त्रिय प्रपाददेश्यमूत् ॥

प्रवासेको छसोः पुत्री क्यकानमञ्जूषी । तत्रासी वरवेदाकलो वेतवन्त्रो द्विचीवकः ॥ वदः ६८ ४५

#### सणकर्ण

ठक्रपितीना रामा प्रयोजना मत्री, एक सहस्त्रपोधी सक्त प्रयोजना दरवारमां भारती हती बने पोठानी सन्न वर्क एक हत्यार योद्याणीने बनाम प्रका बेतनती तण मानलो करी हतो। संहक्त्यनी स्पनाई-सार एना सहसनी परीमा कर्या पठी पनी मानली मुझव दृष्टि बांधी

१ म्यम्, विज्ञाय ३ छ ५३

#### संप्रगंपाय

भाषवामां आदी हती.

एक प्रभावक भावार्य आवस्यक्रम् नी वृधि शन वृतिमाँ

प्राप्त थता एमना वृत्तान्तनो सार आ प्रमाणे छे: खपुटाचार्य एक विद्यासिद्ध आचार्य हता तेमनो एक भागेज तेमनो शिष्य हतो. ते सांभळवा मात्रथी विद्याओ शीखी जतो हतो. हवे, गुडशस्त्र नगरमा एक वौद्धाचार्य जैन साधुओ वडे वादमां पराजित थया पछी काळ करोने वृद्धकर नामे न्यंतर थयो हतो, ते साधुओने उपद्रव करतो हतो आथी खपुटाचार्य पोताना भाणेज शिष्यने भरुकच्छमां बीजा साधुओ पासे राखीने गुडशंक्षमा गया. त्यां यक्षना मन्दिरमां प्रवेशी वस्र ओढी सुई गया. पूजारी आन्यो, पण तेओ ऊठचा नहिं पंछी राजानी आजाथी तेमना उपर अनुचरो लाकडीओनो प्रहार क्रया मंडचा, तो ए प्रहारो ऊलटा अंत पुरमांनी राणीओने वाग्या , आथी राजा आचार्यने करगरवा लाग्यो पछी भाचार्य ऊठीने चाल्या अने यक्ष तथा बीजी मूर्तिओने पोतानी पाछळ चालत्रा कह्युं, एटले ते पण चालवा मांडी, वे मोटी पाषाणनी कूंडीओने पण ए रीते, पाछळ चलावी. गामना सीमाडे आवीने यक्ष अने बीजा व्यंतरोने मुक्तुं कर्गा, एटळे तेमनी मूर्तिओ पोतपोताने स्थाने गई, परन्तु वे कूंडीओ त्या ज रहेवा दीघी

वीजी वाजू, आवार्यने खबर पड़ों के तेमनो शिष्य—भाणेज विद्याप्रभावथी श्रावकोने घेरथी स्वादिष्ट खोराक आकाशमार्गे ऊडतां पात्रोमां मगावीने खाय छे तथा वौद्रोमां भळी गयो छे भरकच्छना संघ तरफथी पण आवार्य उपर संदेशो आव्यो आवार्य भरकच्छ गया पेलां ऊडतां पात्रोनी आगळ तेमणे एक शिला गोठवी, एटले वधां पात्रोनो तेनो साथे अथडाईने मुको थई गयो, अने शिष्य ढरीने नासी गयो पछी आवार्य वौद्रो पासे गया वौद्रोए तेमने कह्युं के 'भगवान बुद्धने पगे पड़ो 'त्यारे आवार्य वोल्या, ''आव वत्स, शुद्धोदनसुत! मने बंदन कर!' एटले बुद्धनी मूर्ति तेमने पगे पड़ी त्या द्वार आगळ एक स्तूप हतो तेने पगे पड्या कह्यु, एटले ते पण नमी

(०) [ अपुटाचार्च
पद्म्यो पद्ध बुद्दनौ मूर्तिने उठवा इक्ष्म, पटक ते धर्मनत जबस्थामा

रही, भन 'निर्फयनामित ' एवा नामधी प्रसिद्ध मई ' ' प्रमायकवरित ना ' पायक्रिमस्तिवरित'मां सपुटावर्षना

इचान्त अस्मी छ त्यां तेमने म्युक्चमा राजा बनिमन-मानुनिन त्या कारकापार्यना समकावीन क्या वे प टक्केसन जो बेरिटी सिक बस्तुम्पक मागेर तो, कारकापार्म तिरोनो मुनि क्याण-विषयनो समय निर्णय प्यानमा लेता, तेमो चीमनिर्मण परी पांचा सैकामा परीया गणाम 'प्रभावकचारित' मनुसार, बौदोय स्युक्चमा भयावकोम तीर्यना कवात्रो वर्ष क्षोचो हतो ते तीर्ष स्युटाचार्म विशास पांचेमी द्भ मुकावचार्या भावे तेम' छोडान्य बर्ध 'भावस्यकस्य'नो चूर्ण अने ब्रियां बौदोना स्युटाचार्म करेका परान्यमने जे निर्देश छे ते अधावकोषतीच दिशेनो हर्शे यस्त्री 'प्रभावकचारित' करें छे के चार्य स्युटनी पाटे तेमना शिष्य उपाप्याय महेन्य तेस हता अन अधानकापतीर्यना तमनी परंपरा हजी वण (पटके के 'प्रभावक चरित'ना रचनाकार्क स १६६५—ई स १२०८ मां) निष्

उपपुंक परंपगान इचान्तामांची बसरकारने स्वत् बाद करेव की पहस्य पर से स्वत्र परंपगान इचान्तामांची बसरकारने स्वत्र व्यव्य अधवासका हरी, मन्द्रपत्र पर काम बीदा अन बनानी मोटी बसती इसी क्षेत्र के स्वत्र परंपगा काम बीदा अन से स्वत्र परंपगा काम बीदा साथ मन्द्री गया काम बीदा से स्वत्र परंपगा काम बीदा साथ मन्द्री गया हरी, बीदिए आवार्षनी गरहामांची से प्रताम अवार्षना हरी हरी हरी साथ मन्द्री हरा अने प्रतामी व्यवस्था गया प्यवस्था गया प्रतामी व्यवस्था गया प्रतामी व्यवस्था गया प्यवस्था गया प्यवस्था गया प

९ आम् दरभाग १८ ५४१-४३ अग्ब १८ ५९४ *ब्*क्सा

(का ५५९३) तथा परि (भाग ५, ए १४८०) मा 'विद्याबली' तर्राते राषुटावार्यनी उसीस छे

२ प्रच, ५-म्बो १८३-४६, तुभो घरुसिय-भानुसिय अने कालकाचार्य

३ प्रध, ५-भो २२८

४ शकुनिरावितार, जेना उपर रास्तुपाल-गत्रपाठ मुवर्णमा प्वजारो कराव्या इता ते, अश्वावपोधति । ता (जुओ ए प्रसम्भा स्माररूपे रचायेली जयसिंहमूरिनी 'यस्तु गल-तेनपालप्रशास्ता'), शकुनिपाविद्यार्गा पाछळची मिन्नद बनी गई छे, पण एनु आठेचन करता शिल्पो आयु उपराग तेनपालना मिन्दरमा छे (अधारपोधवीर्ध तथा शकुनिकाविद्यारमा परपरागत इतियृत्त तथा ए शिल्पानी चित्र माटे जुओ गुनि जयन्त विजयनीछत 'आतु,' पु २०६-१५ वळी 'श्रिपष्टिशालाबापुरूप-चरित्र' पर्व ७, तथा 'विविभतीर्धन प'मां 'अक्षावबीधक्तप')

५ दि ४ मा निर्दिष्ट जयसिंहसूरि (ई स नो तेरमो नैको ), जेओ आ तीर्थमा आवेला सुनि सुनतचैत्यना अधिष्ठायक इता सेओ खपुटाचार्यनी परपरामां थयेला होवा जोईए

# खेट

- [१] जेनी आसपास ध्छनो प्राफार होय एवा गामने खेट अथवा खेड कहेवामा आवे छे.'
- [२] समय जता 'खेट 'ण सामान्य नाममायी विशेष नाम वनी गयुं, संख्यावंध टीकाप्रन्थोमां मळता एक कथानक प्रमाणे, खेटनो वतनी रुद्ध नामे बाह्मण खेतर खेडतो हतो यारे तेनो एक वळद गळियो थई जवाधी तेणे वळदने निर्देयपणे मार मार्यो अने परिणामे वळद मरण पाम्यो, आयी तेनी जातिए तेने पंक्ति बहार कर्यो हतो व

आ खेट अथवा तेनो तद्भव शब्द जेना नाममां अगम्त होय एवां गामो अनेक स्थळे छे,जेमके गुजरातना खेडा, खेडब्रह्मा,संखेडा,चानखेडा,

12 ] आदि महाराष्ट्रनां खंडेगांव, आदि आधी उपर्युक्त कवामांने 'सेट ! क्युगाम हुशे ए कही शकाय नहि 'उज्जड क्षेट्रे बाग्यो डोक्स' ए

िसेट

अस्तानी पैकिमां तथा 'उनाइ खेडां फरी वसे निर्मेनियां घन होय' ण सुमाबितमां 'सेडु ' शन्द 'गामडा'ना कार्यमां छे मराठी 'केर्डे,' तथा हिन्दी – प्रज्ञामा 'स्तेडा' पण साह्य कर्मनां छे

९ प्रोह्मप्रस्कारको क्षेत्रं आसी पुरुष्ट सूक्षप्रकारीयेतं केर्ट एव ए. १९९, या प्रकारमा वीवा जस्मेको साटे स्त्रमो उद्या ष ६ ५ बावस १६ ५५ ९४ बढमा तवा क्याने मान ९ प्र ३४९ इस्वादि

२ क्या प्र. ५ ५-८६ व्यक्ति, प्र. १९६, वसी प्र. ११ कडी ह २३४

। चेवा माटे सभी प्रयूपी कोटक.

#### खेट माहार

क्षेत्रकाश्वरनो उन्हेल वस्त्रमीनां दानपत्रोमां सनेव्ह वार आवे छे गुजरासना सेडा भासपासनो ए प्रदेश हस्तो आद्वार ए एक बहीवटी एकम छे बळी क्लमीना केलोमां आहार सबवा आहरणीनो उसकेल पर्याप तरीके कर्वो बणाय छे (जुओ इस्तुकरूप टि. ६) 'वाबस्यकपूर्णि' उत्तर माग प्र १५२-५३ मां मरुष्ट्य बाहरणी 'नो निर्देश हे त मा ४४८ए सम्बद्ध अङ्ग मञ्जनो सहायक फराडी मञ्ज भरूक<sup>क</sup> आहरणीना एक गामनो ('भरकच्छाहरणीए गामे') हही एव श्र्वां कर्यु छे उत्तराध्ययन <sup>1</sup>नी शान्तिस्रिनी (पृ १९२) सद्या निमंबन्दनी **इ**चि (१ ७९)मां 'मङ्कथ्वहरणीगामे ' एवा पाठ छे ते देखीती भग्नदि छ

भान्य इन्मनादि पूर्ग पाइवा बढे वे प्रदेश व नगरन माटे उपमोम्य कन त पनी आहार गणाय पूरी निर्देश आगमसाहित्यमी हे आहारना उदाहरण तरोके मधुगहार, मोडेरकाहार, विटाहार वगेर आपेटां हे <sup>4</sup>

1 99, 9 09

२ देशहारस्तु चिस्मन् क्षेत्रं आहार ष्टियतं उत्पर्धतं व्याग्यायतं (१)
यदि ना नगरस्य यो देशो घान्यन्धनादिनोषभोग्य छ क्षेत्राहार , तद्यथा
— मनुराया समामन्ता देश परिभोग्यो मनुराहारो मोदिरवाहार खेटाहार
इत्यादि, सूक्रशी, ए ३४३; गेताहारी जो जस्स णगरस्य आहारी,
आहार्यत इत्याहार , निषभी आहारोत्ति उच्चिति, जहा मधुगहारो खेडाहारो,
सुक्त्यू, ए ३७६ सुक्रम्मा 'आतार' अने 'निषय'ने पर्याय गण्या छे
ग सूचक छे

### गजमुकुमाल

कृष्ण वामुदेवना नाना भाई तेमना छक्ष द्वारकाना सोगिल नामे एक ब्राह्मणनो पुत्री साथे नद्धी थया हता, पण गजमुकुमाने तीर्थिकर नेमिनायनो उपदेश साभळीने ठीक्षा लीधी, अने रात्रे स्मशानमां जई कायांस्तर्ग व्यानमां रह्या. आ वातनां सोमिल ब्राह्मणने खबर पहता तेने गजमुकुमाल उपर घणो कोध चढचो अने रात्रे स्मशानमां जई गजमुकुमालना माथा उपर बळता लाकडा मृकीने तेणे तेमनो चध कर्यो. ए समये शुबल ध्यानमां रहेला गजमुकुमालने केवल ज्ञान थयुं श्रीकृष्णने आ वातनी खबर पडतां तेमणे सोमिल ब्राह्मणने देहान्त दंड कर्यों '

१ अंद पृ ५-१४, आचू, पूर्व भाग, पृ ३५५-५६, धाम, पृ ३५६-५९ गजमुकुमाल विशेना प्रासगिक उल्लेखो माटे जुझो वृक्तमा, गा ६१९६ तथा वृक्क्षे, भाग ६, पृ. १६३७, व्यम, विभाग ४, पेटा विभाग १, पृ २८, इत्यादि

### गजाग्रपद

द्ञाणिपुर पासेना ढशाणिकूट पर्वतनुं आ बीजुं नाम छे एक वार त्या महाबीर स्वामी समोसर्या त्यारे इन्द्रे अरावत उपर वेसीने,

ि शक्राम पद 183

मार समृद्धिपूर्वक त्यां आवीन तेमन वदन क्यां इतां ए समये दशार्णकृण उपर असवतनां पगलां पहनाथी से पर्वत गमामपद नामथी ओळमापी, आर्थ महाविरि विदिशामा जिनप्रतिमाने करून करीने गुजाप्रपद सीर्वनौ यात्रा माटे एसफन्छ ( दशार्णपुर ) गुमा इसा <sup>\*</sup> मुमो एसफच्छ, दद्यार्णवर 1 WH T. YEC

राजमा सेषाची सा भर्बाचीन ए

२ आव सत्तर माग प्र. १५६-५७

गन्थरस्ती

उपरना तेमना विवरणनो उल्डेस ए सुत्र उपरनी शीकाचार्यनी टीकार्या है ' सरवार्यसूच 'ना टीकाकार तराके पण कारथन सेमनो उप्लेख हे 'बीतकन्पमाप्प'मां रणहस्तीनी शुरुषर तरीके निर्देश छे ' उत्तराप्ययन सूत्र ' उपरनी क्षातिसुरिनी वृत्तिमां तत्रा ' भावस्पक ' टपरना मण्यारी हेमचन्द्रना रिप्पणमां पण गमहस्वीनो मह

एक प्राचीन आधार्य 'आचार्यम सुत्र'ना 'शक्षपरिद्या' अध्ययन

रक्षियो छ " गंपहरसी कोण प विश केटलोड गतमेद छे प्रसिद्ध स्तुतिकार स्थामी समतमंत्र ए गीघहरती अने तेमणे 'तस्त्रार्थसूत्र' उपर रचेछ माप्य ए च गंपहरितमहाभाष्य प्री माग्यता दिगंबर संप्रदायमां सामाग्य रीत छ ज्यार शृदयादिशिष्य सिद्द्येन दिवाकर ए ग्रंथहरूठी

कने सम्बाधमूत्र ' उपर नेमण स्याप्या छन्नो हती एवो मान्यता सामारम रीवे चेतांबर संप्रदायमां छ पण प सुम्बहान्ज्ञी अन प ब बरदाछे संग्मतितृष्ठ 'नी समनी प्रस्तावनामां सप्रमाण बतार्घ्यु छ के गंपहरतो व मित्रगृतिना प्रशिष्य अन भारतामीना निष्य 'तत्वार्थ-भाष्य नी वृतिना दर्ना सिद्दमन छ भा वृतिमां सिद्दाने सदस्यक्रना <sup>6</sup> मिदिबिनिधय मांबी भदनग्यो शाऱ्यां रह गटन तेओ इसवी सनना श सल्परिहाविवरणमितिगहनिमतीव किल पृतं पूज्ये ।
 श्रीगन्धहस्तिमिश्रेविंगुणोमि ततोऽहमविशष्टम् ॥ आशी, पृ ७४

२ यदाह तत्त्वार्थमूलटीकाछद गन्धहस्ती, जप्रशा, पृ ३०६

३ जीकमा, पृ १९

४ उशा, प्र ५१९, आहे, प्र १११

५ 'सन्मतितर्क,' प्रस्तावना, पृ ५९

६ ए ज, पृ. ५९-६०

### गमभूता

उत्तर गुजरातमा पाटण पासेनुं गांभू गाम त्यां रहीने शीलाचार्ये ' आचारागसूत्र'नी वृत्ति रची हती '

जुओ शीलाचार्य

१ आशी, पृ २८८

### गर्दभ

उर्जयिनीना यव राजानो युवराज. एणे पोतानो बहेन अडोलि-' काने विषयसेवन माटे भीयरामां पूरी हती.'

कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनुं अपहरण करनार उर्जायनीना राजा गर्दभिल्लनुं आ स्मरण करावे छे गर्दभ अने गर्दभिल्ल एक ज<sup>ा</sup> जणाय छे

जुओ कालकाचार्य अने गर्दिभिल्ल

१ वृक्क्षे, भाग २, पृ ३५९

### गर्दभिछ

उज्जयिनीनो राजा एणे कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनु अप-हरण कर्युं हतुं, तेथी कालकाचार्ये शकोने बोलावी गर्दभिल्लनो उच्छेद कर्यो हतो.

्जुओ कालकाचार्य <sup>अने</sup> गर्दभ ९ गिरिनगर

जूनागर भिरिनी तळटीमां आवेर्ड होवाथी ते गिरिनगर करेवाय छे
गिरिनगरमां एक अधिनुषक वर्णिक दरवर्षे एक परमां राजो
भरिन पछी प पर सळगाथी अधिनुं संवर्षण करतो इता एक वार तेणे
बर सळगायु, ए समये खूब पवन बाबो, तेभी आखुं नगर बळी गए
बीबा एक नगरमां एक वर्णिक बा प्रभागे अधिनु संवर्षण करवानी
हैमारी कर छे पम ग्यांना रामाए संमिन्नु, एटळे गिरिनगरनी आगनो
प्रसम बाद करीने तेणे ज्युं सर्वेख हरी स्रोत्न गिरिनगरनी अग नव
प्रस्ता स्वीमो उज्ययत उपर गई हतो त्यारे बोगे तेमगुं हरण करी
गया हता बने पारसकुछ-ईरानी स्लातना किनारा उपर तेमने वेची
दौषी हरी एवं पण एक कमानक छ ।

ं स्वक्तांग 'नी शीव्यवर्षनी श्रुष्टिमां उस्त वर्षण एक हासरहामां रहता गळकने गिरिनगर आदि नगरोनो राखा कहीने प्रार्चु राखवानो प्रवास छे

विशिष्ठ पर्वतवाको 'गिरानार' सम्यू गिरिनार/गिरिनमर् गिरागर ए क्रमे मुरूपम ययेडो छे गुक्रास्त्रमां 'नार' एव्हान्त्रबाळी बीक्षी पण स्वळामां छे को बा वाचे सरकारी एकाच दा त नगर-नगर-नार (पेटकाद पांचेतुं) कोटिनगर-कोडिनगर-कोडिनार इत्यावि गिरागर'जी बाजवार्मा स्मार एव्हाञ्चाकुं नाम पर्वत मारे व्ह स्यू पट्टो स नाहि पण व्हान्त्रभारी अक्सेन स्मारि पर्योगेन छोणे स्थानस्य करी दीषा प् वर्द्ध सम्बानी अक्सेन स्मिती चीक्ष नाम

नुष्णे सरमयन्त भने रैमतक

पात्र छे

ी माथू पूर्व साम १८ को भाग ११ ८८ मिकी ११ ९४८ मनुद्दा १८.१८, मनुद्दे ११, १४ २ आचू, उत्तर भाग, पृ २८९

३ जुओ कान्यकुञ्ज वीजा केटलाक उल्लेखो माटे जुओ अनु, ए. १५९, भासूनू, प्. ३३९, जीम, ए ५६, इत्यादि

४ जुओ 'इतिहासनी केडी'मा प्रन्यस्य थयेलो 'गुजरातनो स्थळ-नामो 'ए मारो लेख

# गिरिनार

सौराष्ट्रमा आवेलो पर्वत, जेने प्राचीनतर साधनप्रन्थोमां 'उज्जयत' कहाो छे ए माटे 'गिरिनार' एवुं तुलनाए अर्वाचीन नाम 'कल्प-सूत्र'नी 'कौमुदी' टीकामा मळे छे.'

जुओ उज्जयन्त अने गिरिनगर.

९ तत प्रभुरन्यत्र विह्त्य पुनरिप गिरिनारे समवस्त', तदा रयनेभिदींक्षां जप्राह । क्की, पृ. १६९

### गुडशस्त्र नगर

आ नगर हाटदेशमा मरुकच्छथी बहु दूर नहि एवे स्थळे आव्युं हरो, केमके खपुटाचार्य पोताना शिष्यने मरुकच्छमां राखीने बद्धकर व्यतरनो उपद्रव शमाववा माटे गुडशक्षमा गया हता, अने पोतानो शिष्य शिथिहाचारी थईने बौद्धोमां भळी गयो होवाना समाचार मळतां ' पाछा मरुकच्छ आव्या हता '

वधु माटे जुओ खपुटाचार्य

१ आचू, पूर्व भाग, ए ५४२, आम, ए ५१४

# गुर्जर

# 🗸 गुजरातनो वासी

जुदा जुदा प्रकारना वैपरोत्यनां उदाहरण आपतां गुर्जरो मध्य देशनी भाषा बोळे एने भाषावैपरीत्य कह्युं छे. आवां वैपरोत्यथी हास्यरस निष्पन्न थाय छे. 'कल्पसूत्र 'नी टीकाओमां 'राज्यदेश- नाम ' भाष्यां छ तेमां भंग, बंग, ककिंग, गोड, भोड, कर्णाट, छट, सीराष्ट्र, कासीन, सीरीग, भामीर, चीन, महाभीन, बंगास, धीमार, नेपाल जहार (ककी नो पाठ सुचने छे के 'बाहुख' जाईप), कींगल, मालब, सिंडफ भने महस्यस्त्री साथे गुजर पण आयु छे '

१ स्टब्सेनेवरम्याचा इस्लेरमस्तर्य वैद्यितेन च निवन्त्रा-मिन्दीना स्टब्स्ट्रेन्स्य इस्ले स्ट्री मन्द्रीति संबेचः तम पुरस्वेनीतियाँ स्टब्स्ट्रेन्स्य स्टब्स्ट्रेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रियेन्स्य म्याप्ट्रेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रियेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स्ट्रीयेन्स्य स

१ कहा, छ ४५७ वर्षि, छ १५२ वर्षी (छ. १८१-८२) स्री स्रोट सम स्थानन से

#### गोपासमिरि

बसतिवाद्य पवेतीमां गोपासिगार, वित्रकृट काहिनो दरकेस हैं ' प्रमन्यकोत्रा' कनुमार गोपासिगार कार्यकृत्य देशमा कावेशी से एण विशेष पुरावाने कामावे दनो बोकस स्वाननिर्णय प्रश्निकं एस मधी.

1 प्रणीत सम्मानने वनतिनासमुद्रावेतीते विश्व योपासविदि-विश्वपुरवप्तव । समुख काक ∨ वर्षे ( वर्षाणी वृत्ति

२ कंप्यक्रमधेरे गोपानविधिक्षयरे बहावर्गपुष्टे प्रवसावेगीकवि-समा तम्बनोप्रस्य । प्रसम्बद्धीय ४,१७

#### गोनिन्दाचार्य

गोहिन्द माने एक बीद मिश्रु होते हेते। एक बैल बावारें बारमां करह बार परिविध कर्यो हतो. आबी छेणे विचार कर्यो के व्यक्ति हैं बैल सिद्धान्तमुं स्वरूप मिश्र सम्बुत्वासुची बैल भावारेंने परिविध करी शकीश मिश्रि काम विचारी तेणे ए ब भाचार्य पासे दीक्षा लीधी या अभ्यास करतां एने सम्यक्त्व प्राप्त थयु गुरु पासेथी बनो लीधा अने वधी वात निखालसपणे करी, पठी नेणे एकेन्द्रिय जीवनी सिद्धि वस्तो 'गोविन्दनिर्युक्ति' नामे प्रत्थ रयो

'गोविन्दिनिर्युक्ति ' उपलब्ध नथी ' वृहरम्लपस्त्र ' ना वृत्तिकार आचार्य क्षेमकी तिए शास्त्र तरीके 'सन्मितितर्कि ' अने 'तत्वार्थ ' नी साथे 'गोविन्दिनर्युक्ति ' नो सबहुमान उटलेख क्यों छे ' आवश्यक-चृणि 'मां पण 'गोविन्दिनर्युक्ति ' ने दर्शनप्रभावक शास्त्र कह्युं छे. ' 'गोविन्दिनर्युक्ति ' नी रचना 'आचारागस्त्र' ना 'शस्त्रपरिज्ञा ' अध्ययन-ना विवरणरूपे थई होवी जोईए तथा गोविन्दाचार्य विकमना पांचमा सैफामां विधमान हता एम पृ मुनिश्री पुण्यविजयजीए साधार रीते प्रति-पादन कर्यु छे "

१ निचू, उरे० ११, श्राप्तर, पृ २७ श्रापर मां गोविन्दने 'वाचक' कह्या छे

२ वृक्क्षे, साग ३, ९ ८१६, भाग ५, ९ १४५२

३ आचू, पूर्व भाग, पृ ३५३ 'गोविन्टनिर्युक्ति' मानी केटलीक दार्शनिक चर्चाना सक्षिप्त निर्देश माटे जुओ एज, पृ ३१

४ 'महावीर जैन विद्यालय रजत महोत्सव प्रन्य,' पृ १९९-२०१ गोष्टामाहिल

आर्थ रिक्षतस्रिना मामा तेम ज तेमना परिवारना एक साधु एमणे मथुरामा एक व्यक्तियात्रादीने वादमा पराजित कर्यो हतो. आचार्थे गच्छाधिपति तरीके तेमने बदले दुर्वेल पुष्पमित्रनो अभिषेक कर्यो तेथी विरुद्ध पढी ते सातमा निह्नय—साचा धर्मना सघमां तड पडावनार मिथ्यावादी बन्या. वीर निर्वाण सं ५८४=ई स ५८मा दशपुरमा आ निह्नव उपन्न थयो एमनो मत 'अवद्विक' तरीके जाणीतो छे. क्मोंनो आत्मा साथे स्पर्श ज थाय छे, अने एथी आत्मा कर्मथी वधातो नथी एम माननारो ए मत छे ह

जुभा रिप्तत आर्थ

१ मापू, एत्साव प्र. ४११ आस प्र. ३९६-४ १ उद्या प्र. १४३-४८

र निमाया ३ ९

र लगा थ र २ ३ प्रचाया ३ ९-५ तथा विक्रो १८ ७२-२९४ आहा.

पूर्व मान प्र. ४१३-१५ काम प्र. ४१५-१८ ४ ए व कडी अवदिक महना सरक गुजरादी निरूपय माने सुन्धे

४ एव कडी अवदिक सत्त्रा सरक प्रवरादी निक्रव सन्दे छा। सुनि दुरेवरनिकसमीकृत विकृत्वनात् प्र १६५-८९

गौरीपुत्र

गौरीपुत्रों ' सरीक ' मिखाको ' मसिद छे प्रशे वस्त्रेल इस्पस्त्र 'मा टीइनकारो करे छे पुरुष्ठ ' गौरीपुत्र ' सरीके सम्रोने समामनो कोई पोक्स काँ वरिष्ट छे ' इस्पस्त्र 'नी टीइनमोना रचिस्तामो पौदमा सैकाबी मांडी गुजरासमां मया छे गुजरासमां सम्बन्धळ्यो मान्यारणो 'देवीपुत्र वरीके प्रसिद्ध छ, तो टिकाकारोप गोर्चक गौरीपुत्रों ' साट-पारणो केम म होय !

१ मिस्तका गौरीपुषका हति प्रसिद्धाः कर्ते प्र.८५ करी प्र.४३

चन्द्रमधोव

जुओ प्रयोत

सम्बद्धाधार्य

एमने विशोनु क्यानक नीचे प्रमाणे हैं उपबादिनीमां स्तपण उपानमां एक बार साञ्चमों समोसमां हता पक उदार्चकेशी युवाने मित्रो सिद्धित वर्षा कार्यमें पोलानं दिया आपवा मागणी करीं का समारो परिहास करे हैं पम मानीने साञ्चमोए तेने वंदरशावार्य नामना कोपशील आचार्य पासे मोकस्मां. वंदरशावार्य भरम मंगानी, कोच करी तेने दीखा आपी नित्रो पाल गर्या पाले परोदमां विहार करता मावार्य शिक्सने सागळ पालम कर्युं मागमां चौलुक्य ें पु

एक ट्रूंठा उपर आचार्य पडी गया, आथी कोव करीने तेमणे शिष्यना माथा उपर दडनो प्रहार कर्यो भोतानुं माथु फूटी जवा छता शिष्ये सम्यक्पणे ते सहन कर्यु प्रभातमां शिष्यनुं छोहोश्रो खरडायेछुं माथुं जोईने आचार्यने पोताना दुर्वर्तननुं भान थयुं, अने क्षपकश्रेणि उपर आरूढ थतां तेमने केवल ज्ञान थयुं रे

कोपशील गुरुने पण विनयशील शिष्य प्रसन्न करी शके ए विषयमा चडम्द्राचार्येनुं दृष्टान्त आपवामां आवे छे आ आचार्यनुं खरुं नाम रुद्र हरो, पण चड प्रकृतिना होवाथी तेओ चडरुद्र तरीके ओळखाया हरो—जेम अवंतिनो राजा प्रदोत चंडप्रधोत कहेवायो हतो तेम

१ भाचू, उत्तर साग, ए ७७-७८; उचू, पृ ३१, उशा, पृ. ४९-५०, उने, पृ. ४-५, चुकसा, गा. ६१०३-४, बुकसे, पृ. १६१२-१३, पाय, पृ. ५६-५७

# चित्रकृट

आ मेवाडनो चितोडगढ होवा संभव छे चित्रकूटमां तपश्चर्यां करता सुकोशल सुनिने एक वाघणे फाडी खाधा हता. वसतिवाला पर्वतोमां गोपालगिरि, चित्रकूट आदिनो उल्लेख करेलो छे. आगमोना पहेला संस्कृत टोकाकार याकिनो महत्तरास् नु हरिभद्रस्रि चित्रकूटना विद्वान बाह्मण हता

१ मस, गा ४६६

२ गृणन्ति शन्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरय गोपालगिर्-चित्रकूटप्रमृतय । असूअ, शतक ७, उदे० ६ उपरनी वृत्ति

३ जुओ हरिभद्रसूरि

# चौंछक्य

एक क्षत्रिय जाति कुलकथाना उदाहरण तरीके ए विशे नीचेना

पर ] [/सीहरूप भारायना पह स्रोक उद्दुष करनामां आने छे-'सहो! बीहरूप

भारायना एक स्थान उन्हें करवाया आव छन जहाँ ग्रह्मण पुत्रीकोर्चु साहस जगतमा सीची विशेष छे, केम के प्रेमरहित होय सी-पण तेको पठिनुं मृत्यु बतां अप्रिमां प्रवेश छे '

९ एव उमादिक्रमोरकावामस्यवनाया वर् प्रश्वादि हा इन्क्रमा, यवा— नही बीह्यवपुत्रीय्यं शक्तं अक्तोअक्टम् । य्युमंत्वी विद्यस्यावी वा प्रेमादिता लिए ॥ स्वस्तुत्र ८,११ वजी हुत्रो प्रस्थाव पू ११९ तवा याय ६,४८

भवण

जुओ यथन

**ज**यपिजय

स्पानश्वना विजयानंत्रस्थिन। शिष्य वाचक विनव्यक्षेना शिष्य तेमणे से १६७०=ई स १६२१ मां 'कृष्यस्य' उपर 'मौषिका' नामे टीका रची हती- था टीकार्नु संशोधन मावविजय-गणिष् कर्नु हहा धने तेनो प्रबानश्चरी कर्नाए पोते पोताना शिष्य इस्विविजयनी प्रार्वनाशी तैयार कर्यों हतो '

९ इनी अमारित.

#### मिनद्त्र

सीपारक्वामी आवक तेनी पानीनुं नाम ईबरी हुतू बज़रवामीना शिष्य बज़्बेटन सीपारकमां बाम्या त्यारे जिनवृत्त कर्ने ईबरी बचैर पाताना नार पुत्रो नामेन्द्र, चन्द्र निर्देशि कर्ने विद्यापरती साथे दीका सीची हुती नामेन्द्र चन्द्र निर्देशिक से विद्यापर ए प्रमाणे साधुकोनी चार शासाओं भा पाराची प्रवर्धी

नुमो दश्वसन

1 98, 8, 413 656 8 101 60 8, 141

### जिनदास

मधुरानो श्रावक एनी पत्नीनुं नाम साधुदासी हतु तेमनी पासे कवल-संवल नाम वे उत्तम बळदो हता एक बार मधुरामा मंडीर यदानी यात्रा हती त्यारे जिनदासनो एक मित्र ए बळदोने गाडे जोडी छई गयो, अने तेणे बळी बीजाने आप्या. व्यारे पाछा छाववामां आव्या त्यारे कंवल-संवल खूब थाकी गया हता, अने थोडा समय पठी तेओ अनशन करोने मरण पास्या, एवी कथा अनेक टीका- प्रत्थीमा छे

## जुओ कम्बल-सम्बल

१ आचू, पूर्व भाग, पृ २८१, आनि, गा ४६९-७१, वृक्के, भाग ५, पृ १४८९, कपु, पृ ३०६-७; किक, पृ. १०५, करी, पृ ९०.

# जिनदासगणि महत्तर

परंपरा प्रमाणे, आगमो उपरनी चूणि नामथी प्रसिद्ध संख्यावंध प्राहत टीकाओना कर्ता. 'नंदिस्त्र ' उपरनी तेमनी चृणि शक सं ५९८=ई स ६७६ मां रचायेली छे, एटले तेमनो समय ईसवी सनना सातमा सैकामा निधित छे 'निशीयस्त्र ' उपरनी विशेष नामे चूणि पण तेमनी कृति छे ' अनुयोगद्वारस्त्र ' चृणिनी प्रतोने अंते जिनदासगणिनो कर्ता तरीके नामोल्लेख छे आ उपरांत 'आवश्यक' अने 'उत्तराप्ययन 'नी चूणिओ पण तेमनी कृतिओ गणाय छे. 'उत्तराध्ययन ' चूणिने अते कर्ताए पोतानुं नाम आप्युं नथी, पण पोताना गुरु तरीके गोवाल्यि महत्तरनो नामोल्लेख कर्यो छे 'उत्तराध्ययन ' चूणिनो कर्ता गोवाल्य महत्तरनो नामोल्लेख कर्यो छे 'उत्तराध्ययन ' चूणिनो कर्ता गोवाल्य महत्तरनो नामोल्लेख कर्यो छे 'उत्तराध्ययन ' चूणिना कर्ता गोवाल्य महत्तरनो नामोल्लेख कर्यो छे 'उत्तराध्ययन ' चूणिना कर्ता गोवाल्य महत्तरना शिष्य जिनदासगणि महत्तर छे एम स्वीकारीए तो, चूणिमांना उल्लेख अनुसार तेओ वाणिज्य कुल, कोटिक गण अने वज्रगाखाना साधु हता एम मानवु प्राप्त थाय छे ध

७४] [जिनदासगिन प्रडतर

उपर्युक्त पूर्णिभानुं क्यूरिय जिन्ह्यासागी उपर आसापित करणा माटेनो प्रमाण भारी जणाब्यों छ, पण व सिनायमी पूर्णिओ भेमो कर्मनी नाम नथी, ते पैडो केटछीना सभा त्यरत्य कर्षा छ वना पुराश अपाठ-भनी जन्मर छे भारी ए पण मात्र रासर्यु ओइए के केटछीक पूर्णि लोगां कर्ता दरीके लग्य प्रसिद्ध मन्यकारोनो उन्हेल छे वा छ. सिवसेनगणिए 'जीवकत्यस्य 'उपर पूर्णि रची छ (जुभी सिद्धसेन गणि), अने 'आवप्रतिकत्यन सुत्र 'उपरनी विजयसिंहसूरिनी पूर्णिनो उन्हेल राजसेलरस्थिय कर्षो छ (जुभी विजयसिंहसूरि)

पद्मना समयमां बयेष्टा सस्कृत टीकाकारोप पूर्णिओनो टपयांग स्यापक प्रमाणमां क्यों छे सने प्राकृत क्यानको तो पणो बार पूर्णि-मांबी व सन्दशः उद्धत कर्यों छे

 श्वकरात्र पंचयु वर्षण्येषु स्वतिकान्तेषु ब्रह्मवर्तिषु क्रमाण्यस्य-वृत्ति समाप्ता । तेणु, सदमान.

९ धन्मवितर्के प्रस्तानका, प्र. ३५~३६

३ इति अन्वेताकात्रभाविकवात्रभीमाहत्तर्भग्रदानामस्योगः

१ इतः चर्णन्याः वास्त्राम् वास्त

पोर्शामनगरकरमी विश्वकामी आस्ति बोर्गाम ॥ ग्राम्भवरत्त्वमाविक कोक्स्बी वितिसं ग्रुवेगीरो । शैक्षकपरंत्रपद्धियो वश्वकारतिथिलो नाग्छी ॥ वैति ग्रीचेन इसं वत्तरस्थानमान वृत्तिवांचे हु ।

सर्व अञ्चल्याचे क्षेत्रच संस्कृतीचे ॥ उत्, ए. ९८३ जिनवटाबार्य

'विकासस्यक साम्ब ' उपरानी कोटकाषार्मनी इंडिमां क्रिनमटा-पार्मिनो सर बहुमानार्यक टकिको छ यान्त्रिनो सहकरासूनु इरिमन स्टिप् के सम्बन्ध सेन बीका क्षेत्री इंडी हैना करियात पापार्थनेतु नाम विकास हम् पुरान सम्बन्ध स्टिम्सस्यिष् व्यावस्थक स्व 'नी टीकाने अते स्पष्ट कहुं छे के पोने एनी रचनामां जिनमटना अभि-प्रायने अनुसर्था छे. अानो अर्थ ए पयो के जिनमटाचार्ये 'आवश्यक सूत्र ' उपर एक टीका रची हती, जे अत्योरे उपलब्ध नथी. 'विशेषा-वश्यक भाष्य ' उपरनी कोट्या वार्यनी कृतिमा स्थळे स्थळे 'मूल-टीका ' अने 'आवश्यक मूलटीका 'मांथी उद्गरणो आप्यां छे ते जिनभटाचार्यनी टीकामांथी होवां जोईए

> १ विको (मा गा ४९८ उपरनी पृत्ति), पृ १८६ २ प्रच, ९-२ठो ३, ३०, १८१

३ समाप्ता चेय शिष्यहिता नाम भावर्यकपृतिटीका । पृत्तिः सिताम्बराचार्यजिनमटनिगदानुसारिणो विद्याधरकुलतिल्काचार्यजिनदत्त~ शिष्यधर्मतोयाकिनीमहत्तरासूनोरल्यमातुराचार्यहरिभद्रस्य । शाह्, अतभाग,

४ आको, प्र ६०९, ६७४, ६७५, ७९३, ८४६, ८५५ इत्यादि जुओ प भगवानदासनी प्रस्तावना, प्र, १-४.

# जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण

'आवश्यक सूत्र 'ना सामायिक अध्ययन्ती भद्रवाहुनी निर्युक्ति उपर गाथाबद्ध 'विशेषावश्यक भाष्य ' तथा बीजा अनेक प्रौढ प्रन्थो रचनार आचार्य ए महान भाष्यप्रन्थने अनुस्रक्षीने आचार्य मस्यमिरिए जिनभद्रगणिने 'दुष्पमान्धकारिनमग्नजिनवचनप्रदीप ' कह्या छे.' जेसस्रमेर भंडारनी एक प्राचीन ताडपत्रीय प्रतने आधारे आचार्य जिनविजयजीए 'विशेषावश्यक भाष्य 'नो रचनाकाळ शकाब्द ५३१=६. स ६०९ होवानु निश्चितपणे पुरवार कर्यु छे

जिनभद्रगणिए पोते 'विशेषावश्यक भाष्य' उपर एक टीका रची हती ए अत्यारे उपलब्ध नथी, पण कोट्याचार्ये तथा मल्रधारी हेमचन्द्रे पोताना विवरणोमां एनो निर्देश कर्यो छे. पछीना समस्रमां थयेला आगमसाहित्यना अनेक टीकाकारोए जिनसदराणिना अभिप्रायो

ि विनमहर्गाण समाधम्य on 1 टांक्या छे अववा तेमनी रचनाओमांथी मानपूर्वक अवसरणां

सारमां हे "

साम्रजीमां स्थापक प्रचार पास्य हता कर्न जिनसद-नामधारी धनेक प्रन्यकारी भाषणे बोर्डिय छीए." १ भाइ च वृद्धानम्बद्धसविमानविक्तवक्त्रवीयो विकादप्रिः

हरिसद हेमचाद भने असयदेवनी चेम जिनमद नाम पण बैन

खबाधस्यः x x x नेस प्र.८७ ९ मारतीय विशा भाग ३ सिंबी स्पृति श्रेकमां भीवितमा

गणि आराध्यावनो सक्षित्र समय ए केळ

३ सामाजसकरीकावी विवस, विको ५, २६५, समाभसम बीकाऽपीर्व ए च प ३ ३ वर्डी प्रस्तान्त स्थानकते (ए. ५९) प प्रसामे जिनसङ्गो सोवस उन्हें का के

४ समि विकी भी पं सम्बानशासनी प्रस्तादशा

भ तराहरण तरीके-समाध्य भाग १ व ११९ संबंध व. ५१, क्षत्री मागा प्र. १५६ माग १ प्र. ४ औरक्, प्र. १ १ वसं १८ १९५ मार १८ १ १८ इस्वाहि

6 Bars. V. 770

#### रिस्मरेखक

महिरावणमां पूर बावे त्यारे हिमरसङ प्रदेशमां भान्य बवाय छे,

पंशा उन्हेस में "

हिमरेस्क कोक्गमां सभवा आसपासना प्रदेशमां आन्यु हरा, केम के पुरानम प्रवन्धर्सम्बर्धना क्षोकणना राजा मस्त्रिकार्जनने 'मर्दि राव्याचित्रति 'कातो ले "

 क्विक्तिपृत्केण यवा कन्त्रास्था पृश्चक्तिप्कमानायां दाप्र वानीयमानितायां केत्रभूमी बाज्यानि प्रकीर्यम्तः, वदा विस्मरेशके सहिरावय क्रेन सम्मानि क्पन्ति । क्कमा था १९३६ मा विरह्मकम कुक्ती साम 1. L 141-64

तगरा ] [ ७១

२ धन्यदा कुद्धणे जालपतनं श्रुत्वा महिरावणाधिपति महिकार्जुन प्रति द्त प्राहिणोत् । पुरातनप्रवन्धसम्ह,' पृ ३९

### ढण्डणकुमार्

कृष्ण वामुदेवनो ढंढणा नामे राणीथी थयेछो पुत्र एने विञे आ प्रमाणे कथानक मळे छे: तेणे तीर्थकर नेमिनाथनो उपदेश सांभळीने दीक्षा लीधी हती, पण पूर्वकर्मना उदयने कारणे एमने आहार प्राप्त थतो नहोतो आथी पोतानी छिच्धिथी आहार मळे तो ज स्वीकारवो एवो अभिग्रह तेमणे लीघो हतो हवे, एक वार ढंढण मुनि द्रारकामां गोचरी माटे नोकळ्या त्यारे मार्गमा कृष्णे तेमने वदन कर्युं, आथी 'आ कोई प्रभावशाळी मुनि छे ' एम धारीने एक गृहस्थे तेमने लाडु वहोराव्या पछी ढढण मुनिए नेमिनाथ पासे जईने पोतानी छिन्धिथी लाडु मळ्यानी वात करी, त्यार नेमिनाथे कह्यु के 'ए आहार तो वासुदेवनी लघ्धिनो छे ' आथी कया पूर्वकर्मने कारण पोताने आहारप्राप्ति थती नथी ए विशे ढंढण मुनिए नेमिनाथने प्रश्न करता तीर्थकरे तेमनो पूर्वभव कह्यो अने अनेक खेडूतो अने वळद्रोने तेमणे आहारनो अतराय पाडचो हतो ए वात करी आ सांभळी ढढणमुनिए लाङ्डने परठवी दीधा अने पश्चात्तापनी भावना भावता तेमने केवल-ज्ञान थयुं ै

१ उन्ना, प्र ११८-१९.

### तगरा

'अनुयोगद्वार सूत्र 'मा 'समीप नाम 'नां उदाहरण आपता कहुं छे के गिरि पासेनु नगर ते गिरिनगर, विदिशानी पासेनुं नगर ते वैदिशनगर (विदिशा), वेणा पासेनुं नगर ते वेणातंट अने तगरा पासेनु नगर ते तगरातट ' आम तगरातट नगर तगरा नदीने किनारे आवेछं हतुं. टीकाओमा एनो संक्षेप करीने मात्र 'तगरा' तरीके उल्लेख करवामा आव्यो छे राध आचार्य विद्यार सरवा मा

लाभ्या हुता भन सेमना शिष्यो टक्सिमीभी हमरामां तेमनी पाँछे जाशे पहाँच्या हुता भारहिमन मामे भीता एक आसाय पण हमरामें रहेता हुता पर हमरामां सेहता हुता पर हमरामां सामर्थ पास साळ शिष्यो हुत्यं जेमांना भाठ प्यवदारों (स्यवहारिक्या-प्रवत्कः) अने भार अन्यव हारी हुता ए जार स्ववदारी शिष्योंनो नाम पुष्यिमन, बीम, शिष कोछक, आर्थास, अहैतक, मर्मास्वग, स्कृत्विस अने गायस्त्रवर्ण प्रमाणे हुता हुता

हरारा नगर भागीर देशमां कावेलु हतु वि स ९८६= स ९६३ मां वदवाणमां रचायमा, दिरोरर भाषार्थ इरिपेण हत पुर्त् इचाकेश 'मा सरा' (सपरा/त्वरा/सर्रा/तरा) नगरने 'आयी-रावस महा'रा 'मां बसाबेलु से दिरोरर कवि कनकामर भी बारमा सतकामां रचेमा भागवा कान्य 'क्रक्टेंडचरित' (४०-५)मां तेरापुर्त् स्था प्यांना गुक्तागन्दिर्तु इणैन से स्था ए ज काम्य बैन धार्मिक सरिद तेरापुर्नो केटओठ इतिहास वण आपे से

देशराबार राज्यना उस्मानाबाद जिल्लामां लीलां नदीना किनार आवेदं तेरा नावनुं गामबुं वा केलिहासिक तगरा नगरीना अवशेष छे एम मानवामां आवे छे अस्यार एण स्यां प्राचीन बैन गुफाओना अवशेष विकास है

नुषो मामीर

१ वें कि वं क्योनकार्यों १ शिर्मकार्यों कर्तर निरिधक्त विशेषकार्याये कर्तर वैतिकं कर्त केलाए क्योंके कर्तर केलाएवं तपराए स्मीने कर्तर तकार्यार्थ के वं स्थापनार्य । बहुत पू. १४९

१ वदा १८ १

३ वनि मः ९२ असा इ. ५

४ व्या, दिवास ४ वेटा सिमान १ **४.** ६८-७

५ आमीराज्यमहादेशे तेराज्यनगर परम् । तदा नीलमहानीली प्रयातौ विजिगीपया ॥ 'गृह्त् क्याकाश,' ५६ ५२

६ 'करवडचरिज,' प्रस्तावना, पृ ४१-४८.

# तरङ्गवती कथा

पादिल्लाचार्यकृत एक धर्मकथा. जुओ पादिलिप्ताचार्य

# ताम्रिडिप्ति

ताम्रहितिने ' टोणमुख ' कहेवामां आव्युं छे जल अने स्थल एम वन्ने मार्गोए ज्यां जई शकाय ते टोणमुख एना उदाहरण तरीके भरुकच्छ अने ताम्रलितिनां नाम आपवामां आवे छे ' सिन्धु, ताम्रलिति आदि प्रदेशोमा मच्छर पुष्कळ होय छे एवो उल्लेख ' सूत्र-कृतांग सूत्र 'नी चृणिमां छे '

ताम्निलिते साधारण रीते वंगाळनु तामलुक गणवानो मत पुराविदोमां छे, पण गुजरातना रतंभतीथ—स्वभातने पण प्राचीन काळ्यो ताम्निलित तरीके कोळस्वयामा आवे छे एना मजबूत पुरावा छे, अने जैन आगमप्रन्थो उपरनी टीकाचूर्णिओ गुर्जर देशमा रचायेली होई एमा बगाळना तामलिति करतां गुजरातना ज मोटा वेपारी मथक तामलिति (सभात)नो द्रोणमुख तरीके निर्देश होय एम मानवुं वधारे सयुक्तिक छे

प्रभाचन्द्रस्रिना 'प्रभावकचरित ' (ई स १२७८)ना 'हेमा-चार्यचरित' (क्षो. ३२-४१) मा 'स्तभतीर्थ' अने 'ताम्रलिति' ए बने नामो पर्यायो तरीके वापरेला छे ए वस्तु पण अहीं नांधवी जोईए जुओ सिन्ध

१ दोहिं गम्मति जलेण विं थलेण विं दोणसु**र्हं जहा भ**रुयच्छ तामिलत्ती एवमादि, आसूनू, १ २८२ (०) [ शास्त्रकिन्ति
 शोको मापो सुख्यस्थेति शोबसुधं-वशस्त्रक्रमीर्गम-प्रवेशं स्था

भगुक्टकं क्षामितिसर्वे उद्या पृ ६ ५. होत्तमुखं करस्कानिर्मभागवेस दवा मस्क्टकं दामसितिदार्व कामी

पू. १५८ वज्ञी सभी प्र. ४८ शक्षी सक्का

र सुरुष्ट १ १ १

्रप्रस्था वा । इस्त्रोबिक्ष

४ बमावनो इतिहास ४, १४-१६, वदा पुत्रमां स्तरमातीर्थे-

तुम्बदनमाम

शवन्ति अनपदमां तुम्बवनप्राप्तमां भगिगिर भने धुनैदा ए दपतीना पुत्र तरीके वजस्वामी खग्म्या हता '

जओ बच्च आर्य

ा भाष्, पूर्व मान छ ३८ भास छ ३८७

तोसस्त्रिप्रमानार्य

होतालकुरानामं वशपुरमां लाल्या त्यारे तेमनी पाटे व्यार्थ रिक्ति दोशा स्प्रेमी हती. रिक्षत विदान होई राज्याना औतपात्र हता; तेबी राजा कराज दोशा निह अवा दे एम भारान काजामें तेमने क्यूनि अन्यत्र वसमा गमा हता बैन जानुसूति प्रमाणे का पहंसी शिक्यवेरी

('पडमा सेहनिष्फेदिया') हती १ अपस्य प्रारूप-१५ असे ए १५

९ व्याम छ १९४-६५ वसे छ १४ इतकेछ १७१-७३ ह्रवानि भावस्थापुत्र

पुत्रे विदोनी कथा था प्रमाणे हे बारका नगरनी सप्पन्न सार्थे बाही बावण्यानी ए पुत्र होतो युवानरचामां गावता इन्यकुळनी बायीस कन्यामां साप्ये तेनुं क्या बचुं हुईं एक वार आहिलीस शीर्षेकर बारकामां सुरिष्य उचानमां समोसर्या हता कच्चा बासुदेव प्रजावनी साप्ये तेमने बंदन करवा माने आस्था तेमना उपदेश सोमळीने थावच्चापुत्रने प्रवच्या लेवानी इच्छा थई. माताए तथा वासुदेवे घणुं समजाव्या छता व्यारे एनो निश्वय चल्लायमान थयो नहि त्यारे वासुदेवे घोषणा करावी के 'जेओ मृत्युभयनो नाश करवा इच्छता होय छतां संबंधीओना योगक्षेमनी चिन्ताथी तेम करी शकता न होय तेओ थावच्चापुत्रनी साथे दीक्षा हे, एमना संबंधीओनो विवाह हुं करोश. ' आथी केटलाक विचारक युवानोए थाव चापुत्रनी साथे दीक्षा सीधी पछी थावच्चापुत्रे तीर्थंकरना स्थविरो पासे चीद पूर्वोनु अध्ययन कर्युं पोताना संतेवासी चधा युवानोने तीर्थिकरे थावच्चापुत्रने एमना शिष्य तरीके सोपी दीधा. पछी विहार करता थावच्चापुत्रे शैलकपुरना शैलक राजाने उपदेश आप्यो अने ५०० मत्रीओ सहित तेने श्रमणो पासक वनान्यो सौगंधिका नगरीनो नगरशेठ सुद्र्शन शुक्र नामे परिवाजकना उपदेशथी तेना शौचमूलक प्रवचनमां मानतो हतो तेन पण थावन्चापुत्रे श्रमणोपासक बनान्यो, एटछं ज नहि, सुदरीननो गुरु शुक्त पण थावन्चापुत्रनी वाणी सांमळी पोताना हजार तापसो सहित तेमनो शिष्य थयो. छेवटे थावच्चापुत्र पोताना परिवार सहित पुंडरीक ( शत्रुंजय ) पर्वत उपर गया अने अनशन करीने सिद्ध, बुद्ध अने मुक्त थया

१ हाध, श्रु १, अध्य ५ (शैलक्हात)

### दण्डकारण्य

जुओ कुम्भकारकट

### दशपुर

माळवामा आवेछं मंदसोर.

दशपुरनी स्थापना केवो रीते खई एनो परंपरागत इतिहास आम आपवामा आवे छे वीतमय नगरना राजा उदायन पासे जीवंतस्वामी महावीरनी गोशीर्षचदननी सुन्दर फ्राप्टप्रतिमा इती ते उज्जयिनीनो दर ] [ इश्युर राजा प्रधोत उठावी गया इतो ते पाझी मळववा माने उदायने दश राजाओने साथे दर्भ प्रधोत उदार भाकमण । कर्मु ग्राविमा तो पर रचानेची उत्तरही नहि, पण प्रचीतने केन्न पक्रदीन। उदायन पाछा

सहयो. वर्षां अतुने कारणे । मार्गमा तेमो पश्चव नास्तेने रह्या कीर् सस्य आक्रमणना प्रतिकार वाँ शक्त प्रमाट दश राजाभोए छापणीनी आसपास चूळनो प्राकार बाँच्यो. वर्षांकाळ पूरो भया पछी उदायन स्वांभी गयो, पण एना सैन्य साथे के बणिकवर्ग आन्यो हतो त स्वां स बस्यो, दश राजाभोए प्राकार बाँच्यो होताने कारणे नगरनु नाम दशपुर पद्धुं

भार्म रश्चिसस्रि दशपुरना पुगेष्टित सोमदेवना पुत्र हता. दीशा पदेशां वासण शास्त्रोनो विशेष अन्यसाम कर्षा माटे।तेस्रो दशपुरमी पाटिकपुत्र समा हता अने दोशा औषा पुत्री पूर्वोनो अन्यसास कर्षा माने आर्म वक्त पासे उत्सविनी समा हता सात्रमो निह्नव गोधा-माहिक दशपुरमां पूर्वो हतो

१ वसे द्वीता नवा दः १ वसे द्वीता है, ५४

२ साम्, पूर्व माग, प्र १९७-४ १ कास प्र १९१-९४ निमा ना. १९०३ निम्नु, माय ३ प्र. १४६ कमे प्र. १३ इसारि

१ तानो उपर्नुच भाष्, आस

४ स्थास् ६ ४) तमे गोद्यासाविक समी दशपुर विकेश प्रवेष तसेच्यो साटे तथो कही ६ ११४ व्यक्ति हु १७१ ७१ १९९, वर्षे हु १३ व्यक्ति हु १४४-८८

दशार्गपुर

दराज्यपुर एककक्षपुर तरीके पण मोळलातुं इतु, तथा गमान-पद तीर्ष पनी पातेना दशार्णकृद पर्वेत उपर इतुं दशार्णपुरमा दशा-गमळ रामा राज्य करतो हतो.

नुको एसकस्छपुर, गन्धाप्रपद

े १ आचू, पूर्व माग, पृ. ४७९, आम, पु. ४६८.

# दशाह

अंधकदृष्णिना दश पुत्रो, जेमां नेमिनाथना पिता समुद्रिविजयं सौथी मोटा हता तेओ दशाई अथवा दसार राजाओ तरोके जाणीता छे. ए दशाहों पैकी सौथी नाना वसुदेवना पुत्र कृष्ण वांसुदेव हना. एमनां नाम—समुद्रविजय, अक्षोभ, स्तिमित, सागर, हिमवान, अवल, धरण, पूरण, अभिचद, वसुदेव कुन्ती अने मादी ए दशाहोंनी बहेनो हती

> १ दवैचू, पृ४१ २ अद, वर्ग १-२

# देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

दूष्यगणिना शिष्य परंपरानुसार तेओ 'नंदिसूत्र 'ना कर्ता छे वीरनिर्वाण स ९८०=ई स. ४५४ (वि सं ५१०) अथवा ९९३=ई स ४६७ (वि सं ५२३)मा तेमनी अध्यक्षता नीचे वलमीमां एक परिषद मळी हती अने तेमां जैन श्रुतनी छेवटनी संकलना करवामां आयी हती. एमां आर्य स्कन्दिले तैयार करेली जैन श्रुतनी माथुरी वाचना देविधिगणिए मुख्य वाचना तरीके सर्व-संमितिथी चाल राखी हती, अने आर्थ नागार्जुननी वलमी वाचनाना मुख्य पाठमेदो 'वायणंतरे' अथवा एचा अर्थनी नींध साथे स्वीकार्या हता वलभी वाचनाना विशेष मेदो टीकाकारोए 'नागार्जुनीयास्तु पटन्ति' एवा टिप्पण साथे टाक्या ले, एटले अध्ययन—अध्यापनमां वलभी वाचनानुं महत्त्व स्वीकारवामा आवतुं हतुं ए निध्यत ले देविधिगणिए जैन श्रुतनी एक नवी वाचना तैयार करी एम न कहेवाय, पण तेमणे एक पूर्वकालीन वाचनाने सर्वमान्य बनाववानु तेम ज बोजी वाचनाना मुख्य पाठमेदो साचवी राखवानु महत्त्वनुं कार्य कर्यु. बळी

दिवक्तिगणि समामन<sup>व</sup> Z# 1 तमाम उपसम्ब भागमारूमोन तेमना नेतृब नोचे एक बोकस पड़िन

मनुसार पक साथे किपिबद करवामां काव्या ए पण कैन इतिहासमी

एक क्यो महत्त्वनी बनाब गणाम ' मदिस्य 'ना प्रारंभमां देवविगणिनी गुरुपरंपरा बापवामां मार्वी

🔒 प्रमाणे तेओ महावीरको वजीसमा युगप्रवान गावाबै छे प् पहावित्र मीचे प्रमाणे छे महाबीर पत्री आर्थ सुधर्मा, बनुस्थामी,

प्रमृतस्तानी, सम्बंभव, यशांभ", समृतिविजय, महबाहु, स्यूसमर, महागिरि, सहस्ती विकस्सह स्वाति स्थामार्य, शांहित्व संपृष् संगृ कास धर्म, मदगुस वज्र रक्षित, नविष्ठ नागहरूती, रेवितनहर्म,

बद्यद्वीयक सिंह स्कृत्विसाचार्य, हिमबंत नागर्कुन गोविन्त, मृत्दिरन, होडित्स, बुष्पगणि, देवर्षिगणि " कृत्पसूत्र ' बंदर्गत स्थविसक्सी भनुसार देवर्विगणि महाबीरची ३२मा नहि, पण ३४मा पुरुष हता रयां देवविंगणिनी गुरुपरंपरा नीचे सुचन भाषेछी छ-महाबीर पड़ी सुपर्ना, अंबु, प्रमत शय्ममन, यशोमद संमृतविजय-भववाहु स्थू<del>र्व</del>-मत्र सहस्ती सुरियत-सुप्रतियुद इन्द्रदिस, दिश सिंहगिरि, वर्त्र,

रथ पुष्पिगिरि, फरगुमित्र, धनगिरि, शिवसृति सर, मधत्र, रक्ष नागः केहिक विच्या, कालक संपक्षित-मत् इस संघपातिस, इस्सी धर्मे सिंह, पर्मे, शांदिल्य देवर्षि

मुलो नागार्श्वन, महि बाबार्य, मधुरा, बस्मी

9 AP 4. 64

२ वस प्र ११४-१६, ब्रीक्स प्र ११५-३१ वस्त ३ ५ ४४/ क्यों स १५६ की छ ११३-१५ समारे

) नेस् श्रवीरायमी, गा. १८४१

 विविच ब्रान्डीमोम्सं बाह्य वैवर्निवनित्री तुवपरंपराची ग्रुवमहम्ब क्यां माटे सुबी सुनि कानाविश्ववशीहत बीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना,' पृ ११९ थी सागळ

# देविलाम्रत

उज्जियनीनो राजा एनी कथा आ प्रमाणे छे पोताना केशमां पिळ्या जोईने तेणे राणीनी साथे तापस तरीके दीक्षा छीवी हती राणी ए समये सगर्भा हती. यथासमये तेणे पुत्रीने जन्म आप्यो, पण प्रसूति- काळे ते मरण पामी. पुत्रीने बोर्जी तापसीओए उछेरी. पछी समथ जता युवावस्थामां आवेछी पुत्रीने जोईने देविछासुत मोहित थयो अने तेने आश्लेष करवा जतां भीय उपर पडी गयो पोताना दुवैर्तननुं फळ अहीं ज प्राप्त थयु छे, एम समजीने तेणे पुत्री साध्वीओने आपी अने पोते विरक्त थईने सिद्धिमा गयो.

१ भाचू, उत्तर भाग, पृ २०२-३

# देवेन्द्रसूरि

तपागच्छना स्थापक जगच्चंद्रसूरिना शिष्य अने पृष्ट्रधर. तेमणे 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र 'उपर वृत्ति छखीं छे, जे 'वंदारुवृत्ति 'नामे प्रसिद्ध छे '

देवेन्द्रस्रि मत्री वस्तुपालना समकालीन होई ई स ना तेरमा शतकमां विद्यमान हता खंभातमां तेमनुं न्याख्यान साभळनार श्रोताओमा वस्तुपाल पण एक हतो. देवेन्द्रस्रिए प्राचीन कर्मप्रन्थोनो उद्घार करीने 'कर्मविपाक,' 'कर्मस्तव,' 'बंधस्वामित्व,' 'षडशीति' अने 'शतक' नामे नन्य कर्मप्रन्थों तथा ते उपरनी स्वोपज्ञ टीकाओ स्वी आ सिवाय पण बोजा केटलाक प्रन्थों तेमणे रचेला ले, जे पैकी प्राकृत 'सुद्रशैनाचरित्र'ना सहकर्ता तेमना गुरुभाई विजयचेंद्रप्रि हता देवेन्द्रस्रिनुं अवसान सं. १३२७=ई स १२७१मा थयुं हतुं '

१ वम्, पृ ९६

२ जैसाइ, १

< ] [ द्रोणाबार्य द्रोणाबार्य

द्राणाचाय 'श्रोपनिसंकि'ना टीकाकार नवांनीहृत्तिकार असमदेवस्रि

कत इतिभोनुं संशोधन होणाचार्य वार्मा सुस्य हता एवी एक पांत्रवरिषये क्यूं हता काणाचार्य प्वांत्रममा क्षत्रिय हता तथा अलहिल्यादना चीछ्न्य राजा मीगदेव पहेल्यना मामा हता तेमनो समय विकासना १२मा शतकता प्योचेंमा वार्यात् इ.स.ना ११मा शतकना उत्तरायेंगा निश्चित छे प्यानु मुख्य प्रवृतिकेंग काणांत्रस्याद हर्षा

१ समे जमयदेवद्वरि

१ प्रतासकारतासन्त्रकम्बन्धभवेसः । धोन्नोसन्दरितसमासन्द दुःबासनार्देशः ॥ धानविकायुक्तीयानार्देश्चरताहरूकः । मरित सामग्रकोरस्यो नरेपास्त्रस्य सञ्चस ॥ प्रमा १८-मन्नी ५-५

। समें भणविक्रपाटक

द्वारका-द्वारवती

द्वारकाना स्थान विशे सागर वर्षा माटे जुल्ले पुगु मां द्वारका साधीवर्षास भाग देशो वैकी सुरायना राजधानी सर्वके द्वारवर्षानी उद्धेस से भा नगरने नद बोजन यहोजु को बार याजन छोड़ी

वर्णववामां व्यक्ति छे पत्नी व्यक्तियास पण्यस्तो प्रकार हती प बर्मास्ता उटकेल बर्जुरिवितिना सुचक छ, जो के बन्यत्र एन सुवर्णना प्राकारताच्यी वर्णको छे पत्नाची ईस्पतमा रैस्टक नामे पर्यह्न हतो. पत्नी वर्षकर नामे उपान हत्ने बने स्थां सुरक्षिय मध्ये

आपतान होते.

शुरे शुरे प्रदाने अध्यक्षिण हच्चा बासुदेव तथा बस्तदेवन हारकाना राजा सरीके वर्णवेदा छे बळी हारकाना विद्वात नियासीओमां समुद्रविजय प्रमुख दश दशारी, वलदेव प्रमुख पांच महाबीगे, उप्रसेन प्रमुख सोळ हजार राजाओ, प्रधुग्न प्रमुख साडाहण करोड कुमारो, सांव प्रमुख सात हजार दुर्दात पुरुषो, वीरसेन प्रमुख एकवीस हजार वीर पुरुषो, रुक्मिणी प्रमुख सोळ हजार देवोओ, अनगसेना प्रमुख अनेक गणिकाओँ तथा बीजा अनेक साथवाहो आदि हता. आ उपरथी याददोनी राजपद्रति वज्जी, लिच्छवी आदिनी जेम गणसत्ताक हती अने तेमा अनेक यादव-विजेषो राजा नाम धारण करी शकता हता एम अनुमान थाय छे.

प्रतिवासुदेव जरासधना भयथी यादवोनो समूह मथुरार्था द्वारका आज्यो हतो " द्वारकाना नाश माटे आगमसाहित्यभा नीचे प्रमाणे कथा आपवामा आवे छे यादवकुमारोए दारू पीने द्वैपायन ऋषिने मार्या हता आथी बालतप करीने, द्वारवतीविनाशनु निदान करीने मरण पानी द्वैपायन अग्निकुमार देव तरीके उत्पन्न थयां हता. अग्निकुमारे द्वारवती वाळीने भस्म करी दीधी हती. मात्र बलराम अने कृष्ण वे ज जण वचीने नीकळ्या हता."

१ प्र, पृ. ५५, सुक्त्वी, पृ १२३, वृक्क्षे, भाग ३, पृ. ९१२--१४.

् २ ज्ञाध, 'पृ ९९ तथा १०१, बृद, पृ. ३८—४१, -इरयादि, -

३ पाषाणमय प्राक्तारो यथा द्वारिकायाम् , बृकक्षे, भाग २, पृ २५१

४ दा त वारवई नाम नगरी होत्या चामीयरपवरपागारणाणा-मणिपचवन्नकविसीसकसोहिया, ज्ञाध, पृ ९९.

५ सद, प्र १, श्व, प्र ३८-४१, ज्ञाघ, प्र ९९, आम, प्र, ३५६, ज्ञ्यादि

६ दा त तत्यं ण बारवतीनयरीए कण्हे णाम वाह्यदेवे राया परिवसति, अद, पृ २.

तत्य ण वारवतीए नयरीए क्षघगवण्ही णाम राया परिवसति, ए ज, पृ. २ [ झ्रारका-झ्रारवरी

स्त्व ने बारतीए बन्देवे नाम छना होरवा एक प्र १४ भ भा मधीयां महत्तेन ममुद्रा स्थान हमार बश्वान पुरसे एन्स्रे काथ (प्र १ ५) स्पेरे प्रे

८ वर १८. १८-४१ हान १८ १०० हरवादि

् संस्कृतः स व कारण वंशकृत् स्ता श्रे विवस्य कार्या वानकोत्तर्शनो ववश्रं प्रदेश के तस्त्री व द्वरिकालवा वस्त्रीमध्यकशीय-संस्थितिय एव अनुहार ह रे.

 मंद्रमि विभिन्तार्थ स्थापं श्रेतमेशीत काळव वरासंप्रमण्य दशास्त्रामो महुराची अनवस्थित्रम वास्त्रह गमो ति । दवेहा ६. १६-२४

1) हुओ को दुस्वारच्य हास्त्रवा सन्य प्रवेशिक शकेयो वर्ष क्षेत्रों तरे कुले केंद्र, दुः १९ १२ १९० कुछन सन्य १ १ १९ १० वर्ष १४-१४ वर्ष १७-१९, पाय १८ १७-सद्ध ११९-४४४ क्षेत्र १४-१५, कसी १ १९१-१९ ध्यारि

द्वीप सौराप्टनी दक्षिणे भावेसी श्रीवनी बेट.

ec 1

बक्षण्यन सर्वाद् प्यां कळमार्गे माठ कावे छे प्या वेपारण सबक तरिके द्वीपनी निर्देश मळे छे ' छातमा-काठमा सैका सुपी योब सीराप्ट्रनी सुक्त सूपि साथे बोद्यसेको इतो धने त्यार पणी कोई मुखरीय परिवर्तनोने कारणे ए टापु बनी गयो इतो पर सुपवती पर कानुकृति हो कळतेकर नीचे छे. पण ते उपर आधार राजो सहाय एम नवी, केमके सातमा सैकाना करसायों रचायेकी ' निशोब सुत्र ' उपरनी पूर्णिमी स्पष्ट कर्मू छे के दीन सुराप्ट्रनी वरिले एक योचन हर समुद्रमां बावेको छे 'निशीब स्पर' उपरना पूर्ण करता सीरम सिक्स' माट 'वर्गिवन्वारा' शब्द ए सकर्तु होगल सिट को छे बैन टाकावृणिकोमा मोटे भागे इवर्गरपरार्मे संक्रकन करेले होन छे, पन्छे भा उजकेलोने सारिक रीठ सत्या सेका करता केरक्सक सैका बेटका प्राचीनका राज्या सेकें दीवमां चालतो मुख्य मिको 'साभरक' कहेव।तो एने 'रूपक' कह्यों छे, एटले ते चादीनो होवो जोईए. वे साभरक बरावर उत्तरा पथनो एक रूपक अने उत्तरापथना वे रूपक बगवर पाटलिपुत्रनो एक रूपक थतो. वळी आ ज कोप्ठक बीजी रीते आपेलुं छे के दक्षिणा-पथना वे रूपक बरावर द्राविड प्रदेशमा आवेल कांचीपुरनो 'नेलक' नामनो एक रूपक अने वे नेलक बरावर पाटलिपुत्रनो एक रूपक थाय छे हैं

ा पत्तन द्विधा-जलपत्तन च स्यम्पत्तन च। यत्र जलपयेन नावादिवाहनारूढ भाण्डमुपेति तद जलपत्तनं, यथा द्वीपम् । बृकदे, भाग २, पृ ३४२.

२ 'एन्स्यन्ट टाउन्स अन्ड सिटीझ इन गुजरात अन्ड काठियावाड,' पृ २६

३ दो साभरगा दीविच्चगाउ सो उत्तरापधे एको । दो उत्तरापधा पुण पाडलिपुत्ते **ह**वित एको ॥ (भा. गा ९५२)

" साहरको " णाम रूपक, सो य दीविन्तिको । त दीव सुरद्राए दिक्खणेण जोयणमेत्त समुद्दमवगाहिता भवति, निचू, भाग २, पृ, १२५

४ निमा, गा ९५२-५३, निचू, भाग २, पृ २२५, वृकमा, गा ३८९१-९२, वृकद्गे, भाग ४, पृ १०६९

# धनपाल पण्डित

ई स ना १७ मा शतकमा थयेला माळवाना राजाओ मुंज अने भोज बन्नेनो मान्य कवि भोजना विनोद माटे धनपाले 'तिलक-मंजरी'नामे कथाप्रन्थ रच्यो हतो

'श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र ' उपरनी रत्नशेखरसूरिनी वृत्तिमा घनपाल विशेना वे उल्लेखो छे एक उल्लेख प्रमाणे, धनपाल वैदिक घर्माव-लंबी हतो, पण पोताना बंधु शोभनना ससर्गश्री तेणे जैन धर्मनो स्वीकार क्यों हतो वीजा उल्लेख प्रमाणे, प्रतिबोध पामेला धनपाले काव्य- ( م•

गाष्टिमां भाजन दिनोद कसारवाप्वैक उपरेश आयोने हेनी पाछ धूगमा तथा सनमां पछुत्रपनो त्याग करान्यो हता.

१ मध्य ४ ११४

१ एक पू. ४९ भेनताल तथा तेनी इस्तिभी सन्देशों <sup>हिन</sup> साहित्य सत्रोपक,' दोड ३ भेंक ३ तथा वैशाद, दू २ -१ ६ भनस्मित्र

भा विश्वेनी कथा नीचे प्रमाणे हा अव्यक्तिना चनमित्र नामें धणिके पुत्र धनलानी साथ बीखा सोधी हुन। तकोए एक बार मध्या-इनकान्द्रे विहार क्यों हुने, बुद्धक (बादमाधु ) धनकानी त्याहर चर्चा चिताय मार्गमा लावती एक नतीनांधी याणी योश क्यु धन-हामाँए याणीनी भौजान क्यों करी पण विचार करीन पाणीने सरिच जाणीने न पीर्छ शन विचास परिष्ठ सहन करीने मरण पाम्या "

९ उता ए ८० उने ए १९ या बीजी इतियां कवाची केरलोक बदम्बदरपूर्व विश्तार माप्यासी धाव्यो है.

धन्यन्तरि

हारकामां कृष्ण बाहुदेबना वे बैचो हुश-प्यवस्त्राह कने बैतरिंग एमांनी बन्बरुटि बमस्य-मुक्ति कारोम्य हुतो, न्याहे वैउहिंग मस्य-मुक्तिबाम्य हुता यन्य तृहि सायुकोन साथय कौर्यय क्षायदो अमरे बैतरिंग प्रामुक-निर्दोप भीषय म्हबती यन्यन्त्राहिने कालुं काल्य मुख्यामां बावे त्यारे ते चडेतो कें- में कंड् समजान मारे वैश्वकशासन् अस्मयन कर्युं नथी

१ आरम् पूर्वमान्य प्र ४६ −६१ मास प्र ४६९

षर्मसागर उपाध्याय

त्रपातम्काचाम दीरविषयप्रस्ति शिव्य प्रसणे हं १६२८ बर्द् स १५७२ मा राजवश्यद्वर-नावनपुरमां फश्मप्त उपर किरगा वृद्यी नामे प्रमाणमृत टीका रची हती कामदावादनिवासी हेववी कुंअरजीए ए टीकानी सेंकडो प्रतो लखावी हती े

9 किंक, प्रग्र€त, पृ २०३-४ धर्मसागरे वीजा पण अनेक प्रन्यो रचेला छे एमनी राडनप्रयान शैलीए तत्कालीन जैन समाजमा मोटो राळभळाट मचाल्यो हतो एमनी रचनाओ माटे जुओ जैसाई, पृ ५८२-८३.

# ध्रुवसेन

ब्रुवसेन राजाने पुत्रमरणथी थयेटो शोक शमाववा माटे आनंदपुरमा सभा समक्ष 'कल्पसूत्र ' वाचवामां आन्युं हतुं ै

# जुओ आनन्दशुर

१ कस, पृ ११८-१९, कम्रु, पृ. १५-१६, ३०५-७८, किक, पृ ९, १६, ११०, करी, पृ ११३-१५, क्रकी, पृ ९

# नटपिटक

भरक उथी उजियनी जवाना मार्गमां आवेलु एक गाम भरक उथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने उजियनी मोकल्यो हतो, पण मार्गमा कोई मादा साधुन। सारवार माटे एने रोकावुं पड्यु हतुं, अने एम समय वीती जता तेणे नटपिटक (प्रा नडपिडअ) गाममा नागगृहमां चातुर्मास कर्यो हतो रे

१ क्षाचू, उत्तर भाग, पृ २०९

### नन्दन उद्यान

द्वारकाना ईशान खूणे रैवतकनी पासे भावेछं उद्यान जुओं द्वारका, द्वारवती अने रैवतक

## नभोवाहन

भरुकच्छनो नभोवाहन राजा कीशमपृद्ध हतो प्रतिष्ठाननो सालवाहन बलसपृद्ध हतो दर वर्षे सालवाहन राजा भरुकच्छने घेरो घालतो अने वर्षाऋतु वेसे एटले पोताना नगरमां पाछो जतो नभोवाहन कोशमपृद्ध हता, एटले घेरा ६२] [तमोवाहन

इसते जे कोई सास्वहनना सैनिकोना हाव अवना मार्चा कारी सावे तेने हुन्नारोनां इनाम भापतो हतो साम्रवाहन पाताना माण्सोने पराक्रमना बद्धामां कञ्च आपत्तो नहातो आयी तन् सैन्य शीग शतु करने तेने प्रतिपान पाठा फरहा पहता बीच वर्षे फरी पाछी ते सैन्य साचे आमीने घेरो पासतो था प्रमाणे समय बीततो हतो. एम करती मुक्तिमी विजय मेळवर्गा मुट्टे एक गार सास्काहनने तेना समान्ये कर्मु के मारो कपराथ थयो छ एस खाहर कराने सन देशवटी जापो ' सास्थाहर पम कर्ष, एटडे मंत्री मरुक्क गमो अने एक देवकुलमां रक्को साहबाहुनमो प निर्वासित मंत्री छे प बात समय अर्ता साहर वर्षे नमावाहन माणसा मोइस्नान पन बालाब्यो पण भ्यारे ए मान्यो निर्देश पारे राजा पोते त्यां भावमा अने पोताना मंत्री धरीके पनी ।नभण्क करी पष्टौ सर्प्राय नमोशाहनन सम्प्राह आपी के पुष्पाणी राज्य मह है, माट बोजा मन माट पूर्व संवित करो.' पर्छी नमीवाहमे एना कहेगा प्रमाण दैवकुलो कर स्तुपा तळावी अन बाबी बचाव्यां तथा नभीबाइन साइ 'नामनो साई स्रोदापी प्रम इस्म बंधराई गयु पटके मंत्रीय पीनाना राजा सालवाहनन बोसाम्मी एक बारना कोशसमृज नमोनाहर पासे हवे पोताना माणसान प्रीतिदान жप आपना अर्थ कई नहार्त्त, मान्री तने नासी जय पहार्य भने महत्त्वप्रमा दवजो साञ्चाहन सीचे

नमावाहमनी राणीमुं साम प्रधावती इहा बन्नमृति लागार्थमी इति हावेननी स्मातिशी भाषार्थोहेने ए साथार्थने मळश गई हती

ः विश्वम भारतको भ्रष्ट्यातक्षीय शक्त-समय नहवान ते ज का समावाहन (भा कार्याहक, कार्याहण) होसे कोके जना समय इसवी सनना बीमा बनकमा पूर्वभेगी होस प् सीभी वसु समिति छ ज समय महाराज्यों साम्यवाहन वैशवा गीतनीयक साहकारि राज्य करतो हतो, ए ज आगमसाहित्यमा जेनो 'सालवाहन-सात-वाहन ' एवो नामनिर्देश कर्यो छे ए संभवे सातवाहनो अने पश्चिम भारतना शक-क्षत्रपो वन्चे शत्रुवट चाली आवती हती ए इतिहास-सिद्ध छे. शातकर्णिना उत्तराधिकारी वासिष्ठीपुत्र पुळुमायीना एक छेखमां शातकर्णिने माटे 'खखरात-त्रस-निरवसेस-करस सातवाहन-कुल-यस-पितथापन-करस' (=सं क्षहरातवंश-निरवशेषक(स्य शात-वाहनकुल्यश.प्रतिष्ठापनकरस्य ) एवा शब्दो वापरीने एने क्षहरात-वशनो उच्छेद करनार तरीके वर्णां यो छे ए घणुं सूचक छे.

# जुओ सातवाहन, सालवाहन

- १ आचू, उत्तर भाग, पृ २००-२०१
- २ जुओ बज्रभूति आचार्य
- ३ रायचौघरी, 'पोलिटिकल' हिस्टरी ऑफ ॲन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ २२१ थी आगळ
  - ४ 'सिलेक्ट इन्सिकिप्शन्स,' न ५८, टिप्पण १
  - ५ एज, न ८३-८४.
  - ६ एज, न. ८६

# नर्मदा

नर्मदा नदी 'आवश्यक सूत्र 'नो चुर्णिनो एक कथामा स्नो-चरित्रविषयक एक प्राकृत श्लोकनो पूर्वार्ध नीचे प्रमाणे छे

# दिया कागाण वीभेसि रत्ति तरसि नंमदं।

- ' विशेषावश्यक भाष्य ' उपरनी कोटचाचार्यनी वृत्तिमा नर्मदाना पूरनो उल्लेख छे <sup>२</sup>
  - १ भाचू, उत्तर भाग, पृ ६१. एक सुप्रसिद्ध संस्कृत श्लोकार्ध-"दिवा काकरवाद् भीता रात्रौ तरित नर्भदाम्"-नु आ प्राकृत हे अथवा जनसमाजमा बहेती प्राकृत कहेवत उपरथी ज आ श्लोक बनावदामां भाव्यो होय
    - २ विको, पृ १७०

िनमोबाइन

वसते चे कोई सारुवाइनना सैनिकोना हाथ भयवा मार्था आपी सार्व तेन हवारोनां इनाम भापतो हसो साठवाहन पोताना मार्गसान पराक्रमना बद्रुष्टामां कुछु भावतो नहोतो, भाषो तनु सैन्य श्रीण बहु भने तेने प्रतिपान गांभा फत्य पद्धत बाजा वर्षे पती पात्रा ते सैन्य साथे भावीन घेरो पास्को था प्रमाणे समय बोठतो इतो धम करता <u>अ</u>किशी विश्वय मैळवता माटे एक बार स।कशहनने तेना कमान्ये **रुर्धे** के मारो भपराभ अयो हे एम बाहेर करोने मन देशबटो आपो ' सासवाहने एम कर्युं, एटक मंत्री मम्बद्धक गयी अने एक देवसुस्वर्गी रक्को साम्रवाहननो ए निर्वासित मंत्री हे ए वास समय बर्जा आहेर बई नमोबाइन मांगरी। मो स्क्रोन एने बोकान्या, एण अ्योरे ए आप्यो निहत्यारे रामा पोते त्यां भाषमा मन पोताना मनी तरीके पनी ।नमण्**र करी प**छी मधीए नमोशाहनन सलाह आपी के पुरुपकी राध्य मळ छे. माटं बोजा भव माट पूर्वम सचित हरो.' पछी नमावाहने एना कहेवा प्रमाणे देवकुछो कन स्तुषा सळाडो अने वाको वंधाभ्यां तथा नभोबाहन लाइ 'शामनो स्वर्ड स्रोताबी एम वन्स बपराई गयु, पटक मत्रीए पोहाना राजा सास्त्राहनमं, बोकान्सा पक बारना कोससमूद नमोबाहन पासे हुवे पोताना मागसान प्रीतिवान-रूपे भाषना चेतुं केई नहातुं, आणी तेने नासी जबु पह्यु भने भरकष्णना कनजो साध्यक्षन हीचे

42 1

नमोबाहमनी राजीनु नाम प्रधावती इहु वज्रमृति आवार्वनी कवि तरीकेनी स्वातिबी साक्ष्योईने ए सामायेन मळवा गई हती.

ा पश्चिम भागतती शहरातवंशीय शब्द-कृत्रय नहपान ते अ भा ममोबाहन (भा णहनाहण णवनाहण) होई शके पना समय इसवी सनना बीजा शसकना पुर्वाचेना हाय ए सौधी वच्च समिवत छे ए समये महाराष्ट्रमां सामवाहन वंशनो गौतनीपुत्र शास्त्रकार्ण नेमिचन्द्रस्र ]

ि ९५

सोमयशानो पुत्र. तेओ वाळकने अशोकवृक्ष नीचे म्कीने उछवृति करतां हता त्यार जृंभक देवताओए तेने छईने उछेयों हतो तथा प्रजिप्त, आकाशगामिनी आदि विद्याओं आपी हती नारद महासमर्थ परिवाजक हता तेमनो स्वभाव झगडों कराववानो हतो कृष्ण अने तेमनो पत्नीओ रिनमणी आदि वन्चे तेओ कलह उत्पन्न करावता अने वळी शमावी देता

त्राह्मण परपराना नारद मुनिने आम जैन परपरामां एक परित्राजक तरीके वर्णवेला छे

१ भाचू, उत्तर भाग, पृ. १९४

# नासिक्य

हालनुं नासिक 'नासिक्यपुर' अने 'नासिक्यनगर' तरीके पण एनो प्रयोग थयो छे नासीकनो नंद नामे विणक पोतानी पत्नो सुन्दरीमां अत्यंत आसक्त होवाने कारणे 'सुन्दरीनंद' तरीके ओळ-खातो हतो <sup>3</sup>

बुद्धनो ओरमान भाई नंद पोतानी पत्नी सुन्दरीमां अत्यासक्त हतो, एने पराणे दीक्षा आपवामां आवी हती अने अनेक दृष्टान्तोथी वैराग्यमा स्थिर करवामा आज्यो हतो—एनी वार्ता वर्णवता अश्वघोषना 'सौन्दरानन्द ' काञ्यना वस्तुनु कोई स्वरूपान्तर उपर्युक्त उल्लेखमां रज् थयुं लागे छे

जुओ सुन्दरीनन्द

- १ नम, पृ १६७.
- २ वष्ट, प्ट ५२.
- ३ आचू, पूर्व भाग, प्ट ५६६, आम, प्ट ५३३ नेमिचन्द्रसूरि

बृहद्गन्छना आम्रदेव उपाध्यायना शिष्य तेमणे पोताना गुरुमाई

#### नागपस्तिका

आ कोई नगरनु नाम छ अन तेनो आनंबपुरनी सापे उन्हेस छ आनंबपुरना जेम महसूजा अतो तेम नामरसिकामा नागपुरा बती.

नागर्वाच्छानु स्थान निविध यह शहसु नथी.

१ हरूने हरों असे महानेभी हो राज्ये हुएंसे बकरेंसे बामा भागतीकताए, बरेबा बार्थरपुरे हिद्धा वन माहुन् प्र २३१ नागार्जन आर्थ

बीरिनवांण पक्षी नवसी शताब्यीमा (भाशो हैंसुनी चोषी सप्तस्दीमा) सपुरा बन कसमी एम वे स्थळ अनुक्रमे स्कृष्टिसायाँ को नामार्थुन एम वे आवार्योग आगमयाचनानु क्रम्मे बर्धुं दुर्माये आ व आवार्यो एस्टर्सन मळी शक्या निह, तेवी तेमनी शानतांभोगी केटस्मक मेन रही गया देवर्दिगाणिए हेंसवी पांचमी श्रकाब्यीमां स्थार आगमा क्रिपेयद कारच्यां त्यारे स्कृत्युवाकिनी मासुरी बाचनाने प्रस्त्र वाचना तरीके स्वीकार्यो वा नामार्शुननी वास्त्रना एउनेनी निवेश 'वादनार्या प्रारं नामार्शुननी वास्त्रना एउनेनी निवेश 'वादनार्या प्रारं नामार्शुननी वास्त्रना प्रस्त्र वादनार्या प्रारं नामार्शुननीयाला प्रप्रदेश (नामार्शुनना अनुमार्याकोने अनुमत प्रारं को प्रारं के प्रारं को प्रमार्थ का क्ष्में के प्रस्तु वादनार्या के प्रस्तु वादनार्योग का वादनार्या का वादनार्योग का व

- १ मीरनिर्माण देवत और वैश बरक्षमध्या प्राप्त ४
- ९ हमो इस्वे घट
- ३ जनवहरून स्टिके जम् छ ९६, क्या छ, ३८६ १६६ १६ मध्यो छ, १५, १६६ १८ १९६ १११ ११४ ११४ १४४ स्टिके

### नारव

शौरिपुर मगरमा यप्रवश शायसना पुत्र यञ्चक्त आन पुत्रवप्

[ **ર**ં૭

३ अंट, वर्ग १-५ ४-जिस्को, प्ट २१६-१९

### पत्तन

नेपारनु केन्द्र होय एवु नगर. पत्तन वे प्रकारनां होय छे जलपत्तन अने स्थलपत्तन ज्यां जलमार्गे माल आवे ते जलपत्तन अने स्थलपत्तन ज्यां जलमार्गे माल आवे ते जलपत्तन अने स्थलपत्तन. जलपत्तनना उदाहरण तर्शके द्वीप (दीव) अने काननद्वीपना नाम अपाय छे, ज्यारे स्थलपत्तन तरीके मथुरा अने आनंदपुर आपवामा आवे छे. केटलाक टीकाकारीए प्राकृत 'पहुण' शब्दनां 'पहुन अने 'पत्तन' एवां वे सस्कृत रूपो स्वीकारीन वेना जुदा अर्थ आप्या छे जेम के ज्यां नौकाओ मारफत जवाय ते पहुन अने ज्या गाडामा के घोडे वेसीने तेम ज नौका मारफत जवाय ते पत्तन

कालकमे 'पत्तन 'सामान्य नाममांथी विशेष नाम बन्यु, - अने गुजरातनु मध्यकालीन पाटनगर 'अणिहल्लपत्तन 'मात्र 'पत्तन ' एवा द्रका नामे जाणीतु थयुं 'कल्पस्त्र 'नी 'कौमुदी 'नामे टीकाना कर्ता शान्तिसागर पोते ए टीका 'पत्तनपत्तन 'मा — एटले के पाटणनगरमा लखो होत्रानुं जणांवे छे

१ उशा, पृ ६०५, आशी, पृ २५८, बृकमा, गा १०९०; वृकक्षे, भाग २, पृ ३४२, वळी जुओ द्वाधम, पृ ५५, १४०.

२ जुओ भरकच्छ

३ ककी, प्रशस्ति, श्लो ४

# पाण्डमथुरा

जुओ मथुरा

## पादलिप्ताचार्य

एक प्रभावक आचार्य, जेमनुं नाम सौराष्ट्रना प्रसिद्ध जैन तीर्थ

। ने मिचर**त्र**सरि

**es** 1

मुनिपन्द्रना वयनभीसं ११२९—ई स १०७३ःमां अण्हिल-पाटकमां दोहडि श्रेत्रोनी यसितमां गढीन 'उत्तराच्ययन सूत्र' त्यस इति र्∗ी एज नगन्नां भने एज दमतिनां र⊈ने सेमणे सं

११४१=ई स १०८५ माँ प्राकृत <sup>१</sup>महाबीग्वरित <sup>१</sup>रस्य **हर्त**ै नेमिनन्द्रन् मुरिपद्रभा प्राप्ति पद्रेनांन नाम देवेन्त्राणि हर्षे है

९ जल ग्रह्मिक

२ जन प्रस्तानका प्र २ ३ विरक्षे प्र. ४३ तम मस्तलका प्र. १

नेविनाय

बाबीसमा तीर्थंकर दश दशारो पैकी सीधी मोटा समुत्रविश्वय सन तेमनी राणी शिवादेवीना पुत्र तेमना साम पुर्वे माताप, जनती रिष्ट-रत्नमय नेमि माकाशमां बोई इती, तेबी तेमो 'भरिष्टनमि'

कर्जामा कृष्णे तेमनो विवाह उपरेन राजानी पूत्री राजिमती साथे नकी कवी हतो. पण सक्रमंडपमां नोसरका माणसोल मांसनो. स्रोराष आपदा मारं विद्धां पञ्चभोनो आवनाद सांमळीने नेमिनाये देरान्य पामीने रैश्तफ टमानमां शिक्षा स्रोपी इती बारक्कळना सनेक युवानोए निमाध पासे दीन्ह्या कीची हती ै नेमिनाब गिरमार उपर

निर्वाण पाम्मा हता बोबोस तीर्बेक्सो पैकी ऋपमदेव, शान्तिनाम पार्बनाम मेमिनाव बने महाबीरमां चरित्रा सादित्यिक दक्षिए सौबी बचारे सोक प्रिय वर्ग्या छ भागमेतर साहित्यमां नेमिनायमां संस्कृत-प्राइन्ट

बरित्रो, श्तीत्रो, एमना बीवन विशेनों कान्या बर्गेरे मळीन कुईविंग कतिको जाणवामां भावेकी हो

9 SEE V 995-8 र कड़ १८ १९९-४१३ वर्षि, १८ १६४ कार्स १८ १६े१-७ 40 E 190-17 TE E 11-14 ENER

पादिलिसाचार्य ]

३ अंट, वर्ग १-५ ४-जिस्को, पृ २१६-१९

### पत्तन

नेपारनु केन्द्र होय एवु नगर. पत्तन वे प्रकारनां होय छे' जलपत्तन अने स्थलपत्तन ज्यां जलमार्गे माल आवे ते जलपत्तन अने स्थलमार्गे आवे ते स्थलपत्तन जलपत्तनना उदाहरण तरीके हीप (दीव) अने काननहीपनां नाम अपाय छे, ज्यारे स्थलपत्तनं तरीकें मधुरा अने आनंदपुर आपवामा आवे छे.' केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पहण' शब्दना 'पहन अने 'पत्तन' एवां वे सम्कृत रह्यो स्वीकारीन वेना जुदा अर्थ आप्या छे जेम के ज्या नौकाओ मारफत जवाय ते पहन अने ज्यां गाडामा के घोडे वेसीने तेम ज नौका मारफत जवाय ते पत्तन

कालकमे 'पत्तन 'सामान्य नाममांथी विशेष नाम बन्यु, अने गुजरातनु मध्यकालीन पाटनगर 'अणिहल्लपत्तन' मात्र 'पत्तन' एवा द्रका नामे जाणीतु थयुं. 'कल्पसूत्र 'नी 'कौमुदी' नामे टीकाना कर्ता शान्तिसागर पोते ए टीका 'पत्तनपत्तन'मा —एटले के पाटण-नगरमा लखो होवानं जणावे ले

१ उशा, पृ ६०५, आशी, पृ १५८, वृकमा, गा १०९०; वृक्षेत्रे, भाग २, पृ ३४२, वळी जुओ हाधअ, पृ ५५, १४०

२ जुओ मरुकच्छ

३ ककौ, प्रशस्ति, श्लो. ४

### पाण्डमथुरा

जुओ मथुरा

## पाद्लिप्ताचार्य

एक प्रभावक आचार्य, जेमनुं नाम सौराष्ट्रना प्रसिद्ध जैन तीर्थ

्वादक्षित**ा**दाय

पान्छिसप्र-पार्शताणा साथे ओडायेख छ -पार्विष्टिसाचार्य पाटिलिप्त्रमां मुद्देव गर्जाना दरवारमां इता एक गर मुरुद्र रामा उपर मक्तोप मीणवालू सुसर, कापीन सन्ती करेंग्री-माक्दी सथा सुवादी मुद्रित दानहीं मोक्स्टी अने साथे संदेश कहाच्या के 'सूत्रना कर लाकडीनो कादिसाय क्षने मसुद्गकनु हार

**%** 1

बतावो <sup>१</sup> पण भा कार्म काइ करी दाक्य नग्हे खेव<sup>े</sup> पाटक्रियो स्<sup>तर</sup> दना पाणीमां नाम्यु परके मीण कागळो गर्व भने छ**ा** दे**ला**ण स्मक्षडी पण पाणीमां नाली एटले मुळी माग भारे होताची संदर कुम्भो अने दावडी उपर खान्द इता त गरंग पत्नीमां मोळीन अ**साडी** 

मुर्देख राज्ञानी शिरोबंदना वैद्यो मटाडी शक्या नहाता, है पादिकताचार्ये मत्रशकियी मटाडी हती एस् फबानफ सळ छे ै पादनिसाधार्भ यत्रतियामां पण कुशळ हता तेमणे एक वार

राभानी बहेनन बराबर मन्द्रनी येश्रप्रतिमा बनाबी हसी ए प्रतिमा

क्ष्मेपनिमेन करती हाधर्मा वैन्हो छईने ऊमेही हती. पादक्रियाचार्थे 'तरंगक्ती 'नामनो एक विस्त्यात श्राङ्ख धर्मे कथा रची इसी जेना उन्हेंस्तो सागमसाहित्यमा<sup>ह</sup> क्षेम ज सम्बन्न सनेक

साहित्यना मृप्रसिद टीकाकार आवार्य सम्प्रयोगिरना क्यन उपरथी स्पष्ट छ। चाचित्र बहु गई हो। तुंसानदार्मा आ**वते हर्** पण

णनी **इ**न्सरिवसित प्रति ए सुनिधी प्रण्यविजयद्यीण खेसस्मारना मन्त्र

भेद्रसमंशि शोधी करी ह

स्थळे प्रहासाय छै सूळ कथा तो सैकासो पहेलाँ नाश पानी गरि छे पण पादछितमी पटी अथसा परन्तु खेनो चोक्स समय सनिधित छे पूजा काजाय बीरमाइक नीरमाइना शिल्य नेमिन हे १९ ° शक्त गाथाकोमां करहो तनांसक्षा गाः हाष्ट्रमां उपसम्भ छे पादक्षिपचार्ये स्थोतिकारंडक ' उपर वृत्ति स्वली इसी एम स्थागम- पादि ति दीशा अने प्रतिष्टानि विशे 'निर्वाणकिका ' नामें जाणीतो प्रन्थ रच्यो छे. आ उपरात 'प्रभावकचरित 'ना 'पादिलस-मिन्चिरित 'मा तेमण 'प्रकापकाश ' नामे प्यातिपप्रन्थनुं निर्माण फर्युं होनाने उन्लेख छे. वृणिजोमा 'कालजान ' नामे एक रचनानुं कर्नुत्व पण पादिलिप उपर आरोपित करेलुं छे. पादिल्पनी प्राकृत गाथाओ हालकृत प्राकृत सुभापितसंपद्द 'गाथासप्रानी 'मां उद्भृत करेली छे.

'प्रभावकवरित ' नोधे छे के पाटिल्माचार्य एक यार तीर्थयात्रा करता मीराष्ट्रमा दकापुरी ( ढाक )मां गया हता. त्या एमने मिझ नागार्जुननो समागम थयो पछी नागार्जुन पोताना ए गुरुना स्मरणरूपे जात्रुंजयनी तळंटीमा पाटिल्मपुर नामनुं नगर वसान्युं, जात्रुंजय उपर जिनचैत्य करावी त्या महावीरनी प्रतिमा स्थापित करो अने त्या ज पाटिल्सस्रिनी मृतिं पण स्थापित करा

पाटिल्साचार्यनो समय विक्रम संगतनी प्रारंभिक गताब्दीओमा निश्चित करवामा आग्यो छे " एमनुं परपरागत विग्तृत चित्त 'प्रभा-वक वित्ति 'ना 'पादिलिपस्रिचिर्ति 'मा सके छे.

१ शाच्, पूर्व माग, प्र ५५४, आम, प्र ५२४-२५, नम, प्र १६२.

र निच्, माग ४, ए. ८७२; विनिम, ए १४१-४२ पिनिम मी मुक्डने प्रतिकानपुरनो राजा कहा। छे, ए मुद्रणदोष होवो जोईए, केम मे ए ज कर्नाए रबेटी अन्य वृत्तिभोमा स्पष्ट रीते पाटलिपुत्रनो उन्हेख छे ( जुओ उपर टिप्पण १ )

३ बुकमा, गा ४९१५; बुकरें, भाग ५, पृ १३१५-१६ आं प्रकारनो 'झीहरों ' यवनविषय मां पुष्कळ यने छे एम अहीं टीकाकार नोंधे छे

४ निचू, भाग ३, प्र ४७९, भाग ५, प्र १०२९, विकी, प्र ४३३, बुकम, प्र १६४-१६५, बुकक्षे भाग ३, प्र ७२० जना ५ प्र. १४८६ काम (उदे ५ उदानी प्रति ) प्र. आम्मेतर साहित्यमा तरपनदी वा दरवेची माट जुकी निर्वाणसंख्या प्रस्तापना प्र. १५-१६

५ का संक्षेपनो जर्मन बसुबार प्रो स्पूर्णन कर्ने छ एन इत्रहाई माराज्यार सार तको जैन सक्षित सर्वोदक सम्बर्ध

( x x ज्वौतिषद्धस्यक्यूब्बीकावं श्रीपादक्षिणस्पृतिभः उत्तं सम्म ए. •)

त्रवा चारतेन व्यक्तिकालकारम् प्रीकारमः पाइकिन्तमृतिकार—" पर च प्राच्यादमो अञ्चाविद्येता स्राव्याचा सद प्रमार्थते, स्रोतेन सह सम्पंति ' ति । व्योक्तमः प्र ५३

**प्राच ५ को 1**γ०

प्रव गुक्क क्लुकाद प्रस्ताक्का छ ३२ वडी लुको स्वतं
 सा. मा २६३ जगरमी शति )-कथा प्रावृक्तिक्षक्र कृत्वक्षम कृत्वकान ...

९ प्रथ ५ सकी २४७-३ ६

१ विस्तिकतिका प्रस्तावना प्र.१६

#### पासक

उम्बिनीना मुबोठ रामाना वे पुत्रो हता—पास्त्र अन गापास्त्र पर्माची गोपास्त्रेत दीक्षा सीमी, पुटले पास्त्रत राजा बनो एमे वे पुत्रो हता—राष्ट्रवर्षन (राज्यवर्षन) अने सर्वेशिवयन तेमांची सर्वेशिवर्षनी राजपदे बने राज्यवर्षनमे पुत्रराजपदे स्थापीने पुत्रके पण राज्य मोगभीने दीखा सोची हती.

दिखोगांकी ' प्रकीर्णकमां अणान्या प्रमाण-चे रात्रिप् भगवानं महावीर निर्वाण शस्या हता ते व रात्रिप् व्यवतिमां प्रस्नक राजानी अभिषेक थयो हतो

मुमो भवन्तिवर्धन

१ मीचु रेसर माम पू १८९ वह पूर् ५६

प्रद्योत ]

२ ज-र्यणि बिद्धिगभी भरहा तित्यक्षरो महावीरो । त रयणिमवंतीए भहिसित्ती पाठगो सया ॥ 'भभियान-राजन्द्र,' भाग १, पृ ८९४

### प्रतिप्टान

महाराष्ट्रमा गोटावरीने किनारे आवेलु पैठण

प्रतिष्ठान गोढावरी नदीना तट उपर अने छुँ हतु. त्या साल न राजा राज्य करतो हतो एनो अमात्य खरक नामे हतो. साल वाहन दर वर्षे भरुकच्छ, ज्या नभी गहन राज्य करतो हतो त्या आक्रमण करतो हतो है

प्रतिप्ठानमां जैनोनी मोटो वस्ती हती तथा राजानुं वलण पण जैनधमेने अनुक्छ हतुं भा नगरना संघ तथा राजाना अनुमोदनधी कालकाचोर्ये पर्युपण भाडरवा सुद पाचमने वदले चोथे प्रवर्तात्यु हतुं व निर्युक्तिकार भद्रवाहुस्वामी अने तेमना भाई वगहमिहिर आ नगरना बाह्यणकुमारो हता

- १ वृक्के, भाग ६, पृ १६४७
- २ जुओ नभोवाधन
- ३ जुओ कालकाचार्य
- ४ 'अभिधान-राजेन्द्र,' भाग ५, 'प्र. १३६९

### मद्योत

उज्जियनीनो राजा. ते उप स्वमावनो होवाथी चंडप्रद्योत तरीके ओळखातो हतो

तेने आठ राणीओ हती, जेमानी शिवादेवी वैशालीना राजा चेटकनी पुत्री हती अने अगारवती सुंसुमारपुरना राजा धुधुमारनी पुत्री हती एना मंत्रीनु नाम खडकर्ण हतु (जुओ खण्डकर्ण) शकुन्त नामे एनो एक अब मंत्री पण हतो (जुओ शकुन्त) प्रधोतना समयनुं टक्सिनी भारतमां सीची समुद नगरी पेश्वी एक हर्तु एना सम्बर्गा टक्सिनीमां नथ कृषिकाषण-त्रिमुदनना सब वस्तु चैसां मळ एवा यस्तुभक्षारा हता

प्रयोधना श्रीवनना पगो माग पोताना पद्मोशा राजामा जे पना सालुभो यहा हवा पमनी साथ सदकामा गयो हती पढ़ीकी राज्यो सापेना आ कस्वस्ता पर्रयसम्ब हचानतो ज्यागसाहिरकमा मळ छ

पर वार प्रवाते राजगृह नगर चेयु राजगृहना राजा श्रेणिइनी र्नदा राणीमा भवलो पुत्र समसङ्घनार से एनो मन्नी पर्ण हतो हैने प्रचीत आस्यो ते पहेलां एना रक्षपाशासनेदेशनी अध्या जाणी सीपी इसी कमें त्यां पण भन दराम्य इस पत्नी प्रवासे काबीन पडान नास्मी पटक भभयकुमारं बहेबराय्य के "समार्ड आर्ज़ सैन्य गारा पिताए फोडी नास्त्रे छ, मा बात उपर विवास न पहता होय हो छावणीमा सोन्दोने जुनो ' भा प्रमाणे झोनतां बच्च नीकन्युन पटले प्रयोज इरीने नासी गयो पण पालळची बस्तुरिधति आणवामी णावता प्रवाते समसङ्गार उपर रोप मराई तेन केन करवानो निव्यय कर्मों. तेणे एक गणिकाने राजगृह मोकसी सम सहायक सरीके बोबी केटहोक गणिकाओ आपी। गणिकाए एक भर्मेप्रेमी जैन विश्वानी बेश घारण इसीं कैन्यपरिपाटीमां सी अध्ययने घेर गर्मा त्यां तेणे धर्मप्रेमी धमयने पोताने घेर कमनार्नु निर्मेशण आप्युं भने गोळपीने मचपान कराबी केद करीने संबंधि मेगो क्यों त्यां समयकुमी पादर्वभी प्रकोतन प्रसम्भ क्यों पुरुष्ठे प्रदोते एन क्रोडी मूक्यां पर्श व समग्रे अभयकुमार प्रंबोतमे इन्ह्रा के "तमे सने कपटमी एकडी आप्या इसे, पण हुं सो तमे पोकारी पाडता इसो अमे अर्हीबी समने टपाडी मईस <sup>१९</sup> बोडा संगन पत्नी व्यवनकुमार शब्दाहुशी वे गणि कामा सर्वृत काम्को भन बेपारीने बेडो उम्मधिनीमां रहेवा स्थान्यो रोपे

पोताना एक टासने गाडानो वेश धारण करान्यो हतो अने तेन प्रधोन नाम आप्यु हतुं एने दररोज खाटलामां वाधीने वैध पासे लई जवामां आवतो त्यारे ते 'हुं प्रधोत छुं' एवी वृसो पाडतो हतो. हवे, पेली वे गणिकाओ जे अभयकुमार साथे रहेती हती तेमना सौन्दर्यथी आकर्षाईने एमनी कामना करतो प्रधोन संकेत अनुसार त्या अन्यो, एटले तेने अभयकुमारनी स्चनाथी पकडी लेवामा आन्यो, अने 'हुं प्रधोत छुं' एवी बूमो ने पाडतो रह्यो अने एने उज्जयिनी वन्चेशी खाटलामा बांगीने उपाडी जवामा आन्यो नगरजनोए तेनी बूमो सामलीने मान्यु के प्रेला प्रधोतनामधारी गांडान दररोजनी जेम वैधने त्या लई जन्नामा आवे छे राजगृहमा श्रेणिके प्रधोतनो वध करवानो विचार कर्यो, पण अभयकुमारे तेने एम करता अटकान्यो पाछलथी प्रधोतने मुक्त करवामां आन्यो हतो."

सिन्धु—सौवीरना राजा उदायन साथे पण प्रधोतन युद्धनो प्रसंग वान्यो हतो. उदायन पासे जीवतम्वामी महावीरनी एक सुन्दर काष्ठ-प्रतिमा हती अने उदायननी देवदत्ता नामे एक कुन्जा दासी ए प्रतिमानुं संगोपन करती हती प्रतिमाने वंदन करवा माटे गाधारथी आकेला एक श्रावक आपेली गुटिका लेवाथी ए दासीनी काया काचनवर्णों बनी गई हती अने ते सुवर्णगुलिका तरीके प्रसिद्ध यई हती. नलिगिर हाथी उपर आवीने प्रधोते ए दासानुं हरण कर्युं हतुं अने एना आप्रहने कारणे पेलो काष्ठप्रतिमा पण साथे लीघी हती आ खगर पडना उदायन दल राजाओने सहायमा लईने उज्जियनो उपर चडी आव्यो अने प्रधोतने पराजित कर्यो, प्रधोत केद पकडायो अने उदायने एना कपाळ पर 'दासीपित' जन्द अकित कर्यो प्रतिमाने लेवा माटे उदायने घणो प्रयास कर्यो, पण ए तो एना स्थानेथी चलित थई नहि एटल प्रधोतने लईने उदायन पाओ सिन्धु—सोवीर तरफ चाल्यो. मार्गमा चालता पर्धुषणानो समय आन्यो अने नेमा प्रधोत उपवास करवानी

१०४'] ['प्रकोठ 'फा व्यक्त करतां उदायन पन धर्मकेव आधिने मक क्यों क्षते समीम्मी,

इन्छा व्यक्त करतां रदायन वन धर्मबंजु आणीन ग्रुक क्यों बने समीच्यो, कनं कपाठमानी 'दासायित' शस्य न देनाम व माने रयां सुवर्णेषा बाज्यो धन प्रकोषनु राज्य वन मार्खु आर्यु क्रदेवाम के के त्यारमी रामाना मस्तक उत्तर मुकुरन स्थान वह बोधनाए ममा

कसः देणना रामा शवानोक उपर पण प्रचीते भाकमण कर्युं रही प्रबोतन आक्तो सांभक्तीन शतानीक यमुनाना विश्वण विकासमी उत्तर किमार पारयो सभो प्रधीन यमुना कोळंगी सक्यो नहीं, करें हेक्ने केटडोक हेरानंगति वेठी पाछो फर्बो केटडाक समय पड़ी पढ़ म्बिप्रकारे शतानीक साथेन। भणवनावने कारणे प्रती स्वस्त्यवान 'राणी भूगाइटीनुं नित्र भीतरीने प्रचोतन बसुरुयुं भूगाइतीना सौन्दर्भेंगी मोद पामीन प्रवादी शतानीक पासे इस मोक्सीने मुगावतीनी मागणी करों पण शतानीके दुतनो जिस्न्द्रार दरीने एने पाझे द्वारची आभी कोवे मरायेको प्रचात बसंबदेशनी राजवानी कीशांबी उपर पडी मान्यो तन भावतो सांमळी कन्य *चळ*बाळा रातानीक क्षीम पाम्मी <sup>मन</sup> श्रतिसारश्री मरण पाम्या नाची सुरोावतीए विनार्य के " मारों वाळ∓ पुत्र नाश न पामे प्रम कार्बुओ ईप् " कार्बा तेणे प्रकोश पासे ₹त मोक्सीने युक्तिपूर्वक कद्देवरान्युं क े हुं समारी पास आहें त्यार पड़ी मारा पत्रन कोई पोड़ा कर एम बतु न बोईए, " पत्नी मुगावतीना कहें रावी प्रचीने उज्जीवनीमो हैं दावी मुगावतीना नगरने दद कराम्ये वमा बाग्य धर्मेर भरान्यु, का प्रमाण प्रचातन मूर्ख बनाज्या पर्छ। युगावती फरी गई ए अरसामा भगवान महाबीर क्रीशांबीमां समोसर्प तमनी देशना समित्यीम मृगावतीय प्रयोशनी मनुका स्मृति दीश्र केवानी इंध्या इंध्यक्त करो. य सहान पर्वदानी समाने कारणे प्रयोठ भगावतीन बारी शक्या नहि अने पृगावतीय पोतानो पुत्र उदसन प्रयोजन होरिने दीश मीपी ए समय प्रयोजनी श्रेगारवरी मारि

आठ राणीओए पण मह।वीर पासे दीक्षा लीवी <sup>°</sup> उदयन पाछल्रथी प्रद्योतमी पुत्री वासवदत्ताने परण्यो हतो <sup>°</sup>

प्रदोतने वे पुत्रो हता—प!लंक अने गोपालक एमांथी गोपालके दोक्षा लीधी हती, एटले एनी पंछी पालक गादी उपर भाव्यो.

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. १९९-२००, विको, पृ ३३५ २ ब्रुक्भा, गा ४२१४, वृक्क्षे, प्रन्थ ४, पृ ११४४-४६ जुओ कुन्निकापण

३ क्षाचु, पूर्व भाग, पृ ५५७-५५८, उत्तर भाग, पृ. १५८-५९; क्षाम. पृ ५२७-२८

# ४ जुओ **दशपुर**

५ आच्, पूर्वमाग पृ ४००, आम, पृ २९२-९४

विविध दिन्य अने मानव पात्रोंने माटे केवा प्रकारना मुकुटो, पद्द-वधो अने शिरोभूषणो योग्य छे ए माटे जुओ भरतनु 'नाटयशास्त्र' (काशीनी आवृत्ति), अध्याय २३, १२लो १३२-४९, तथा 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण,' तृतीय खड, अध्याय २७, १२लो ३३ अने आगळ

६ आचू, उत्तर भाग, पृ १६७

७ आचू, पूर्व भाग, पृ ८८-९१, आम, पृ १०१-४

ॅ८ जुओ **उद्यन** 

९ आचू, उत्तर भाग, पृ १८९ प्रयोत विशेना अन्य महत्त्वना क्यारूप वृत्तान्तो अथवा उल्लेखो माटे जुओ नम, पृ १६६, बुकक्षे, भाग २, पृ ५८७, कसु, पृ ५८७-८८; किक,, पृ. ९३ तथा १९९, करी, पृ २३४

### ममास

9 -2

सौराष्ट्रना दक्षिण किनारे भावेछ प्रभासतीर्थ ए तीर्थनी उपित का प्रमाणे आपवामा आवे छे पाडवोना वशमा पांडुसेन नामे राजा थयो हतो तेनी वे पुत्रीओ मित अने सुमित समुद्रमार्गे सुराष्ट्रमा आवती हती मार्गमा समुद्रनुं तोफान थता बीजा छोको १०६ ] प्रशास स्कृप्द अने उद्गते नमस्कार करना स्नाम्धा, स्वारे आ ने नहेनीए पोजापी नाजने समस्यां जोजी सेन्द्रे करणा गांधी गांधी सेन्द्रे क

पोतानी जातने समममां ओही क्षेत्रदे बहाय मांगा गर्सु अने बच्चे सर्गाओ कारूपमें पानी मोहे गई स्वयमस्त्रता अधिपति सुरिवत देवे तेमनी माहुमा कमों त्यां देवोचीत समो, सने स्वारणी प्रभासतीर्थ स्व

मस्त बक्तवर्शना दिखिकवनर्शनमां पश्चिममां प्रशासविनेनो उन्हेल हे ै वहरकस्पमुत्र ना भाष्य पूर्णि कने इतिमां प्रमास सीर्मेमां बात्रामां बढ़ी सलडी-डकाणीनो निर्देश छ ै

१ भाष् इतर मान पू. १९७

२ मान इ.२३ वडी हानो बहारेनहिंदी बहुनार इ.२४९ ३ सम्बद्धाः स्ट.३१५ इस्को शाम ३ इ.८८३-८४

**मि**पप्रन्यस्ररि

स्थित सुमित सुमित दुवना शिष्य प्रियमन्यस्थित श्रवमेठ पाछे स्पर्वेका हुवैपुरमा पोठाना विचायमत्कारणी सङ्गमो अही पश्चवर्य सरकारणी हुवी

धुमो समग्रेर

ी क्षिक्र हो १९९ कहा हा भू ९-१ कही वृ १४४-४६

प्रकारी प्रकारी

सोगरकता मारिश्वक महाने पराजित करवा माटे उन्नविनीवासी वहणान्तके मरुक्षक पासेना एक संबूतने साम्रोम भाषी तैयत कर्यो इतो वे फम्ब्री नामे प्रसिद्ध बयो हतों

नुमो महण

यमासा

उत्तर गुजरातनो बनास मझी.

बृहद करनस्त्र 'ना कृतिकार करे हे के कोई स्थळे सदि

11

बलमित्र-भानुमित्र ]

पूरथी पण धान्य पाके छे, जेम के बनासामां ज्यारे खूब पूर आहे त्यारे ए पूरथी भावित थयेछी क्षेत्रमूमिमां बीज वेरवामां आवे छे.

१ वृकक्षे, भाग २, पृ. ३८३.

## वलभद्र

कृष्ण वासुदेवना मोटा भाई अने नवमा बलदेव. तेओ अत्यंत स्वस्तपवान हता द्वारका नगरीनु दहन थयुं त्यारे बन्ने भाईओ जलदीथी त्यांथी नीकळीने दक्षिण तरफ जता हता त्यारे कोंसुंबारण्य-मां कृष्णनुं मरण थयुं अने कृष्णना शरीरने अग्निसंस्कार करीने बलभद्दे दीक्षा लीघी. सुमुख, दुर्मुख, कूपदारक, निषद, ढंढ वगेरे बलभदना पुत्रो हता

बल्लभद्रनुं संपूर्ण चरित्र आगमसाहित्यमां नथी, पण निषढ आदि तेमना बार पुत्रोए नेमिनाथ पासे दीक्षा छीधी हती तेनो बृत्तान्त तथा बल्लभद्रना जीवनना केटलाक असंगो अने तेमने विशेना उल्लेखो मळे छे. कृष्णनी जेम बल्लभद्रनुं चरित्र पण नेमिनाथचरित्र साथे संकळा-येखं छे अने 'त्रिषष्टि '—अंतर्गत तथा विविध लेखकोए रचेलां 'नेमिनाथचरित्रो 'मां ते उपलब्ध थई शके

# १ जुओ कोसुवारण्य

२ बृद, तथा अद, वर्ग ४

३ उदाहरण तरीके-उशा, पृ ११७, मस, गाः,४९६०, कसु, पृ ३९९-४२४, ककि, पृ १३७-४२, इत्यादि.

# वलिमन-भानुमित्र

भरकच्छना राजकर्ताओं तेओ वे भाईओं हता. तेमना, भाणेज बल्मानुने कालकाचार्य दीक्षा आपी हो गाने कारणे आवार्यने भठकच्छे छोडीने प्रतिष्ठान चाल्या जवुं पड्यु हतु एक परंपरा प्रमाणे, बल्मित-भानुमित्र कालकाचार्यना भाणेज हता.

एमने माट जुओ कालकाचार्य-२

१०८] [बोबिक

#### वोषिक

एक बनाय आति जै इटफार करी त्रास वंदीवता हती. आगम साहित्यमां बांधिकान मासग्रीभी अभिन गण्या छ जुको मासव-१

क्ळी जुमो राज्जविनी पशुरा

#### अधादीप

भागीर देशमां कृष्णा अने बेणा नदीना साम मागळ बाबेओ एक द्वीप त्यां बसता पांपसी तापसीने भाग वजना मामा आर्थ समितस्त्रित् प्रतिकोण पमाइद्यां इता. ए प्रतिबोप पामेसा सादुर्भोगी कैन मासुमानी मनदीपक शास्त्राना प्रारंभ बयो इतो. 'निर्म्युन'ना प्रारंभ मामसी देवहिंगणिनी गुरुपरपरामां सिंहस्रिमे 'महादीपक सिंद्य कथा छ

१ बाजू पूर्व माग इ. ५४३ बाम इ. ५१५ वर्त इ. १३१ बहु, इ. १३४ वर्षे इ. १४१ वर्त इ. १४८-१५ महु इ. ५१ दिनेस इ. १४४

२ हजो देवदिराणि क्षमाधमण. मुक्ति साथार्य

द्य्याणि क्षमाश्रमणना शिष्य महि आधार्यना मत 'स्वश्ताण स्वश्न भी पूर्णिमा टिक्से छ दैन परंशा सनुसार मूळ आगमानं संबक्षित व्ये विश्वदर करावनार देवर्दिगणि द्य्याणिना शिष्य छ महि सावाँय ए देवर्दिगणिनुं बौधु नाम हुसु के तमन मानार्थे गरि (सं मत्) आवार्ष प्रटान्ध्य आधार्य करेवामां जावता हता के पत्री महि भाषार्थ द्य्याणिना बीमा व बोई शिष्य जेनने विशे स्थार मुगीगां केंद्र सामाशास काम्युं मधी जननु नाम हुस प्र निवित्रपण करेव साम्बस्ट छ नुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणकाव्य 'रावणवध ' जे सामान्य रीते 'मिहकाव्य ' तरीके आळखाय छे तेनो कर्ता 'महाबाद्यण महावैया-करण न्वामिपुत्र मिह ' वलभीनो हनो, एटले वरभीमा में है नाम प्रचलित हतु, अने देविद्विगणिनो निवास पण वलभोमा हतो, एटले भिंद्र ए देविधिगणिनुं अपर नाम हाय ए कटाचित् सभने छे.

> ९ अत्र द्वगणिक्षमाश्रमणिक्या भिट्टियाचार्या त्रवते सूकृच , प्र ४०५ २ नम, पृ ६० जुओ देविद्धिगणि समाध्रमण

## भण्डीरवन

मथुरानी पासे आवेछ एक उद्यान त्या मंडीर यक्षनु आयतन हतु. लोको बळदगाडा बोडीने एनी यागए जता.

जुओ कम्बल-सम्बल, मथुरा

# भद्रगुप्ताचार्य

उज्जियनीवासी एक आचार्य

आर्य रक्षित दशपुरमा पोताना गुर तोसलिपुत्राचार्य पामे अगि-यार अंग अने जेटलो दृष्टिवाद तेमन अवगत हता तेटलो शिल्या पछी उज्जियनीमा दृष्टिवादना जाता आर्य वज्र छ एम सामळीने तेओ उज्जियनी गया त्या भद्रगुत नामे एक वृद्ध आचार्यनी संकेखना प्रसंगे आर्य रक्षित निर्यामक तरीके रह्या अने तेमनी उत्तम शुश्रूपा करी भद्रगुताचार्य काल्यम पाम्या पछी रक्षिते वज्ञस्वामी पासे साडा-नव पूर्वोंनो अभ्यास कर्यों पोनाना अत्र काळे भद्रगुता वार्ये आर्य रक्षितन कह्युं हतु के "तमारे आर्य वंज्ञनी साथे रहेवुं निह, कारण के जे तेमनी साथे रहेशे ते तेमनी साथे ज मरण पामशे." आयी आर्य रिक्षत वज्रस्वामीथी अलग रह्या हता."

१ आचू, पूर्वभाग, पृ ४०३-४, उने, पृ २३; ककि, पृ. १ १७०-७३, करी. पृ १४५

[ वाविद

₹•c ]

वाधिक

एक भनार्थ जाति, जे खरफार करी त्रास वर्षांबती हती भागम साहित्यमां बानिकान मारुगोत्री भामन्त गण्या छ जुलो ग्रासच<sup>ू</sup>रै

मळो जुमा रक्तयिनी मधुरा

#### महाद्वीप

कामीर देशमां हुण्या अने बेणा मठीना संगम मागळ कावेजो एक होप त्यो बसता पांचसा सापसाने आर्थ वर्जना मामा आर्थ समितस्प्रेंच प्रतिबाप पगाहचा हुए। ए प्रतिबाप पामेख साधुआंधी कैन साधुकानी बकदीपक रास्तानो प्रारंम संयो हुतो 'निर्स्यू'मा प्रारंम आपेखी देवदिंगणिनो गुहपर्यरामां सिहस्प्रेंने बहानीपक सिक्ष करा श

ा आपू पूर्व मान छ ५४३ आस छ ५९५ वर्त छ १३१ सद्ध छ १३४ वर्षि, छ १७१ वर्षी छ १४५-१५ सस् छ ५१ विसिस छ १४४

१ समो देवकिंगचि शमाधमण महि भावार्य

बूप्यताण क्षमाश्रमणना शिष्य सहि शावायंगा मत ' स्वक्तांग स्व 'गी बूर्णिमां टिक्को छे कैन परंत्रता बनुसार मूळ शामामन सक्कित रूपे निषयद कराबनार देवस्तिगीर बूप्यामिना शिष्य छ महि बानस्य ए देवस्तिगीरानुं श्रीशु माम ब्रुपुं के तेमन मानामें यहि (सं सर्त् ) बानार्थ पुरुष प्रवास केहतामां जावता हता के पत्ती भहि बानार्थ स्थापिमा बीजा अ कोई सिष्य केमने विशे स्थापा स्थीनां के जागवामां शास्तु तथी पत्नेनुं नाम ब्रुपे ए नियंवनयण केहने सुरुष्ठ छ नुप्रसिद्ध संस्कृत ज्याकरणकाव्य 'रावणत्रध ' जे सामान्य रीते 'मिह्नकाव्य ' तरीक बोळखाय छे तेनो कर्ता 'महाबाजण महावया-करण न्यामिपुत्र मिह ' वलभीनो हतो, एटले वलभीमा भिंह नाम प्रचलित हतु, अने देविद्गिणिनो निवास पण बलभोमा हता, एटले भिंह ए देविद्गिणिनुं अपर नाम हाय ए कटाचित् संभवे छे

> ९ अत्र द्पगणिक्षमात्रमणिक्या महिवाचार्या व्यत स्कृच्, पृ ४०५ २ नम, पृ ६० जुओ देवद्विगणि श्वमाश्रमण

# भण्डीरवन

मथुरानी पासे आवेछ एक उद्यान त्या भंडीर यक्षनु आयतन हतु. लोको वळदगाडा नोडीने एनी यात्राए जता

जुओ कम्बल-सम्बल, मथुरा

# भद्रगुप्ताचार्य

उज्जियनीवासी एक आचार्य

आर्य रक्षित दशपुरमा पोताना गुरु तोसलिपुत्राचार्य पामे अगि-यार अग अने जेटलो दृष्टिवाद तेमन अवगत हता तेटलो शीएया पछी उज्जियनीमा दृष्टिवादना जाता आर्य वज्र छ एम सामळीने तेओ उज्जियनी गया त्या भद्रगुत नामे एक बृद्ध आचार्यनी संकेखना प्रसगे आर्य रक्षित निर्धामक तरीके रह्या अने तेमनी उत्तम शुश्रूषा करी भद्रगुताचार्य काल्धमे पाम्या पछो रक्षिते वज्रस्वामी पासे साडा-नव पूर्वोतो अभ्यास कर्यो पोनाना अतकाळे भद्रगुता वार्ये आर्य रक्षितने कह्युं हुतु के "तमारे आर्य वज्रनी साथे रहेतुं निह, कारण के जे तेमनी साथे रहेशे ते तमनी साथे ज मरण पामको." आयी

१ आचू, पूर्वभाग, पृ ४०३-४, उने, पृ २३; किक, पृ.

#### मस्यद्

मरूच, गुकरातनुं प्राचीन बंदर, चागमसाहित्यना प्राचीनदर भंशोमां मोटे मागे था नगरनु 'सटकण्ड' नाम छे 'भृगुकण्ड' नो प्रमोग मुकाबंध पाछळनी सख्त टीकाभोमां छे 'भरूच 'नो स्पूपित मरुकण्ड 7 मरुकण्ड 7 मरूच ए प्रमाणे साथी हरकाम, खे 'भृगु कण्ड 'माथी हरकम नथी, ए वस्तु पण मूळ नाम 'सटकण्ड' हामाना पश्चमां छे

के अप कर स्थळ मरुक को होण मुख के कुई छ अप अप के स्थक एम बन्ने मानों ए क्यांची वह सकाय से होण मुख एम उदा-हरण मा स्थल एम को स्थल के स्थल हो होण मा स्थाप बमां आये छे विक्र के अप का रीकाकारोए प्राइत 'मूहण ' सम्यना 'मूहन ' मन ' एतन ' एवा वे संरक्ष्य स्था स्थीकारोने बन्नेना छुदा अयो आप्या छ के अप मीकामी मारुक अवाय से 'मूहन ' भने उयो गाडांगों के पाडे वेसीन तेम ज गीकामा डारा जवाय से ' पुचन, ' संगक्ष ' अक्कुप्छ '

'भावस्थकपूर्णि' (उत्तर भाग, पृ १६२ – ५३)मां एक स्थले मरुकप्छने' 'आहरणी' सर्थान् 'साहार' बेखु बहीवरी एकम कोस छ (जुमे सिन् साहार)

मरबच्छना ईशान खूपे बोस्टक मामे उद्यान हतु सने तेमों
मुनि सुम्हरस्यानीनुं केय हतुं मैं नरबच्छनां बेनो तेम व मोदोनों मोदो
बस्ती हती सन बन्म बच्च पणी बार प्रस्तर रुपये बाक्टी हती.
सब्बच्छनां विमदक नामें बेन आवार्ष मर्द्रतिम क्षेत्र कुणाइ नाम ब बोद सामुमो जम्मे व आईंशा हता तेमने बादमां पराप्रित कुर्या हता कुम न ब बण गाविन्दावार्यनी जम विनदेवना हाच्यो परा स्थानक हतु अने एनी यात्रामां आसपासना प्रदेशना घणा लोका एकत्र थईने संखडि—उजाणी करता हता "

विक्रम पूर्वे पांचमी शताब्दीमा भरुकच्छ अवंतिना राजा प्रधोत अथवा चडप्रद्योतना आधिपत्यमां हतुं प्रद्योतनो दूत लोहजंघ एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो अने ते प्रद्योतना हुकमो लईने वारंवार भरुकच्छ आवतो हतो आ प्रभाणे नया नवा हुकमो लावतो एने वंध करवाने लोकोण तेन एक वार विपमिश्रित भाशु आप्यु हतु, पण मार्गमा मानशुक्षन थतां लोहजंघे ते खाधुं नहोतु '

भरकच्छ अने उज्जीयनी वन्चे सागे सपर्क हतो. भरकच्छमाथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिप्यने उज्जीयनी मोकन्यो हतो, पण मार्गमां एक मांदा साधुनी सारवार माटे तेने रोकाई जबु पडच्च हतु, अने एथी नटपिटक गाममां नागगृहमां एने चोमासु गाळवुं पडचुं हतु.

भरुकच्छमा नभोवाहन राजा राज्य करतो हतो त्यारे प्रतिष्ठाननो राजा सालवाहन ए नगर उपर दर वर्षे आक्रमण करतो हतो 'े कालकाचार्यना समयमां भरुकच्छमां वलिमत्र अने भानुभित्र ए वे भाईओ राज्य करता हता 'े नभोवाहनना राज्यकाळमा वज्रभृति नाम एक आचार्य भरुकच्छमां वसता हता ए आचार्यने उत्तम कि तरीके वर्णवेला छे 'े अङ्ग मल्लनो सहायक फलही मल्ल भरुकच्छ पासेना गामनो एक खेह्त हतो. 'े

उपर कह्युं तेम, भरुकच्छ जळमार्गे तेम ज स्थळमार्गे वेपारनु मोटुं भथक हतुं मुख्यत्वे आ दृष्टिए प्रधोत जेवा माळवाना राजाने भरुकच्छ उपर आधिपत्य जाळववानी जरूर छागी हरो भरुकच्छना वेपारीओ विशे केटलीक किंवदन्तीओ आगमसाहित्यमाथी मळे छे

भरुक्च्छन्। कोर्ट वेवागीय जन्मिजीना एक क्रिक्टिक

मृत स्रोचा हतो. विशक्ती वृद्धिनी पोते पराश्रित अया पूरी याद गोगीमा ए मृते अरुक्षको तत्ते आर योजन दूर 'म्सलडाम' नामे तत्राच बांध्युं हतुं ' मदकष्टको आवेडा एक परदेशी बेपागिर कपटी वारकपणुं पारण करीन, केरकौठ क्षपत्रतो साणीओने पाताना बहुाग त्यर बोधाबीन तेमन् हरण कर्युं हतुं '

मरुक छम्। दक्षिणायम तरफ नतां मार्गमां भागवतः सेनदामना अनुवादीमानु एक मन्दिर माधेख इद्यु जेने बेनी 'सच्छोग्रह'नामे ओक्सबता इता <sup>क</sup>

९ मुख्यके बृता कही बक्यन एस टीक्टमन्योमी वने (हु ६ ५), सम (अप १ १ १२०), सम (अप १), बृद्धम (अप १९) मने पुरुष (अप १९), बृद्धम (अप १९) मने पुरुष (अप १९) सम्बन्ध (अप सहस्यक्ष) सम्दर्भीय करून विश्वास के पुरुष्कि स्वा सम्बन्धि (अप सहस्यक्ष) सम्दर्भीय करून विश्वास के पुरुष्कि स्वा सम्बन्ध (अप सहस्य स्व स्व सम्बन्ध सम्बन्ध (अप सहस्य सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध (अप सम्बन्ध सम सम्बन्ध सम सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम सम्बन्ध सम्बन्ध सम सम सम्बन्ध सम सम्बन्ध सम्बन्य सम्बन्ध सम्बन

२ दोडि सम्मति बडेल वि बडेल वि दोलसुड, अहा मध्याकं तामकिती एक्जीव बासुबु ६, ९ २.

होत्यों-नारो सुक्षमस्त्रेति होणमुक्तं-सक्त्यस्त्रिर्गमध्येषं नाम धपुः

. होचसुचे वहरकानिसवप्रवेध क्या संस्कृष्णं क्रम्पक्रियों वा साधी यु. १४४ वटी हामो प्रस्तु यु. ४४

श्रीवर्षितम सूत्र श्री अकर्नाधिरित्री इति (पू ४ ) मां होत्र मुख्य प्रावेत बक्रितेष्मप्रवेद्यम् के त्यां मुश्य प्रावेत प्रकर्ण पत्नी स्वर्णः सम्बद्धाः स्वी पत्नी हरे एमा महत्वाम वास क

६ प्रथ्य ति पान पत्तन ता ठातनवारि प्राइप्यतेन विर्वेशन ध्यान्त्रवाद ठाव करवितिह सम्ब प्रपत्तन ब्रह्मा करवेनीयिनीयिनी प्रथम ठरतान वचा महत्त्रवाद्मा । चाव कर तत्त्व व्यवद्रीयन बोटकेसीयि त्व च । बोलिशित हा कर सम्बे चार वारत्यकरो 01% " जीस प्र ४ क्यूने प्रस्तवार्तिमाः शेषीन-कर प्राप्तवाद्मा । उपयो च-त्यान

मही पृह ]

वाहर्रिक्त घोटर्डनी।भरेष प । नीशिवेष तु तद् मन्य पत्न सत्प्रचंदाते॥ व्यम, भाग ३, ए १२७

जाओ पत्तन

- र नुओ कोरण्टक उपान
- ५ नुक्षा सपुराचार्य
- , आज, इसर भाग, पृ २०१
- ण वृषमा, गा ३१५०, वस्त्रे, माग ३, ए. ८८३-८४. जुओ कुण्टलमेण्ड
  - ८ मान , उत्तर भाग, पृ १६०-६५
  - ९ श्राचू, उत्तर भाग, प्र २०९
  - १० जुलो नभीचाहन अने स्नाल्याहन.
  - ११ जुओ कालकाचार्य.
  - १२ तुओ यम्रभृति आचार्य
  - १३ तुओ सदूण अने फलधी
    - १४ जुओ कुन्निकापण
  - १५ वृक्तमा, गा. ४२२०-२२, वृक्ते, पृ ११४५-४६.
  - १६ निचृ, भाग ३, पृ ४९८, वृक्तमा, गा २०५४, बृक्द्री, 9 498
    - १० जुओ कोसुंबारण्य तथा भहीगृह

# भङ्घीगृह

महीगृह सवधमा नीचेना भावाधनु कथानफ ' निशीथचृर्णि 'मा के: एक साधु सार्थनी साथे भरकच्छथी दक्षिणापत्र जती हती किने कोई भागवते प्छचु, 'भलीगृह ए छुं छे '' एटले साघुए दारवतीना दहनथी माहीने वासुदेव कोसुवारण्यना प्रवेश्या अने जराकुमारनुं बाण वागवाशी तेमनुं मरग वयुं त्यासुघानी हकीकत कही समळावी. आ अमाणे भर्सीगृह्नी उत्पत्तिनो सर्वे इत्तान्त नेण कश्चो आ सामर्सीन ु भागवत देवपूर्वक विचार करवा छाम्यो, 'जो एम नहि होय तो आ

ि शकी सब tte 1

श्रमणना हु चात करीया पद्मी ते गयो, अन तेणे बासुदेवनो पग भागभी बीधायेको जोयो एउके भागीने साधुन समान्या सर्ने कर्युं, में जा प्रमाणे चिष्ठव्य हुत् माने क्षमा करो '

मा कवानक उपरमी अनुमान बाम छे के कोसमारण्य के मा बैन परंपरा अनुसार, भराकुमारने बाण पगमां दागवाथी क्रव्य बासुदेवे देह याग क्यों स्यां पगमां मक्षी-बाणना या होय एवा प्रकारनी वासुदेवनी मूर्ति हुशे स्त्रे मन्दिरमां आबी मूर्ति हुशे हे मञ्जीगृह प्र<sup>र्तिने</sup> भोजसारी हरे.

ब्राहरण परपरा भनुसार श्रीङ्ग्जाना देहोत्सर्ग प्रभासमा वयो हुतो उसे कुणले वाणें बार्स्स हुते ते बच्ना त्यों मीएके (मल्सुकेपर) सरीके जाणीती है समा समुद्रिक्ष्यारे ज्यां तेमने अनसान मयु इसु स्मा वेडोसर्गन सीम छ

१ मिच् (मा सा १३३ भी चूर्णि) भाग ३ १८ ४०५ २ शुभो कोर्सवारण्य

**भिक्रमास्र** 

मुक्ते भीमास

**भू छे**न्दर

एक स्पतर गुव 'मुकेश्वर'

भानेतपुरमा एक वरित्र श्राक्षणे मुकेबर (ग्रा मुक्तिसर)मा टपासना करी हती. स्वंतर तन कश्चमां आ आसीरो बावक हता स्वं मोद्धम्यो हता.

जैन शाकोमां पणी बार शिव असा शादि आक्रण देवाने स्पंतर मबबा वानमंतर तरीके वर्णवेखा होय छे। एटके बाह्रों मुकेबर स्वतर यके मुक्कर महादेव द्वदिए छे एम अनुमान करम् बचारे पक्षते नथी. मुकेश्वरतां मन्दिश गुजरातशां छे सना ईंडर सरफना नाहाणोगी भूलेश्वर विशेष नाम पण होय छे अहीं, 'आवश्यकचूर्णि 'मां 'मूलिस्सर 'नो उल्लेख छे, एटले ए नाम ओछामां ओछु आठमा सैका जेटलुं जूनु छे वळी प्रस्तुत उल्लेख एम सूचवे छे के आनंद-पुरमा 'मृलिस्सर 'नुं मन्दिर होवुं जोईए

प्राकृत 'मुह्ल'-'मूल' (गुज 'मूल') अने 'मोल' (गुज. 'मोलो') ए देश्य शब्दो लागे छे जो के केटलाक एनो संबध स मद्राप्रा मह्लरगुज मलो इत्यादि साथे जोडे छे आ शब्दोने तेम ज 'मूलिस्सर' शब्दमाना 'मूल ' अंगने महादेवना अर्थमां वपराता 'मोळानाथ,' 'मोळा शंमु' जेवा प्रयोगो साथे वाग्व्यापारगत सबध हशे एवी स्वामाविक कल्पना थाय छे.

१ कच्छे आमीराणि सब्ढाणि, आणदपुरतो धिज्जातिको दिस्से भूलिस्सरे उनवासे ठितो, वर मग्गति, चाउवेज्जस्स भत्तमुछ देहि, वाणमैतरेण भण्णति—कच्छे सावगाणि भज्जवितयाणि ताण भन्नं करेहि। आचू, उत्तर भाग, पृ २९१

## भूततहाग

भरुकच्छथी बार योजन उत्तरे आवेलुं एक तळाव.

ए विशेनुं परपरापत कथानक आ प्रमाणे छे भरकच्छना एक विणिक उज्जियिनीना कुत्रिकापणमाथी एक मृत खरीद्यो हतो ए भृत एवो हतो के एने सतत काम आपवामां न आवे तो खरीदनारने मारी नाखे विणिक जे काम सोंधुं ते बधुं भृते क्षण वारमा करी दीधुं आथी छेवटे विणिक एने एक स्तम उपर चढवा उत्तरवानु काम सोंधु भृते पोतानो पराजय स्वीकारी छीधो अने पराजयनुं कुईक चिह्न मृकवानी इच्छा व्यक्त करीने कह्यु के 'घोडा उपर स्वारी करीने चाछता ज्या तुं पाछु वाळीने जोईश त्या हु एक तळाव बाधीश ' विणिक वार योजन जईने पाछु वाळीने जोईश त्या हु एक तळाव वाधीश '

भृततदाय

भा क्यानकता काम्पनिक सद्यो न स्वीकारीय वो पण मह-क्ष्मनो उत्तर बारक योजन दूर बावेख एक तळाव क्षोकप्रतियों मुस्तक्रमा नामें कामीतं हुद्र एटही बस्तु तो निमित्त छ

नुमो इप्रिकारण

९ बुक्सा या ४२९ −२१ कुक्से माग ४ g. १९४६ ४६

भृगुद्धन्य

जुओं मस्कच्छ

मङ्गु आर्य

एक प्राचीन भाषार्य तेमा आय समुद्रनी साथ विशार करती सोपारकर्मा गया इता तेमनु शरीरखात्च्य सारु इतुं, ज्यारे आर्य समुद्र दुब्छ इता.. वळी आर्य मगू आचाय बहुमृत पणा शिष्यांना परिवारबाट्य तथा उचत्रविहारी हता. तथा एफ बार मधुरा गया हता. त्याना भारका दरशेज दूज हुईं।, घी अने गोळवाळी खोराक पहीरापता हता क्षेत्रण साञ्चको स्यांभी भान्या गया पण आर्थः मैगूप् बिद्देशासना स्रोमधी विद्वार न क्यों ध्यास्थनो विराधना फरीने ते मरण पाम्या भन नमस्ती निर्धेशनो-नीक्षमां स्वतर वया पछी कोई साभ त्याओ पसार भाग पटक य स्थतर प्रतिमार्गा प्रवेदीन मोटी औम साबो करता, अने साधुओ पूत्र त्यारे कहता के 'हूं खिड्बा दोनधी स्पेतर धयो हूं भने समारा प्रतिकोध माने आस्यो हूं मार्ने मारा चेर्ड वर्षन तमे काशा नहिं ' बर्जी बीओ एक मह एवा है के व्यार साञ्चमा अमदा असता त्यार साध्यमोनी सामे हे पातानी भर्मकारसमित हाथ छवावतो, समे स्थार पूछनामां आवे स्वार उपर प्रमाणे बहेती.

' मेरिस्म 'नौ स्थविरावसीमां साम समुद्रनी पत्नी काम मेर्गून वेदन कर्यो छ एटक कार्य मर्गू आर्थ समुद्रना दिल्या सैभवे छ प्रस्तुत स्थिवरावलीमां आर्थ मंग्ने खूब आरएप्रवंक प्रणाम करेलां छे, ज्यारे उपर्युक्त कथानकतो ध्विन एथी ऊलटो ज छे आश्री एक ज नामवाळा वे जुदा जुदा आचार्योनो प्रलीना समयमा थयेला चृणिकारो अने टीकाकारोए संभ्रम कर्यो हशे एम अनुमान याय छे

१ न्यम' ( उद्दे० ६ उपरनी हित्त'), प्र' ४४. जुओ' समुद्र आर्थ २ निच्, भाग ३,' प्र ६५०-५९; वळी जुओ आचू', उत्तर भाग, प्र. ८०; कुक्तम, प्र. ४४, श्राप्तर, प्र १९२

३ तिसमुद्द्यायिकित्ति दीवसमुद्देसु गहियपेयाल । वदे अञ्जसमुद्द अक्खुभियममुद्गंमीर ॥२०॥ भणग करगं झरग पभावग णाणद्सणगुणाण । वदामि अञ्जमगु सुयमागरपारग धीर ॥२८॥

नसू, ष्ट्रं ४९-५०

४ 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र 'ना वे टीकाकारो देवेन्द्रसूरि (वन्न, पृ ९२) भने रत्नशेखरसूरि (श्राप्रर, पृ १९२) भा रसगृद्धिनी वात करतो 'मथुरा-मगृ' भावार्थनो उल्लेख करे छे ते छ सोपारकत्राळा मगूथी भिन्नता दर्शाववा माटे हशे !

# मणिप्रभ

उज्जयिनीना राजा पालकना पुत्र राष्ट्रवर्धन (राज्यव्धन )नो नानो पुत्र, जे पाछळथी कौशाबीनो राजा थयो हतो पालकना मोटा पुत्र अवन्तिवर्धने पोताना भाईनी स्त्रीने वश करवा माटे भाईने मारी नाएयो हतो 'आश्री' तेना भाईनी स्त्री' धारिणी पोतानु शिंछ बचाववा माटे एक सार्थनी साथे कौशाबी चालो गई हती ए 'वस्वते ए सगर्भा हती कौशाबीमा' राजानी यानशालामा रहेती साध्वीओ पासे तेण विक्षा लीधी, पण पोताना गर्भनी वात करी नहि पण पाछळथी ए वातनी खबर पडता एने गुन राखवामा आवी अने एने पुत्रनो जन्म थता नाममुद्राशी अंकित करीने राजाना आगणामा' मुक्ती देवामा आव्यो. ए पुत्र ते मणिप्रमं कौशाबीनो राजा अजितसेन पण अपुत्र, हतो,

११८] [झिलेगम

त्रेषी तेणे भणिप्रभन पुत्र दर्शिक स्वीकार्यों पुत्रप्रेमन हीने पाणिपिए स्विवतिकत्ती राणी साथे मैत्री करी काळे करी व्यवतिकत्ती पत्री भणिप्रभ गादो उपर लाल्या प समय तेनी सभी माह अवितिक ने अवितिक की अवितिकत्ती पत्री उपर प्रकार कर्मा स्वतिक के अवितिक के अवितिक के अवितिक के अवितास करा होते से कीशांबी उपर प्रकार माल्या, अने भन्न माहियों बच्चे युद्ध बवानी तैमारी हती स्वा माला पारिणीए बन्न पाठे बहुने तेमनो साबी हत्तान कही समक्रम्यो, अने प्रव रहेवा दर्शन का उरसाहरूकी नगरीनां प्रवेशना

१ समा अवस्तिवर्धम

२ तुनो अवन्तिवर्धन

३ भाष्<sub>र</sub> उत्तर साम छ १८५<u>-</u>५ बहु छ ५ -५१

मध्यन स्प्रधार

स्वमार महनकृत वास्तुसार 'मांधी केटलाक क्षेत्री 'अंपुदीप प्रश्नीस उपरागी शांतिचन्द्रमां कृषिमां उद्गुस अयेका छ<sup>ा</sup> संदन ए नाम माधकाळ्या गुबरात-सादरबान बन माळवामां स्वापक विशेष नाम सांद्रण नु सरकारीकरण छे

भवत मेवाबना राजा कुंमकर्ण-कुंमाराणा (ई.स. नो १० मा सैको)ना आभित हतो. क्रांमेबन र सादि शिनय सन वारपुराणमा सन्मार्थस प्रम्मो तेले रचेसा छ

दिकमना पेदरमा शतकता बंदमां बने सोळमाना प्रारंममां धर्वात् ईसुना पदरमां शतकमां 'बार्डकार्सकन' 'कश्यमदन', बंदमहर ' कायमनोहर' आदि प्रयो सहनार मधी मंदर धर्मा मांडण माळवामां आवेका मेदपदुर्ग (श्राद्व)नो श्रीमाची विणिक हाई सुद्रवार महनभी भिम सं

१ एउल्लेशनगर सुम्बरसम्बन्धस्याद्वलदेकित् विकार वचा बहुनस्या भीगीतु हुरै एजडोई प्रेनेत् । एकप्रीरच प्रदेशाय सह स्वादसम्बर्ग ६ १ स्वर्टि १३ स्ट्रीस स्ट्रेस संस्ता ६ १ ४

1 1

२ जुओ 'देवतामृतिं प्रकरण अने रूपमडन,' प्रस्तावना, पृ १-४ ३ जुओ हेमचन्द्राचार्य समा प्रकाशित 'मडनप्रन्यसप्रह'

### मण्डिक

वेणातट नगरनो एक चोर, जे दिवसे तूनारानो धधो करतो अने रात्रे चोरी करतो ए ज नगरना राजा मूळदेवना हाथे ते पकडाई गयो हतो

जुओ मूलदेव

### मत्स्यदेश

२५॥ आर्थ देशो पैकी एक. एनुं पाटनगर वैराट नगरमा हतुं े मत्स्य देशमा जयपुर राज्यनो केटलोक भाग तथा अन्वर राज्य आवी जाय छे े

> १ स्कृती, पृ १२३, इकद्दे, भाग ३, पृ ९१२-१४ २ ज्योंबि, पृ १२८-२९

### मथुरा

२५॥ आर्थ देशो पैकी श्र्रसेना जनपदनी राजधानी मथुरा नगरी घणी प्राचीन छे, अने तेथी एने 'चिरकाल—प्रतिष्ठित' कहेवामा आवी छे अने त्यांना स्तूपने 'देवनिर्मित' कह्यो छे है मथुरानुं बीजुं नाम इन्द्रपुर हतुं है

प्राचीन भारतना महत्त्वना सार्थमार्गो उपर आवर्छ होई मथुरा एक महत्त्वनु वेपारी केन्द्र ('पत्तन') हतु, एथी ए 'स्थलपत्तन' तरीके वर्णवायुं हो

मथुरामा भंडीर उद्यानमा सुदर्शन यक्षनु आयतन हतु." केटलेक स्थळे यक्षनुं नाम पण भडीर यक्ष आपेलुं छे." लोको भार उत्साहपूर्वक भंडीर यक्षनी यात्रामा गाडा जोडीने जता. ' आवस्मक मूत्र 'नो वृतिमां न्या यक्षायसनना परपरागत इतिहास नांच प्रमाण भापवामां भाग्या छ। मधुरामां राजामा भाजाबी हुँडिक नामे एक चोरन श्रृद्धीए भडावशामा आप्यो हता चोरना बीधा साधीको पद्मबाई आय ए मार्ट हेनी सपास राम्बबानी सूचना राजाए पोताना माणसान करी इस। जिनन्दत्त नामे आवक ए स्थळेबी पसार बतो हतो तनी पाने चीरे पाणी मान्यु जिनवृत्ते एने नवकार मणवार्य क्का बन पोने पाणी छेवा गया का वाज नवकार बोकता चोरनो बीन नीइळी ग्रश अने से बद्ध बबी. राखाना माणसीए बिनव्हरन परुष्ठयो अने राजाए एने शुद्धो अपर भ्रद्धावदानी बाह्य करी. वर्षे ध्यप्रियो भा शत खाणी तेणे पर्वत उपादीने नगर उपरामुख्यो भने कर्म के सारकने समाने निह हो नगरनो पूरो करी-नासीमा आ पष्टी जिनवृत्तमे सामाबीने वैमवपूर्वक जना नगरप्रवेश कराइवामी भान्यो भने नगरनी पूर्व दिशाण मक्षतुं आयतन बंधावयामा मास्यु आ बृत्तान्त उपरबी स्पष्ट हे के उपर्युक्त महायतन मधुरानी पूर्व दिशाप होत्त सोर्बए.

गबकोय रिवेप मधुग उठशपदनु एक धनन्यनु शहेर हर्षे कन ९६ गाम एनी साथे जोडायेकां हतां का द्रार्थर 'मधुग्रहरू'ने। उन्हेंक्स नीपपात हैं रे

मधुरा कैन पर्मनु पक मोटु केन्द्र हद्द्र मधुरामां परता बार णानी अस्तरेग उपर मी पहेलां काह्य-प्रतिमानु स्वापन करवामां कान्द्रं, अन पम न वाय तो य मक्कान पढ़ी आम पम मनाह्य कावी न्वापन मंगक्त्रेय ' कहता मधुरा साथे संबंध बरावतां ९६ गामानां पण मंगक्त्रेयां इतां

मधुमता सैन स्तूप पटका प्रार्थन इतो के एन 'देवलिर्मिट स्तूप' इदेखा कोई समय आ स्तूरों इवजो बोदोउ छई छीमो हतो. आना निर्णय माट राजानी संमितिथी एम नकी थयुं हतुं के 'जो स्तृप खरेखर रक्तपटोनो—बीडोनो होय तो ते उपर प्रभातमा राती पताका फरके अने जो जैनोनो होय तो त पताका फरके.' रात्रे देवनाए स्तृप उपर श्वेत पताका फरकावी ते प्रभातमा सीए जोयुं, अने ए राने जैन संघनो विजय थयो ' आ अनुश्रुतिमांथी कैति-हासिक दृष्टिए एवो निष्कृष नोकळी शके के मथुराना जैन स्तृप उपर बौद्रोण आविपत्य जमान्यु हतु, पण मथुराना राजाए ए रतृप जैनोने पाछो संध्यो हतो.

उपर्युक्त देवनिर्मित स्तृपनो महिमा-उस्मा पग पर्वदिवसीए थतो एक वार स्तृपनो महिमा करवा माटं केटलीक श्राविकाओ सान्त्रीओनी साथे गई हती ए समये त्या एक साधु, जेओ पूर्वाश्रममा राजपुत्र हता तेओ आतापना छेता हता वंधिक जातिना छटा हओए ए खीओने पकडी अने स्तृपमांशी तेओ एमने वहार छात्र्या. साधुने जोईने खीओए मारे आकृद कर्यु, ए साभळी क्षत्रिय साधुए वोधिको साथे युद्ध करीने तेमने छोडावी.

देवनिर्मित स्तूप जेवा जैनोना प्रसिद्ध यात्राधाम पासेथी आवी रीते पुजार्थे आवेली खीओनु छटारुओ हरण करे ए वतावे छे के आ घटनाना समय सुधीमा मथुरामांथी जैनोनु वर्चस ठीकठीक प्रमाणमां घटचुं हशे अने स्तूपनी आमपासनो प्रदेश उज्जड जेवो वनी गयो हशे

'स्त्रकृताग स्त्र'नी चृर्णि अने वृत्तिमां एक पुरातन गाथा उतारेलो छे, पएमा कुमुमपुर अने मथुरानो एको साथे एवी रीते उल्लेख छे, जे प्रस्तुत गाथाना रचनाकाळे कुमुमपुर (पाटलिपुत्र) अने मथुरानु एकसरखु प्राधान्य सूचने छे पाटलिपुत्रमा जैन श्रुतनी पहेली वाचना थया पछी केटलीक काताब्दीओ बाद स्कन्दिलाचार्ये १६ ' आवश्यक सूत्र भी कृतिमां न्या यक्षामतमना परपरागत इतिहास नोच प्रमाण कापवामां भाग्या छ। मचुगमां राजानी व्याहामी हुँद्विक नामे एक घोरने शुक्रीए चडाववामा आख्यो हता चौरना बीप्रा साधीओ पकडाई श्राय ए माने हेनी तपास राखवानी सूचना राजाए पोलाना माणसाने करी हत। जिनदत्त नाम धानक ए स्वळेची पसार बता हतो. तनी पासे चौर पाणी मान्यं जिनदत्ते पन नवकार मणवानु इद्यां भने पोने पाणी लेको गयो का बाज नवकार बोलका चोरनो सीन नीइको गयो अने ते यश्च सबो, राजाना माणसोप जिनवत्तम पक्रवची भने राजाए पने शुद्धा उपर पदाबबानी भाजा करी. महे भवभिन्नी भा वश्य जाणी तेणे पर्वस उपादीने नगर उपर भूक्यो करें क्रमं के जाबकने समायो, निक्ष हो नगरनी चरो करी नासीश आ पत्नी जिनदार्यन समायीने वैमदपुक्क बना मगरवर्गम कराववामी आल्यो, अन नगरनी पूर्व दिशाय यक्षनुं आयतन **वंशादवा**मा साम्युं आ वृत्तान्त उपरभी स्पष्ट हे के उपर्युक्त सञ्जासतम संयुदानी पूर्व दिशाप होते बोर्हप,

राजकीय रहिम समुग उठरापयनु एक अवस्थनु हाहेर हाई अन ९६ गाम पनी साथ चोहायेको हतां चा द्राहिए 'समुगहस<sup>स्त्री</sup> उन्हेंस्स नीपपान के

मधुरा बैन भर्मनु एक मोटु केन्द्र हत् समुरामां घरना बार णानी ओतर्रम उपर मी पहेलां शहेत-प्रतिमानु स्वापन करवामां लाबद्धे, भनं पम न बाय ता प मकान पढी जाव पूम सनातु, शावी स्वापनमें मैगक्ष्मेय बढेता मधुरा साथे संबंध भरत्वतं ९६ गामोमां थण मंगक्ष्मेंथो हतां

मधुराना कैन स्तूप प्रको शाक्षन इतो के दम 'देवनिर्मित स्तूप' कदेशा कोई समय मा स्तूरी कवजी बौदोद कई मौत्रो

- १ मृकुशी, पृ १२३, वृक्कें, भाग ३, पृ ९१२-१४
- २ चिरकालपइंद्वियाए महुराए .. उशा, प्र १२५
- ३ जुओ टि १२
- ४ जुओ इन्द्रपुर.
- ५ उता, पृ ६०५, आशी, पृ २५८
- ६ महुरा नाम नयरी, भडीरे उउजाणे, सुदसणे जक्खे, विस्का, पृ ७०
  - ७ जुओ भण्डीर यक्ष.
  - ८ भाम, पृ ५५५
  - ९ जुओ टि ११
  - १० जुओ खेट आहार
  - १९ अरहत पइहाए महुरानयरीए मगलाइ तु ।

गेहेसु चच्चरेसु य छन्तउईगामअद्वेसु ॥ (भा गा १७७६)

मधुरानगर्था गृहे कृते मङ्गलिनिमत्तमुत्तरङ्गेषु प्रथममईःप्रतिमा, स्नरिष्ठाप्यन्ते, अन्यथा तद् गृह पति । तानि मङ्गलेनेत्यानि । तानि च तस्या नगर्था गेहेषु चश्वरेषु च भवन्ति । न केवल तस्यामेव किन्तु तत्पुरीप्रतिवदा ये पाणवतिमख्याका प्रामार्द्धास्तेष्विष भवन्ति । इहोत्तरा-पयानां प्रामस्य प्रामार्द्ध इति सङ्गा । आह च चृणिकृत्-प्रामद्धेषु त्ति देसमणिती, छन्नउईगामेषु ति भणिय होइ, उत्तरावहाण एसा भणिड त्ति । वृकक्षे, भाग २, पृ ५२४ उत्तरापथमा प्रामने प्रामार्ध कहेवानी रूढि छे, एवो आमांनो निर्देश नोंधपात्र छे

१२ निचू, भाग ३, ५ ५९०, चुकक्षे, भाग ६, १६५६, व्यम्, भाग ४, पेटा वि १, ५ ४३

१३ व्यमा तथा व्यम ( उद्दे० ५ ), पृ ८ 🐪

१४ निचू, साग ३, पृ, ५९०, वृक्ते, साग ६, पृ १६५६, व्यम, भाग ४, पेटा वि १, पृ ४३ ' बीधिक' जातिनो उल्लेख ' महाभारत' अने 'रामायण'मां 'वोध' तरीके छे जुओ विमलाचरण ला—कृत ' ट्राइन्ड इन लेन्श्यन्ट इन्डिया', पृ ३९७ जैन आगमसाहित्यमां 'बोधिक'ने 'मालव' श्री अभिन्न गणेला हे, जुओ माल्ड .

१२२] [मधुरा

कैन शुन्ती भोत्री वाजना मधुरामा करीं भान एन देवकिंगणि लगा क्षमण पोतानी छेवटनी शुन्तकक्षमामां मुख्य वन्त्रना नरीके सर्वसंमय रोते स्वीकारी, ए वन्तु कैन इतिहासको घणा महत्वती छ, अन माधुरी वाजना मारे मुनि कस्यागविजयजीए निश्चित करेको समय (वीर निर्वाण स ८२७ भी ८४०-ई स २०१ भी ११४) मान्य रास्त्रीए तो पर्धु विधान नि सर्वेह बई शके के चीभी प्रसाम्श्रीमां मधुरा भैन पर्मेनु पर्धु मार्ड कन्त्र हतु, भेनी बगवरो प्रधिस मारतनु बज्मी भ करी शके प्रमृद्ध मार्ड कन्त्र हतु, भेनी बगवरो प्रधिस मारतनु बज्मी

भगवान महातर मधुरामां शस्या हुता एवा पक उन्हर्स 'विषाक सूत्र 'मां छे भागे मम्' सन शार्च रिक्त खेदा आ वार्षे ए मधुरामां व्हित्र क्यों हुतो आर्थ रिक्त मधुरामां मृतगृहा नामना व्येतरगृह—संधासतनमां रह्या हुता 'आवस्यक सूत्र नी वृष्णिमां एक रक्त मधुराने 'पार्वाहतस्य ' (सं पार्याहता ) कर्युं हे, ए बतावे छे के एमां बौदा अन अन्य संग्रदायना अनुमाबीमोनी वस्ती सारा प्रमाणमां हुती

मपुराने हगाता केटलाई प्रक्रीण उद्धेक्षो मळ छे, जेम के
-देवतस्थनमां दश्याती शांतानुं एक बातण मपुरामां 'नेदालड़'
तरिके मुशरियत छ " पनी जन पुत्रने घर मुकान देशावरमां प्रता मपुराना बणिकानी केन्सीक कथाला टोका-पूर्णियोमां छे उत्तर मपुराना बणिक वेचार अर्थे दक्षिणमपुरा (मदुरा) एम जाय छे " भपातमाद्रा छेत्रनी त्याग करवा संबंधनां, अरास्थना उपवर्त काल दशाहीं मपुराना त्याग क्यों हता ए उदाहरण काय्य छे भा दशाहीं मपुराना स्थान क्यों हता ए उदाहरण काय्य छे भा उपरांत मपुराना स्थान क्यों हता ए व्यावस्था भागमसाहित्यतां छ के भा प्राचीन नगरीनु बायण क्यों बीचनी अस बैन द्विहासमां पण मरुविषयमां पाणीनी तंगी छे अने पाणी मेळववा माटे रात्रे दूर सुधी जबु पडे छे किलविकलताने कारणे मरुस्थलमा धान्यसंपत् जोईए एवी थती नथी. निष्पुण्यपिपासित गनुष्योन जेम पोयूप प्राप्त थतुं नथी तेम मरुम्मिमा कल्पवृत्ननो प्रादुर्भाव थतो नथी "

मरमंडलनी केटलीक विशेषताओ पण नोंधवामा आवा छे 'यवनालक' (प्रा. जवणालओ ) नामनी 'कन्याचोलक'—कन्या ओनो पहेरवेश मरुमंडलादिमा प्रसिद्ध होग्रानु कह्यु छे एमा चिणयो—चोळी मेगा सीवी लेवामां आवता, जेथी वस्त्र खसी पडे निह कन्याना माथेथी ते पहेरातो, एथी ए प्रकारना पहेरवेशन ऊपो 'सरकंचुक' पण फहेवामा आवतो '

आ उल्लेख विशिष्ट महत्वनो छे, केम के एमां कन्याओना खास पोशाकने निर्देश छे. वळी प्राचीन सम्ज्ञत साहित्यमा स्रीओना पहेरवेशमा ' नीवि 'नो निर्देश भावे छे ते वस्ननी गाट छे, चिणयानी दोरीनी गाठ नथी, ए दृष्टिए पण आ वस्तु विचारवा जेवी छे संभव छे के साडीनी नीचे चिणयो पहेरवानुं कोई परदेशी जाति के जाति-सोनी ससरथी दाखल थयुं होय, दक्षिण भारतमा चिंगयानो पहेरवेश नथी ए पण आ दृष्टिए सूचक छे उपर्युक्त उल्ङेखगाना 'जवणालओ ' शब्दनुं 'जवण' (सं यवन, ए शब्द शिथिल अर्थमा गमें ते परदेशी जाति माटे प्रयोजातो हतो ए जाणीतु छे ) अंग पण घणुं करीने ए ज सूचवे छे. ए 'कन्याचोलक ' मरुमडलादिमा प्रसिद्ध होबानु कह्यं छे, एटळे मरुमंडल सिवायना बीजा केटलाक प्रदेशोमा पण एनो प्रचार होवो जोईए हेमचन्द्रना 'द्रचाश्रय' महाकाव्यमांथी एने लगतो एक रसिक उल्लेख प्राप्त थाय छे एमा लतागृहमां रहेली मयणहानो ' चोलक ' जोईने एनो भात्री पति कण सोलंकी अनुमान करे छे के ए कन्या होवी जोईए---

१२४] [मधुरा

१५ इस्तुमपुरोप्ते बीज ममुरान्तं नाह्कुरः समुज्ञवर्ति । वत्रैव तस्त बीजे तज्ञैनोरपस्ते मस्त्रः ॥

सक्त प्र १७९-८ सक्ती प्र १५

१६ मेचू पूर तम पूप् प्रथासम् पूप् १ इस्वार्ट वर्ध्य सुनो देवदिंगणि झामाध्यमण

१७ वीरनिर्दाप संबत् और वैस काळ्यवना पू १ ६

१८ तुमो चैन असद्य इन संस्वत्य इन्याना प्राप्त ५

१९ हमो सृध् आर्थ

र लाचू पूर्वभाष प्र ४११ अलस प्र ४

- १९ माप्, एर्चमात्र प्र. १६३

११ सुरुषी १८ ११८

. २३ शाण् जत्तरमाय छ ३८० व्याप माय ४ देश मि ९ छ ४०

६४ माच्, उत्तर माग पू ९४

े**५ स्वासुम प्र** २५५

२६ झाव छू२ ८ जीक्ष्मा छू४ विज् सम्पर्म षूप्रश्रेसस्य साप्तप्र-५ ३ अप साप्तप्रभुक्षाच् स्तर साव छ. १५-३६ इत्यादि

मधुरा मह्यू आचार्य

नुभो मङ्ग्ना आर्य

#### मरुस्पस

भावनी मारवाड पनां मरू, मरुन्मि मरुदियम सङ्देश पर्वा मामो पण मळ छ 'कृत्यमू ३'नी दिविच टीकामोमां 'राज्यदेशनाम' आप्यां छ तेमां 'मरुरक्का' छे '

मह आदि रनाळ प्रतेशमां रस्तो मुचीन जनाय ए मार्टमार्गमां अभिकामी स्पन्नमां सात्रे छे एवा उन्छेल सामानसाहित्समां से कन्यानां न्वेप मस्तकप्रदेशेन प्रक्षिप्यते, क्षत एवायमूर्ध्व - सरकञ्चुक इति व्यविद्र्यते, तथा च तप्रादिग्याव्यान कुर्वन्नाह भाष्यकृत्—'' × × जवना रुड ति भणिको उन्भो सरकचुको कुमारीए × ४ १ इति । आम, पृ ६८

- महतैल-महदेशे पर्वतादुत्पराते । वृत्रक्षे भाग ५, पृ १५९१ वृक्षमा, गा ६०३१ मां 'महतेल्ल'नो उल्लेख छे जेनी टीकारूंप उपर्युक्त मस्कृत अवतरण छे, ए सूचवे छे के 'महतल' विगेनो उल्लेख मुकाबरु घणो प्राचीन छे
- ८ ' कुलिक ' लघुतर काघ्ट तृणादिच्छेदार्थ यत् क्षेत्रे वाह्यते तत् मरुमण्डलादिप्रसिद्ध कुलिक्मुच्यते, ततथ यदत्र हलकुलिकादिभि क्षेत्राण्युप कम्यन्ते . , अनुहे, पृ ४८

### मलयागरि आचार्य

भागमसाहित्यना सौथी मोटा संस्कृत टीकाकारोमा भाचार्य मलयगिरिनुं स्थान छे. एमणे पोतानी अनेक कृतिओ पैकी एकेयमा रचनासँवत आप्यो नथी तेम ज पोताने विशे कशी माहिती आपी नथी पोते रचेछ 'शब्दानुशासन' जे 'मुहिब्याकरण' (मूठीमा माय एवं संक्षित व्याकरण ) पण कहेवाय छे एमां तेमणे 'अरुणत् कुमारपाछोऽरातीन् ' एवं उढाहरण आप्यु छे, अने एमा क्रियापद अद्यतन मृतमां होई कर्ता थोटाक समय उपर वनेला वनावनी वात करे छे एवु अनुमान स्वाभाविक रीते थई शके आचार्य मलयगिरि गुजरातमा थई गया छे ए तो निश्चित छे, पण उपर्युक्त प्रमाणने आधारे तेओ ई स ना वारमा सैकामा थयेला राजा कुमारपाल (ई स ११४३— ११७३ ) ना समकालीन हता के एनी पछी थोडाक समये थया हता एवं अनुमान थई राके. वळी मलयगिरिए 'आवश्यक सूत्र ' उपरनी पोतानी वृत्तिमा 'आह च स्तुतिषु गुरवः ' एवी नोंव साथे आचार्य हेमचन्द्रकृत ' अन्ययोगव्यवच्छेदद्वार्त्रिशिका 'माथी ' अन्योन्य-पक्षप्रतिपक्षभावात्॰ ' ( स्त्रो ३० ) ए, स्त्रोक उद्भृत कर्यों छे, त्या हेमचन्द्र माटे एमनुं नाम छीधा सिवाय 'गुरव, 'एवो बहुमानसूचक यच्चोरुक्रमयास्तन्त्राधापि कन्यास्त्रमत्यगा ।

वार्तेबास्या यदम स्वं स्मरस्तक्वां खरैरदात ॥ (सर्गे ९. स्त्रो. १४५)

'इचार्य'ना टीकादार समयतिरुद्ध्याण भर्दो 'चोउक'नी भर्व समजावतां रूपे छ-'यत्वं चोसकं कल्योचितं सर्वोडीयक इनुकविशापमधा परिवाननाधारमस्त्रम्भायतं त्वमधापि कम्मानै नारमगा । वहाँ 'चोलक 'न 'कम्पोचित सर्वांगीणकल्लकविशेष ' कक्षा छ, प आगमसाहित्य-अंदगत उत्ख्यसने वरायर मळ**र्तु** आहे छ

बळी 'बृहत् इत्पस्त्र ' उपरनी क्षेमकीर्छनी टीकामां 'मक्तेस' नामना एक विशिष्ट तस्त्रनो पण उत्लेख स्ने च तेस्न मरुदेशमां पर्वेत माथी नीकळ्युं सर्थात् भा स्तनिख रोस छ मारवाइमां पण एक काळ सनिय तस नोकळत इत प दृष्टिय का उन्हेसन अनेक शक्य ताभानो सुनक गणी शकाम

नदामु शस नॉटवा माटे के नार्नु स्पद्ध (गुप्त 'सरपडी ') इक साथै भेतरमा फेरववामां जाने छे पने महमइक्रमां कुसिफ ' कई क्ष पन्नो पण एक सम्बंद्धमा हो

१ तुनो ग्रुक्तर

१ रेचुपचुरे प्रदेश क्रीकिकानुसारेन यान्ते, अध्यक्षा प्रवस्ताः । स**स्य १.३**४

कीवकाराची यह बालकोन्द्रदे सरकादिनियने बीलिकानिशानेन शस्ति। सक्छी ४ १५६

- ३ निष्माय ५ इ. १ ९७
- v 44 5. 111
  - <u> የሚደን፣ ም</u>ያይ ለ
- ६ वरमारकी नाम कन्त्राचाहरू, स च महमण्डला(प्रतिद्वारमण इपन कन्यार्थ(ध्योपेन वह वर्धीरोह्नो सन्तिन येन परिवान न रासर्थि

मलयिगिरिए पोतानी ' आवश्यक वृत्ति'मां पृत्रेकालीन वृत्तिओनो वहु-वचनमां निर्देश कर्यों छे, 'ए सूचक छे, हिरिभद्र उपरात वीजा एक आचार्य जिनभटनी टोका ज जो तेमने उदिष्ट होत तो निर्देश हि-वचनमां होत. पण बहुवचननो प्रयोग वतावे छे के ए सिन्नाय पण बीज़ी एक अथवा वधारे टीकाओ 'आवश्यकसूत्र' उपर होवी जोईए 'विवृतय'' एवो स्पष्ट उल्लेख होनाथी उपर्युक्त वे विवरणोमा चूर्णिनो समावेश करीने वहुवचनना प्रयोगनुं समाधान करवुं ए दूराकृष्ट लागे छे.

' ज्योतिष्करंडक, '' ' पिंडिनर्युक्ति, '' अने 'जीवाभिंगम'नी' वृत्तिओमां मलयगिरिए वारंवार ते ते प्रन्थो उपरनी 'मूल टीका'नो उल्लेख कर्यों छे आ त्रणे सूत्रप्रन्थो उपर मलयगिरि पूर्वेनी कोई टीका आजे विद्यमान नथी 'जीवाभिगम'नी 'मूल टीका'ना उल्लेखो 'राजप्रश्रीय'नी वृत्तिमां पण छे ' 'प्रजापना' तथा 'नंदिसूत्र' उपरनी हरिमद्रसूरिनी टीकाओनो उल्लेख तेमणे कर्यों छे '

वळी पोतानी रचनाओमां मलयगिरिए पोतानी ज अन्यान्य वृत्तिओना उल्लेख कर्या छे, जे तेमनी कृतिओनी आनुपूर्वी नक्षी करनामा सहायमृत थाय छे, 'नंदिसूत्र' अने 'पिंडनियुक्ति'नो वृत्तिओमा पोतानी 'धर्मसप्रहणि टीका'नो उल्लेख 'तेमणे कर्यो छे ए ज रीते 'उयोतिष्करंडक'नी वृत्तिमा 'क्षेत्रसमास'नी टीकानो उल्लेख कर्यो छे 'वृह्दकल्प सूत्र'नी पीठिकावृत्तिमा 'संस्कृत' शब्दनो अर्थ समजावता तेमणे पोताना व्याकरणनो निर्देश कर्यो छे '' ए ज प्रमाणे 'सूर्य-प्रजिति'नो वृत्तिमा पण तेमणे स्वरचित 'शब्दानुशासन'नो उल्लेख कर्यो छे '

'तत्त्वार्थमृत्र' उपरनी स्वर्चित टीकानो उल्छेख एमणे 'प्रजापना सूत्र' तथा 'च्योतिषकर उक्त'नी वृत्तिओमा कर्यों छे '

<sup>•</sup>जीवाभिगमसूत्र' उपरनी पोतानी वृत्तिमां 'देशीनाममाल।'

१९८] [मझयमिरि झाचार्य

छता परिचयप्रदर्शकः भाषम निर्देश कर्षो छे ए उपरक्षी पण तेओ हेमक्टरना रुपुरमस्क समकाग्रीन होवार्नु अनुमान बाय छे

मध्यमिरिय नीचे ॥ कामममन्त्रो उपर टीकाओ छली छ ।
'शावस्यक ओधनिर्मुकि,' ' सीवाभिगम ' ' स्योतिकहर्रक,' 'निर्देख ' ' एउनिर्मुकि, ' ' प्रशापना,' ' मगवती ' विद्योग तर्कक, ' उम्राथमा ' ' स्याद्या स्व ' ' स्वंप्रमानि,' को ' विदेश वर्कक, ' उम्राथमा ' ' मयकहर स्व ' ' स्वंप्रमानि,' को छ छ, पण त्यार पर्जीनि हित काचा से सेमकीवित पूरी करी छ, पण त्यार पर्जीनि हित काचा से सेमकीवित प्रशास केमिन स्वा हो के ' बहक्क्क्स्स्य'नी इति कसतां क्ष्यमा से मान स्वा प्रम छ के ' बहक्क्क्स्स्य'नी इति क्षरतां क्ष्यमा साम छ के ' वहक्क्क्स्स्य'नी इति क्षरतां क्ष्यमा साम छ के ' वहक्क्ष्यम् येचे टीकाकारो पुष्पतार करने चान्विक्ष्य कर्षे छ पण प इचिनी प्रव क्षेप्रक्षमराना मेहारमामी बाल्यानां नावी छ आ टीकाकारोन पनी प्रवो अखन्य होते बोईप बळी ' तस्या स्व उपक्रम्य नवी ( सुमा टि १९ )

धागनप्रभोनी टोकाओ उपरांत महस्यागिष्य केटछाक धागमेशर पर्यमभ्या उपर टोकाओ रची छे अने सेमांची एमनी समय नकी करवामां उपयोगी भाग एसो उस्क्रस प्रक्षा श्राय छ है उपयुक्त 'अपि स्वाकृत्य' नाम शस्त्रानुशामन 'पण इस्तुं छै

मन्यर्गामिनी टोक्सभोमां उ व कोटिनी विद्राला साथे सरहराना मुमग सम वय अयो हे अने परिणामे विद्राला तेम क विद्यावां भीन ते एकमरसी उपयोगी वनी छ एगी पमण असंगोपाच परिताना पूर्व कावना प्रतिकासको उन्तरस कर्यो हावाने कारण व्यागमाहित्यना इर्जिंगम मार्ट प्रतिकासको उन्तरस कर्यो हावाने कारण व्यागमाहित्यना र्डजिंगम मार्ट प्रतिकासको उन्तरस्थानी सामनी पूरी पांचे छ व्याग कर्या १० ज्योकम्, प्र १२१, १८६

११ पिनिम, ए ४२, ६२, ८१

१२ जीम, ष्ट ४, १५, १८६, १९४, ६००, २८४, २०५, २.९, २९०, २१३, २४४, २३१, ३२१, ३५४, ४३८, ४४४, ४५०, ४५२, ४५७, हत्यादि.

१३ राप्रम, ए ६२, ६४, ६८, ६९, ७०, ७१, ७५, ७९, ९३, इत्यादि

१४ प्रम, ष्ट ६११, नैम, प्ट २५०

१५ नंम, पृ १९३, पिनिम, पृ २३

१६ ज्योक्स, ष्ट ५६-५७, १०१, १०७

१७ मलप्रिगिरिप्रमृतिव्याकरणप्रणीतिन सक्षणेन संस्कारमापादितं वचन संस्कृतम्, नृक्तम्, षृ ३

१८ सूत्रम, २२३

१९ प्रम, पृ २९८, ज्योकम, पृ ८१

२० थात्रर, प्र ३५

३१ जप्रशा. पृ. १२७, २२६

२२ जप्रशा, पृ. २२९, ३४८, ३५७

२३ जप्रशा, पृ ८७

### मलयपद्रण

सीपारकनी पासे आवेलुं शहेर. ए वेपारनुं मथक हुतुं. एक सार्थवाह हजार चूपम उपर माल भरीने त्यां गयो हतो '

मुंबई पासेनुं मलाड आ कदाचित् होय एवो तर्क थई शके जो के एने याटे कशो बैतिहासिक आधार नथी

> १ वसहाण सहस्तेहि सत्यवाहु व्य सो गओ । यलमगोण सोपारासन्न मलयपटण ॥ श्राप्तर, पृ ६६

#### महाकाल

अवन्तिसुकुमालना पुत्रे उज्जियनीमा पोताना पिताना मरणस्थान

रेक्२] [मदाकांक

उपर वंषावेद्ध देवमां तर 'महाकाल' तरीके मोळलाय हे जुमो अवन्तिसङ्घाम

महागिरि आर्य

रथुष्टभङ्करबामीन। वं शिच्यो कार्य महागिरि कन भार्य मुह्रस्ती नामं हता एमां महागिरि सहस्वीना उपाप्याय हता समय जला महागिरिप सामगण वार्य सुहरतीने सोप्या, कन ए काळे जिमक्त्यनो विचेत भयो होगांवा गण्डनियामा रहीन तुजी जिनकृत्यन याग्य हतियी विहार करना स्माग्या एक नार तन्त्री विहार करता पाटसियुत्र गर्नी ए समय भार्म सहस्तो पण त्यां हता पाटहिपुत्रनो बसुभूति नामे एक केग्री भार्य मुहस्टीना उपदेशमी क्षानक वसी हतो एनी कुट्ट बीभोन उपदेश सापना मार्ग मानै सहस्ती एन घर गया हता प बसते काम महागिरि भिकान माटे स्पां बाबी घड्या आर्थ सहस्तीए एमन बद्दन कर्युं भाषी बेडीए एमन विशे प्रश्न करता सुहरतीए कई के 'तभी मांग गुरू छ 'ब्या सांगळीने केफ्टोए पोलानी माण सोन क्या के ज्यार का साधु आने त्यारे-का बच्च त्याग करना धायक मकयान छ-यम कड़ीन तमारे समने बहोरावर्षु ! बोधे दिवसे कार्य महाराष्ट्रि आस्मा स्वरा, पण माम कृत्रिम रीते बहरेराववामां भावतां भग्न-पाणीमांबी कृशु पण तेममे ठवा सामक सामुं नहि टपाश्रममा पाछा भावीम तैमणे कार्य सुदृश्तीम कर्यो के 'तमे गई काक मारो दिनय करीने मारे माटे अनेपणा करी दौनी है। माटे करी बार समारे भार्युं न कर्षुं ' सुइस्तीय महागिरिनी श्रमा मागी.

करक भाषारमासन माठना आर्थे महाधीरिना भागवृत समता बीचा पक इंचान्स यण मेठ प वे अनुसार देवस आर्थ सुन्हरी साथे आहारमानी तवार्तु वेच कर्यु हृद्व

जीवतस्वामीनी प्रतिमाने वेदम करवा सा<sup>उ</sup> भा**र्थ** सुदृस्सी

महागिरि आर्य ]

उज्जियिनीमां आन्या हता ए समये त्यां संप्रति राजा हतो. जीवंत-स्वामीनो रथयात्रामा रथनी सामे आर्य सुहस्तीने जोईने राजाने जाति-स्मरण थ्यु अने पूर्वजन्ममां संप्रति पोतानो शिष्य होवानो वृत्तान्त आर्य सुहस्तीए तेने कह्यो तेमना उपदेशयी संप्रतिए श्रावक धर्मनो स्वीकार कर्यो पछी राजाए पोताना रसोयाओने आजा करी के 'रसोडामा जे कंई वधे ते अकृत अने अकाग्तिना अर्थी साधुओंने तमारे आपनु ' वळी नगरना कदोईओ, तेलीओ, छाश वेचनाराओ, दोशीओ वगेरेने तेणे सूचना करो के 'साधुओने जे जोईए ते तमारे आपवु, एनुं भूल्य हुं आपीरा ' आ पछी साधुओने इच्छानुसार आहार अने वस्न मळवा मडचां आथी आर्य महागिरिए आर्थ सुहस्ती-ने कह्यू के 'प्रचुर आहार वस्त्रादि साधुओंने मळे छे, माटे राजानी प्रेरणाथी तो छोको आपता नथी ने १ ए बाबतमा तपास करो.' आर्य सुहस्ती बधुं जाणता हता, छतां पौताना शिष्यो प्रत्येना ममत्वथी तेओ बोल्या के 'राजधर्मनु अनुकम्ण करती प्रजा ज आ आहारादि आपे छे. एटले आर्य महागिरिए कह्युं 'तमे बहुश्रुत होवा छतां पोताना शिष्यो प्रत्येना ममत्वथी आवुं वोलो छो, माटे हवेथी आपणे बन्ने जुदा आहार लईशुं ' पाछळथी आर्य सुहस्तीए पोताना अप-राधनी क्षमा मागी हती अने बन्ने आचार्यो फरी वार सामोगिक-साधे आहार छेता-थया हता न

आर्थ महागिरि दशाणेपुरनी पासे आवेला गजाप्रपदमां अनशन करीने काळधर्म पाम्या हता.

# जुओ सम्प्रति, सुइस्ती आर्य

१ आच्, उत्तर माग, पृ १५५-५७

२ वृक्षभा (गा २९४२) तथा वृक्ष्मे, भाग ३, पृ ९९७-१९, निच्, भाग २, पृ ४३७-३८ वळी निच्, भाग ५, पृ १७९४-१६ (भा गा ५६९४-५७०८ उपरनी चूर्णि) सा एज वृत्तान्त सक्षेपमा छे.

[मदागिरिजाच

जीवन्तालामीगी प्रतिमा संबंधमा हुओ जनन ओड भी ओरिस्पर इमिस्टब्युट, प्रत्व १ ए ४९-४९ मां भी उमास्मत शहरी केव ए सुनिक इमेज और बीदन्तरामी.

) कान् उत्तरमाय प्र.१५७ शास प्र.४६८ तुला श**ला**सपद

म**रा**राष्ट्र

विध्य भारतनो महाराष्ट्र मान्त महाराष्ट्रनी गणना चैन भागम माहित्यनो भनार्य देशोनां भरेकी छे महाराष्ट्र, कुचुक भावि भनार्व देशोनां कैन साधुभोनो मिद्यार राजा संप्रक्रिता प्रयन्तने छोचे सम्ब बन्दो हतो.

ं प्रश्नम्भाकाण सूत्र 'श्लं महासाय्ट्र' (ब्रा मरहट्ट) जातिने स्थापः कापि तरीके गणावेली छे

म्बेच्छ बाहि तरीके 'मरहट्ट'नो उन्केख बक्तक व माठ छे प् रांवप जा नांचपात्र छ न्यूरी 'म्बेच्छ' शस्त्र शवे को हो परदेशी बाहि के को हो च्यूना मुळ बतनी-बेनांची एक तरिंछ होग मारछ मा बोचा बनेक प्रन्तोनों नाम चेन से ते वासिको उपर्वा है तेम महाराष्ट्रमुं नाम पण का 'मरब्हु' बाहि उपर्वा प्रवेस है छे

'अनुवानदात स्व'मी मागभ, मासन, सोराष्ट्र अने कोंक्रणनी साथे महाराष्ट्रनो उन्केस छे महाराष्ट्रीकोनी बाषाप्रता प्रसिद्ध हती. 'व्यवहार स्व'न्य भाष्यमी' कर्तु छे के-अक्ट्र महकाळो आंध्रवासी, शवाबास महाराष्ट्री, भने निक्याय कोसस्वासी सोमां एक पण देसासी मंत्री

महाराष्ट्रमा विविध रिवाबो धने फेडियोमा उस्केस आगम सादिरयमां छे 'महाराष्ट्र वेदामां मधनी दुष्टानोमां सम्र होस के न होय पण तेनी बरर प्यव घरफालवामां आदे छे, चे बोईमें सिक्षाचर कृदि स्मां घठा नवी सहाराष्ट्र देशमां ठंडा पाणीसां दौलडा सुफ- वामा आवे छे महाराष्ट्रमां प्रसिद्ध कोन्छकचक्रपरपरा-शेरटी पीछवाना कोछनां चकोनो पण निर्देश छे पाछंक (गुज पाछस)नुं शाक महाराष्ट्र अने गोल्छ देशमा प्रसिद्ध छे महाराष्ट्रमा नरन साधुनु पुंश्चिद्ध वींधीने एमां कडी नाग्ववानो रिवाज हतो महाराष्ट्रमा कल्पपाल-कछाछने विहण्छत गणवामा आवतो नहोतो, एनी माथे वीजाओ भोजन छई शकता निर्मालकं महाराष्ट्र कननां वस्त्रो महाराष्ट्र देशमा घणा मोंघां होय छे, छता शियाळामा साधुओए ए धारण करवां, केम के ए सिवाय शीतनुं निवारण थतु नथां. महाराष्ट्रमा भादरवा सुद पडवाना दिवसे 'श्रमणप्जा' नामे उत्सव थतो. एमां छोको साधु-ओन वहोरावीने अटुमना उपवासनु पारणुं करता करता हतो. शिक्ताचार्य प्रतिष्ठानमां पर्युपण कर्युं त्यारथी आ उत्सवनो प्रारम थयो हतो. वहोरावीन अटुमना उपवासनु पारणुं करता हतो.

महाराष्ट्रनी भाषाने छगता पण केटलाक उल्लेखों छे मालव-महाराष्ट्रादि देशप्रसिद्ध विविध भाषाओं वोलवाथी सांभळनारने हास्य उत्पन्न थाय छे भ महाराष्ट्रनी भाषामां स्नोन 'माउग्गाम,' रूनी पूणीने 'पेछ,' तथा पूणी बनाववा माटेनी काष्ट्रशलाकाने 'पेछ-करण' कहे छे 'दशवैकालिक सूत्र'नी चूणि अनुसार, महाराष्ट्रमां संबोधनार्थे 'अण्ण' शब्द वपराय छे, ' ए वतावे छे के अर्वाचीन मराठी शब्द 'अण्णा'नो प्रयोग ओछामा ओछुं आठमा सैका जेटला प्राचीन काळमा जाय छे

'चोद्दित' अथवा 'कुणिय' जेवा शब्दो बोलनार महाराष्ट्र प्रदेशमां हास्यपात्र थाय छे,' एम 'निशीयचूर्णि' लखे छे एनो अर्थ ए थयो के 'निशीयचूर्णि' ज्यां रचाई ए प्राचीन गुर्जर देशमां लगभग आठमा सैका सुधी आ शब्दो अश्लील गणता नहोता.

### १ जुओ सम्प्रति

२ प्रव्या (अधर्मद्वार ), पृ १४ तेमांच अवतरण- × × ६ में य बहवे बहवे मिलक्ष्य्जाती, के ते ? सक-जवण=सबर-बव्हर-गाल-

विश्वासाय द

tse 1

मुस्ड-डर् भडग-तितिय-पद्यित-सुम्रक्त गीड- तीडव- पारध-भीवंद-हरित-विक्रद प्रसिद-मरीश कोय पोदन = नवहार्य-वहसीय-बात-रोज-मारा-बरत-महत्य-पुंचुका व कृष्टिया क्षेत्रकथा मेत-पूक्क माहत-महर-भागातिका अवस-चीन-स्वित-रास श्रासिया-केहर-मरहातु-सुक्रिन-शारव-कोवितम-पुरुष-केदम-कृष-रोमग-वद-मदशा विकासवितमसामी व पासमिविची ××× अध कवरीत प्रशापना सूत्र (वद १ सू ३७) पत्र ५४ माँ म्हेच्छ पातिकोमी एक सार्ध है पत्र एमाँ मरहा सवी

3 **44 Y 1**43

४ अर्थ अकुरमनर्थ अनि व सरहृह्यं अनोधितं । द्येसकर्व करान बर्स एवं व देखानी ह स्पना या ११६

शक्षकरार्थंस्य (ई.स.जो १९सो क्षेत्रो)माँ न्यावस्त्रति अर्थकारण बदाहरण गरीके बावेका एक क्षोक्रमां दाविकारणी प्रकृतिस्थारकमो उल्लेख है। एमां कोफनो कर्ता होते स्वतिकारम ---

> कि शतान्त्री परवाक्ष्यी किंद्व काई समर्थ-स्पूर्ण स्पार्व प्रकृतिसक्ती शक्तिसहस् स्वस्तवः । तेहे मेहे विपनित दवा करूरे प्रवसीध्यम-सम्मतित भ्रमति काठी बहुन्त इन्त क्रीतिः ॥

५ निष् (सामा १९४७ उपर) आय र प्र १५४

सम्बद्धे मात्र १ ८ ९३५ स्मि**यः** महस्य ५ ४० १९५३

**र मध्यः, शाया १ ४ १६७** 

< इच्छे मान २ ४८-३३ मील्य देख ए शहुर विलयामाँ सम्बद्ध वरीने कियारे आवेक नीकी जावपारको प्रदेश के एनी. केंद्रसन निहाबीमी सर्व छ ( क्षेत्र काइफ इन रम्बन्द इन्विक्), यू. १८६). ना वित्रे प्रशास करानेद संगदे शोपम मोनल देख दक्षियामा होना वित्ते क्षेत्रः नवी केसके ए ध्रम्पूज ग्राविक माधनो का सामिक अने क्रमबर्मा गोल्क तो भर्व सरहाड बाग ७ वंडकुरुवो गुर बाववर्ग बोस्त देखना चनक बामे गामनो वसनी इसो एना दरकेको स्मणन-स्रक्षिममं के (तनो अधिमनस्योत्त्र, सूर्य ९ <u>५,</u> ५ ११). माध्यमिका ]

चौलुषययुगना गुत्ररातना शिलालेखो अने साहित्यमा विणिकोनी एक 'गरूलक' जातिनो उल्लेख छे, एनो सर्वध दक्षिण भारत साथे हरो ?

महाराष्ट्रविषये सागारिकं विद्वा तत्र विण्टकः प्रक्षिप्यते, वकक्षे,
 भाग ३, पृ ७३०

यद्वा कस्यापि महाराष्ट्रादिविषयोत्पन्नस्य साघोरप्तादान नेण्टकविद्ध, ततस्तद् दृष्ट्वा व्रुवते—कथ वु नामासौ साधुधर्म न किष्यित यस्येयन्त कर्णा विद्धा १ ए ज. भाग ३, पृ ७४१

१० एज, भाग २, पृ ३८३-८४

११ एज, भाग ४, प्ट १०७४ ,

१२ निचू, माग २, पृ ६३३

१३ जुओ कालकाचार्य-२.

९३ बृकक्षे, भाग ६, पृ. १६७०

१५ निचू, भाग ३, पृ. ४४६

१६ विको, मृ. ९२२

१७ ए ज

१८ दवैच् , पृ २५०

१९ निचू, भाग ३, पृ ५५५ 🚬

## महिरावण

कोंकणनी कोई नदी.

जुओ डिम्भरेलक

### मात्स्यिक मछ

सोपारकनो एक मछ, जेने उज्जयिनीना अङ्ग मछने हाथे तालीम पामेला फलही मल्ले पराजित कर्यो हती.

. जुओ **अट्टण** 

### माध्यमिका

माध्यमिका नगरीनो उल्लेख ५विपाक सूत्र 'मां छे.' १८ प्३८] [माजविद्या

एक बनार्थ बाठि चेना नाम उपरक्षी अवस्ति जनपद मान्य तरोके प्रसिद्ध वया भागमसङ्ख्यमां 'मान्य' जातिने 'म्हल्ह

भितोष्टनी दक्षिण आवर्षु 'नागरी नाम स्थान माप्परिका छे एवा विद्यानीनी मत हे' हाछ पण माप्परिकामां केल्साक बिरस प्राचीन अयरोची छ

१ विस् १~७ उपयोक्ति प्र ११६

ग्रासच−१

जाति " सम्रा ' माण्य ' देशने ' स्वेष्ण देश " इद्यो है आ माण्य स्वष्णा प्रवत्मस्याभोगां रहेता क्षते वस्तीमां जावोत माणसातुं हरण इसी अता " 'नियोगण्यां' इदेश इसे हर के तसी माण्य नामना पर्वेद उपर विषय प्रवेशमां रहेता के दरशाह प्रश्वोमां ' माण्य ' देश ज ' बोचिक 'न अभिन्न गण्या छ तथा तेथाना बाहमण्यां माण्या परवां बीच देशान्य रूप्तं एच सूचन होत् हे मां माण्या परवां बीच देशान्य रूप्तं एच सूचन होत् हे मां माण्या परवां विषय स्वाप्तं माण्या परवां विषय स्वाप्तं नाश्यासना प्रदेश उपर वार्तवां भाकमण इस्तां परवां विषय स्वाप्तं माण्या स्वाप्तं माण्यान स्वाप्तं स्वाप्तं स्वाप्तं स्वाप्तं स्वाप्तं स्वाप्तं माण्यान स्वाप्तं स्वापतं स्वाप्तं स्वापतं स्

उभिष्तीमा वार्रवार माकवीर्तुं स्वक्तमण बर्द्ध कर तेला मनुष्यांन हरी बता यक बार कृषामां गोँटनी माउठ पदी गाई (माक्षा पतिना) कोई बोन्सुकः माउठ पदी 'बीबी कोई छंबममां यम सगम्बो के

केटको बाक हता पर्नु एक विशिष्ट च्यान्त 'ओसनियुक्ति 'ना मायमां के अनुस्परीकरण होगापासनी टीका कर छ ए स्वान्त वास्त्रविक न होय तो पण पर्निस्परिनुं योजक तो सबस्य के होत्याचार्य सक्ते हे 'मालवो आव्या छे' (मालवा पतिताः), अने एम नासभाग थई रही ' अणसमजुने भडकाववा माटे पण 'मालवस्तेन आव्या छे !' (मालवतेणा पडिया) एम कोई बोलतुं एवो निर्देश मळे छे. े आ उन्छेखो बतावे छे के बोलचालनी प्राकृतमा 'मालवाः' ने 'मालां' पण कहेता हशे 'ओघनिर्युक्ति' (गा २६) मा, 'सुभिए मालुज्जेणी पलायणे जो जओ तुरियं ' ए प्रमाणे 'मालव' ने बद्छे 'माल' नो उल्लेख छे, ते पण आ अनुमाननु समर्थन करे छे हवे बीजी तरफ जोईए तो, सस्कृतमां (अने केटलीक अर्वाचीन भारतीय भाषाओमां ) 'माछ' गब्दनो अर्थ 'घरनो उपरनो भाग ' थाय छे बगाळीमा 'मालभृमि 'नो अर्थ 'पार्वत्य मूमि, उच्च प्रदेश ' थाय छे, अने पश्चिम बंगाळना ' मालभूम ' नामना हुंगराळ जिल्लामां रहेती एक आदिवासी जाति पण 'माल ' जाति कहेवाय छे प्राचीन गुर्जेर देशना पाटनगर 'भिल्लमाल 'ना उत्तर अंगमा ' माल 'नो संबंध पण ए माल जाति साथे होय ए शक्य छे-

कोई वार समयम् वकतावाळा माणसो हिंमत करीने आ छटाराने केवी रीते पराजित करता एना पण उल्लेख छे कोई गाम उपर मालव-राबरोना सैन्ये आक्रमण कर्युं हतुं एमाना केटलाक बोधिकोए केटलीक साध्वीओनुं तथा एक क्षुछक—नाना साधुनुं अपहरण कर्युं ए चोरो पोतानामाथी एकने साध्वीओ तथा क्षुछकनी सोंपणी करीने बीजानुं हरण करवा माटे गया हवे, ए एक चोर तरस्यो थता पाणी पीवा माटे क्वामा कत्यों क्षुछके विचार कर्यों के 'अमने आटलां बधांने आ एक चोर छु करी शक्तवानो छे '' तेणे साध्वीओने कह्युं के 'आपणे आ चोर उपर पाषाणपुज नाखीए.' साध्वीओए गंभराईने ना पाडी, परन्तु क्षुछके तो एक मोटो पत्थर पेला चोर उपर नाख्यो, एटले वची साध्वीओए गंण एक साथे पथ्थरों नाख्या. एनाथी चोर मरण पाम्यो, अने क्षुछक साध्वीओने लईने छुरितत स्थळे गयो 'व

१४०] [ श्रासंदर्भ

आ माखनी अवार पकडाता स्वार तेमने हेडमां नान्यशामां भारता '' माखनी स्वभावधी ज परुप याणी माखनारा हता एवो रहेस छ ''

प्राथको ('माणीर')ना च गणसणाक राज्यनो सिक्टेरली सवारीना काळे (ई स पूर्वे चोचो सैक्टे) निर्देश छ ते प्रजायमी प्रस्कानमी असगास काणेर्ड हसु एको बिशानोना मत छ <sup>प</sup> आग्रम साहित्समा मास्यदेश प्लायो असिन्न ए के केम ए निधितवणे करेंद्रै पुरस्क छ पत्तु पोताना मूळ प्रदेशमांची पर्यटन करता मास्त्रमी उम्मीयनी आसगासना चेगछोमां भारमा हरे। अन त्यांची उम्मीयनी करेंद्र सम्बन्धि जनपदना प्रदेशमां चोरी पूट असे मनुष्यहरण करता हरे। अने काणकर स मारिटी वर्षस वसती मन्दिन पण 'मास्त्रम' गाम सम्मी हरो.

जुमा मबन्ति, सज्जयिनी, बोधिफ, मधुरा

१ सुन्ये दरज्ञविनी

९ मणा १६ ९४° मध् १६ ५४ अकी शुक्रो सुम्पी १६ ९९३, ९०७

३ विक्रिया वर्षिय सम्बन्धसम्बद्धिय स्टब्स् अग ३

३ विक्रमाताः वार्षयेशः समन्तासम्बद्धेन्द्रस्य सम्बद्धाः । पू १२१

४ वर्षहरूप साम्बन्धिनेच्या ते सम्बन्धानेसु ठिमा<sub>,</sub> मासकार्ति इरति त्रिषु माग ५ प्र १९१

इस्सि निष् साम ५ छ १११ साम्बर्ग भोज्यानिकेमः प्रतिस्महारियः स्था (वर्षे ४ वर्षनी

पति ) ६ १६ ५ साध्यस्य प्रमाणी उस्द्वपूर्ति निकासी केच्या वर्तति से साव्यक्तीना

निर्मु साम २ प्र. २९ ( वोक्सिक सम्बद्धाः अकेन्द्रकः प्रस्कृतिस्त्रकः सम्बद्धीयो अवे

( वाण्यका सम्बद्धाः अकेष्ट्रः श्राह्मीकात्वा समाधीमा अ स्मृत्यस्य ग्रीष्ठ विष्यत्या कर्यसम् । इस्त्रे स्थयः । इ. ८८७ धौररायिकाणामेकस्य च क्षुष्टकस्य हरण फ़तम्। व्यम (उद्दे० ७ उपरनी इति ), पृ ८१

बोधिक अने मालवनी अभिन्नता सवधमां वळी जुओ टि ४ ७ जीकमा, गा ९३३

- ८ मालवा-उज्जयिनीतरकरा । जीकच्या, पृ ४३
- े ९ उज्जेणीए सावगस्स सुतो चोरे**हि इ**पिड मालवके सूत्रगारस्स हत्ये विक्कीतो, उन्, पृ १७४

उउनेणीए सावगस्रतो चोरेहि हरिड मालवके सूयगारस्य हर्ये विक्रीतो, उशा, पृ २९४ धाचू (उत्तर भाग, पृ २८३) मां मालव देशनो उल्लेख नथी, पण उज्जयिनीमाथी छोकराश्रोन मालवो उपादी गया हता धने एमाथी श्रावकना छोकराने रसोयाए खरीयो हतो, एम कह्यु छे

- १० मोनिभा गा २६, मोनिद्रो, पृ १९
- ११ निचू, भाग २, पृ २९०
- १२ व्यभा, गा. ४११, व्यम ( उरे० ७ उपरनी, वृत्ति ), पृ ७१
- १३ प्रायेण जिगलबंधो हिन्यधणादिणा विवरेण करेति, जहा मालवाण, स्कृच्, पृ ३६४
- '४ इत्यतो नाम-न दुष्टभावतया परुप भणन्ति किन्तु तत्स्वाभाव्यात्, यथा मालशा परुपवाक्या भवन्ति । वृकक्षे, भाग ६, पृ १६१९
- १५ ज्यांडि, पृ १२२. जैन आगमंस।हित्य सिवायनां साधनोमाथी प्राप्त थता मालव जातिना वृत्तान्त माटे जुओ 'ट्राइव्स इन ॲन्ड्यन्ट इन्डिया,' पृ ६०-६५

#### माळव-२

मध्य भारतनो माळवा प्रान्त 'अनुयोग्हार सूत्र'मां क्षेत्रसंयोगनी वात करता मागध, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र अने कींकणनी साथे माछवकनो उल्लेख कर्यो छे रे स्पष्ट छे के अहा 'माछवक' क्हे जंगली माछव-जातिना मूळ पहाडी वतननो निह, पण संभवत अत्यारना माळवा प्रान्तनो निर्देश छे (जुओ माछव-१) ए रीते 'अनुयोगद्वार सूत्र'ना रेका [मासन-र

भा माझवो । शर् पढ़दाता स्वारे सम्त हेडमां नाम्बवामां भावता । मामवो स्वमावधी ज पहच वाणी भाजनारा हता एवी उक्केस छ <sup>१४</sup>

माखने ( माखंद ) ना ज गणसमाइ राज्यनो सिर्इंदर्श सवारीना काळ (ई स पूर्वे बाबो सीडो) निर्देश छ ते पजावनो मुख्याननी आसपास व्यवेखं हत् पन्ने बिद्यानोना मत छ ' भागन साहित्यना माखबरेश प्नाचो समिन्न छ क केम ए निध्यतपणे करेषुं मुख्येक छ परन्तु पोठाना मूळ प्रदेशनांची पर्यटन करता मास्त्री उज्यायनो बासपासनां जोग्लोमां बाल्या हरो अन त्यांची उज्यायनी बने व्यवन्ति जनपदना प्रवेशमां बोते पूट बाम मनुष्यहरण करता हरी-बार काजकम बा वार्तिनु वर्षस व्यवता स्वतिन पण 'मास्त्र' माम मळ्युं हरो

सुमी भवन्ति, उज्जियिनी, बीचिक, मुख्रा

१ सभी बरतयित्री

९ प्रमा १६ १४' प्रस् १६ ५४' बडी शामी सुक्री १६.११-६.१४

१ मिठीनचार वालिकेश साम्बन्तायका<del>योगाहरे</del>हेर, अस्तर साम रे ४ १६१

इ. १६१ ४ बोविया सामगावितेच्या छ शमकाभित्र विधा मानुवानि

स्पर्य निष्यु, मार्ग ५ g. १११ सम्बन्ध स्केन्यशिक्षेत्रक करितानहारीका ...काम (कर्षे ४ वपर्या

क्षि) ह भ

५ माञ्चामे क्यारी उस्तापरि निष्मित केवना वहारित से आव्यक्तीणा। विश्व, साम ६ पू. १९

६ वीनिका सम्बद्धानाः स्त्रेच्छाः चार्त्तम्बद्धाः तहारीनी सर्वे बसुवनिक्ते चीत्र देवानत् सन्त्रस्मम् । कुस्त्रे सात्र ३ ए. ८८०

वस्तान्त्रय क्षात्र वसात्रयर कन्त्रसम् । इस्क्रे शात्र ३ छ. ८८० नन्त्रयर सत्ते प्रावनस्तरानीकसानितम् । सत्र वैभिन्न् नोधिर्वे- धौरराधिकाणामेकस्य च क्षुलकस्य **६**रण फृतम । व्यम (उ६० ७ उपरनी मृति ), पृ ७१

बोधिक भने मालवनी भभिन्नता सवधमां वळी जुओ टि ४

- ७ जीकमा, गा ९३३
- ८ माल्वा-उज्जयिनीतस्करा । जीकचृथ्या, पृ ४३
- ९ उज्जेणीए सावगस्य सुतो चोरेहिं हिमेड मालवके मूयगारस्स हत्थे विक्कीतो, उन्, पृ १७४

उज्जेणीए सावगस्तो चोरेहिं हरिंड मालाके सूयगारस्य हत्ये विकीतो, उशा, पृ २९४ आचू (उत्तर भाग, पृ २८३) मां मालव देशनो उल्लेख नथी, पण उज्जीयनीमाथी छोकराओने मालवो उपाडी गया हता अने एमाथी श्रावकना छोकराने रसोयाए खरीखो हतो, एम कह्यु छे

- १० छोनिभा गा २६, छोनिद्रो, प्र १९
- ११ निचू, भाग २, पृ २९०
- १२ व्यमा, गा ४११, व्यम ( उरे ७ ७ उपरनी मृति ), पृ ७१
- १३ प्रायेण णिगलक्षो हिंड्विधणादिणा विवरेण करेति, जहा मालवाण, स्कृच्, पृ ३६४
- '४ द्रज्यतो नाम-न दुष्टमावतया परुष भणन्ति किन्तु तत्स्वामाव्यात् , यथा मालगा परुषवाक्या भवन्ति । वृकक्षे, भाग ६, पृ १६१९

१५ ज्याहि, पृ १२२ जैन आगमसः।हित्यं सिवायनां साधनोमाथी प्राप्त यता मालव जातिना वृत्तान्त माटे जुओ 'ट्राइटस इन अन्त्यन्ट इन्डिया,' पृ ६०-६५

### माळव-२

मध्य भारतनो माळवा प्रान्त 'अनुयोगद्वार सूत्र'मां क्षेत्रसंयोगनी वात करता मागघ, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र अने कींकणनी साथे माळवकनो उल्लेख कर्यो छे रपण्ट छे के अहीं 'माळवक' क्हे जंगली माळव-जातिना मूळ पहाडी वतननो निह, पण संभवत अत्यारना माळवा प्रान्तनो निर्देश छे ( जुन्ये प्राच्या १ ) पर्वति (प्राप्ता माळवा रचनाकाळ अवनित जनपद माटे माटव' नाम प्रचारमा इस्तुं जेदेण एवु अनुमान करो शकाय 'कप्पस्य'नी विविध टाकामामां आपनी राज्यदेशनाम'मां माजब पण छे <sup>व</sup>

मास्ववार्ग 'मदह'-माद्या नामना लाग वर्वाध प्रसिद्ध छ मान बादिमां मस्य पाण्यन 'पर्यमा' इद्द्वामां आवे छ मस्य कर द्विर ए वे घण्या मास्त्रवामा अप्योता छ त्रिपुटक ए पण मास्त्रवार्म प्रसिद्ध घण्यविद्यार छ बद्धसी तथा प्रमाधी बनर्तु वन्त्र प बन्न मास्त्रवार्मा वाशीता छे 'मन होच तो मास्त्रवे तवाय' एम मास्त्र्यार्ग व्यापक बन्धा 'इन्यप्ट्य'मी हेटलीक टीडामोनी छ ह्यम्दि, बना पर्याभी महाबीरना प्रवास माणवर बन्दाना छे देशी महाबीर त्यारे व्यर इरवा माने बतां पीतानी विद्या विदे क्रामिनानम्बदक इदे छ

यमस्य यासवी दूरे कि स्यात् का या वयस्तितः । सपीपितो रसी सृत किसलेयं च चक्रियाः ॥ें

( बमने मार माळश हुँ दूर छ " बबस्की पुरुष कमा रसर्वे पोष्ण करतो नश्री ! बक्तमारी विष्णु मारे सामस हूं अबेय छ ")

जुमा मयन्ति, राख्यपिनी

1 95 % 143

९ इसी इक्सविशी

१ समो गुर्जुर

**४ विनिस इ.** ३

¥ाणनस**्** १

५ वर्षम् ४ २५५ ६ मान्यः ४ ९९

• **ए प** 

< किए मार्थ ६ ६३६ माम छ. ५६५ मझ्डे छ ३५

माहेश्वरी ]

९ क्सु, पृ ३९९, कदी, पृ १०४

माहेश्वर

जुओ माहेश्वरी

माहेश्वरी

माहेश्वरीनी स्थापना विशेनी कथा आ प्रमाणे छे

पोतनपुरना राजा प्रजापितने भटा नामे राणीथी अचल नामे पुत्र थयो हतो अचल वलदेव हतो प्रजापितए पोतानी मृगावती नामे पुत्री साथे गान्धविविवाह कर्यो हतो, आथी भटा पोताना पुत्र अचल साथे दक्षिणापथ चाली गई हती अने त्यां तेणे माहे खरी नामे नगरो वसावी हती. ए नगरी मोटा , अश्वर्यवाली होवाथी माहे खरी (प्रा माहे स्सरी) कहेवाती हती. अचल पोतानी , माताने ए नगर संपोने पालो पितानी पासे गयो हतो.

माहेश्वर, श्रीमाल अने उज्जियनीमा लोको समूहमां एकत्र थईने सुरापान करे छे एवो उल्लेख मळे छे पुरिकापुरीना चौद्ध राजाए पर्युषण पर्वमां जिनपूजामां पुष्पोनो निषेध कर्यो हतो, तेथी वजस्वामी आकाशमार्गे माहेश्वरी जईने पोताना पिताना मित्र एक माळो पासेथी पुष्पो लाव्या हता व

माहेश्वरी एज कार्तवीर्यनी माहिष्मती छे अने ते इन्दोरनी दक्षिणे चाळीस माईछ दर नर्मदािकनारे आवेछ महेश्वर अथवा महेश छे, एवो सामान्य मत छे. पण नर्मदातटे आवेछ मान्धाताने पण माहिष्मती गणवामा आवे छे, ज्यारे श्री क मा मुनशीना मत प्रमाणे हाछनु भरूच ते ज कार्तवीर्यनी माहिष्मती छे प्राप्त प्रमाणे

१ क्षांचू, पूर्व भाग, प्र २३२

२ आसूचू, पृ ३३३ वळी जुओ उन्जयिनी ३ कम्रु, पृ. ५११-१३, किंक, पृ १७०-७१

् मृडदेव 188 ] ४ ज्योहि द ११ 4 993 **%** 14 बैतिहासिक संस्थेवन पू. ५६१ मुसदेव एक प्रसिद्ध विरू कन पूर्व चे पाष्टळवी बेणातट नगरनो राजा बयो हुतो 'उत्तराध्यक्त सूत्र'नी पूर्णि त्या ते उपस्नी शाम्तिसरि क्ले मिन वन्त्रनी वृत्तिओमां मुख्येवनो वृत्तान्त प्रमाणमां विस्तारबी बने विगत्रवी आपस्त्रे हे पूर्णि अने शान्तिस्रि अनुसार मूळेच उज्जयिनीनी विर हती (नेनियम्बना कथन मुजन, मुख्देन पार्टास्पुत्रनी राजकुमार हती बाने पोताना पिताबी रिसाईने उक्तियोगीयों बानीने रहा हतो.) वे वक मोटो चतकार होना उपरांत गीतकसा क्षेत्रे मर्वमकसामां पण निपुण इतो राज्यविनीनी एक सुप्रसिद्ध गणिका देवदत्ता हेनी साँघे प्रेममां पडी इती, परन्तु गणिकानी माता असउ नामे बोजा एक प्रमिक्त बणिकनी पद्म बरती होनाने कारणे मुख्देवने उद्मियमो छोडीन जान्यां बर्ख पडेपुँ इतं पद्मी ए दक्षिणमां आवेद्मा वेणातट नगरमां वर्दन रक्षो. त्यां कर्द्रना मरमां सावर पाडतो इसो रमार नगररखकोप धने पढडी होचो धन वबरबाम उपर मई जबा माँडघो च दिवसे मगरनो राजाः अपुत्र गरण पाम्यो इतो मंत्रीका नवा राजानी शोधमाँ इता ए मार काधिबासिट करहो अस मूखदेव पासे काकी कमा (मेमिकन्द्रना कक्षन मुख्य मूछ-दवन कोईन हाबीर गर्जना करी, अबे हेपारन कवों, संगार अधिपेक हत्यों चामर बीचन कर्युं, अने कमल सनी उपर भाषी रहाँ: ए प्रमाणे यांच दिश्य अर्था ) परक हेना राजा सरीह स्मिपक असी, पद्मी मस्त्रेवे उज्जीवनीना विकास राजा ज्यार पत्र झसील तथा असेक प्रकारनी भट माक्सीन देकरता गणिका पोडान सोमबानी विनंति करी. अने विकास राजाए देवदचानी इच्छा बाज्या पछी हे कब्स रासी सुमदेव देवदत्तामी साथ सुन्तर्वेष रहेवा तामा ए समये मेहिक माने एक चोर दिवसे लगडा तूनारा तरीके रहेतो ने रात्रे शहरमां खातर पाडीने लोकोने त्रास भापतो एक वारना चोर मृलदेवे युक्तिप्रयुक्तियी मंडिकने पकडचो अने तेनी पासेनु वधु द्वय लई लीधा प्ली एने श्ळीए चढाव्यो.

'ब्यवहारसूत्र 'नां भाष्य तथा वृत्तिमा मूलदेवना राज्याभिषेकनो वृत्तान्त संक्षेपमां अने सहेज जुदी रीते आप्यो छे वळी त्यां नगरनु नाम पणं नथी चोरी करतां पकडायेला मूलदेवनो वध करवानी राजाए आज्ञा करी हती, पण ए पछी तुरत ज राजा एकाएक मरण पाम्यो राजा अपुत्र हतो, तेथी एनी पछी कोनो राज्याभिपेक करवो ए प्रश्न उपस्थित थयो वैद्य अने मंत्रीए राजाना मरणनी वात गुप्त राखीने तथा राजा बोली शकता नथी एम जणाबी, पडदामांथी राजानो हाथ लांबो करावी तेओ मूलदेवना अभिपेकनी सूचना करता होवानुं जणाव्युं. पछी एक वारनी आ चोर राजा थयो होवाथी सामंतो तेनुं योग्य सन्मान करता नहोता राजदरवारमां पोतानी उपेक्षा करता सामंतोने जोईने मूलदेव वोल्यो के 'मारी आज्ञा पाळनार कोई छे के नहि र' ए समये तेना पुण्यप्रमावधी राज्यदेवता वडे अधिष्ठित थयेला चित्रमय प्रतीहारोए केटला ये सामंतोनां माथां कापी नाख्यां आशी बाकीना सामंतो तावे थई गया न

आचार्य हिरिभद्रस्रिए (वि सं ७५७-८२७=ई सं. ७०१७७१) नर्म अने कटाक्षथी मरेल 'धूर्ताल्यान' नामे एक प्राइत कथानक रच्युं छे, जेमा मूलदेव एक पात्र तरीके आवे छे आ धूर्ताल्याननुं वस्तु 'निशीथ सूत्र'ना भाष्य अने चूर्णिमा मळे छे एमा मूलदेव, एलावाढ, अने शश ए त्रण धूर्तों तथा खडपाना नामे धूर्तानी वात छे एमांना प्रत्येक धूर्तिनी साथे बीजा पाचसो धूर्तों अने खंडपानानी साथे पाचसो धूर्ताओ हती. एक वार भरचोमासामा उज्जियनीनी उत्तरे आवेला जीणींबानमा ए वधां ठडीथी थरथरता मले मरता बेटा हतां त्यार मलनेने पत्र वसां के

् मृसदेव 109.1 ४ ज्योबि **पू** १९ 5 **प्रमुख ५** ५६ ६ अतिहासिक संधोपन प्र. ५६६ मुखदेव एक प्रसिद्ध बिट कर भूते ' दो पाछन्द्रमी वेणातट नगरमी राजा बयो हतो. 'उत्तराध्ययन स्व'नी पूर्णि त्या ते उपरनी शान्तिस्रि बन गीन चन्द्रनी वृतिभोमां मुस्टेबनो वृतान्त प्रमागमां विस्तारमी भने विगतवी भाषणे छे पूर्णि भन शान्तिस्रि अनुसार, मुख्देश उन्नसिनीनो पिर हतो (नेमिक्ट्सना कथन मुजब, मुख्देव पाटक्रिपुंत्रनो राजकुमार हती थम पोताना पिठाभी रिसाईन उन्नयिनीमी आमीन रहा। हतो.) वै पक गोटो **पतकार होना उपरांत गीतकसा भने मर्जनकसामां** पण निपुण (त) राज्यिनौनी एक सुप्रसिद्ध गिनका देवद्ता तेनी साथ प्रेममां पक्षे हती, परस्तु गणिकानी मासा अवय नामे बोबा एक प्रमिक विभिक्ती पक्ष करती होताने कारणे म्यदेवने उजीयमी छोडीने बाप्यां वर्तु पडपु हर्तु पक्षी ए दक्षिणमां भाषेमा बेणासट नगरमां जईने रह्यो. स्यां केंद्रेना भरमां सावर पाठवा इतो स्वार नगररखड़ोए यमे पड़ड़ी शीधो जन यबस्थान उपर छई अबा मांडघो ए दिवसे मगरनो राज्ञा अपुत्र मरण पाम्पो इतो. मैत्रीको नवा राजानी शोषमां इता ए माट अधिवासित

करने कर मुक्टिन पासे कानी सामग्री हुता पू माट कान्यक्रम इसने बोहिंग हाथीर गर्जन करी, अबे देवारन कर्मो कुंगार जमियेक कर्मी, चामर बीजन कर्जु, अन कान्य हेनी, उपर आहे रहुं पू प्रमाने पांत्र हिस्स भर्मो ) एटके हेनी राजा तरीके कामियेक बसी, पर्म-मुख्येने उन्यदिनीना विकस राजा उपर पत्र छस्तीन सचा बनक प्रकारनी मेट मोकसीन देकरणा गणिका पोतान संस्थानी, विनिधि कृरी, कर्मे विकस राजाय देवरणानी इन्द्रम जल्मा पत्री हे कबूल रास्ती मुस्परेय देवरणानी शाम सुन्वहरू रहेवा शामो, पू समये मंदिक नामे एक चोर दिवसे लंगडा तूनारा तरीके रहेतो ने रात्रे शहेरमां खातर पाडीने लोकोने त्रास आपतो. एक वारना चोर मूलदेवे युक्तिप्रयुक्तिथी मंडिकने पकडचो अने तेनी पासेनुं बधुं द्रव्य लई लीधा पछी एने श्ळीए चढाव्यो.

'व्यवहारस्त्र 'नां भाष्य तथा वृत्तिमां मूल्देवना राज्याभिपेकनों वृत्तान्त संक्षेपमां अने सहेज जुदी रीते आप्यो छे वळी त्या नगरनु नाम पणं नथी चोरी करतां पकडायेला मूल्देवनो वध करवानी राजाए आज्ञा करी हती, पण ए पली तुरत ज राजा एकाएक मरण पाम्यो. राजा अपुत्र हतो, तथी एनी पली कोनो राज्याभिषेक करवो ए प्रश्न उपस्थित थयो वैद्य अने मंत्रीए राजाना मरणनी वात गुप्त राखोने तथा राजा बोली शकता नथी एम जणावी, पडदामांथी राजानो हाथ लांबो करावी तेओ मूल्देवना अभिषेकनी सूचना करता होवानुं जणाव्युं. पली एक वारनो आ चोर राजा थयो होवाथी सामंतो तेनुं योग्य सन्मान करता नहोता राजदरवारमां पोतानी उपेक्षा करता सामंतोने जोईने मूलदेव वोल्यो के 'मारी आज्ञा पाळनार कोई छे के नहि र' ए समये तेना पुण्यप्रभावथी राज्यदेवता वडे अधिष्ठित थयेला चित्रमय प्रतीहारोए केटला ये सामंतोनां माथां कापी नाल्यां आथी बाकीना सामंतो तावे अई गया व

आचार्य हरिसदस्रिए (वि सं ७५७-८२७ है स. ७०१-७०१) नम अने फटाक्षथी भरेल 'घूर्ता(यान' नामे एक प्राकृत कथानक रच्युं छे, जेमा मूलदेव एक पात्र तरीके आवे छे आ घूर्ताल्याननुं वस्तु 'निशीथ सूत्र'ना भाष्य अने चूर्णिमा मळे छे एमा मूलदेव, एलावाढ, अने शश ए त्रण घूर्तो तथा खडपाना नामे घूर्तानी वात छे एमांना प्रत्येक घूर्तिनी साथे बीजा पाचसो घूर्तो अने खंडपानानी साथे पाचसो घूर्ताओ हती. एक वार भरचोमासामा टर्जियनीनी उत्तरे आवेला जीणोंबानमा ए वधा ठडीथी यरथरता मूले मरना वेठा हता त्यार मृलदेवे एम वहां के रेश्र् ] [ मूजरेण

' आपणे दरके पोतपाताना अनुमयो कहेवा, अने जेना अनुमयो सोटा पुरवार याय तेणे था पूर्वमंडळोन मोजन काप्युं । एमां त्रण पूर्वीनी न मानी शकाय एवी वालोने पण बीजाओए शकाण शासपुराणांगीनी प प्रकारनी कवाओ रज् करी समर्थन आप्यु आ पछो हरिमत्रस्रिना ' पूर्तास्थान 'मां एव आवे छे के संद्रपानानी वातन कोई सामी के सोटी कही शबयु नाँह; सर्वेंए हार स्वीकारी अन पछी सीनी निर्नेतिश्री सदपानाए पोते मोजन पण कार्यु, पण ए बच्चु नहि वर्णवर्ता निशीव कुर्णि ' तो ' ऐस पुंचक्लाणानुसारण जर्म ( माकीनुं ' पूर्वाह्यान ' प्रमाणे बाणी हेर्चुं) एम इहीन बात पूरी इसी के छे ' निश्मेष पूर्णि 'नो समय पण ईसवी समना सासमा सैकाओ अर्थापीन नयी पटल से चे 'पूर्वास्थान 'नो उत्कल का छ से इरिमद्रसूरिहास होनानी संगव नथी को हो चुर्गिकार पासे बीजु कोई प्राभीनतर प्राक्त 'पूर्वाच्यान ' होय अववा का पूर्वोंनी स्रोकप्रपक्ति कथा वे पण ' पूर्वास्थान ' कहवाती होय. पूनी उल्कास तेमणे कयों होय

' आवस्यक ध्व'नी चूर्जिं कते बृत्तिमां मुक्देबन्य मित्र वरीके कंडरिक्तुं नाम छे वे इसिम्द्रसूरिना ' बृत्तेक्यान 'मां एक पात्र वरिके छे मुक्देबनां विदायसा पूर्वता कते बुद्धिवासूर्वेनी क्याको पग भागमसाबित्यमां क्षत्रक स्वक्ते छे एक ठेकाले बुद्धिवान पुढपने मुक्देव वेदो क्या छ

प्राचीन भारतनी भोककबामां बाग बनेशे सा मुख्देव सरेकर बैदिहासिक व्यक्ति बरो एवो दें। विरुट्धिनसमी मत हो; जो के मुख्देव विशेनी वसी बार्लामा बैदिहासिक हरो एतुं कई एमांधी कविट बहु नवी जागमेतर तेम ब बैनेतर संस्कत-माक्त साहित्यमां मृख्देव बिशेनी कवानको सथा एमा भिनोने स्माता उत्कासो सस्पार्थन छै स्टूनक कविना प्रधायनक मांग मां मृख्देव अने देवसेना (देव दत्ता )नी प्रणयकया आवे छे तथा ए माणनो प्रवक्ता मूलदेवनो मित्र शश छे मूलदेवनुं 'कणीयुत' एवं नाय पण एमां छे महाकवि बाणनी 'काढवरी 'मां विन्ध्याटवीना वर्णनमा एक क्षिष्ट वाक्यखंडमां कणीं सुत (मूलदेव) अने तेना नण मित्रो-विपुल, अचल अने जशनो उन्लेख छे काश्मीरी सोमदेव भद्दकृत 'कथासिरिसागर 'ना 'विषमशील छंबक 'नो छेछी वार्तामा-' स्त्रीमात्र कई नठारी होती नथी वधे कई विषवछीओ होती नथी, अतिमुक्तलता जेवी आम्नने वळगनारी वेलोओ पण होय छे '-ए सूत्र पुरवार करवा माटे मूलदेव पोताना ज रंगीला जीवननो एक प्रसंग राजा विक्रमादित्यने कही सभळावे छे, एमां पण मूलदेवनी साथे एनो मित्र शश छे सं १२५५=ई स ११९९ मा रचाये छुं पूर्णभद्र मुनिनुं 'पंचाख्यान ', जे 'पंचतंत्र 'नु ज एक अलंकृत संस्करण छे तेमां ( तंत्र १, कथा १० ) मूलदेव विशेनो एक रसप्रद उल्डेख छे एक राजानी पथारीमा जू रहेती हती त्या आवीने एक माकणे पण पोताने रहेवा देवानी विनति करी "जूए दाक्षिण्यथी माकणनी विनंति स्वीकारी, कारण के एक वार राजाने मूळदेवनुं कथानक कहेवामा आवतुं हतुं त्यारे चादरना एक भागमा रहेली जूए ते साभळ्युं हतु एमा मूछदेवे देवदत्ता गणिकाने कह्यु हतु के 'पगमां पड़ीने करेली विनंति पण जे मानतो नथी तेना उपर ब्रह्मा, विष्णु अने महादेव त्रणे कोपायम।न थाय छे ' ए वचन संभारीने जूए माकणनी विनेति स्वीकारी "

एक प्रकारनी गुप्त साकेतिक भाषा भूलदेवप्रणीत होवाने कारणे 'मूलदेवी' नामधी ओळखाती (जुओ कोऊहल-कृत 'लीलावई-कहा 'नुं संस्कृत टिप्पण, पृ २८)

वळी मूलदेवने स्तेयशास्त्र अथवा चोरशास्त्रनो प्रवर्तक मानवामां आवे छे ' एने मूलश्री, मूलभद्र, करटक, कलांकुर, खरपट, कणांसुत आदि नामोथी संस्कृत साहित्यमा ओळखामा व्यावे के किन्न सनना

रेक्ट ] [मूक्टेव

सातमा शतका प्राधिमां ययेका महेन्त्रविक्रमनमांकत 'महिक्सिस प्रहस्त '(ष्ट्र १५)मां स्तरपटने नमस्कार एम कहो, खेण चौर काल रच्युं!' एवो उन्हेंच के तहीना 'दशकुमारचरित' (टम्ब्यस २)मां चौरीनो प्राचे स्वीकारनार एक पात्र 'कर्णीसने उपदेशना

 २)मां घोरीनो घघो स्वीकारनार एक पात्र 'कर्णाद्वित उपवेशना मार्गामां में बुदि पछात्री!' एम कहं छ भा छात्राणिक उदाहरणोधी ए स्पष्ट वहां के भ्रमी भासपास

कोक्रीपय बार्टीकको रचाया छै। एवा भोडांक विभिन्न अने निस्काण पात्रो पैकीनो एक मुख्येब छ। साहस विदायता अने मुक्त प्रणवर्गा

रावती के सूष्टि दशकुमारकरित ' लेवी प्रापीन कवाकीना मानकी रज् करे छे तेनी व एक विशिष्ट प्रिटिनिध का मुख्येव पण छे एनी कान एना मित्रांनी कवाओं थेम जैन साहित्यमां छे तेन जैनेतर साहित्यमां पण छे ए चताने छ के बत्सराख उदयननी जीवनकवानी खेन मुख्येव विशेनी वातो पण प्रापीन भारतीय कवासाहित्यनुं एक जीवेंद्र और हम्म

२ व्यामा या १६८-६५, ध्यम (सहै ४) भी वृत्ति प्र ३९ १ वृद्धिमासुद्वितः भूतविकात स्रो का कल अपरांत कवरिक

भामे कोषी वृत्ते **छ.** 

४ मिना मध् ९९४' निष्, साथ ९ छ, ९३,०९५

भ काच् पूर्वमाय छ ५४६ ६ साम छ ५३९

६ माम छ ५२७

 श्राष्ट्र पूर्व माग्र प्ट ५४९, बाम् प्ट ५१९ दर्वेष्ट् प्र ५५-५६ दर्वेश प्ट ५७-५८ छ्वाहि.

८ सामे म एपी मुक्तेसवर्गको महारको मालपाद दर्वेषु, इ. ५४ ९. विराधी शीख इंग्लिका क्रियरेवर माल ६ छ ४८८

५ मा विशे बड निस्तार मार्च शामी कुमार मा ३

अकमा मारो लेख प्राचीन साहित्यमा चोरशास्त्र ' येदपाट

मेवाड म्यक नामे तृण विशेष मेवाडमा प्रभिन्न छे

१ प्रध्याभ, पृ १२७

### मोदेरक

उत्तर गुजरातनु मोढेरा. मोढेरक आहारनो उल्लेख ' सूत्रकृतांग-सृत्र 'नी वृत्तिमा छे. 'ए ज सूत्रनी चूर्जिमा मोढेरकनो ए प्रकारनो उल्लेख छे, जेथी ए एक महत्त्वनु स्थळ होबानु सिद्ध थाय छे. '

पुराणोमा आ नगरनुं 'मोहेरक ' एवु नाम मळे छे हैं

१ स्कृशी, पृ ३४३. जुओ खेट आहार

२ जहा पुढ़ी विणइ-केसि तुम मोदिरगातो भागतो भवान् १ सो भणइ-णाह मोदेरगातो, भवद्मामायातो- । सूकुचू, पृ ३४८

३ जुओ पुगु मो मोहेंरक मोदेराना इतिहास माटे जुओ श्री मणिलाल मू, मिस्रीकृत पुस्तिका 'मोदेरा'

### यप्रुन

जुओ यवन

# यवन '

मथुरानो एक राजा. प्राकृतमा एनु नाम जउण, जनुण अथवा जउणसेण मळे छे एना मंत्रीनुं नान चित्तप्रिय हतुं ए राजा विशे आवी कथा छे 'जउणावंक,' नामे उद्यानमा आतापना छेता दंड नामे अणगारनो ए राजाए वध कर्यो हतो दंड अणगार काळ करीने सिद्धिमा गया तेमनो महिमा करवा आवेला इन्हें राजाने कह्युं के 'तु दीक्षा लईश तो ज आ पापथी मुक्त थईश.' पछी राजाए स्थिवरो पासे दीक्षा लीधी

जउण, जवुण आदिनुं<sup>3</sup> संस्कृत स्ह्रप 'अभिधानराजेन्द्र ' ( प्रन्थ

८) क्षत्रा 'पाइभ-सर-महणाको 'ए स्पर्नु छ से प्रमागे 'यनुन ' पर्य पण को के आपी शकाय तथा मधुरा नगर यमुना नदीना ह<sup>े</sup> दसंख होह त्याना राजाने पण 'यनुन नाम आपवार्था आव एमां एक प्रकारन कवोषित सारस्य अणाय छ माई, पर तु मन एनी 'यहन' एवी छावा बधार उचित छाग छ। मधुशुमी एइ बाळे यदन अर्थाए प्रोक्त गत्राओर्नु राज्य इतु ए इतिहाससिद छ एवी क्रोद्र परदेशी राजा भार्मिक भस**्रि**ट्युहाको प्रेराई जैन साधुनी यथ कर द पण संपितित छ माश्रमसाहित्यमा या राजाने 'परपक्ष 'नो दक्का छै, एकी पूर्व परदेशीपणु सूचमाय छे एम समज्ज्ञ ह

#### 1 Feb # 199

२ काच्, बत्तर मान पू १५५. विशेष धीर्ववस्य (पू १९) सौ का प्रकेषको निर्देश छ तर्ग राकाई काम वेकबदक आपी के अने रामाए साबु उपर वा कार्ता साबुवे देवस द्वान वयुं एस क्यू है

३ परपक्तो उत्तरको भक्तो वह होत सहस्रापरास्य है।

तं पुत्र अतिधवनानी दिस्क्षेत्रविकारणं नाउं ह

मिमा यह ३६७९

परप्रस्थी सन्तये हरो च्या बडाएर सहाजरावा निष् (वर् 11 ) 8 441

मनुरा नवरी सबुध्यो राजा श्रद्धपावकं धरकानं आच् प्रसार भाग प्र १५५

महराए शहरासेयो राग विश्वापनो व से येथी विश्वे प्र १९४

### यञ्चोदे**वस्**रि

चंदगच्छना बीरगणिमा शिष्य बीचण्डसूरिना शिष्य एमणे सं ११८ = ई स ११२४ मां वयसिंहना राज्यमां काणदिस-बाहर्मा सीवर्णिक नेमिचन्द्रना पौत्पशाळामां खूरेने 'पासिक सूत्र'

उपर ' मुखावबोधा ' नामे वृत्ति रची हती े यशोदेवस्रिए संख्याबंध आगमेतर धार्मिक प्रन्थो उपर पण टीकाओ छखी के व

- १ पाय, प्रशस्ति
- २ जिसाइ, पृ २४४

### याद्व

यदुना वंशजो, जेओ प्रथम शौरिपुरमां अने पछी द्वारकामा वसता हता

१ जैन पाहित्य अनुसार यहुना वशवृक्ष माटे जुओ कैन, 'ॲन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ ३७६

## यौगन्धरायण

वत्सराज उदयननो मत्री अवितना राजा प्रद्योते उदयनने केद पकटचो हतो, एने छोडाववानो प्रयत्न करतो योगंधरायण उज्जियनो आव्यो हतो उदयन अने वासवदत्ताने हाथणी उपर वेसाडीने नसाडवानी योजना तेणे विचारी, अने पछी ए योजना परत्वे पोताना वुद्धिवैभवनु अभिमान निह जीरवी शकायाथी मार्गे जता ते एक श्लोक बोल्यो के—

यदि तां चैव तां चैव तां चैवायतलोचनाम्। न इरामि नृपस्यार्थे नाहं यीगन्धरायणः॥

ए ज समये नगरमां फरवा नीकळेला प्रद्योत राजाए आ शब्दो सांभळ्या अने कुद्ध दृष्टिश्री एनी सामे जोयु पण यौगंधरायणे गाटपणनो देखाव कर्यो, एटले प्रद्योत पोताना कोपनो निष्रह करीने चाल्यो गयो थोडा समय पछो वत्सराज अने वासबदत्ता उज्जियनीशी कौशाबी चाल्या गया अने घणो प्रयत्न करवा छता प्रद्योत एमने पकडी शक्यो नहि. धर्दी ए नोंपसु स्तप्रद भरा क उपर टिक्कि ''यदि हां पैन' ' ए स्रोक नर्भावा पाठांसर साथ, मासना 'मितज्ञामीनपरायण' नाटक ( श्रीक १, स्त्रा ८ ) मां योगपरायणना मुस्समं मुकायेको छे एक स बनिवंत, सक्तिय बस्तुनो जुदी जुदी परिपरासीमा केश रीते विनियोग सर्वा एन सा पण एक सिक उशहरण छे

जुमो सदयन, मधोत

१ साबु उत्तर साब छ १६१-६६ जन परिचा बहुबार ना कारता के ज्रवेचना स्थाद वर्षन कर हुओ हेमच्यहस्य विचारश्यासन-पुरुष्परिक वर्ष १ वर्ष ११ गिरास आर्थि

प्रकृतकर्मा सञ्जनने मात्र प्रकृत पात्र राज्यानी सूट हती

आर्थ रिक्षतस्रिए चोमासाना चार मास माटे पात्र उपरात एक मात्रक' (नानु पात्र) राखवानी छूट आपी हतो. आर्थ रिक्षतस्रिना समय पूर्वे साध्वीओ साध्वीओनी पासे आलोचना लेती, पण एमना समयथी साध्वीओए साधुओनी पासे आलोचना लेवानु ठर्युं <sup>८</sup>

आर्थ रक्षिते पोतानी पछी गच्छनुं आधिपत्य दुर्बेल पुष्पित्र नामे साधुने सोंध्यु हतुं, आधी गोष्टामाहिल नामे बीजा विद्वान मुनि जिओ एमना मामा थता हता तेमने माटु लाग्यु गोष्टामाहिल सातमा निद्वव वन्या एमनो मत 'अवद्विक' तरीके जाजीतो छे

आर्थ रक्षितनो जन्म वि सं ५२=ई स. पूर्वे ४ मां, दोक्षा सं. ७४=ई. स. १८ मां, युगप्रधानपद सं. ११४=ई. स ५८ मां अने अवसान स १२७=ई स. ७१ मां थयां हतां.

- १ 'अभिधान राजेन्द्र,' भाग १, पृ. ११२
- २ जुओ दशपुर
- ३ जुओ तोसलिपुत्राचार्य
- ४ जुओ भद्रगुप्ताचार्य तथा वज्र आर्य
- ५ उशा, पृ. ९८, उने, पृ २३-२५
- ६ जुओ 'परिशिष्ट पर्व 'मां तेरमो सर्ग तथा 'प्रभावकचरित 'मा ' 'आर्थरिक्षसमूरिचरित ' भार्य रिक्षतना कृतान्त माटे जुओ उन्नि, गा '४८-९७, उशा, पृ ९६-९८, उने, पृ २३-२५, इत्यादि. एमने विशेना प्रासगिक उल्लेखो पण भागमसाहित्यमां भनेक स्थळे हे, जेमके— मस, गा ४८९, जीकमा, पृ ५३, किक, पृ १७२-७३, कदी, पृ १५१, इत्यादि
- ७ निभा, गा ४५१४, निम्नु, माग ४, प्र ८८७, स्यम् (उद्देव ८ उपरनी दृत्ति ), प्र ४१-४२
  - ८ व्यम ( उद्देव ५ उपरनी वृत्ति ), पृ १६
  - ९ जुओ गोष्ठामाहिल.
  - ् १० प्रच ( अनुवाद ), प्रस्तावना<u>, पृ.</u> २१

सपागण्डाभिपति सोमसुन्दरस्रिना शिष्य सुवनसुन्दरस्रिना शिष्य

एमण सं १५९६ –ई स १४४०मा श्राद्यमतिश्रमणसूत्र ' उपर ' शर्धशीविका ' मामे कृति रुची छे ' समग्रेसरानी कृतिनो टन्डेस स्मन्तिचेडे संबुद्धीपप्रज्ञति 'नी कृतिमां कर्यों छ

१ :भाष्राः संग्रहात्रस्य तथा प्रदक्ति

२ वजहा द्व १९४ १६६ ४११ रथमेमि

शौरिपुरना समुद्रशिययःताजाना, राणी शिवादेशीयो योगंडा चार पुत्रो इता-मरिप्रमे में (मैनिनाय), रवनेमि, सरवनीम सने दबमेन उप-सेननी पुत्री राजीमतीन परणवा जाटे नियनाव चता इता रयो मार्गमां जानने मोद्यन बापवा माटे बिस्सी पहालोना चिरकार सीमळी तेमने

वैराम्य उत्तम बयो बने तेमणे दीया धीथी. पमनां बाग्दणा राज्ञी-मती पण वास्तिय बमां पछी एक वार बर्गाकतुमां द्वारका पासेना रैबवक उद्यानमां रहेका नेमिनावने बंदन करिने वासतां राज्ञीमतीमां वको बरसादमां मीजायां तेमणे एक मुखानां बाहाय क्रीपो बने

तमाम नको ज्ञारिन ते स्टबन्या मेंड्यां य्-समये मेनिनावना मार्ट् रचनेमि वेमणे पण बीन्छा छोत्री हृती होना कुछना कारणवी गुष्काणी प्रदेस्या वर्ने रावीमतीने बोहिने विकारवश वया पण रावीमतीना उपदेशांबी तेमो पोठानी मुख्य समन्त्रा अने कार्त रचनेम अने रावी-समी बनने वेसक बान पाम्यां

१ रणेकिन्सरे राजिस्तीमा अस्तुत् क्रीलमप् क्षेत्रसम्य क्षेत्रसम्य क्षेत्रसम्य क्षेत्रसम्य क्षेत्रसम्य क्षेत्रसम्य क्षेत्रस्य स्थानसम्बद्धिः इत् १९५०-१५३ कर्ये, इत् १९५०-४६ कर्ये, इत् १९५०-४६ कर्ये, इत् १९ --११ प्रत्यापिः श्लासपितिः

वजरवामीय बार वर्षेचा सुज्याळनी सरूमातमां)चा पर्वत उपर

जईने अनशनपूर्वक देहत्थाग कर्यो हतो. एमना देहत्याग पछी इन्द्रे त्यां आवीने पोताना रथ साथे ए स्थाननी प्रदक्षिणा करी हती, अने ए कारणथी पर्वतनुं नाम 'रथावर्त ' पडचुं हतुं '

रथावर्तगिरि कुनरावर्तनी पासे आवेलो हता विजी एक परं-परा प्रमाणे, वज्रस्वामी पांचसो साधुओनी साथे रथावर्त पर्वत उपर आव्या हता त्यां एक क्षुल्लक—नाना साधुने म्कीने तेओ वीजा पर्वत उपर गग्ना हता. क्षुल्लकना कालधर्म पास्या पछी लोकपालोए रथमां आवीने एमनी शरीरपूजा करी हती, आथी ए गिरि रथावर्तगिरि तरीके लोकमां प्रसिद्ध थयो वीजा पर्वत उपर वज्रस्वामी मरण पास्या इन्द्रे हाथी उपर त्यां आवीने ए स्थाननी प्रदक्षिणा करी त्यारथी ए गिरि 'कुंजरावर्त ' तरीके ओळखायों

रथावर्त ए जैनोनु एक प्रसिद्ध तीर्थ हतुं. मुनि कल्याणविजय-जीना मत प्रमाणे ते माळवामां विदिशानी पासे आवेलुं हतु. ४

### १ भाम, पृ. ३९६

२ जुओ कुक्षरावर्त, वळी मुनि कस्याणविषयजीकृत 'वीरनिर्वाण सनत् और जैन कालगणना,' पु ९००

.३भमस, मा. :४६७∸४७३

४ प्रच (अनुवाद), प्रतावना, पृ १७. बीजा उल्लेखो मोठे जुओ कपु, पृ. ५११-१३, कवी, पृ. १४५.

### राजधन्यपुर

राधनपुर उपाध्याय धर्मसागरे 'राजधन्यपुर 'मा सं १६२८= ई .स १-५७२मा '-कल्पसूत्र ' उपर '-िकरणावली '- नामे प्रमाणमूल टीका रची हती.

ज्ञओ धर्भसागर उपाध्याय

#### राजीमधी

गुणो नेमिनाय, रयनेमि

#### राथ आचार्य

भवस्युरना जित्राष्ट्र राधाना युवरावे राव भाषार्य पाने देखा श्रीवी हती. तेला एक गर बिहार करना तगरा नारीमां भाष्ट्रण हता । राव भावार्यना श्रीवा एक शिष्य-भेगनुं मान पण राव हुदुं तेली-अवसिनीमां हता त्यां राजपुत्र वने पुरोहितपुत्र सायुज्योने हेरान करता हता, पना समाधार भाषता अवसिनीची सायुजी उगरामां भाष्या हता

- ९ शुको समस
- ९ जनवपुरे प्ररक्षना धीयो शहरस नवरेसुज्येकि ।

क्षत्रका रावस्कामणा प्ररोबिए राज्युत्तो व व (कलि गा ५८)

स्थवपुरं नाम परिवार्ष तस्य निनयपूरं एका तस्य पुत्रो क्रारामः स्थे एताम्पीनाम मेरिए स्थान्स्यो । से व सम्बन्ध निहरंतो यहो तथरे अवरि तस्य राहाशिस्या सम्भवेताओ सम्यवद्यवस्या तम्बर्धिए निहरंति स्रो सम्बन्ध सङ्ग्री तस्ये, पना राह्यमीन है पुरिक्या निक्तवार्थ ति अवित-सन्तरी प्रोविक्तां य गाँविति क्या प्र १९-१

वयी तामो-राहावरिवस्य चन्त्रंतेकाची मन्त्रवाहा माना आवस्या उन्तेजीए निवस्ति वेर्डि वयमाची बाहुणी तबरे मान राहावरिक्यानेनं बने पु. २६

#### राष्ट्रहर

एक सनिषक्ष राठोड ' बान्य ते ववरभी राष्ट्रकृत राठाड र राठोड ए कमे बावेको छे योजनार्थे के परिश्विततानी रातिय राष्ट्रकृत 'नो निर्वेश कथी छे ते उत्तरबी अनुमान बाब छे के दमना समसमा गुर्वेर देशमा राष्ट्रकृता सुनात दता '

१ 'बहिमन् राष्ट्रयाचे क्रके वाओ सुक्रमी हु. १

# राप्ट्रवर्धन

उज्जियिनोना पालक राजानों पुत्र विशेष माटे जुओ अवन्तिवर्धन, पालक, णप

# रिष्टपुर

दशमा तीर्थं कर शीतलनायने प्रथम भिक्षा रिष्टपुरमा मळी हती े जुओ अरिष्टपुर

१ आनि, प्ट ३२४

# रैवतक

उज्जयंत अर्थात् गिरनारनुं बीजुं नाम रैवतक छे रैवृतक पर्वत द्वारकानी ईशाने आवेछो हतो रैवतकमा नंदनवन नामे उद्यान हतुं अने सुरप्रिय नामे यक्षनुं आयतन हतुं सामान्य शते रैवतकनो उल्लेख पर्वन तरीके छे मूलसूत्रो जेवा के 'अंतकृत्दशा', 'बृिण्-दशा,' 'जाता कि अथा ' आदिमां रैवतकने पर्वत कह्यो छे, ज्यारे पठीना समयनी केटलीक टीकाओ आदिमा रैवतकनो उल्लेख उद्यान तरीके छे व

रैवतकना परंपरागत वृत्तान्त माटे जुओ 'विविधतीर्थकल्प'मां 'रैवतकन्प', वळी जुओ **उज्जयंत**, द्वारका.

१ 'निध्कम्य ' निर्गम्य द्वारकात द्वारकापुर्या ' रैवतके ' उज्जयते 'स्थित ' गमनान्निवृत्त , उद्या, पृ. ४९२

२ जुओ द्वारका

३ वृक्तम, भाग १, पृ. ५६-५७, कप्तु, पृ ३९९-४२४, कक्ती, पृ १६२-६८, इत्यादि.

## रोइक

उज्जयिनी पासेना नटोना एक गामहामां वसतो नटपुत्र. एनी जीत्निकी बुद्धिनी चतुराईभरी कथाओ आगमसाहित्यमा जाणीती छे. रामीमची

जुलो नेमिनाय, रथमेमि

राष आचार्य

भपसपुरना विश्वश्च राजाना युवराचे राय जापाय पारे बीचा श्रीभी हती तेजो एक चर विदार करता सगरा नगरीमां भारूमा हता. राय भारामेना बीजा एक शिष्य-चेमतुं मान वण राम हतुं तेजो-उज्जीमनीमां हता त्यां राजपुत्र कने पुरोहितपुत्र सामुज्योने हरान करता हता, पना समाधार आयवा सज्जीपनीची सामुज्यो तगरामां जान्या हता

५ हमी सगरा

९ सम्बद्धारे सुपराना धीतो राजस्य मगरानाओप ।

अस्त्रा राष्ट्रकमना प्रतिक्रित राज्यको व ॥ (वनि व्य. ५८)

स्वत्वसूर्यं बार्य परिद्रानं तस्य विश्वतम् रावा तस्य प्रतो कुरतम्य, स्रो सहावीसम्य भीतिए स्वाहनो । तो य काव्यत्र विहरितो पत्रो तपरे कार्य, तस्य साहावीसस्य सम्मदेनानी काव्यतह्वतस्य उपयोज्ञिय विहरित त्रो आपन्य सहुन्यो तस्य, गाना सहस्योतं ते पृथिक्या विश्वतस्य ति असीर-सम्पूर्ण प्रतिस्मृती व वार्षिति उसा इ १९-१

वधी सुन्नो-पदानविकस्य कन्तरंखाणी बन्नरहाम् पास्य बानविका उन्नेत्रज्ञीत् विद्वति वेदि बस्त्रज्ञाच्यो बाहुको असरं सन्ता राह्यस्वीतसस्यीत असे ए. २६

#### राप्ट्रकट

एक सिन्धम् इष 'राठोड ' सम्द ते उपरक्षी राष्ट्रकूट / राठोड र कमे आदेको छे सीजायार्थे के परिश्विततानी रितेष राठोड र कमे आदेको छे सीजायार्थे के परिश्विततानी रितेष राष्ट्रकृत ने निर्देश कसी छे ते उररकी अनुसान थाय छ के दसना समदमा गुर्वर देशमा राष्ट्रकृत सुज्ञात इसा है

९ वरिकर एप्रस्थरी <del>इन्हें</del> वाओं सुरुग्ने हुः १३

एक महाराष्ट्री मल्यो तेणे लाटवासीने प्छच्च के 'लाटवासीओ कपटी' कहेवाय छे ते केवा ''लाटवासीए कहुं, 'पछीथी बतावीश 'मार्गमां सवारनो समय वीती जतां पोने ओढेल वस्न महाराष्ट्रीए गाडा उपर मृत्युं. लाटवासीए एनी दसीओ (लटकता छेडा) गणी लीधी पछी नगरमा पहांच्या पछी महाराष्ट्रीए पोतानुं वस्न लेवा मांडचुं, एटल लाटवासी बोल्यो के 'आ तो मारं वस्न छे 'महाराष्ट्री एने राजदर-वारमां लई गयो त्यां विवाद थतां लाटवासी बोल्यो, 'मडाराष्ट्रीने पूछो के वस्न वसीओ केटली छे 'महाराष्ट्री ए कही अक्यो निह अने लाटवासीए ते कही, एटले वस्न लाटवासीने मल्युं राजदरवारनांथी 'बहार नोकल्या पछी लाटवासीए महाराष्ट्रीने बोलावीने वस्न पाछुं आयुं अने कह्यु के-'मित्र! तें पूछचुं हतुं-एनो आजवाव छे लाटवासीओ आवा होय छे '

लाटवासीओ जेने 'क्षीर' कहे छे तेने कुडुकः (घणे भागे कूर्ग)ना वतनीओ 'पीलु' कहे छे. लाटदेशमां 'दवरक—वलनकः'—दोरानाः ग्रंचळाने- मांगलिक गणवामा आवे छे सा 'दवरक—वलनक' ए नाडाछडी होय ए संभवितः छे.

लाटदेशमा धान्य भरवानी कोठी 'पल्लग ''अथवा 'पल्लक ' (सरo गुज 'पाल्लं '=कोठी) कहेवाय छे ते ऊचे अने नीचे पहोळी,' पण छेक उपर कईक सांकडी होय छे 'लाटदेशनी ' रूतपोणिका '-रूनी पूणी महाराष्ट्रमा 'पेलु' कहेवाय छे '

छाटदेशमां समान वयनी सखीओने 'हिल ' (गुज़ 'अली ') भने नणंदने 'भद्दा' कहीने संबोधवामां अवि छे कणस्लांमांथी भनाज छुटु करवानी क्रिया 'जोवण,' चोखानुं धोवण 'काजिय' के 'काजिक' (गुज 'कांजी') कहेवाय छे छाटवासीओ जेने 'अहुषल्लाण' (घोडानुं पलाण, एनु गुजराती रूप 'आइपलाण' १६८ ] '[परोबक

प्रकारों असाणे रेह्नक छंदरे उक्षांपतीना राजान प्रसन्त प्रकरित एतो मंत्री बयो हतो छोक्यार्काना तुष्त्रनायक अन्यासमां रोह्नका संबंधमां मद्धती कथाओं पंजी महत्त्वती छ, केम के पंजी प्रक्रियां सहेच पेरकार साथे भोज धाने कांक्षिदास तथा अक्ष्यर धाने बौरतकने बिहा पंज प्रचक्ति छे रोहकुम नामे चढेकी कथाओंनो निर्देश 'नैदि स्व 'ना भाष्यमां छे-जो के पंजी विस्तार तो टीकान्ज्जिंमों छे-प्रचर्म छोक्ककथा सरीके पंज प्रमनी प्राचीनसानु पहेंचे अनुमान बहु सके छे "

१ ब्राम छ ५१४-१४ मेम छ १४५-४६

६ रोडकमा इदिकानुर्येती कमाओ साथे सुधी। प्रवासंयु-गुजराय-बसाबार पीनोस्तमा अंक, री. १९९७ मी मारो केवीं श्रवयुत्र रोडक न्यान गावा.

#### सह

साटदेश 'कस्पस्य शी टीकाओमां 'राज्यदेशनाम ' भावां के त्यां साटनी पण उत्केख के 'साटदेश वहे सामान्यत आवनी इकिन गुवरात उदित के चेतुं पाटनगर सठकच्छ हाई पण एक काळे साट पढ़े उचर सिन्भना सावकागा (सारसाना)बी मांबी प्राथम मारतनी समुद्रकिनारानी खालो प्रदेश उदित हती ए विस्मनी विग्रह्मार चर्चा माटे तवा स्मटनी स्मूच्यांच माटे सुक्षों पूर्णुमां झाट.

जैन भागमसाहित्यमा सम्बेखोमां 'छाट ' बढे ।हाइनी दक्षिण गुकरात च चिहित होय 'पम 'क्याम छे प्रमांबी जाट तथा त्यांना बतनीकी विशे केटस्पैक प्रकार्ण पण रसिक सामग्री मळे छे छाट विषयमां बरसादमां पाणीबी भाग्य मीपचे छे छाटमा बतनीआने 'मुंट'—इपटी कहा छे सथा पम स्माती एक रसिक वार्ता आपी छे एक।स्टारांगी गाह्यमां बेशीने कोई नगरप्रतस्क अती हतो. मर्मामां लाटवेजनी क्षीओना फाउ-बागिद नेपायनी प्रवास। साटे औदीत्य देशनी खीओना वय-परिवाननी निन्दा करती क्षीक पण एक स्थळे उन्नन थयेली है

- ५ स्टबं, भाग २, ए ३८३-८४ '
- २ ध्यभा मा ८४५, व्यम, भाग४, पदा भाग २, पृ ६९-७०
- आन्, प्रभाग, प्र २०
- ४ आम, पु ६, विशो, पु १८
- ५ आम, प ६८, ११३, नम, पु ८८, प्रम, पु. ५४२
- ६ विद्यो, पु ९२२ जुशे महाराष्ट्र
- उद्वेचू, पृ २५० अहीं चूर्णियार एशो शीणो नेद पांडे छे के राटमा धर्माने 'इलि' बहे छे, उबारे वरदातट (वर्धा नदीना किनाराना प्रदेश) मा तेने 'इलि' तरीके संवोधाय छे.
  - ८ सोनिहो, प्र ७५
  - ९ वक्के, भाग ३, पू. ८७१
  - ५० ऑसूझ, पृ ५९, जीम, पृ २८२; हाघअ, पृ ४३
  - ११ निच्, पृ २५४
  - १२ दबेच्, पृ. २३६
  - १३ निचू, भाग १, पृ ४६, आचू, उत्तर भाग, पृ ८१, आम (उत्तर भाग, पृ ८१) एटल ज मरे छे के लाटमा मामानी दोक्तरी गम्य छ, आचू वधारामा एम पण नोंधे छे के गोल्ल देशमा भगिनी गम्य छे, 'विच्चो 'ने ('विच्चाण'—अर्थात् वचमां रहेनाराओने १ सध्य प्रदेशमा रहेनाराने ?) मातानी सपत्नीओ गम्य छे
  - १४ स्यास्थ, पृ २११ छन्दो-गम्यागम्यविभागो यथा-लाटदेशे मातुलभगिनी गम्या अन्ययागम्येति ।
    - १५ सभव छे के 'मातुलभागिनेया '-माशीनी पुत्री होय
  - १६ णेवत्य भोयडादीय भवति । ''भोयडा'' णाम जा लाडाणं कच्छा सा मरहद्रयाण भोयडा भण्णति । त च षालप्पभिति इत्थिया ताव प्रधन्ति जाव परिणीया जाव य आवण्णसत्ता जाया ततो भोयण कज्जति,

१६०] [स्राह

प्यु बह शके; ) इन्हें छे ते बीचा प्रदेशोमां 'बिछि' सरीके मोठसार छ' पक सास प्रकारनो वनस्पति स्मटबासीओमां श्ववहां (वर्षांचीन गुच 'ईक्क') नामे प्रसिद्ध छे' स्मट को महाराष्ट्रना करनी भोसाने 'क्र्र' कहे छ, पने,च प्रवेशना बासीओ 'भोदन,' प्राविद्धा 'चोर' कने कारमों 'कनायु' कहे छे '

छाटनी केटछीक कार्यक्रीनो वण निर्वेश छे 'निशीववार्णि' प्रमाणे, छारमां मातानी दोक्ती नान्य छ, वण शाशीनी दीकरी लगान्य छे ' स्थानांनसूत्र'नी लामपदेवस्थिनी इस्टि प्रमाणे खाटदेशमां 'मातुक्तमांन्ती'-माशी गान्य छे वण धन्यत्र ते लगान्य छे 'र

चा छेल्को उल्बंख चित्रय झाँग छे नेम के सामान्य रीते चार्चु बन नहि जो के टीकानो पाठ चा वाबतर्मा रपट छे तो छी कर्मनी रपदता होना छता पाठमां केई प्रकारनी जटता प्रवेशी हुसे हैं

'निसीयपूर्णि'मां प्राष्ट्रत इस्त् ' मोयझा 'नी समजूती का प्रमाणे भाषी छे स्वाटवासीयो सेने 'कुच्छ ' कहे छे छे सहाराष्ट्रमां 'मोयसा' कहेताय छे बौको बांध्यणकी मांडीने स्वय या बाद सममां बता मुत्री कुच्छ यदि छे सममां बाय त्यार मोधन करवामां बादे छे, त्यबनोने बोखानी क्या पाधरवामां आहे छे, सने ए समयनी कुच्छ बांधवानुं संघ बाय छे '

छान्देशमां वर्षारद्वामां मिरियत श्वथम मखबाध-साराहि नामे उसस थाय छ मूमिदाह ए एण एनं बोर्सु नाम छे ' छाटबासीको ध्यवणपूर्णिमाने दिनसे आवाडी धूर्णिमा करे छे एम 'बावस्थक पूर्णि 'नीवे छ वश्चित्यस्थमां छोर्डार अने कक्षान्त ब्राम्यस्य गणाय छ तेम साटमां नमेंडार अथम गणाय छे '

मारदेशनी स्त्रीभानां जरा धने विद्यापतानुं वर्णन करतो एक भ्योक भागमसार्थियमां केरखेक स्थाने उ.ठ. करणामां भारमी हे " १ वृक्तमा, गा ३५३१, वृक्त्षे, भाग ४, पृ. ९८३, निमा, गा १९३९; निचू, भाग २, पृ. २५५

# लोइजङ्घ

उज्जियनीना राजा प्रयोतनो दूत. ते एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो

जुको भरकच्छ.

# वज्र आर्य

एमने विषेनी कथा आ प्रमाणे छे

आर्थ वज्र अथवा वज्ञस्वामी अवंति जनप्रदमां तुंबवन प्राममां वसतां धनिगिरि अने सुनन्दा ए दंपतीना पुत्र हता. वज्ञस्वामी माताना गर्ममां ज हता, अने धनिगिरिए सिंहिगिरि गुरु पासे दीक्षा छोधी हती. जन्म पछी वज्रस्वामी पोताना ज़ुंभक देव तरीकेना पूर्वजन्मनुं स्मरण कराने रोया करता हता, अने एना आ सतत रुदन्थी माता खूव केटाळी गई हती आ वाळक एना दीक्षित पिता धनिगिरिने सोंपवामा आव्यो त्यारे ज छानो रह्यो व्रज्ञ जेवो शक्तिशाळी होवाथी आ बाळक वज्र नामथी ओळखायो केटलाक समय पछी सुनंदाए आ बाळकने साधुओ प्रासेथी पाछो मेळववा प्रयत्न कर्यो, पण ज्यारे ते न आव्यो त्यारे माताए पोते ज जैन साध्वी तरीके दीक्षा छीधी.

बाळक वज्रस्वामीने शय्यातर स्त्रीओए उछेर्या तथा साध्वीओना उपाश्रयमां रहीने तेओ अगियार अंग भण्या वाल्यावस्थामां ज एमनी असाधारण वद्वताथी प्रसन्न थईने गुरुए एमने वाचनाचार्य बनाव्या हता एक वार गुरु सहित बंज्रस्वामीनी दशपुरमां स्थिति हती त्यांथी उज्जियिनीमां दश प्रविधर भद्रगुप्ताचार्य पासे जड़ने तेमणे दश पृवींनो अभ्यास कर्यो ए पछी बज्रस्वामीने गच्छ सांपीने सिंहिमिरि आचार्य अनजनप्रविक काल्धर्म पाभ्या. स्पर्कमेक्टेजन पश्लो दिज्यति तप्पन्निर्दे फिट्ट् मोघवाः निम् मृत्य ९ ए ४६

१० विशेषपूर्विकारः प्रवाह विशेषक्रमी ति शावसम्बद्धत्व अन्तरः सा बाववित्रम् वरिवारते अपद ति [ विरिकं(क)-कि भूमिवाही ति भन्ति होदे ] वृद्धते अन्त १, ४, ८ ७

१४ शाहादी-भाषादपुण्यसम् द्वह, कालाल पुण सन्तरपुण्यसमार मनति भाष्, उत्तर मात ए. २२१

१६ कियु माय ५ छ १११७

२ स्वास्त्व पू २१ ४४५ प्रस्वात पू.१३५, पान पू ४४ छमी दवा अन्त्रीप्रमुदीशमन्यदमाना अध्यक्षकावि सा सन्त्रवा.

> कर्मकरम् सरोमाझी संदर्भः पीमकरतनी । किं मादौ यो मध्य साध्यक्ष देव,सायपि हर्ममा ॥

्लासुम १, ११ ११ तासमेनस्थलमाया अध्यक्तनवादिनेपन्यस्य व्यवस्थादि स्र नेपन्यसम्बद्धाः स्था---

दिग नार्रेणैदीच्या बहुबहनाकादिराङ्गतिहरूत् । वरीतन म बूटी बहुमीदास स्वति संग्रेति छ पास छू, ४४

स्रायार्थ

एक कार्नामें एमना नाम उपस्की ठेकी काटना इसे एवं अनुमान बास के

बैन साम्बनु सामान्य विधान पूर्व छ के सम्यातर—बससि आप-नारना गृहेची सामुण विंह न छैवा हुने, एक व गुरुना क्षिम्बी बम्मा<sup>9</sup> संक्रहासने कमल वे जुदी बससिमां रहेता होय तो राज्यातर क्षेत्रे गणता ' बंजे रवळ रहेळा सानुष्यो सवीर सूच्यीक्यी कर्या पढ़ी सूछ उपाध्यानां भावे ता बन्ने रखानना माळको सन्यातर गणाव करी बो युक्त उपाध्यानं नातीने सूब्यीक्यों करे तो एक स सम्बातर गणाव. भा बात्त्रमां छाटाबार्वियों सत्त पदो छे के स्मां ध्यायाँ बस्सा होव ते वस्तिनो मालिक सम्यातर गणाय, बोडी दसतिनां माळिक सम्यात्म गणाय गरि १ वृक्तमा, गा ३५३१; वृक्त्ते, माग ४, पृ ९८३, निमा, गा १९३९, निचू, भाग २, पृ २५५

# लोइजङ्घ

उज्जियनीना राजा प्रद्योतनो दूत ते एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो.

जुओ भरकच्छ.

# वज्र आर्य

एमने विषेनी कथा आ प्रमाणे छे ।

आर्य वज अथवा वज्ञस्वामी अवंति जनप्रदमां तुंबवन प्राममां वसतां धनिगरि अने सुनन्दा ए दंपतीना पुत्र हता. वज्ञस्वामी माताना गर्भमां ज हता, अने धनिगरिए सिंहिगिरि गुरु पासे दीक्षा लीधी हती. जन्म पछी वज्रस्वामी पोताना जृंभक देव तरीकेना पूर्वजन्मनुं स्मरण कराने रोया करता हता, अने एना आ सतत रुदनथी माता खूव कंटाळी गई हती आ वाळक एना दीक्षित पिता धनिगरिने सोपवामा आब्यो त्यारे ज छानो रह्यो वज्ञ जेवो शक्तिशाळी होवाथी आ बाळक वज्ञ नामथी ओळखायो केटलाक समय पछी सुनंदाए आ वाळकने साधुओ प्रासेथी पालो मेळववा प्रयत्न कर्यो, पण ज्यारे ते न आब्यो त्यारे माताए पोते ज जैन साध्वी तरीके दीक्षा लीधी

बाळक वज्रस्वामीने शय्यातर स्त्रीओए उछेर्या तथा साध्वीओना उपाश्रयमां रहीने तेओ अगियार अग भण्या वाल्यावस्थामां ज एमनी असाधारण वद्वताथी प्रसन थईने गुरुए एमने वाचनाचार्य बनाव्या हता एक वार गुरु सहित वज्ञस्वामीनी दशपुरमां स्थिति हती त्यांथी उज्जियनीमां दश पूर्वधर भद्रगुप्ताचार्य पासे जहने तेमणे दश पूर्वोनो अभ्यास कर्यो ए पछी वज्ञस्वामीने गच्छ सोमीने सिंहगिरि आचार्य अनञ्चत्र्वक कालधर्म पाभ्या दुष्काळची पीडा पामला जैन सबने तभी पार्टास्पुमयो पुरिका-पुरी नामे नगरीमां सर्वे गया हता च्या नगरनो राजा बीड होंगे, अने तेणे जैनाने पर्युषण पर्वमां पुत्रो आववानो निषय क्यों हतो, तथी बज्रस्वामी खाडासगामिनी विद्यायी माहेखरी नगरीमां बहैन जिनपूजा मार्टे पुत्रो झान्या हता चा आकारगामिनी विद्या तेमण आवारगासूत्र मां 'महापरिहा ' अप्यानमांबी उद्येश हती एम करवास स्व

बार बर्वना एक मोटा बुष्काळना समक्ष्मा वळखामी एक पर्वत उपर अनशन करीने काकपर्स पाम्या, जे पर्वत पाछळची 'स्वायरें' सन्दिक प्रसाद मचो

बस्रवामी एक प्रभावक कैन आवार्य हुए। तेमनो विद्वास पुरस्के माळवा, मत्य अर्ग कांक्ष्यन्। प्रदेशमां बबो हुने. ओ के लेमना शिष्योप कोंकणमां बिहार करूंछ छे, पटक सम्ब छे के तेलो पण कराच कोंकणमां काम्या होग आये रक्षितस्परित सादानाव पूर्वेल अध्ययन बज्रावामी लाह कर्तु हुन्ने बज्रावामीना नामधी साधुमोनी बजरासना प्रवर्तमान वर्ष हुने

पुराप्रधान पहाबक्षीओंने आवार शिनाओं कन्माणिविश्वयंत्रीए बब्रू स्वामीना समय विशे एको निर्धय कमी छं के तेमनो कन्म सं २६ चई स पूर्वे १०मां वीका स २४००६ स पूर्वे २२मां पुरा प्रधानपद स. ७८००ई स २२मां बन स्कीवास सं ११०००ई स ५८मां बमो हतो.

बन्नस्तामीना बीबनना प्राप्तिक उस्केटनो पण आगमसादित्यमा अमेड रबक्रे हो

१ दुभी सङ्गुतावार्ष

१ दुरिकासुरी ए क्यांन करिकाती सुरी (अगम्बाबसुरी) होता

विज्रभूति आचार्य ]

सभव-छे जुओ 'लाइफ इन एन्दयन्ट-इन्डिया,' पृ ३२५

३ जुओ माहेश्वरी

४ जुओ रथावर्त

५ आचू, पूर्व भाग, पृ ३९० यी आगळ, आम, पृ ३८७-९१ तथा ५३२, विभा, गा २७७५-८३ तथा ते उपरनी कोट्याचार्यनी वृत्ति आगमेतर साहित्यमां वज्रस्वाभीना वृत्तान्त माटे जुओ हेमचन्द्रना 'परिशिष्टपर्व 'मां स्र्ग ९२ तथा प्रभाचन्द्रसूरिना 'प्रभावकचरित 'मा 'वज्रस्वामिचरित '

६ जुओ वज्रसेन

जुओ भद्रगुप्ताचार्य, रक्षित आर्य.

८ कसं, पृ १३०

९ प्रच ( अनुवाद ), प्रस्तावना, पृ १७

१० जुओ आनि, गा २६४, आशी, पृ २३७, ३८६, जीकमा, गा ६१०-१२, जीकचृब्या, पृ ३५, वृक्तम, पृ ११९, नम, पृ १६७, इत्यादि 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमा वजस्वामीनु चरित्र ठीक ठीक विस्तारथी आपेछुं छे, जेम के किक, पृ १७०-७३, कप्नु, पृ ५१९-१४, कदी, पृ १४५, इत्यादि

# वज्रभृति आचार्य

भरकच्छवासी एक आचार्य

भ्रक्षण्डमा नभोवाहन राजा हतो. तेनी पद्मावतो देवी हती ए नगरमा वज्भूति नामे आचार्य ग्हेता हता तेओ मोटा किव हता, प्ण रूपहोन अने अत्यत क्षेत्र हता एमने शिष्यादि परिवार पण नहोतो एमनां काव्यो राजाना अतःपुरमा गवाता हतां ए काव्योशी पद्मावती देवीनुं चित्त आकर्षायुं हतुं अने ए रचनाओना कर्ताने जोवाने ते उत्युक्त वनी हती एक वार राजानी अनुजा लईने तथा योग्य भेटणुं साथे लईने अनेक टासीओ सहित ते वजम्हितनी वसित तरफ गई पद्मावतीने वसितना वारणामा ऊमेली जोईने वजमित पोते ज परि- १६७] चित्र आर्थ

दुष्काळ्यो पीडा पामना जैन सचन तेओ पारिष्ठपुत्रयो पुरिका-पुरो नामे नगरीमां कई गया हता का नगरनो राजा बैंद हतो, अन तण बेनान पर्युष्ण पर्वमां दुष्पा मायवाना निपेच क्यों हतो, तेवी बज्रावामी आद्यासमामिनी विवासी माइच्यरे नगरीमां जर्दन जिनपुत्रा मार्ट दुष्पो अन्या हता का आकासगामिनी विचा सेमण आचारामञ्जूष 'ना 'महापरिका' अध्ययनमांबी उद्दरी हती एम कहेबाम छ

भार बर्पना एक मोटा हुम्काळना समयमा वजस्वामी एक पक्त उपर अनशन करीने कारुपर्य पाम्या, चे पक्त पाछळ्यी 'स्थावते' सरीके प्रसिद्ध ययो <sup>\*</sup>

बजरवामी एक प्रभावक जैन आचार्य हुता तमनी विद्वार मुस्यने माळवा, मन्य अन क्रियाना प्रदेशमा बयो हुतो. जो के तमना शिष्पाण कोंकणमा बिहार करका छ, प्रटळ समन छ के तेओ पण कराच कांकणमा आध्या होय आर्थ रिक्षसम्पर्ध साहानव प्रवेमें अध्ययन बस्रवामी पास कर्युं हतुं समस्यामीना नामधी सामुमोनी समसामना प्रवर्तमान चढ़ हती

युग्मभात पहारकोशेन भाषार मुनिया कन्यायांविश्वयात्रीय बङ्ग स्वामीना समय विशे पद्या निर्शय कर्यो छ के सेमना क्षण्य से २६ चई स पूर्वे २०मां, वीशा स ३४ ≔इ स पूर्वे २२मां, युग प्रभानपद स. ७८ ≔इ स २२मां भन स्वर्गयास सं ११ छ=ई स ९८मां चया इता

बजरवामीला श्रीवनना प्रासितिक उप्कला पण आगममाहियमी अनक स्थल ए

१ जुमी सहयुपाचार्य

९ पुरिच्युरी ए प्राचीन क्रीकेनची पुरी (बराम्नाबपुरी) हाना

कर्यों. आ प्रमाणे लक्षमृत्य पाक रांधीने ईश्वरी एमा विष नाखश जती हती एटलामा वज्रसेन मुनि त्यां आवी पहोंच्या. ईश्वरीए हर्षित थईने मुनिने ए पाक भिक्षा तरीके आप्यो अने बधी वात करी पोताना गुरुए भाखेला भविष्य उपरथी वज्रसेने तेओने कह्युं के 'हवे तमारे चिन्ता करवानी जरूर नथी, केम के आवती काले सुभिक्ष थशे ' बीजे दिवसे अनाजथी भरेलां वहाणो सोपारक बदरे आव्या अने लोकसमु-दाय निश्चिन्त थयो. जिनदत्त अने तेना कुटुंबीजनोए वज्रसेन वासे दीक्षा लीथी.

- १ जुओ रथाघर्त्त
- २ जुओ जिनदत्त.

३ आम, पृ, ३९५-९६, वळी कम्रु, पृ. ५१२, किक, पृ १७०

### वत्सका

एक नदी

आ नदी उज्जयिनी अने कौशांबीनी वचमां आवेळी छे ए नदीने किनारे पर्वतकंदरामां धर्मयशमुनिए तपश्चर्या करी हती ै

१ बितिओ धम्मजसो विभूस नेच्छतो फोसबीए उज्जेणीए अतरा वर्यकातीरे पन्वतकंदराए एकन्थ भत्त पच्चक्खाति । आचू, उत्तर भाग, पृ १९० वळी जुओ वर्, पृ ९०-९२

## वलभी

सौराष्ट्रमुं वळा अथवा वळमीपुर, जे वळमी वंशना राजाबोनो राजधानो हतुं. जैन आगमनो नागार्जुनी वाचना जे 'वाळमो' वाचना नामथी ओळखाय छे ते तथा जैन श्रुतनु लिखित स्वरूपे संकलन वळमीमा थया हता

जुओ देवर्द्धिंगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, स्कन्दिल आर्य.

पारत अमात्रे हाथमां आसन रुद्दित बहुर नीहळ्हा प्रधासतीए एउई, 'बस्त्मृति आचार्ष क्यां छे!' वज्रमृतिए उत्तर आत्यो 'बहुर गया छ 'पण वासीए राजीने निशानीयो समझन्तुं के 'बा व वस्त्मृति ए 'आयी प्रधाननी विशाग पानीन, तिचार करीने आसी के- दे बसेदमती नदी! तने ओई बन तारू पाणी पीर्धु! ताई नाम सार्ग छ, पण वर्षन सार्दे नथी. 'पछी पोते बालेछ मेटले राजीय तस्त्र मृतिने सार्यु अन पोते एसमे ओळसती ज नथी एशी देसाव बास्ट गसी, बा बार्याने अपनो,' यस बहुति पहड़ी नहीं

मगाठ स्थल्यु हे तेम, ममोबाह्यको समय हैसबी सनना बौबा सैद्यामा पुर्वार्थमां मानोप<sup>ण</sup> हो वजुमृतिनो समय पण ए ज गणवो कोईए.

१ शुन्नो नमीबाइन

२ तमो कलेकमती

३ व्यासा या. ५८-५९, व्यास विद्याप ४ पेटा वि १, ४. १४-१५

४ समा नसी**वाह**न

पन्नसेन

**पञ्सामी**न्। शिधा

एक माटा दुर्मिसन कारणे सामुक्षीने मिश्रा मळवानुं पुत्रकेष कथुं त्वारे बजलामी कनागन करवा माट रबावर्डमिनिर न्दरस माया त्वार पदेखां प्रभण पोताना शिव्य बस्तुसननं कर्तुं हुतुं के ' थे दिवसे कन सलसहरू मुस्माने मिश्रा मळ तेन बीचे दिवसे सुनिश्च बचो ' या वशी केटलेक समय बजुतेन विहार करेता सोपारकमां मानवा त्यां तिमन्दरा माने बाचक को तेनी ईच्ची माने पानी हुती तेमनुं कार्युं कुटुन पाम कार्यो दु-बाकुक बनी गर्नु हुतु कार्यो करेन-मून्य पाक शीधे, तेमां विश्व सार्वाने महनन मेटवानो निषय तत्राण कर्यों. आ प्रमाणे लक्षमृत्य पाक रांधीने ईश्वरी एमा विप नाखश जती हती एटलामा वज्रेंसन मुनि त्यां आवी पहोंच्या. ईश्वरीए हिर्पित थर्दने मुनिने ए पाक भिक्षा तरीके आप्यों अने बधी वात करी पोताना गुरुए भाखेला भविष्य उपरथी वज्रसेने तेओने कह्युं के 'हवे तमार चिन्ता करवानी जरूर नथी, केम के आवती काले मुभिक्ष थशे.' वीजे दिवसे अनाजधी भरेलां वहाणों सोपारक बदरे आव्या अने लोकसमु-दाय निश्चिन्त थयो. जिनदत्त अने तेना कुटुबीजनोए वज्रसेन पासे दीक्षा लीधी व

- १ जुओ रथावर्त
- २ जुओ जिनदत्त.

३ आम, पृ, ३९५-९६, वळी कप्तु, पृ. ५१३, किक, पृ १७०

### वत्सका

एक नदी

आ नदी उज्जियनी अने कौशांबीनी वचमां आवेली छे ए नदीने किनारे पर्वतकंदरामां धर्मयशमुनिए तपथर्या करी हती ै

वितिओ धम्मवसो विभूस नेच्छतो कोसबीए उज्जेणीए अतरा
 वस्थकातीरे पञ्चतकंदराए एकन्थ भत्त पच्चक्खाति । आचू, उत्तर माग, पृ
 १९० वळी जुओ वर्, पृ
 ९०-९२

### वछभी

सौराष्ट्रनुं वळा अथवा वछमीपुर, जे वलमी वैशना राजाओनी राजधानी हतुं. जैन आगमनी नागार्जुनी वाचना जे 'वालभी' वाचना नामथी ओळखाय छे ते तथा जैन श्रुतनु लिखित स्वरूपे संकलन वलभीमां थया हता

जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, स्कन्दिल आर्य.

[बसुदेसपरित **t६८** ]

**बस्रदेवच**रित

वसदेव-हिंदी 'नु सर्क नाम, ज एना करानि उदिष्ट हुई जुमो स<del>ङ्</del>वासगणि वा<del>पक</del>

वासदेव

जुओ कृष्य शासुदेव

विभयसिंदस्रि

'श्राह्मप्रतिक्रमण सूत्र ' उपर विजयसिंहसूरिए सं १९८६ ≔ई स ११२७ मां रचेही पूर्णिनी उन्डेस रानक्षेत्ररसूरिय 'भारप्रति-क्रमण सुत्र 'नी बृधिमां कर्मों छे धनो साधासाध रतनशेखरे ए व प्रथ्य उपरना जिनदेवसुरिकत भाष्यनो निर्वेश क्यों छे, पण एवं कोई माभ्य हुजी सुधी जाणवामां भाम्यु नयी

१ भारतपरिकामसमूत्रस्य च विकास १९८३ वर्षे भीविकवर्षितसूरि --भीकिनदैवसरिक्ट पूर्णिसाच्य अपि स्तः इसकन्त्र बहुवः सापर, E . 8 8

र जमो बिरको प्र ३९

निदिषा

माळवामां मोपासभी भारारे २० माहम ईशान खुणे नेटवा

अववा बेजबनीने फिनार आवेर्ड सिम्स्सा अनुवोगद्रार सूत्र 'मां समीय नाम 'ना उदाहरण आपतो **कर्यु** 

छे के गिरि पासेर्नु नगर ते गिरिनगर, विदिशानी पासनु संगर ते वैदिशनगर (विदिशा) वेणा पाएनु मगर ते वैणावट भने सगरा पासेनु नगर ते नगरातट भा उल्कर्समांनी वितिहा। 'ते वेस अवदा ममणी नहीं हा में भिमासा पास बेटबाने मुणे छै। भिन्नमानुं बेसनगर पूर्व नाम प नदी साथ सर्वेच घराते ह*ः* बेर्नु मुळ 'वैदिहासगर ' ( श्रा बेन्सिजयर )मी छ

ार्य महागिरि विदिशामा जिनप्रतिमाने वंदन करीने गजाप्रपट तीर्थनी यात्रा माटे एलकन्छपुर गया हता, एवो उल्लेख 'आवश्यक-सूत्र 'नी चूर्णिमा छे <sup>3</sup>

# जुओ एलकच्छपुर, गजाग्रपद, वेत्रवती

९ से कि त समीवनामें २ २ गिरिसमीवे णवर गिरिणयर विदिसा-समीवे णयर वेदिस णवर बेन्नाए समीवे णयर वेन्नायड तगराए समीवे णयर तगरायड, ने त समीवनामे । अनु, पृ १४९

२ ज्याहि, पृ ३५

३ दो वि जणा वहदिसि गता, तस्य जिणपिडम विदेऊण अञ्जमहागिरि एलक्च्छ गता गयागपद वदका। आचु, उत्तर भाग, पृ १५६-५७

## विनयविजय उपाध्याय

हीरविजयस्रिना शिष्य कीर्त्तिविजयना शिष्य. एमणे रामविजय पिंडतना जिप्य विजयगणिनी अभ्यर्थनाथी स १६९६=ई. स. १६४० मां 'कल्पस्त्र' उपर 'सुवोधिका' नामे प्रमाणभूत टीका रची हती, अने ते विमलहर्ष वाचकना जिष्य भावविजये शोधी हती '

विनयविजये सं १७०८=ई. स १६५२ मा जूनागढमां जैन विश्वविद्याविषयक महान प्रन्थ 'लोकप्रकाश ' रच्यो हतो न्याय, ध्याकरण, काव्य, स्तोत्र आदि विविध विषयो उपर तेमणे रचनाओ करेली ले

१ कसु, प्रशस्ति

२ जुओ जैसाइ, पृ ६४७-४९

### विराटनगर

साडीपचीरा आर्यदेशो पैकी मन्स्यदेशनु पाटनगर रे

जयपुर राज्यमा आवेछं वैराट ए ज विराट के बैगट नगर होय ए संभवे ळे

રર

**विरादमगर** 

१७० ]

जुभो मतस्य

त ग्रहाची इ. १११ वृद्दों, मान ३ इ. ९१९−१४

#### **बीतिमयनगर**

सङ्गानीरमा समयमां सिन्धु—सीनीर नेशानु पाटनगर रे पनी पूर्व दिशामां पूगवन नामे उचान मावेख हक्ष्में शांतिसयमां उदायन राजा राज्य करतो हतो " वीतिसयमुं बीर्जु नाम कुंभकारमध्य हर्षी

पंजाबनुं मेश गाम ण प्राचीन श्रीतिभयनगर होतार्तुं मानवामा कारे छ

१ सम् ११८६ १३ तो ६ इसको आग १ ६.३१४ साम् उत्तरसाग ६.३६-३७ मास ६.३९२ सम्ह. ६.१९९ ४६मे पु १३४ समादि

> ९ मस् स्वकी३ उ. ६ ३ दशो बदायन

४ जुलो कुम्मकारमक्षप

५ प्रति करनामनिकः भगन् अप्यास्य ग्रहतीर' छू, १८४ वंत्रवरी

ण्ड नहीं चारवण देशस्यान बळाति व नहीं कीळेंगी समाये उन्नेस ही दाक्यमंत्री मा इसा 'बस्देय-दिशी'ना 'सन्यवरण संमक्त 'से दिन्ताम्भ वर्णनेसी ए एमां प्रमु वर्णन ए के-दितास्प-प्रमान भी नीइळती रपुरमा ननी कामात ए ज्यां पाणीनी वेग गरमा पाणे ए के सीम्या मार्ग पर मार्ग पर महिलास पम नभी मार्ग वस्त्रमाभीना कामा पर्देत उत्तर तरफ्की पदन बाय वार्ग पना उत्तर हिलाम्भ दिन्य दिनार बवातुं अन वृक्षण तरफ्की पदन बाय व्यक्त एक सीन उत्तर दिनार कह दोडाहुँ प्रमास नोइक्रमा पावरद्व ए तरि वेशवती भी भानेभी गया हुने हुनुस्मा भन देशद्वी ए बन्म नाम गुक्त व वश्नी हाय पुने क्ष्मुस्मन आ वर्गन पुरुष्की बुद् किव कालिटासना 'मेघरूत ' (पूर्वमेघ, २४)मां माळवाना वर्णनमां वेनवतीना ऊछळता प्रनो निर्देश छे. एना तटे विदिशा आवेलुं हतुं एवु सूचन पण त्या छे.

गुजरातनी वात्रक नदीनो पण पुराणोमां वेत्रवती तरीके उन्हेख छे ए अहीं नाधव जोईए.3

माळवामा वहेती वेटवा नदी ए आगमोक्त वेत्रवती होवानुं मानवामां आवे छे.

# जुओ विदिशा

१ वेत्रमागों यत्र वेत्रलतोपष्टम्मेन जलादों गम्यते इति, तद्यया— षाहदत्तो वेत्रलतोपष्टम्भेन वेत्रवर्ती नदीमुत्तीर्थ परकूल गनः। मुक्त्शी, पृ १९६ वळी जुओ सकुत्तु, पृ. २३९.

- २ 'वसुदेव-हिंडी ' ( भाषान्तर ), पृ. १९२
- ३ प्रमा वेत्रधती
- ४ ए ज, तथा ज्यांढि, पृ ३५, जैन, 'लाइफ इन एन्झ्यन्ट इन्डिया, 'पृ ३५४

## वेणातर

आभीरदेशमां वेणानदोना किनारे आवेछं नगर एनां प्राकृत रूपो वेणातड, वेणायड, वेन्नायड, एवां थाय छे. राजगृहना राजा प्रसेनजितनो पुत्र श्रेणिक ज्यारे कुमारावस्थामां हतो त्यारे वेणातटमां गयो हतो त्या एक विणकनी नंदा नामे पुत्रीथी तेने अभयकुमार नामे. पुत्र थयो हतो, जे मोटो थतां राजगृह आवीने पोतानी चतुराईथी श्रेणिकने प्रसन्न करीने तेनो मत्री थयो हतो एक वारनो चोर मूलदेव भाग्ययोगे वेणातट नगरनो राजा बन्यों हतो एवी कथा छे हैं

वेणातटमा बौद्रो तेम ज जैनोनी वस्ती हती तथा आ बन्ने सप्रदायो वन्चे स्पर्धा चालती हती. एम केवळ लोककगाना प्रकारने १७२ ] ( चैनातर एक इसको 'नदिसुत्र 'नी हतिमां भाष्यो छ ते उपरधी अनुमान

धाम छे " वेणातट नगरमा चोई बीट मिमुद मेशांवर शुद्धक-नाना साञ्जन पृष्ठकुं 'को शुद्धक ! तमारा काँद्रीत सर्वज छ धन तमे पमना शुक्तरामो छो, मारे कहे के धन नगरमा केरका कामदा छं ! '' शुद्धके बातर्वभी उत्तर भाषां—

'मर्स्ति कागसवस्सा इष्(य) विन्नावड परिवर्मति । अद् ऊषमा पवसिया अन्यदिया पातुषा आवा ॥

( भा वेणातट नगरमां साठ हजार कागडा बसे छे ए करतां को भोखा होन्य तो ते प्रवास गमा छ भने वचारे होन्य तो परीणा करीने भान्या छ )

था सांमळीन बौद मिश्च मायुं सणतो **पू**प बई गयो '

हरियेजापार्येना 'बृहुत्क्याकोश'मा कृद्धी छ के विन्यासन्धर धराट विषयमां वित्या (बेणा ) मदीना किनार आवेर्छ छ

९ हमो आसीर

 से कि त समीमनामा । श्रीरिक्षमार्थ बक्त विकास वित्वामधीय करा पेड्वि वयर केम्बाए समीप करा केम्बावा समाप समीप क्या तगरावा से ते समीवनामे ।

३ बाब् , र्ख्याम ए ५४० बाम ए. ५१९

**४ शुभो सृसदेव** 

५ मेंस पूर्वपृत्य कार्यका साम्रहेस्य काल्, पूर्वभाग इ.५४७ कास इ.५२

६ बराध्यविषये राजे विद्यानाये च परिचामे ।

वैराध्यस्य सारस्य वनावन्यविद्यास्यः ॥ विस्तावद्योकसीकार्यः कारायवस्यास्यास्य

विस्तावदीवसीवस्यं कास्त्राज्यस्यविदम् । विद्यान् क सुन्निः क्यापि प्राप्तः विस्थातर्वः पुरम् व

**प्रक्राधी**स ६ १९५

# वैतर्ण

कृष्ण वासुदेवनो एक वैद्य.

जुओ धन्दन्तिर

## शकुन्त

अवन्तिपति प्रद्योतनो अध मंत्री

वासवदत्ताए उद्यननी साथे उज्जियनीथी कौशाबी चाल्या जवा माटे हाथणी सज्ज करवानी आज्ञा करी हाथणीने ज्यारे तम बाधवा मांडचो त्यारे हाथणीए गर्जना करी ए साभळीने शकुन्त नामे अंध मंत्रीए कह्यु के 'तम बांधती वखते आ हाथणी गर्जना करे छे, माटे सो योजन जईने ते मरण पामशे ' मार्गना श्रमथी थाकेछी हाथणी सो योजन जेटलो प्रवास करोने कौशाबीमा प्रवेगता मरण पामी हती

## जुओ उदयन, प्रचीत

१ कञ्चायां ध-यमानाया यथा रसित हस्तिनी । योजनाना शत गध्वा प्राणत्याग करिष्यित ॥ आच्, पृ १६२

## शह्यपुर

- ' उत्तराध्ययन सूत्र 'नी नेम्चिन्द्रनी टीका प्रमाणे, अगडद्त्त रांखपुरना राजानो पुत्र हतो ै
- 'विविधतीर्थकलप' अनुसार, राजगृहनो राजा अतिवासुदेव जरासंघ, वासुदेव कृष्ण साथे युद्ध करवा माटे पश्चिम द्विशा तरफ नीकळ्यो कृष्ण पण बधी सामग्री साथे द्वारवतीथी नीकळीने पोताना प्रदेशनी सीमा सुधी बाव्या ए स्थळे अरिष्टनेमि कुमारे शखनाद कर्यो अने त्या जरासघ उपर विजय प्राप्त थया पछी शंखपुर अथवा शंखेश्वर नामे नगर वसाववामा आव्यु, तथा त्या पार्श्वनाथनी प्रतिमा स्थापित करवाम

एक दुवको 'निर्मृत्'नी वृतिम् धार्या र ते उसकी अनुमान धार है "वेण्डल नगमा का बीद भितृत् वेश्वार शुद्धक-नाना साधुन प्रयुं 'धार शुद्धक शिवास अर्देश सबब्र र धने सने पमना बाक्सभो हो, मार्ट कह क था नगस्या करना कामझ छ।" शुद्धके बात्यको उत्तर आयो—

'मर्ड कामसब्स्ता १६(पं ) विन्तायक परिवर्तति । मह कणमा पबसिया अन्त्रहिया पाटुणा आया ॥

( भा वेजातट नगरमां साठ हजार फागद्दा घरे छ ए फरतां जो भोछा होन तो ते प्रवासे गमा छ भने बपार होना तो पराणा धरीने भाम्या छ )

भा समिन्द्रीन बीब भिभु माधु खगतो पूप बई गयो.'

हरियणावार्यना वृहत्कधाक्रीत 'मां कर्मु छ के विश्वासम्प्र' वराट विषयमां विश्वा (वेद्या ) नवीन्त किमारे बावेर्स छ

१ इम्मे आसीर

 छ कि त समीवनामा । निर्देशमां वर विकास विविद्यालकीय करा विदिश्च करा केलाए समीवे करा केलाएड समाए क्मीवे वर समावत है स समीवलको।

३ मान् प्रमाग ४ ५४७ साम ४.५१९

४ डमी मुख्देव

५ तम इ. १५% वजी लाक्यामास शब्दा शाक्ष, पृत्र माग, इ. ५४७ काम इ. ५३

६ वाध्यविषये तमे विश्वासारी न परिचये । वेरान्त्रतम् चालस्य अनानम्बन्धियविषयः ॥ विश्वासपीद्यानित्यं बान्धायनस्याचित्रस्य । विश्वास्य बान्धायनस्याचित्रस्य ।

इसस्याभीस ४ १९५

शह्यपुर ]

# वैतर्ण

कृष्ण वासुदेवना एक वैद्य.

जुओ धन्दन्ति

## शकुन्त

अवन्तिपति प्रद्योतनो अंध मंत्री

वासवदत्ताए उदयननी साथे उज्जीयनीथी कोशाबी चाल्या जवा माटे हाथणी सज्ज करवानी आजा करी हाथणीने ज्यारे तम वाधवा मांड्यो त्यारे हाथणीए गर्जना करी ए साभळीने शकुन्त नामे अंध मंत्रीए कह्यु के 'तंग बांधती वखते आ हाथणी गर्जना करे छे, माटे सो योजन जईने ते मरण पामशे '' मार्गना श्रमथी थाकेछी हाथणी सो योजन जेटलो प्रवास करोने कोशाबीमा प्रवेगतां मरण पामी हती

## जुओ उदयन, प्रचीत

क इसाया वश्यमानाया यथा रसित हस्तिनी ।
 योजनाना शत गरवा प्राणत्याग करिष्यति ॥
 आच्, पृ १६२

# राह्नपुर

- ' उत्तराध्ययन सूत्र 'नी नेमिचन्द्रनी टीका प्रमाणे, अगडद्त्त रांखपुरना राजानो पुत्र हतो.'
- 'विविधतीर्थकलप ' अनुसार, राजगृहनो राजा प्रतिवासुदेव जरासंघ, वासुदेव कृष्ण साथे युद्ध करवा माटे पश्चिम दिशा तरफ नीकळ्यो कृष्ण पण वधी सामग्री साथे द्वारवतीथी नीकळीने पोताना प्रदेशनी सीमा मुधी भाव्या ए स्थळे अरिष्टनेमि कुमारे शखनाद कर्यो बने त्या जरासव उपर विजय प्राप्त थया पछी शंखपुर अथवा शंखेश्वर नामे नगर वसाववामा आब्युं, तथा त्या पार्श्वनाथनी प्रतिमा स्थापित करवामा आवी '

१७४ ] [ शहुर

उत्तर गुजरातमां बढियारमां आवेछ स्नेन तीर्घ राक्षसर ए. मा राज्यपुर होवा संमन छ

1 तमा अगडदत्त

२ 'शिविवारीर्पेकस्य भां सक्युरगर्थकस्यः बळो समी मुनि बक्शाविकस्तरुत स्वारीर्थ संबेधर, प्र १६-२५.

#### भ्रष्टस्य

सौराष्ट्रनो एक पर्वत, स्थां अर्वाधीन काळमा जैनोतु सौबी बधु प्रसिद्ध शीर्थभान छे

गौतमकुमार भरिष्नेथि पाते बोधा स्ट्रीन राष्ट्रबन उपर निर्वाम पान्या हता बोबा केटसक सामुजानी पण ए निर्वाणम्मि छे भावप्यापन्ने निर्वाण पण सम्बन्ध उपर बर्ख हत्

पांच पांडवो कृष्णना मरणायी सेवेग पासीन, सुरिवतः स्विविरी पास दीक्षा छवेने वार्चुनवना शिक्त उपर पान्द्रपायगमन (बुक्ती जैम विवत रहीम भनवस्न को ते) किसी कार्क्यमें पाम्या इटा

विविवतिर्भक्षम्य 'मा शतुम्रमन्त् नीच प्रमाणे एक्कोस नाम भागकां छ सिदिक्षेत्र तीक्ष्राम, मक्केष, मगीरण, विमकादि, बाहु बजी, सहस्रकाछ ताक्ष्यम, क्र्यंत, शतपत्र, नगापिराम, अद्योधर सन्तरून, सहस्रक्य केंद्र, कीक्ष्य क्यर्रिनवास, सिदिशोसर शर्मुसम मिकिनिक्षम निदिय्वंत पंतरिकण

1 445 1

र और रेतवा ४

प्रस् वा. ४५०-४६४ व्यक्त वता बाग छ । ५. प्रस्थामा भवीचेन व्यक्ति प्रसान एवा स्वतिक रीवामनीयां क्षूंत्रस्य वेद्यमक प्रस्तिक प्रस्केतो सार उसी व्य छ ११-१४ व्यक्ति छ ४ वर्ष छ वसी छ ४ स्थापिः

# शान्तिचन्द्र वाचक

तपागच्छना सकलचन्द्र वाचकना जिप्य एमणे 'जबुद्दोपप्रज्ञिनिं' उपर 'प्रमेयरनमंजुषा ' नामे टीका रची छे. ए टीकाने अंते आपेली ५१ श्लोकनी विस्तृत प्रशस्ति प्रमाणे, एनी रचना सं १६५१= ई स १५९५ मां थई हती (श्लो १९). स १६१०= ई स. १६०४मा राजधन्यपुर—राधनपुरमा केटलाक समकालीन जैन विद्वानोने हस्ते विजयसेनसूरिनी समक्ष एनु सगोधन थयु हतुं (श्लो ३४-४०). एना लेखन अने शोधनमां कर्ताना शिष्य तेजचन्द्रे सहाय करी हती (श्लो. ४२) रत्नचंद्रे गुरुभिक्तिथी एना अनेक आदशों तैयार कर्या हता (श्लो. ४९) अने लिपिकलामां चतुर धनचन्द्रे एनो प्रथमादर्श लख्यो हतो (श्लो ५१)

१ जप्रशा, पृ. ५४३-४६ शान्तिचन्द्र अने तेमना अन्य प्रन्थो माटे जुओ जैसाइ, पृ. ५४८-५५

# शान्तिसागर उपाध्याय

तपागच्छना उपाध्याय धर्मसागरना शिष्य श्रुतसागरना शिष्य. एमणे स १७०७=ई स १६५१मां पाटणमा 'कल्पसूत्र 'उपर 'कौमुदी 'नामे बृत्ति रची छे '

१ कको, प्रशस्ति

# शान्तिसूरि

शान्तिसूरि थारापद्येय गच्छना आचार्य हता. एमणे 'उत्तराप्य-यन सूत्र' उपर 'पाइअ टीका' नामे प्रसिद्ध प्रमाणम्त टीकानी रचना करी हती '

'प्रभावकचरित 'ना १६ मा 'वादिवेताल शान्तिसूरिचरित 'मा या आचार्यनुं चरित विस्तारथी आपेछ छे तेओ पाटण पासेना उन्नतायु—ऊण गामना वतनी हता (क्षो ९–१८) एमना गुरुनुं नाम विजयसिंह हतुं (क्षो ७). भोज राजाना आश्रित कवि १७४ ] [ शहपुर

उत्तर गुजरातमां बदियारमां कावेछ जैन तीर्व रांसेबर प का शन्तपुर होवा संगव छ

१ जंशो सगद्धस

२ विविवसीर्वेकस्य मां शक्युरपर्श्वेकस्य बळी खनो सुनि वक्शुविवयस्य बढातीर्व कंक्सर प्र १६–१५

#### भष्टस्य

सौराष्ट्रनो एक पर्वत स्थां भवाँचीन काळमां जैनोनु सौबी बच्च प्रसिद्ध तीर्घणाम छ

गौसमकुमार करिहनैभि पाने बोधा करूँन शत्रुधस उपर निर्वाण पाम्या हता े बोधा केटकाक सामुजानी पण प निर्वाणम्पि छे सामन्वपुथन्ने निर्वाण पण शर्मुसस उपर बर्गु हत्तुं

पांच पांडवो क्रणाना मरणधी सेवेग पामीने, सुस्वित स्वितिनी पासे बीधा कर्देने शर्जुंचमना शिक्षर उपर पासपाप्यामन ( इक्ष्मी बेम स्थित रहीने कन्मान करें ते ) करीने कास्त्रमी पान्या हुन

विविज्ञतीर्थकम्प 'मां सनुव्यवना नीचे प्रमाणे एकवीस् नाम भारेकां इ सिदिक्षेत्र दीवेराम सस्देव, मगीरव विगठमाद्र, बाहु बस्री, सहज्ञकमन्न साल्याम, कदन, बात्यत्र नगापिराज व्यक्षेत्र स्टाक्ट्र, सहज्ञपत्र वेड, कोहिष्य कपरिनवास, सिदिशेखर, धनुमय, मुक्तिनकम मिदिप्येत, प्रेडरोकः

1 448 1

२ अनेद २ तवा ४

१ तस्, सा. ४५०-४६४ काल् कतर बाग छ १ ० प्रकलमा नर्गांचन की स्वक्र एवा जानस्व ग्रैकाम्प्लीमां बर्जुनका केशमंत्र प्रगालिक करियों मार ठानों कहु छ ११-१४ व्हि. छ ४ वर्षे छ ४ कमे छ ४ स्वाहि स्रिना समकालीन होई ईसवी मनना आठमा सैकामां थया हुने एवो अजमायशी निर्णय आचार्य श्रीजिनविजयजीए क्यों छे रै

'प्रभावकचित 'ना कर्ना प्रभाचन्द्रस्पिए शीलांक अने, कोट्या-चार्यने अभिन्न गण्या छे <sup>8</sup> 'विशेषावध्यक भाष्य ' उपरनी वृत्तिना कर्ता कोट्याचार्य ज 'प्रभावकचित्र'न उदिष्ट हशे एवु अनुमान सहे जें थई शके छे

गीलाचार्यनी पूर्वे 'स्त्रकृतांग स्त्र ' उपर टीका अथवा टीकाओ होवो जोईए एम एमना ज विधान उपरथी जणाय छे ' वळी एक स्थळे तो तेओ छखे छे के-जुटा जुटा स्त्रादर्शोमां नानाविध स्त्री देखाय छे, अने टीकासंवादी एक पण आदर्श मळी गक्यो नथी, आथी अमुक एक ज आदर्शने अनुसरीन विवरण कर्युं छे, ए वस्तु वचारीने कोई स्थळे स्त्रथी निसंवाट जणाय तो चित्तव्यामोह न करवो."

## १ जुओ गम्भूता

२ निर्वृतिकुलीनश्रीशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना वाहरिसाधु-सहायेन कृता टीका परिसमाप्तेति । आसी, पृ. २८८

समाप्ता चेय सूत्रकृतद्वितीयाङ्गस्य टीका । कृता चेय शीलाचार्येण प् वाहरिगणिसहायेन । यदबाप्तमत्र पुण्य टीकाकरणे मया समाधिमृता, तेनापेततमस्त्रो भन्य कल्याणमाग् भवतु ॥ सूकृशी, पृ ४२७

३ 'जीतकल्पस्त्र, ' प्रस्तावना, पृ ११-१५, वळी जुओ 'वस्तु-' पालनु साहित्यमडळ अने सस्कृत साहित्यमा तेनो फाळो, ' पेरा १९.

४ जुओ अभयदेवस्ररिः, कोटचाचार्यः

्षानित्त्रिः पनपाकरम 'तिषक्षमत्रगी' कथानु संगापन तमणे कर्षु इहा तथा भोजे तमन 'वादिवताच'नु चिन्द आपुं हहुं (स्पे ९४-५९) शानित्त्रितिन् अवसान स. १०९६=ई म १०४०मां थपु हुईं

(रखो १६०) आगमसाहित्यमां केरबेक स्थळ शाग्तिस्तिमा 'बादिवतान'

सरीके उन्हरूस छ

हारिसमूरि मामना लगक आवार्यो धई गया छे एमन माट जुओ 'श्वायावतारवार्तिक दृष्ठि,' प्रस्तावना, प्र १४६-१२°

% बसा प्रशस्ति.

२ कर्ष प्र. १९९~२ कड़ी प्र. १९५ हमादि

#### श्रामपाइन

जुभो सालगाम

#### बीछाचार्य

ब्यानसांग स्व 'भने 'सुक्रस्तांग स्व 'ना टीक्डांकर 'ब्याचा संतस्त्र 'नी टीका गैन्सा (गोन्) गाममां स्वाई हतो 'ब्या बन्ने टीक्समानी रचनामां सीक्षमार्थन बाहरिर्याणय सहाय करी हती.

माबागम स्व 'नी टीडानी जुरी जुरी प्रतोनी पुष्पिकस्थीमां तनो रचनामंत्रत जुरी जुरी आप्यो ह कोईमां शक स ७८८, कोईमां शक सं ७९८, कोईमां गुन सं ७७२, तो कोईमां शक स ७७२ ह वा नाग्यांनी कई साथ साची प नकी कप्यांना कोई योकस पुरावो नचा उपोतनस्थिती कुक्कम्मास्था 'नी प्रवास्तिमां

चोक्स पुरानो नश्र. उदोननस्तिनी कुन्स्वस्माम्य 'नी प्रशास्त्रमां प्रमनो उपनेस्त छ ते सम्बानार्थे ए व शीनोक भनवा शीकानार्थे एवे यक मत छ, श्रन भा गीकांक सम्बोक्ष्माकता श्लापक वनस्त्रमता गुरू इसा प्रती पण एक परेश्य छ भा सभी उपरक्षी, शीकामार्थ इसिम्ह मिना नगफाठीन होई ईसवी मनना आठमा मैकामा श्रया हुने एवी अजमायकी निर्भय आचार्य पीजिनवित्तयजीए क्यों हे ै

' प्रभावक्रमान्ति 'ना कर्ना प्रभानन्द्रम् शि कीलाक अने कोट्या-वार्यन अभिन्न गण्या हे ' 'विशेषावःयक भाष्य ' उपरनी वृत्तिना कर्ता कोट्याचार्य ज 'प्रभावकचिन'ने उदिए हुने एवं अनुगान सहेजे थई शक हे

शीला चार्यनी पूर्वे 'स्र्यक्रताग सत्र ' उपर टीका स्थवा टीकाओ होवा जोईण एम एमना ज विधान उपरथी जणाय हे 'वस्ती एक स्थले तो तेल्रो लखे हे के-जुटा जुटा स्त्राटकोंमा नानाविध स्त्री देखाय हो, अने टीकासंवादी एक पण आदर्श मस्त्री शक्यो नधी, आधी अमुक एक ज आदर्शने अनुसरीन विवरण कर्ये हो, ए वस्तु वचारीने कोई स्थले स्त्रधी िसंवाद जणाय तो चित्तव्यामोह न करवो."

### १ जुओ गम्भृता

२ निर्वृतिकुलीनश्रीशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना वाहरिसाधु-भहायन कृता टीका परिममाप्तेति । आशी, पृ २८८

समाप्ता चेय मृत्रकृतद्वितीयाजस्य टीका । कृता चेय शीलाचार्येण वाहरिगणिसहापन । यदवासमत्र पुण्य टीकाकरणे मया समाधिमृता, तेनापततमस्यो भव्य कन्याणभाग् भवतु ॥ सूकृशी, पृ ४२७

३ 'जीतकन्पस्त्र, ' प्रस्तावना, पृ ११-१५, वळी जुओ 'वस्तु-पालनु साहित्यमटळ अने सस्कृत साहित्यमा तेनो फाळो, ' पेरा १९

४ जुओ अभयदेवस्रि, कोटचाचार्य.

५ व्याख्यातमङ्गमिह यद्यपि सूरिमुख्येभेषत्या तथापि विवरीतुमह यतिष्य ।
किं पक्षिराजगतमित्यवगम्य सम्यक
येनव वाञ्छति पथा रालमो न गन्तुम् ॥ सूक्षशी, पृ ९
६ इह च प्राय, सूत्रादर्शेषु नानाविधानि सत्राणि क्लान्ते ज ल

१५८ ] [ श्रीहावार्य रीक्षक्रोऽकस्मानिसावर्धं चमल्यकोऽत क्रमावर्धस्मृतिस्मात्मानिकरण

किञ्चते क्षयंतददयस्य सूत्रजिक्षेताददर्शमध्यक्तस्यामोद्दो न विवेध वति। सक्ष्यीः प्र १३६

चा नरतरनामं राज्य रेते जीका नो निर्देश के एक वीजनाने वर्षी शुक्रकांग श्रेष नो प्राचीनतर चुनियो उनकेब करता वर्षी-प्राचीन-तर कोई श्रीकारों करें के-ए रेक्सिंग के

#### श्रेष्ठकपूर

वावन्नापुत्र काणगार द्वारवतीयी शैककपुर कास्या इता अमे स्वांना शैकक त्रवाने उपरेवा आपीने समणोपासक बनाध्यो हतो.

क्षेत टपरमी रैककपुर सीताञ्चा प्रदेशमा होय वर्षु अनुमान याय ह 'रीतकपुर' प नाम जोता सीताञ्चा वार्यनीय प्रदेशमा ते भावेख क्षरो

मुका बाददवापुत्र

#### शोमन

कृति धनगरुनो साई 'शोमनस्तुति'नामे एणे रचेखं स्रोत्र प्रसिद्ध है

भुमो भनपास

#### जुल नगराव भौस्त्रिर

सादीपबोश बार्ष देशा पेड़ी कुशाबर्तने पाटनगर द्वारकानी पेड़बाँ ए मादबोनी रामबानी हतुं महाबीर शीरिपुरमां बाम्या हशा एमना समबमां शीपिपुरना राजाने बाम सीबेंद्रच हतु त्यांना सीबोंब तंसर उद्यागमां एक माधीमारना पूर्वमहोन् महाबिरि बर्णन कुई हतुं

सिक उद्यानमा एक माध्येमारना पूर्वमबेनु महिनीर बर्णन कर्यु हुई सामा प्रिकामा समुना नहीना किनारे बन्धरनी पाने सावेध

स्मेंपुर शंववा स्रवाहर प प्राप्तेन काटमुं शीरिपुर मनाय हे

श्रीमाल ] [ १७९

# जुओ कुशावर्त

- १ भाचू, गा १२८९, भाचू, उत्तर भाग, पृ. १९३
- २ मुनि कन्याणविजय, 'अमण भगवान महाबीर,' पृ. ३९६-९७
- ३ जैन, 'लाइफ इन एन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ. ३३७

# श्याम आर्य

परंपरानुसार, आर्य स्याम ' प्रज्ञापना सृत्र 'ना कर्ता गणाय छे ' आर्य स्याम तथा आर्य कालक के कालका नार्य एक होवा संभव छे एवो केटलाक विद्वानोनो मत छे, पण कालका नार्य एक करतां वधु थया छे जेमाथी कोने आर्य स्याम गणवा एनो निर्णय सरल नथी एम तेओए ज स्वीकार्युं छे बीजा केटलाक एम माने छे के पहेला कालका नार्य जेओ ' निगोदन्याख्याता ' तरीके प्रसिद्ध छ तेओ ज आर्य स्थाम छे. है

- १ विको, पृ. १४२; नम, पृ. १०५, ११५, ११८; आम, पृ. ५३६, श्राप्तर, पृ. १३३, इत्यादि
- २ प. वेचरदासङ्कत 'मगमती सूत्र,' अनुवाद, भाग २, पृ. १३९-४०, टिप्पण
- ३ 'कालकक्यासंप्रह,' उपोद्धात, पृ ५२ जुओ कालकाचार्य-१ श्रीचन्द्रसूरि

चंद्रकुलना शीलभदस्रिना शिष्य धनेश्वरस्रिना शिष्य. एमणे स. १२२७=ई स ११७१ मां अणिहलवाडमां 'जीतकल्प सूत्र 'नी बृहच्चूर्णि उपर विषमपदन्याख्या रची छे '

१ जीकचूट्या, प्रशस्ति श्रीचन्द्रसूरिना अन्य प्रन्थो साटे जुओ जैसाइ, पृ २४३.

## श्रीमाल

'कल्पसृत्र 'नी विविध टीकाओमां 'राज्यदेशनाम ' आप्यां छे तेमा श्रीमाल पण छे ै

[भीमाम

tco ]

धीमाननुं बीजुं नाम विद्यमात क भिन्नमात र सिह्नमासमी इन्स नामनु रूपानाणुं नामनु हुनु केन्द्री निर्माधनुर्वि अनुसार, सिह्नमात्ममां नास्टा स्पाना एक सिह्नो चन्मकान?—(स 'चर्नकान') इदेशको माहेश्वर उज्जीवनी, धानास वन्य नगरामां स्वका असर्व प्रसागाय एकत बहैन सरागत इस्ता हुना

भिद्रमान्त्रमी चाएता एक सिकाने "बम्मसात"--"चमकात" कब्रो छे ए बस्त जरा विवासना जेनी छ। सिकानी ए माम अ विस्रभूग अने भर्बरहित हागे छ निशीधवृणि 'ना टाईप करही भाइतिना सपादनमां अनद भशाविभा छ अन महीं पग मुळ वसना 'च न वर्ष मुसबी य' बंधाबा द्वीय शबना मुख्य प्रदाना स्टियामीए वा गी 'भ' करी नाष्ट्रमो होम पम बनकु भसमधित नथी. मा हीतः चम्म**मा**त<sup>'</sup>ने न्धान 'बम्मस्प्रत ' (≔स 'वर्मस्प्रत ') योजगामां आवे सो ए नामर्जु भीमाद्यना इतिहास साचे भनसद्यान भई गढे तेम छ। भीमाद्यना सभा ममभारतो उन्केस 'प्रभावक्रवरित मि छ गुवरातना समिति संस्कृत कवि माथे पोताना दिव्ह्मपाछ्यच नी प्रशस्तिमां च पर्मम्पतनो निर्देश कर्यों छे स स आ होन एम बन भाषनी शाही सप्रभन्द भा वर्मेंद्वातनो मंत्री हता ै वर्मद्वास राजाना नामबी वहत पत्रेमा सिक्स वर्मकार' नामकी मोळस्मला होन ए सहन शक्त छे--केम मन्बदासनी केटब्सक राज्यायोना सिकामोना निर्वेश ' भीमग्रिम, ' 'वीसछ भिन ' भावि वहे फरको छे तेम कवान धर्मशाव ' ए वर्मशाव-प्रिय 'तं संक्षित रूप पण होय

सीमाञ्चना पौराणिक इचान्त्र मार्ग कुली भुगु'मां श्रीमाञ्च यना इसिश्चास मार्ट जुली बेलबे गेक्षेटियर, 'पु. १ भाग १मां पिरन्त्रसस्य विद्यानुं परिविध सभा काम्यानुदासन प्रस्तायना यू ८३,१०२

१ हमी प्रकर

र स्पमय वा नाणक भवति, यथा-भिल्माले इस्म । वृक्क्षे, भाग रे, ष्ट ५ १८ श्रीमालना इस्मने 'पारीपथ इस्म ' उहेता. 'श्रीमालनी टकशालमा पाडेला, त्रण नार परपेला, वजारना व्यवहारमा आपता, चाल, मेळलेळ विनाना, रोकडा ' पारीपप इस्मनु चण्ण गुजरातमा ओठामा ओछ, विकमना तरमा शतकना अत गुधी हतु एम 'लेखपद्रति' ( प्ट रे०, ३३, ३५, ३५, ३९ ४२, ५५ इत्यादि ) उपरथी जणाय छे

३ स्वरुगा से दिउजित, ताम्रभय वा ज णाणग वबहरति त दिउजिति । जहा दिक्खणावहे कागणी, रूपमय जहा भिह्नमाले चम्मलातो, निच्, भाग ३, पृ ६१६-१७

४ आसूचू, पृ. ३३३

ं ५ हेमचन्द्रकृत 'काव्यानुशासन, ' प्रस्तावना (प्रो र छो परीस ), ए. ९५

# श्रीस्थलक

श्रीस्थलक नगरमा भानु राजा हतो. एना सुरूप नामे पुत्रने मोदक भावता होवाश्री ते 'मोदकप्रिय' नामे प्रसिद्ध थयो हतो सुरूपने एक वार वैराग्य पेदा थता सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य सापडचा हतां अने छेवट ते केवलजान पाग्यो हतो, एनी कथा छे '

गुजरातनु सिद्धपुर प्राचीन काळथी 'श्रीस्थल' तरीके जाणीतु हे. ते सा श्रीस्थलक हुगे ?

१ पिनिम, पृ ३३.

# श्रीहर्ष

ईसवी सनना बारमा सैंकाना उत्तरार्धमा थई गयेलो 'नैषधीय-चिरत 'नो कर्ता 'श्राइप्रतिक्रमण सूत्र 'नी रत्नहोखरसूरिनी वृत्तिमा 'नैषध !' अने श्रीहर्षनो नामोल्लेख करीने ए कान्यना श्लोको टांकेला छे मंत्री वस्तुपालना समयमा 'नैषध 'नी नकल गुजरातमां आवी त्यार पछी ए कान्यमुं अध्ययन—अध्यापन अहीं चालतु रह्यु हुतुं एनी आ एक विशेष पुरावो छे "

[भीइप

९ । १ यनुक्तं नैयभेऽपि-पृष्युप्तविश्वकृत्रवद्दाः आग्ररः पृ. १ ९

९ भीहर्यमहत्त्ववितापि कहे हिंसा दोपहेतुर्वेशिता सम्मयप हाविसे सर्वे प्रस्तानस्ताम वर्त-इत्येव धेनप्रक्रमोउसम्बद्धिः । ए ज छ ४१

३ भा संबंदाये अरातीय विद्या विद्यो स्मृतिसन्धार्य मागे कव प्रकारमञ्ज नैद्योगकारितयो प्रचार तथा तथा ठे वरण स्वयुक्ती प्रीकारों भा देखा बहुत्यासम् दिद्यात्त्रक धने बीबा केती प्र प्रकारमा पूरा संबुद्धित प्रयो छ-

#### सङ्गदासगणि समाभमण

ंचवहारमाप्य ' महत्त्रह्ममाप्य,' 'चंचक्रपमाप्य' भारि मण्यप्रम्भोना कर्ता तका 'वसुदेब-द्विश्व'ना कर्वा सम्बासगणि बायक्रभी मिन्न छ तका तेमनाको कर्षुक अर्वाबीन काळमां भनेरा छे पत्र छुनिश्री पुस्तविक्यमणितु मंतन्य छे '

जुला सङ्ख्यासगणि वाचक

१ हमी प्रत्यस्य सूत्र व्यव ६ घरतसमा ६ ६ -११ सङ्ग्रासगयि पाचक

वैशाबी प्राहतमा रचायेका गुणादण ६विहन छुन कहाभन्य बहरूका ना प्राहत गमना बयका कैन स्थातन 'बहुदेव-हिंडी'ना कहा एनी रचना ईसवी सनना पांचनी शतान्योंनी बासपास बयकी छे

'वसुदेब-दिवो 'नु के नाम एना कराने हुए हार्नु ते बसुदेब-परित ' के पण वसुदेबना ' हिंडण '-गरिक्सणनो इणान्य पर्सा होवाबो ए सन्य समय कार्ता बसुदेब-दिवो ' तरीके बसु प्रवस्ता स्था बागस्साहित्यमां बा सन्व विस्ताम सीधी प्राक्तित व्यक्तेस आवस्यक सूत्र नी वृगिमां के स्था पनुं नाम 'बसुदेब-दिवो' आर्यु छ वो के बसुदेब-बरित 'नम पण क्ववित् मुक्ते छे सर्व 'बाइशतिकसमगस्य नी स्लाधेसम्बर्गिनी वृश्विमां 'नुसुब्ब-दिवो ने 'आगम' ब्वेस्ट छ अने बाह्यसमीहना 'नी साथ तेना नद्वदासगणि पाचक ]

उल्लेख कयां छे, ते उपरथी कथानुयोगना प्रत्य तरीके एनु केटलुं महत्त्व गणातुं एनो कन्पना थई शके छे जैन साहित्यना सर्व उपलब्ध आगमेतर कथाप्रत्योमा 'वसुदेव-शिटी ' प्राचीनतम छे '

## जुओ सङ्घटासगणि क्षमाश्रमण

१ 'वसुरेव-विंडी ' ( अनुवाद ), उपोद्घात, पृ. १-२

२ एज, पृ ३-५

३ आचू, पूर्वभाग, पृ १६४, ३२४, ४६० आगममाहित्यमां 'वसुदेग-हिंदी ना अन्य आघारो तथा उल्लेखो माटे जुओ आम, पृ २१८, व्यम ( उदे ५ उपरनी वृत्ति ), पृ ६, श्राप्टर, पृ. १६५, वयू, पृ १६५; किंक, पृ ३५

४ नम, पृ ११७, बृकक्षे भाग ३ पृ ७२२

५ न च तेपामिष्टसिद्धिभवन सन्विष्धमिति वाच्य, ज्ञाताधर्मकथाञ्ज-वसुदेवहिष्टिप्रभृत्यागमे साक्षाहुक्तत्वात् । श्राप्रर, पृ १६५

६ सघदासगणिनो समय, 'षमुदेव-हिडी ' अने 'बृहत्कया 'नो संवध, 'वसुदेव-हिंडी 'नी भाषा, एमांथी प्राप्त चती सांस्कृतिक-सामाजिक माहिती अने बीजा धानुपगिक सुदाओनी चर्चा माटे जुओ 'वसुदेव-हिंडी ' ( धनुवाद ), उपोदघात

### सपादलक्ष

राजपूतानामां आवेल शाकंमरी-सामरनी आसपासनो प्रदेश. सांभर ए प्रदेशनुं मुख्य नगर हतु.

सपादलक्ष अ। दिमा 'वरही '—वंटी नामनु धान्य प्रसिद्ध छे र जुओ साम्भरि

# ुआ साम्भार

१ ज्यांडि, पृ. १७४ तथा १७८

२ 'बरग 'ति बरही धान्यविशेष सपादलक्षाव्यिषु प्रसिद्ध । जप्रशा, पृ १२४

### समयमुन्दर

खरतरगच्छना जिनचन्द्रसूरिना शिष्य सकलचन्द्रना शिष्य.

िसमयसम्बद्ध

तमण स्तमतिर्ममां सं १६०१ = १६६५ मां धरावैद्याधिक सूत्र उत्तर 'वीपिका' नामे टीका स्वी हुती. मा उपराठ 'कस्पसूत्र' उत्तर पण 'कस्पत्त्रा' नामे एमनी टोका स्वाधित छं समयस्वर्ष्य संस्कृतना एक उत्तम विद्यान हुता भने तमणे अनह प्रस्थी स्वेक्षम छे जैन गुर्वेर साहिष्यना पण तेओ एक सुप्रसिद्ध कृति छे तमनी साहिष्य प्रहृति सं १६९२ = ६ १५८५ ('मावदानक 'रवार्षुं)भी मोडी सं १६९८ = ६ सं १६९२ ('बीविव्यार,' 'नयत्त्व' भने दंहक 'उपरान टीकामा) सुधीना अर्थो सातास्त्री करतां ये छोबा समयपट उपर विस्तराध छं

१ व्येष प्र. ११७ (अवस्ति)

२ सम्बद्धन्दरम् चौरवं करे देख्या मण्यो कार शुक्रा पैक्क, प्र ५०६ तथा ५८८-४६ तेमसी प्रवस्ती सम्बद्धो सम्बद्धो स्वाप्ति प्रवस्त्री साहित्व परिवस्त्रों स्व भी, मोहस्काक र देखाँको शिवच 'क्रियर सम्बद्धन्दर

#### समितापार्य

समितालाव कावना आर्थे समित वावस्थामीना मामा हुता कैन सायुकानी ब्रमहोषक शाला सेमना कर्युलामी केबी शेते प्रवर्तमान माँह ए बिहो शीवनो इतान्य मळ छे जामीरदेशमां इत्या अमे वेणा मशीबोना संगमन्यान बढाडीपमा पांचसी लापमी रहेशा हुता प्रमानी एक लापस पोमाना पग उपर बमुक प्रकारनो छप ब्रम्तेने पाणी उपर करतो हुता भा पमन्कारचे छोडा आध्यर्थ पामला हुता बाने मावकोनी हेसना पत्ती हती बज्जुलाशीना मामा बार्ब सपित एक वार निहार बरमा स्या आच्छा होने बेसने बची पात करी बार त्यार स्वहार प्रयागध बनकोन डतानी होने एवं बज्जुमान करीन आर्थ सामने अपना होने बार स्वार सामने सामने स्वार सामने सामने सामने स्वार सामने समुद्र आर्य ]

सामत्रण आपीन तेना पग घोई नाल्या, एटले पेलो लेप पण घोवाई गयो तापस नदीकिनारे आवी पाणीमा ऊतर्यो, एटले ह्वी गयो पछी आचार्य त्यांथी नीक्क्या तेमणे नदीकिनारे आवी वासक्षेप नाखी कह्युं, 'आव, पुत्रि ! मारे सामे किनारे जवुं हो. ' एटले नदीना वन्ने तट मळी गया, अने आचार्य सामे किनारे चाल्या गया. आयी वधा तापसोए चमल्हत थईने आर्य समित पासे जैन दीक्षा लीघी. तेशो सर्वे नहादीपमा रहेता हता, तेथी ' बहादीपक ' तरीके प्रसिद्ध थया.'

वसन्तपुरना निलय श्रेष्ठीना पुत्र क्षेमंकरे समितिस्ति पासे दीक्षा लीधी हती. हरन्त नामे संनिवेशमा समितिस्ति आव्या त्यारे त्यांनी जिनदत्त नामे श्रावक साधुओ प्रत्येनी भक्तिथी खास तेमने निमित्ते आहार तैयार करावतो हतो, तेथी आचार्ये पोताना साधुओने ए वहोर-वानो निषेध कर्यो हतो, एवो वृत्तान्त पण मळे छे के

जुओ अचलपुर, ब्रह्मद्दीप, वज्र आर्य

१ आचू, पूर्वभाग, पृ ५१४-१५; निमा, गा. ४४४८-५०; निचू, भाग ४, पृ ८७४-७५. वळी जुओ जीकमा, गा १४६३; कस, पृ १३२, कसु, पृ ५१३-१४. किक, पृ १७१; कदी, पृ. १४९-५०, इत्यादि

२ विनिम, पृ १००.

३ पिनिस, पृ ३१

## समुद्र आर्य

आर्थ समुद्र ए आर्थ मगूना गुरु होय एम जणाय छे. एमनुं शरीर घणुं दुर्वळ हतु आश्री एमने माटे आहारनी वानीओ जुदां जुदा मात्रक आदिमां जुदा जुदी छेवामा आवती हती, ज्यारे आर्थ मंगू तो बधी चीजो एक ज पात्रमा छेता हता, जुदां जुदां पात्रमां छावेछी चीजो तेओ खाता नहोता एक वार ए बन्ने आचार्यो विहार करता सोपारकमा गया. त्याना वे श्रावकोमानो एक गाडां चछावतो हतो,

```
ज्यारे बौजो वारू गाळवामी घंधी करती हती ै तेमीप भा बन्ने माचा-
योंनी आहार रचीकारवानी रीजिनो मेद बोईन आर्थ मेगूनी पासे
मातील भा विशे पृष्ट्य त्यार नार्य मंगूप तेलो मीचे प्रमाणे
उत्तर भाष्या गार्डाबाळा धावकन देमणे क्या. 'हे शाक्रटिक!
तमार्ह में गाइ दुवल होय तेन तमे प्रयनपूर्वक दौरडांबी बांघों छो।
पढ़ी ते चाडे छ बांन्सा किना क बसाववामां भावे ही ते सुदी पढे
है मजबूत गार्ड वन दिना पण चाड़ी शके छ, प्टछ धेने तमे बीपता
मधी. ' पछी बैड्टिफ-दाह्रवाजाने तेमणे दायु ' 🛊 बैड्टिक 🛚 समारी
से कुंडी दुर्वळ होय रेने बांसनी पटीओशी बांपीने पछी रेमां मच मरा
हो एण मजबूत कुडोने बंधननी अहर बडती नया आर्थ समुद्र
दुर्बेळ गाद्य अवता कुद्री घेंबा छे, स्वारं कमें मजबूत गाद्या अवया
```

[समुद्र वार्य

रोमनो भाइत भा रीने छेबामां भारे छे <sup>18</sup> यहण्डन्पस्य नी इतिमां सामै मगू, आर्थ सनुद्र अन वार्व सहरतीना मठोना एक साथ उन्हेम्ब क्रोस्रो छे <sup>४</sup> जेपायर शीण यहाँ आर्थे समुद्रे बादपोपगमन्त्री देहायाग

पुँची जैना छाँप, वार्य समूद्र सारी रीत भीगर्सपान करी शके, य माटे

च्यो हता १ तमे सपु आर्थ ६ तत्र व ही धानप्रदेश शास्त्रीकोत्तरी देवरियो । वेदरिये

१ व्यना (वरे ६) से १४१-४६ व्यम (वरे ६) ह

19]

प स्टब्स मण १, ४, ४४

भाग ग्राहरणानकारी । स्थ्य ( वरे ६ ) कु. ४४

५ भागी इ. २३८

म न

मोर्वशाप राज्ञ अपोद्धना अंध पुर कुल्लिका पुर े धैन परे बग प्रमाप ने उस्पिनंशों बगना हता धन रहाँ रहीने एन आस दक्षिणापथ, मुराष्ट्र तथा आघ्र, दाविड आदि देशों तावे कर्या हता.

जैन कथा अनुसार, सप्रति पूर्वजन्ममां कीशांवीमां भिखारी हतो अने मरती वखते आर्थ मुहस्तीनो शिष्य थयो हतो. वोजा जन्ममा ते राजा थयो, ए वखने आर्थ मुहस्ती उज्जियनीमा जीवन्तस्वामीनी प्रतिमानु वदन करवा माटे आव्या त्यारे रथयात्रामां एमने जोईने संप्रतिने पूर्वजन्मनुं स्मरण थयुं अने ते आचार्यनो शिष्य अने मोटो प्रवचनभक्त थयो. संप्रतिनो राजिषड आर्थ मुहस्तीना शिष्यो वापरता हता ए निमित्ते महागिरि अने सुहस्ती ए वन्ने आचार्यो वच्चे मतमेद थयो हतो, जेमां छेवटे सुहस्तीए क्षमा मागी हती.

ए समये साडीपचीश आर्यदेशो सिवायना प्रदेशोमां जैन साधुओनो विहार थतो नहोतो. आथी संप्रतिए पोताना सरहदी माडिलकोने
बोलावी तेमने जैन धर्मनो उपदेश आप्यो, अने साधुओ ज्यारे एओना
देशमां विहार करे त्यारे एमनी प्रत्ये केवा प्रकारनु प्रवचनोचित
वर्तन थवुं जोईए एनुं सूचन कर्युं. पछी संप्रतिए राजपुरुषोने साधुवेश
धारण करावी ए देशोमा मोकल्या, अने ए रीते त्यांनी प्रजाने साधुओ
साथे केवी रीते वर्तवुं एनी विधिथी परिचित बनावी पछीथी साधुओ
पण त्यां जवा लाग्या, अने सरहदी देशो 'मदक'-विहार योग्य
बन्या आ प्रमाणे संप्रतिए आन्ध्र, द्रविड, महाराष्ट्र, कुडुक आदि
सरहदी प्रदेशो, जे अनेक अपायोथी भरेला हता तेमा साधुओनो
सुर्वविहार प्रवर्ताव्यो "

संप्रति राजा ए जैन इतिहासमा मोटो प्रवचनभक्त राजा गणाय छे तेणे सवा करोड जिनचैत्य, सवा करोड जिनमिंव, छत्रीस हजार जीर्ण जिनचैत्योनो उद्धार, पचाणु हजार पित्तळना भिंव तथा हजारो उपा-श्रयो कराव्या होवानी अनुश्रुति छे चाजे पण कोई स्थळे मूर्गर्भमां दरायेली प्रतिमा मळे छे एने श्रद्धां जैनो संप्रति राजाना समयनी माने छे. १ तुमी कुलाई

**१ क्यों,** माम १ प्र. ९१७-१८

१ नियू, सम्प १ प्र. ४**१**८

र शत्रो सक्तमिति साथै सबस्ती आर्थ

भ बुक्से साथ ३, ४ ९१७-२१

e affic E nev-cy and E nec

#### सरस्वती

उत्तर गुजरासमी सरस्वती मंदी जेना किनोरे पाटण, सियपुर कोरे कैतिहासिक स्वानो भाषेषां छे

सरस्कतो नर्नानो पूर्विदशासिम्बल प्रबाह भ्यां छे त्यां ब्र्युने कार्नदपुरवासी केको शरवकतुमां यबावैमन सलक्षि—वबाणी करे छे वे वळी अन्यत्र एक विश्वसनी सलक्षि माटे सरस्वसीमात्रानुं क्यां हरण आपेखं छे

सरस्वतीनो प्रवाह पूर्वजी पांचमे वह छे आधी से बोहा प्रदेश मां पण प पूर्विमनुस्य बाय छे ए अदेश पत्रिज गणाम छे सर-श्रवीनो जा मानीनवाह ' प्रवाह सिस्यपुर पास छे, अने त्यां जूमा समयधी कार्तिको पूर्णिमाने दिवस मोगो मेळी भराव छे, आगं जात पासमा करेशामीच हजारो मांगली एकत्र साथ छे आनस्पुरवासी होको 'मी वर्ष 'प्राचीन कान-पुरानी कारमणसमा विस्तास्मा बस्छा होको 'मी करिए ही एची भितासिक चौरिक्य सरक्षारो

सरस्वतीना पूर्वाभिद्याल प्रवाहनो उन्छल व्यवसिह्युरिना 'हम्मीर मदमर्वेन 'माटक (हें स न्या १९मा शतकनो पूर्वार्थ) मां सिद्यपुरना उत्तमक्षकमन्य वर्णनप्रसंसामा यण के

सरस्वतीत्व इतिहास माटे जुणा 'संगातना इतिहास मां परि विध ९; प्रमुणां सरस्वती, तथा श्री कनैयाहास वये संगादित 'सर

# स्वती पुराण '

- ९ वृहसे, भाग ३, ८ ८८३-८४ जुओ आ**नन्दपुर**
- २ तत्य ताओ मदाडीओ एगदेवसियाओ जहा सरस्सईजला, कास्चू, ष्ट २:२

३ न्नमस्या [ सरस्याया ] सिखपुग्परिसरे प्राचीमुखप्रसमर पय - प्रवाहनविवसन् सुचिरविरिधिशिर कर्त्तनसञ्चातपातकविशुद्धधिमिव भगवान् भदमहाकालः, हम्मीरमदमर्दन, प्र ४७

### सहस्राम्रवन

उञ्जयतिगरि उपरनुं ए वन, ज्या नेमिनाथने केवलज्ञान थयुं हतुं.

१ एको, पृ. १६९-७०

# सह्यपर्वत

पश्चिमघाटना उत्तर तरफनो माग. एनो उल्डेख 'आवश्यकसूत्र'-नी निर्युक्तिमा हो 'एक दुर्गमा वसता कोंकण देशना पुरुषो सद्य नामे पर्वत उपरथी घउं, गोळ, घी, तेल आदि उतारवानु अने त्या चढाववानुं काम करे हो, 'एवो पण निर्देश हो

१ आनि, गा ९२५

२ एकस्मिन् दुर्गे निवसन्त कुङ्कुणपेकोद्भवा पुरुषा सम्माम्न पर्वताद् गो वृमगुङ्गत्तेलादिभाण्डमवतारयन्त्यारोहयन्ति च । क्षाहेहा, पृ ५५

कोञ्चणे एगम्मि दुग्गे सज्झस्य भड आरुहति विलयति य, आम, पृ ५१२

### सातवाहन

जुओ साछवाइन

### साम्ब

जाबवतीथी थयेटो कृणनो तोफानी पुत्र. एना अडपलांनी कथाओ अनेक स्थळे छे, अने ते पुराणादिमा वर्णवेली कृणानी कीडाओ साथे १८८] [ सम्बर्ति

९ हमी इत्याख १ इस्स, माग ३ ४ ९९५⊷१८

३ मिन् साम २ १८ ४३८

४ छनो महामिरि कार्य सुहस्ती आर्थ ५ बक्को सन् ३. प्र ९९४-१९

र कहि छ १९४-१५ क्यों छ १९६

#### सरमधी

उत्तर गुजरासनी सरस्वती मधी, जेना किनोर पाटण, सिटपुर बरोर कैतिहासिक स्थानो कावेलां हे

सरस्वतो महीनो पूर्वविद्यामिस्तल प्रवाह भ्यां हे त्वां व्यंहें लानंतपुरवासी क्षेत्रो शरवस्तुमां यवावेमव संसाह-उवाणी करे हे वळी अन्यत्र, एक दिवसनो संसाह माटे सरस्वतीयात्रानु उर्वान् हरण काफेर्स हे

सरस्वतीनो प्रवाह पूर्वेची पांचमे यह छ आधी से शोहा प्रवेचन मां पण प पूर्विमञ्चल बाय छे ए प्रदेश पवित्र मणाय छे सर-स्वाहीनो बा 'शाचीनवाह' प्रवाह सिखपुर वास छे बान त्यां स्वा समयची कार्तिकी पूर्णिमाने दिवत मोटो मेटो मराय छे, ज्यां कास पासमा प्रदेशमांची हवारी माणसो एक्ट्र भाग छ 'बानिस्पुरवारी छोडो 'नो बार्ब 'प्राचीन बानस्पुरनो कासपासन्य दिस्तारमा वसरा

क्षेत्रो ' यथे करिय तो यथी कैतिहासिक भीक्तिय बळवारा सरवर्तीमा प्रवेतिग्रस प्रवाहनी व्यक्तेस वयसिहास्तिना ' हम्मीर मन्दम्बर्तन ' माटक (हैं स. ना १ ६मा व्यक्तेन प्रविच) मां सिद्धपुरम

इक्रमहास्थाना सर्गनप्रसंगामां एव छे । सरस्वतीमा इनिहास माटे जुजा स्नेतातमा इतिहास 'मां परि रिक ९, प्रमानां सरस्यती तथा औ. स्नेयासम्बद्ध त्रे तंपारित 'सर साम्य ] स्वती पुराण '

५ वृक्षे, भाग ३, पृ ८८३-८४ जुओ आनन्दपुर

२ तत्य ताओ सदाडीओ एगदेवसियाओ जहा सरस्सईजला, शास्चू, पृ ३.२

३ नृतमस्या [ सरस्वायाः ] सिखपुग्परिसरे प्राचीमुराप्रसमर पय - प्रवाहमिववसन् सुचिरविरिधिशिर कर्त्तनसङ्गातपातकविशुद्धवर्थमिव भगवान् भद्रमहाकाल., हम्मीरमदमर्दन, पृ. ४७

### सहस्राम्रवन

उञ्जयतिगरि उपरनुं ए वन, ज्यां नेमिनाथने केवलज्ञान थयुं हतुं.

१ ककी, पृ १६९-७०

# सह्यपर्वत

पश्चिमघाटना उत्तर तरफनो भाग. एनो उल्डेख 'आवश्यकसूत्र'-नी निर्युक्तिमां छे ' एक दुर्गशां वसता कोंकण देशना पुरुषो सहा नामे पर्वत उपरथी घउं, गोळ, घी, तेल आदि उतारवानुं अने त्या चढाववानुं काम करे छे, ' एवो पण निर्देश छे

१ आनि, गा ९२५

२ एकस्मिन्, दुर्गे निवसन्त कुङ्कुणपेकोद्भवा पुरुषा सहानाम्न पर्वताद् गोधूमगुडधृततैलादिभाण्डमवतारयन्त्यारोहयन्ति च । क्षाहेहा, पृ ५५

कोङ्कणे एगम्मि दुग्गे सज्झस्य भड आरुहति विलयति य, आम, ए. ५१२

### सातवाहन

जुओ साछवाइन

### साम्ब

जावनतीथी थयेरो कृणनो तोफानी पुत्र, एना अडपलांनी कथाओ अने क स्थळे छे, अने ते पुराणादिमा दर्णनेली कृणानी कीलाओ काले १९०] [साम्ब

केटलक कोरी मळती बाबे छे फैन्छीक उदाहरणकर कबाजोनी धरेप कहीं बाज्यों छे : दारबनीमां बचनेचना पुत्र निखदनो पुत्र सागरबन्द खब न्याळी

हता अने साब वर्गर सबेने ते प्रिय हता दारवतीमा वसता बीजा एक राजान कम्प्रमाला नामनी एशी च रूपशान पुत्री इसी. सप्रसेनना भाजेब धनतेब साथे पूर्व सगपण करछ हत् एक बार नारद सुनि सागरपन्द्र पासे भारता अने देनी भागळ कमस्मेखानी प्रश्नेसा करी-भाषी सागरवरह कमक्रमेकामां भासक बया, अने ते करवानी भाइति चीतरतो द्वा पूर्व नाम रहतो रहेना साम्यो. पृत्री नारद क्रमस्मेस पांचे गया, बने पनी आगळ तेमणे सागरचन्द्रनी प्रशसा करी अने धमदेवनी किन्दा भरी भाषी समस्रोसा पण सागरचन्त्रमा शासक भर्र मारदे भा बात बहुन सागरचन्द्रने करो. प्रश्नी सागरचन्द्रों स बने कमण-मेखा साथे पीधानो मेळाप करी भाषवानी विनति करी. बोमा कुमारोप सांको सब पिकराबीने छेनी पासे आ किनेंदो स्वीकाराबी, पण सबनु घेन उत्तरी गया पछी सांबन का कामनी मुस्केलीन मान वर्ष विचार करीने हेणे प्रचुम्न पासे प्रश्नुष्तिविद्यानी मागणी करी। प्रश्नुष्तिनी सहायमी सेणे कमक्रमेसान अधिकार विकर्मी तथा कमक्रमेसानी जगाए गोठकी तीर्थ भने वे दिवसे कमक्रमेसानु धनदेव साथे क्रम्त बवानु हुतुं है दिवसे वर्नु हुरण कर्मने रेवतक उचानमां पन सामारचत्र साथे वरणाबी बीची वटी पनदेव साबेना अन समये विवापितस्य तो न्यहास करीने नाकारामां उन्हीं गर्सु. कम्प्रमेख निरो नारदन पृथ्वामां कावतां रोमणे कर्यु के इस्प्रमेखने में रैक्टफ उपानमां बोई हती फोई विकास एने हरी गया है 'सा सोमळी कृष्य सैन्य सीक्षर नगरनी बहार नोक्रक्या सींब पण निया-बरन रूप करण करीने छडवा गाँउ सामे बाध्वी सर्व राजाओना सकि पराजय करो, पण स्वारे एणे जोधु के पिता कोबायमान बसा 💆 त्यार ए इच्छने परे पडचा, अन कर्मे, आ कम्मानेका आपवात करवा माटे गोलमांथी पडतुं मूकती हती, तेने वचावीने अमे अहीं लाव्या छीए 'पठी कृष्णे उप्रसेननुं सान्त्वन कर्युं अने वधा सुलपूर्वक रहेवा लाग्या

एक वार भगवान अरिष्ठनेमि द्वारवतीमा समोसर्या एमने। उपदेश सांभळीने सागरचन्द्रे एमनी पासे दीक्षा लीधी ए पछी एक वार सागरचन्द्र शून्यगृहमां एकरात्रिकी प्रतिमोमां रहेला हता त्यारे धनदेवे एमना वीसे नखमां त्रांवानी सोयो ठाकी दीधी आधी सागरचन्द्र मरण पाम्या. वीजे दिवसे तपास करतां त्रांवाना कारीगर पासेथी माद्यम पड्युं के आ सोयो धनदेवे घडावी हती कोधायमान थयेला सांव आदि कुमारोए धनदेव पोताने सोंपी देवामां आवे एवी मागणी करी. परिणामे यादवोना वे पक्षो वच्चे युद्ध थयुं, परन्तु देव थयेला सागरचन्द्रे बन्नेने शान्त कर्या. पछी कमलमेलाए पण भगवान अरिष्ट-नेमि पासे दीक्षा लीधी

एक वार जांबवतीए कृष्णने कह्युं के 'मारा पुत्रनुं कोई तोफान हजी जोवामां आर्ट्युं नथी,' त्यार कृष्णे कह्युं के 'काई वार वताबीश.' पछी कृष्ण पोते आमीर थया अने जाववतीए आमीरीनु रूप छोधुं, अने तेओ द्वारवतीमां दहीं वेचजा फरवा छाग्या. साबे जांबवतीने जोईने दहीं छेवा बोछावो, अने पछी तेने एकछीने पराणे एक देवळमां खेंचो जवा छाग्यो. पाछळथी आमीरना रूपमा कृष्ण आव्या, अने बन्ने वच्चे युद्ध थयु आमीर कृष्ण वासुदेव थया अने आमीरी जांबवतीरूपे प्रकट थई, एटछे माबापथी शरमायेछो साब अवगुठन करीने नासी गये। बीजे दिवसे यादबोनी सभामां एने पराणे बोछाव-वामा आव्यो त्यारे ते छाकडानो एक खोछो घडतो घडतो आव्यो. कृष्णे एनुं कारण पूछतां ते बोल्यो, 'जे गई काछनी वात कहेशे एना मुखमां आ ठो हवानो छे.'

ॅं १ क्षाम, पू. १ः ं ं — ं - ं

१९२ ] [ साम्ब

होन सने प्रपुतनती क्षीनत्यों करवमामाना युत्र माहती यति करेकी पत्रवाकी कच्चे करेडूं स्थान्त देवतिकांकत त्या केन्द्र एक नदर करेको सन्दार, ए वर्ष मांत्र तुम्मे बद्धोन-विद्ये वा पीटिका इक्त मास्तियक्ष ए विभागों (युत्र, सन्दार्ग प्र ९२-१४२) बाली कमान्त्री तेमाने सन्दिक्त पत्री करानिक इसे एक नाइन पत्रवामानी वास्तविक स्थिति तथा आहरोता स्टेडिक संबंध तथा तोइन पत्रवामान स्थानिक एके हैं

साम्मरि

सामर-शाकमरी सपावस्थानुं मुख्य शहर ै सामरिना ध्वणनो उन्देख मळ हे ै

ा म्बोडि पू. १४४ वर्ग १४८ वर्ग क्षेत्रे सुपादकस

२ कनमें च सीमरिकनमें बनहा छ ११८

पुरः सीवर्षकं कैन्यनं वर्नत्येरीहवातं सरनं च स्रोम्स्स्मनं पन्य १८ ७

#### सासपादन

गोदाबरीने फिनारे लावेज प्रतिष्टावनी राजा ै एवां 'शास्त्रबहन,' 'शास्त्रबहन' कते 'साहबाहन' यहां वण नाम मळे छे व दर वर्षे गरु-रूप्टना नमोशाहन राजा उपर बाक्रमण करतो हुतो साहबाहनग मंत्रोनु नाम सरक हुतु ै साहबाहननी स्वन्यायी काछडावार्से यद्वेगण वर्ष स्तुपनि बरक पचमीए काबाहुं तरु कर्यु हुतु \*

मधुरा तेम ज दक्षिण मथुरा वन्ने उपर विजय कयों. पछी जईने राजाने विजयनी वधामणी आपी ए ज समये वीजा कोई दृते राजाने जईने कहु के 'अप्रमहिषीने पुत्र जनम्या छे 'त्यारे वळी त्रीजाए खबर आपी के 'अमुक स्थळे विपुल निधि प्रकट थयो छे.' आ प्रमाणे एक साथे अनेक मंगल समाचारो आववाथी अतिहर्षने कारणे सालवाहन दीप्तचित्त थई गयो ते पलगो तोडवा लाग्यो, स्तंभो उपर प्रहार करवा लाग्यो, अने अनेक प्रकारे असमंजस बोलवा लाग्यो एना प्रलापमा नीचेनी गाथाओ पण हती '

सच मण गोदावरि ! पुन्वसमुद्देण साविया संती । साताइणकुलसरिस, जित ते क्ले कुलं अत्थि ॥६२४६॥ उत्तरतो हिमवंतो, दाहिणत सालिवाहणो राया । समभारभरकंता, तेण न पल्हत्थए पुहवी ॥ ६२४७॥

[ अर्थात् हे गोदावरी ! पूर्व समुद्रना सोगन खाईने सार्चुं कहे : सातवाहनना जेवुं बीजुं कोई कुछ तारा कूछ-किनारा उपर छे !

उत्तरमां हिमालय अने दक्षिणमां शालिवाहन राजा-एम (वन्ने दिशामां) सरखा भारथी आक्रान्त थयेली पृथ्वी चलायमान थती नथी ]

पछी राजाने भानमां छाववा माटे खरक मंत्रीए एक उपाय क्यों अनेक स्तंमो अने भीतो तेणे तोडी नाख्या राजाए पूछ्युं : 'आ कोणे कर्युं ' एटछे मंत्रीए उत्तर आप्यो 'आपे.' पछी 'आ मारी आगळ मिथ्या भाषण कर् छे 'एम मानीने राजाए तेने छात मारी. सकेत प्रमाणे बीजा माणसोए अमात्यने अन्यत्र छुपावी दीधो. पछी कंईक जरूर पडतां राजाए पूछ्युं 'अमात्य क्यां छे शे पेछा माणिसोए कर्युं 'आपनी आगळ अविनय कर्यों, तेथी एमनो वध करवामा आब्यो छे.' यारे राजा सोरवा मांड्यो के 'में आ सारु न कर्युं, ए समये मने कंई भान न रह्युं ' पछी पेछा राजपुरुषो बोल्या के

े हदा ह नदास्त्र माना भन् रक्षण पर्ने होन तो समे समास करिए." हाँकी समारयने स्वादवामाँ आव्या अने राजा प्रसम सया <sup>8</sup>

सालवाहनती अप्रमहिपील नाम पृथ्वी हर्ते एक बार राजा क्यांक यहार गयो हतो स्मारे देना पेश धारण करीने. मधी राणीमीबी वीटकाईने री राजाना कासन उपर वेडी केन्स्रीक बार पड़ी राजा स्वर्ग भारता, हो पण ते उसी महि पृथ्वीनं भा पर्तन राजाने गम्पु नहि ध्वरि प्रयम् बोछी के राजा स्वारे दरबार मरीन बेडो होय स्वीरे गुरुवनो सिवाब बीवा गमे टेवो मोटें। माणम आने हो पण है उन्हों थतो नवो है तमारी सीम्न करतो हती, तेको कमी ज औं सी पुम न होत यो अस्त कभी मईन संगई अभिनाशन करत ! एम करीने हेणे राष्ट्राने प्रसन्न क्यों "

4 सभो प्रतिभाग

र सम्बो समीबाहरू समोबाहर से हैंपूरी सनवा श्रीका श्रीक्री वर्वोर्वेशं वरको सहरक्षवंशीय एक-धन्नप बहराव, तथा सामवाहय अन्तर्ग श्रतशाहन ते एवं। समझानिन सादवाहन बेसनी योतनीपुत्र झातवाहे होई सके या संग्रहमां एवं समी मामीबाइन

३ वृत्रते बाय ( ४. १६४४

अ क्रमी कारकासार्थ-२.

५ मा रीसचित सम्ब अस्त्री हे त्यां एती वर्ष इरवाली ह्रवीम्मस (Excited) एवी के श्रीकी वर्षण्यानाकी व्यक्त करण मादे बादनन अमेक सम्बोधी कहर के स्वारे का सूत्री ध्वनू प्रथमित करश जेनों के जानों एक पीओ छुन्द जिप्ताचित्र के राथ मन बस्तावारियों केनी बड़ा मध्य महै भी होत ए क्रिपाविता क्रहेशन के (समी जीवपानराजेन मन्द ३ वी वितर्वित ).

६ मुख्या या ६१४४-४९ वृद्धी साथ ६ व. १६४०-४६

म्बस्स (अहे ६ घर १९९–१ १), अदस (अहे ६),

T 71-19

# सिद्धराज जयसिंह

सं. ११४९ थी ११'९९=ई. स. १०९३ थी १'१४३ सुधी अणहिल्लवाडनी गादी भोगवनार गुजरातनो चौलुक्यवंशीय राजा

अभिलिपत घन होय छता एनी रक्षा, प्रतिष्ठाप्राप्ति अने अभीष्ट स्नीनी कामना करता मनुष्य दु.खी थाय, अने स्नीनी प्राप्ति थाय छतां मनुष्य पुत्रादिनी आशाथी दु:खी थाय-ए संबंधमां राजा सिद्धराज जयसिंहनुं उदाहरण 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'नो रत्नशेखरनी वृत्ति (ई स. १४४०) मां आपेलुं छे.

सिद्धराज विशेनी या प्रकारनी किंवदंती छोकप्रसिद्ध हशे, ते उपरथी था उदाहरण छेवायुं छागे छे.

१ एवमिन्द्रितिचनत्वेऽपि तद्रक्षास्त्रप्रतिष्ठाप्राप्त्यभीष्ठ-स्त्रीसंयोगका-मितकामभोगाद्याशया तत्प्राप्तावपि सिद्धराज-जयर्सिस्नुपादिवत् पुन्ना-यपत्याशया . .सर्वदापि द्वास्त्रिन एव,...श्राप्तर, पृ १०१

# सिद्धसाधु

तेओ हरिभद्रसूरिंना शिष्य हता. बुद्धधर्मनो मर्म जाणवा माटे तेओ बौद्धो पासे गया हता, त्या बौद्ध मतथो तेओ भावित थया, पण गुरुने वचन आप्युं हतुं, एटले तेमनी विदाय लेवा माटे आन्या गुरुए तेमने प्रतिबोध कर्यों, पण बौद्धोने पण वचन आप्युं हतुं एटले पाछा तेमनी विदाय लेवा माटे गया. लोम एकवीस वार थयु. छेवटें हरिभद्रसूरिए तेमना प्रतिवोध माटे 'छलितविस्तरा' वृत्ति स्चीं, त्यार्भे पछी तेओ गुरु पासे स्थिर थईने रह्या

'प्रभावकचरित ' अनुसार का सिद्ध साधु ते 'उपिनित्भवप्रपंच कथा'ना कर्ता सिद्धिषि छे. पण ऐतिहासिक प्रमाणो आपणने निश्चित-पण एम मानवा प्रेर छे के सिद्धिषि ए हरिमद्रसूरिना प्रत्यक्ष शिष्य नहोता, केम के सिद्धिना पोताना ज कथन मुजब, तेमनी उपर्युक्त कथा १९६] [विद्रगई

स ९६२=ई स ९०६मा रचाई छे, ज्यार हरिमहस्ति ए विक्रमना जाउमा सैकाना उचरार्थमां बने नयमा सैकाना एवंकिमां करें गयमा है काना एवंकिमां करें गयमा है किस्मित्रनो उन्हें स्वार्थ के के सेमणे किस्मित्रनो उन्हें स्वार्थ के के सेमणे किस्मित्रनो इन्हें स्वार्थ के के सेमणे किस्मित्रनो हो हो जाने सेमणे किस्मित्रना हो हो जाने सेमणे के बनागठ—महित्यमो निवार करें में प्रोताने माटे हरिमाई रची ए सिहारिमा सम्योता बास्तिक का से प्रेत के सन्ने प्रयास सम्कादिन नयी एमा से एक एवं किस्मित्र निवान का स्वार्थ के के सन्ने प्रयास सम्कादिन नयी एमा से एक एवं किस्मित्र एमें सिहारिमा सिहारि

१ भागर छ ३६ । १ प्रच सिद्धार्थियरित को ९९–९४७

३ एडेबी मोनिक्यम झाम्बरमाळ प्राचार्च वित्तविज्ञवानीयो विवय विद्यालकार सम्बन्धिक

#### सिद्ध सेनग नि

विनश्रमणि खमाभ्यमणहरू बीतक्ष्यपूर्वत्र उपरानी पूर्णिया कर्जा व्या सिद्धिमर्गाण विनगरमणिनी एसी वर्षाम् हूँ स २०९वी वर्षांचैर क्षांत्रमां प्रथा एटकुं तो नद्धों छे पण तेमना सम्य विशे तवा तैमो क्षेण हता प विशे निद्धस्पूर्वक कही शकाय एस नवी. 1

१ बीवक्तनपूर्विः समान्ता । विद्युगेनक्षतिरेषा । बीकस् प्र ३ ९ बीक्स् प्रतानवा प्र १७

#### सिक्सेन दिवाकर

्भावि मेस तार्किङ इति मने स्तृतिङ्गात खेमने परंपराची राजा

विक्रमोदिःचना समकालीन गणवामां आवे छे, तथा विक्रमने जेमणे जैनधर्मी क्यों होवानु मनाय छे

एमने विज्ञेन। केटलाक प्रकीण उल्लेखों आगमसाहित्यमा छे एमा सौथी महत्त्वनी उल्लेख केवलीन केवलज्ञान अने केवलहंगन युग-पन थतु होवा विज्ञेनो तेमनो मत छे आगमिक मत एवो छे के केवलीने केवलज्ञान अने केवलदर्शन युगपत्—एक साथे थतु नथी, पण एक समये केवलज्ञान अने वीजे समये केवलदर्शन एम वारवार थया करे छे सिद्धसेन आ मतने तर्कथी असिद्ध गणे छे जिनभद्रगणि क्षमा-श्रमण जेवा पछीना आचार्योए सिद्धसेनना आ मतनुं खंडन कर्यु छे. आगमसाहित्यमा सिद्धसेन अने जिनभद्रना आ मतांतरोनी वारवार नोंव हेवामां आवी छे.

सिद्रसेनकृत ' द्वार्तिशिकाओ ' माथी कवित् अवतरण आपवामा आवेलु छे " ' निशीधसूत्र ' उपर सिद्धसेने एक टीका रची हतो, एम ' निशीधचूर्णि ' मांना उल्लेखो उपरथी जणाय छे " पण आजे ए टीका विद्यमान नथी ' योनिप्रायत ' शास्त्रथी सिद्धसेनाचार्थे घोटा वनाव्या होवानो उल्लेख पण छे " एमना सुप्रसिद्ध न्यायप्रन्थ ' सन्मतितर्क-' नो ' उल्लेख प्राचीन चूर्णिओमां ' दर्शनप्रभावक शास्त्र ' तरीके करेलो छे "

'न्यायात्रतार सूत्र' अने 'क्ल्यागमन्दिरस्तोत्र' ए सिद्धसेन-नी अन्य कृतिओ छे

सिद्धसेनना समय विशे विद्यानोमा जबरो मतमेद छे अने ईसवी सननी पहेली अताब्दीथी माड़ी सातमी शताब्दी, सुधी जुदा जुदा विद्यानोए एमनो समय गण्यो छे 'सन्मतितक 'नी प्रस्तावना (प्र-३५-४३)मा तेमनो समय विक्रमनो पाचमो सेको गणेलो छे. मिस शालींट कोनेए सिद्धसेनने समुद्रगुप्तना समकालीन गण्या छे."

सिद्धसेन विशेना परेपरागठ श्वान्त माटे जुओ ' प्रमावक निरित्त-' मां 'इदवादिचरित 'तवा 'प्रबन्धकोरा मां 'इदवादि-सिद्धकेन सुरिप्रमन्द, ' सबा एमना बीधन विशे कैतिहासिक चर्चा माटे जुन्मी 'स मतिप्रकरण, ' प्रस्ताबना, पृ ३५ ८२ सिद्धसननी विशिष्टतामोना संश्रित, पण समर्थ निक्रपण माट जुओ 'मारतीय विषा, ' पु. ३, सिपी स्पतिप्रवर्मा प सस्रग्रह्मानो छेस 'प्रतिग्रामर्ति सिद्धमेन दिवाहर.'

वभो गन्धास्ती

१ मसल (बराड १ वे ३), तहा दूर ५६ कंग्र दूर ९३४ ११५ ११४ ११५ क्वं छ ११५ क्वे छ ११७ **छवारि** 

१ इसको साथ १ इ. ३५५

 प्रतस्य विशादममाद्वादायस्य विद्यप्तेनास्यांकः स्वयंत्राभिवानेवार्यमः मिवते। दिवा भाग १ प्र ४४

मस्थार्थस्य राष्ट्रतरं अवस्थानं सिद्देशेवाचार्वः करोति-स्वतः पश्च-

क्खार्स (मा मा ३३) प्रज प्र. ९६ मा. या ५ ४ (एवंब तं इतिई ) क्षित्रहेणकृत के केम के एवी

क्तें सक्ते छे दरमेनार्वे शिवसैवानार्वे दन<u>त</u>काम इदमात, ए स पू ३५३ ४ वत्र योग्जियस्तानिया अवेकेन्द्रियस्थियस्थानि विर्वर्तपनि वना

विवरेगायार्वेनाया बलाविताः ।

नुबन्धे मान ३ ४ ७५३

निसीवपूर्वि सो एवं भा जबायों बस्केब हे ('क्रमातिकाएं प्रशासना प्र ३४).

५ प्रव (बहुराई) प्रस्तावर प्र. ४६

६ विज्यानिस विद्यों क्षेत्र हम्बदन क्रिटोचर, अन्य ६ पू. ४३५ दियात.

 मिकत केंग्लुक (प्र ११६-२८)म्म देमलो केल पियरोक रिवादर जेन्द्र विकासक्षित् "

सिन्धु ]

# सिनवङ्घी

सिनदहरी रण जेवी जगा हती कुंभकारप्रक्षेप नगर त्या आवेछं हतु

'सिनवन्ही 'नुं 'सिन' अग् 'सिन्ध ' शब्दनुं अपश्रष्ट रूप हुओ शुम्भकारमक्षेप, वीतभयनग्र

९ धाचू, उत्तर भाग, पृ ३४-३७

# सिन्धु

[१] सिन्धु नदी. गंगा, सिन्धु वगेरेने महानदीओ कही छै अने तेमना जळने 'महासर्छिलाजल' कह्युं छे रैं

[२] सिन्ध देश सिन्य आदि देशो ' असंयम विषय ' (ज्या संयम पाळवो कठण पडे एवा प्रदेश) होवाथी त्यां वारंवार विहार करवानो निपेध करेलो छे. सिन्धु, ताम्रलिस (खंभात) आदि प्रदेशोमां मच्छर पुष्कळ होय छे 'सिन्धना ऊटनु चम धणुं मृदु होय छे.' सिन्धना गोरसनो खोराक व्यापक प्रचारमा होवाथी जे सिन्धवासीए दीक्षा लीधी होय ते गोरस विना रही शकतो नथी. 'सिन्ध देशमा अनिने मंगल गणेलो छे, तथा त्या धोबीओने अपवित्र गणवामां आवता नथी." सिन्धु विषयमां वगर फाडेला, आखां बस्नो पहेरवानो खिना छे. दुर्भिन्नना समयमा मांसमञ्ज्य सामान्य छे, पण सिन्धमां सुनिक्षना समयमा पण लोको मास खाय छे त्यां नदीनां पाणीथी धान्य नीपने छे ' सिन्धमां दारू राखवाना पात्रमां पण भीजन गहिंत गणातु नथी, एवो दिशाचार छे '

१ वृक्ते, भाग ४, पृ ९५७

२ ए ज, भाग ३, पृ ८१६

३ स्कूचू, ए. १०१. जुओ ताम्रिक्टिनि.

४ आसूच, पृ ३६४

। सिन्ध ₹00 ] ५ क्याने, आरंग ३ प्र ७७५

क्षिको पू १८ मास पू ६

चित्र साय २ प्र. ३४६ **वस्तो** साय २ प्र 141~€ ८ पड्टा साथ ६ ४ १६८१

९ एक भाष ९ छ. १८१०-४४

१ एव मात्र प्रक्रिकेन्द्र ११ वह (विशेषव्यक्ति) मान्य १ प्र ३०४ है.

#### सि च-सीवीर

साबीयबीचा बार्बदेशो पैक्षीनो एक देश ' एती राजधानी बीति-मय नगरमां इती. ज्यां उदायन राजा राज्य करतो हतो."

भग्न बिस्तीय मुख्याननी शासपासना प्रदेशमे सौबीर कहाँ। छे <sup>ब</sup> भिन्त-सौनी(नो सामान्यत एक कांचे उन्छेस होय छे. ए उपरची बन्न प्रदेशोर्नु एक अ एकम गणातुं होई काईए, बाजना सिन्ध दवा पश्चिम पश्चावना प्रदेशोनो समावेश सिन्छ-सौदीरमां बतो **ह**तो.

सि चु-सौदीरादिमां त्याम इरवा सम्बद्ध विद्युप वच पहेरनार गहिंत भाग छ हेभी हमाँ काश्रा विद्यो पहेरमान विभान छे

१ स्टब्सी प्र ११३ क्यूडे साथ ३ ए. ९११८/४

९ सभी वीतिसयनगर.

। सभी इदायन

४ ज्योदि पू. १८३

५ मस् कतः १३ वरे ६ कविद्व १६९ कप् प्र ५८०-र करी पू. २३ कड़ी पू. २३४ इस्साहि कालो सरायन ीतिमयनगर.

६ व्योषि हु १८३

७ इत्तरा वर १९१३; इस्त्रे का<sup>द</sup> ४ ष्ट १ ७३~७४ बरबाधे सिन्ध

### सिमा

माळवानी एक नदी, जेना किनारे उज्जयिनी आवेलु छे.

रोहकने सिप्रा नदीना किनार बेसाडीने एनो पिता कोई वीसरायेछी वस्तु छेवा माटे पाछो उज्जयिनीमां गयो, त्यारे रोहके नदीनी रेतीमां प्राकार सहित आखी उज्जयिनीनुं आछेखन कर्युं हतुं एवी वार्ता छे.

१ नम, पृ १४५. जुओ **रो**हका.

# सिंहपुरं

अगियारमा तीर्थंकर श्रेयांसनाथना जन्मस्थान तरीके सिंहपुरनो उल्छेख छे, ते वनारस पासेनुं जैन तीर्थ सिहपुरी मानगमां आवे छे.

पण 'स्त्रकृतांग स्त्र'नी शोलांकदेवनी कृत्तिमां उद्धत थयेला एक हालरहामां नकपुर, हस्तकल्प, गिरिपत्तन, कुक्षिपुर, पितामहमुख अने शौरिपुर ए नगरोनी साथे सिंहपुरनो उल्लेख छे. आ सिंहपुर ते बनारस पासेनुं सिंहपुरी के सौराष्ट्रनुं सिंहपुर—सीहोर ए प्रश्न विचारवा जेवो छे ए हालरहामां निर्देशेलां हस्तकल्प अने गिरिपत्तन ए वे नगरो नि.शंकपणे गुजरातनां छे ए पण साथोसाथ याद राखवु जोईए

- १ झानि, ३८३
- े २ 'प्राचीन तीर्थमाला, ' पृ ४
  - ३ सृक्तशी, पृ १५९; अवतरण माटे जुओ कान्यकुब्ज
    - ४ जुओ इस्तिकल्प
    - ५ जुओ गिरिनगर

## **मुन्दरीन**न्द

एने विशेनी कथानो साराश आ प्रमाणे छे नासिक्य—नासीकमा नद नामे विणक हतो, एनी सुन्दरी नामे पत्नी हती सुन्दरीमां नंद अद्यंत आसक्त होवाने कारणे लोकोए एनु नाम 'सुन्दरीनन्द' पाड्युं हतुं. एना माईए दीक्षा लोधी हती. ए नंदने प्रतिबोध प्रमाडवा माटे आल्यो २०२ ] [ श्वन्दरीमन्द

मुन्दरीनंदि तेने मांजन बहोराच्युं पड़ी साचुए तेनी पांछे पात्र उप**रा**र्च भने पोक्षानी साथे चराव्योः सुन्दरीनन्दना मनमां **हतुं के 'ह**मणां माई, मन रजा भापरा ' पण साधु हा तन पोताना निवास म्यां हतो स टबान सुबी हुई गया छोकोप द्वाभमां पात्र सहित मेदन भोगी, क्रमें कहवा समया के 'सुन्दरीनदे दौता सीभी हो !' ब्टलमां हो उचान-मां सामुष् नंतने देशना आपी, पण टल्फर रागशान्त्री होताने कारणे हेने प्रतिकोष पगाडी ककायो निक्र साथ वैक्रिय सम्पनाळा-इन्ह्री मुजबनां रूपो रत्पय करवानी शकिवाद्य हता. तेवणे बानरपुगस विर्क्षि धन नंदम पृष्ठच के, 'सुन्दरी अने धामरी वच्चे केल्छ औरर ! ' नदे ठचेर काप्यों, 'भगवन् ! सरसनं अन मेठ चेटंछें <sup>7</sup> वही सार्ध्रप विधाधारियुन बिकुर्युं भने नंदने पृश्कं एंग्डे तेणे उत्तर भाष्यों के 'विधावती धन मुख्दती सूल्य ऋपताळां हे ' पत्नी भाषप देवनिमुन निकृत्य पटके प देवांगनाने शोईने मंत्र बोच्यो के भगवन् ! आनी भागळ मुन्दरी यानरी बेवी छे 'सामुप इस् के 'बा हो बोडा धर्मबी पामी संकाय है ' जा पछी साथा धर्मनुं फळ विधारिने सुन्दरीनन्दे दोश्चा होती

बुद्धनो कोसमान मार्ड नेद्र पोतानी पन्नी सुन्दरीमां करणासक हतो एने पराणे दीका कारवामां व्यवीहती क्षेत्र रच्यान्तोची नैरान्यमी रिवर कृष्यामां काय्यो हतो-पन्नी कृषा वर्णनम् अध्यत्रेसमा 'सीन्दरानंग्य काम्य'ना वरद्धने कोई स्वक्रमान्तर उपयुक्त कृषामां रुत् वर्षु के पम बणाय थे

पक माई वीक्षिष्ठ होय कने ते गृहस्व माईने त्यां शिक्षा सर्टे भावी पात्र उपहावा एने पोताली साथे द्वाई श्रांत कले पढ़ी होत्य कारे प्र प्रसार उपहुँक कथानी श्रेम खेडुलामीनी पूर्वभवक्रमामां मक्त्रक बने भवदेवना संवेशमां मळे छे श्रे एना प्राचीततम ऋषे 'बसुदेव-द्विकी' (भाषान्तर, रू. २५-२७)मां प्रसा बाव छे सुराष्ट्र ] [ २०३

जुओ नासिक्य

े भाच, पूर्व भाग, पृ ५६६, भाम, पृ, ५३३ सुर्भिय

एक यक्ष. एनुं आयतन द्वारवती पासेना नंदनवन उद्यानमा हर्नुं जुओ द्वारवती, रैवतक

सुराम्बर

एक यक्ष. एनुं आयतन शौरिपुरमां हतुं.

९ पाय, प्ट ६७

# सुराष्ट्

साडीपचीस आर्य देशो पैकी एक, जेनी राजधानी द्वारवती— द्वारकामा हती रे

'अनुयोगद्वार सूत्र'मां क्षेत्रनी वात करतां, मगध, मालव, महाराष्ट्र अने कोंकणनी साथे धुराष्ट्रनो उल्लेख कर्यो छे ैं 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां आपेला 'राज्यदेशनाम'मां 'सौराष्ट्र' पण छे ैं 'सुरहा' अथवा सुराष्ट्र छन्नु मंडलमां वहेंचायेलो हतो ैं

एक माणस 'सौराष्ट्र' एटले के 'मुराष्ट्रनो' केवी रीते कहेवाय ए नीचे प्रमाणे समजान्युं छे िरिनगरमां निवास करवानी इच्छाथी कोई माणस मगधमांथी सुराष्ट्र तरफ जवा नीकळे अने सुराष्ट्रना सीमाडे आवेला गाममा पहोंची जाय, पछी एनो निर्देश करवानो प्रसंग उपस्थित थतां एने माटे 'सौराष्ट्र'—अर्थात् 'सुराष्ट्रनो'—एवा शन्द्रनो न्यवहार थाय छे. वळी 'सूत्रकृतांगचूणि'मा मगधना श्रावक साथे सुराष्ट्रना श्रावकनो उल्लेख छे ('खेते जो जत्थ खेते पुरिसो, जहा सोरहो सावगो मागधो वा एवमादि,' ए. १२७), ए वन्तु सूचवे छे के चूर्णिः 'कारना समयमा जैनधर्मना केन्द्रोमा मगध अने सुराष्ट्र पण हतां. २०४ ] [ स्टाप्ट एक संतिरेशमां ने दिहह माईमो हसा, तेलोप सराप्टमां बहुन

एक हमार रूपक उपाजित कमा हता एतुं एक प्रामीन कमानक छैं ते उपरथी समुद्रभी मेंटायेश सुराष्ट्रमां बहोळो बेपार पासती हती एतुं अनुमान स्वामाविक रीते ज बाय छे 'वसुदेव-दिंडी' (इ. स. ना. पांचमा सैका आसपात) ना 'गन्यवेदचा समक'मांची सुराष्ट्रनी बेपारी बाहोजसालीनुं समझन करती पुरासे प्राप्त बाम छै एमां चारुच्च गामे बिणकपुत्र बीनस्पान, सुबर्ग-मृति, कमसपुत, यबहीप सिंहस तथा पश्चिम बर्बेर अने यबन देशनी कसमसास केदीने पाले परतां सुराष्ट्रमां किनारे प्रवास करती हती सने बिनारो रिश्मावामा हती स्वार्य पूर्व बहुगा मांग गानुं अने सात्र सात्रको एक पाटियान लागरे समुद्रमां मान्यम् पत्नी 'उन्हरावतीनेया' प्रभागमा मोळस्वा तीरारच्या उपर ते केंद्रको गान हती ('सुर्हरूक-

**विंगी,** मूळ पू रेप्रच मादान्तर, पू. १८९)

कुणासना पुत्र संप्रतिय द्राज्ञांभितीमां रहीने स्थितः विद्यार वाचीन स्थाँ होते "स्यान- प् नेमिनासनी वरणम्मीन सने विद्यारम्भि होतें स्था बेत वसनु स्थेर होत अने सेन सायुक्तो प् प्रनेशानी निवरता होत प्रस्तानांकि के पण सर्वतिनुं साधिक्यत स्थां स्थाया पूर्ण केत समेती प्रकृषिमें केम मन्यां होते सा सनुमानने सम्पर्कत साथवां प्रसाणस्य कुणाने काममसाहित्यमां नके हे सुराष्ट्र विद्यानों के साथायाँ हता एक साथमं कामम स्थां व रहेता हता तेमो सम्बद्धाः साथायाँ स्थापनपुर्णेन मानों तथा सुस्वविद्यार की साधान पूर्णा क्षेत्रों सेने संस्तान क्षित्र स्थापन स्थापन स्थापन करनी सायुक्तोना देशसा विश्व सम्बद्धान हते हे से सायुक्ते स्थापन करनी सायुक्तोना हता तथा स्थापन हे प्रसाद सुराष्ट्राची स्थासा करे हे के सुराष्ट्र विषय सम्बद्धान है हो स्थापन के स्थापन करनी सायुक्तान स्थापन स्यापन स्थापन स सुराष्ट्रमां जैन साधुओनो विहार घणा प्राचीन काळथी व्यापक हतो एम सूचवतुं एक लोकप्रचलित पद्य, ई. स. ना पाचमा सैका आसपास रचायेल प्राकृत गद्यकथाप्रन्थ 'दसुदेव—हिंडी'ना 'गंधर्व-दत्ता लभक'मा मळे छे जुओ—

अह णियंटा सुरहं पविद्वा, कविद्वस्स हेहा अह सन्निविद्वा। पिंडियं कविद्वं फुटं च सीसं, अन्वो ! अन्वो ! वाहरति हसंति सीसा॥ ( मूळ, पृ १२७ )

अर्थात् आठ निर्प्रन्थे। सुराष्मा प्रवेश्या, अने त्या एक कोठना आडनी नीचे बेठा, कोठ पड्यु अने (निर्प्रन्थनुं) माथुं फूटी गयुं, 'अब्बो।' ' अब्बो!' एम बोलता शिष्यो हसवा लाग्या (भाषान्तर, पृ. १६२)

सुराष्ट्रनो एक श्रावक उज्जियनी जतो हतो. दुष्काळनो समय हतो एने बौद्ध साधुओनो सगाथ थयो मार्गमा चालता एनुं भाथुं खूटी गयु बौद्धोए कह्युं के 'अमारो धर्म स्वीकार तो तने खावानुं आपीए' पछी श्रावकने पेटमां दर्द थयुं, बौद्धोए अनुकपाथी तेना उपर चीवर ओराढचुं, पण ते तो नमस्कारमंत्रनो जाप करता काल-धर्म पाम्यो "

सुराष्ट्र अने उज्जयिनी वच्चेनो व्यवहार, सुराष्ट्र तथा आसपासना प्रदेशोमा बौद्धोनी वस्ती वगेरे वाबतो उपर आ कथानक केटलोक प्रकाश पांडे छे.

तेल भरवा माटेनुं विशिष्ट प्रकारनु माटीनुं पात्र सौराष्ट्रमा 'तैलकेला' नामथी प्रसिद्ध हतुं. ए तूटी न जाय तेम ज चोराई न जाय ए माटे एनुं सारी रीते संगोपन करवामां आवतु हतु.'

'कंगु'-काग नामे धान्य सुराष्ट्रमा सारा प्रमाणमा थतुं हतुं. १३ आगमसाहित्यना प्राचीनतर अशोमा 'मीनाका करने ( र सम्ब

–सुराष्ट्र<sup>1</sup> (पा. सुरहा, सुरह) शक्तना प्रयोग प्रत्ये स्प**र प**क्षपात खोत्रामां आवे छे काय साहित्यमां पण एम आ छे ए वस्तु नापपात छे <sup>पर</sup>

ा स्प्रकृति प्र १९३ पृष्ठी साग ३, ४८ ९१२∼१४

1 00 8 141

२०६ )

३ समो ग्रामीट ४ समाज्ञ संग्रह्मतं प्रस्का किन्, साम ५, ४, ९४० व

श्वकामिति वेद्यायसम् वदा-यन्त्रविमात्रकानि द्वराच्यायेक सुर्वे

माम १ प्र. १९८ ५ थीस प्र. ५६

भ बास धा पद इंदर्शेल् प्राप्त वर्गशा प्राप्त

ण निक्माग**२ प्र** ४३८

< कुओ सम्मति

९ विच् साय १ ६८ ४३४ ९ क्लांडे साय ३ ६८ ७६०

. 444 414 4 5 444

१९ आर्थ् असर माय प्र १७४

१९ तेवकमा-धीराष्ट्रवेददो अस्मयसीकस्य सामगनिक्षेतः स व सञ्जनसम्बद्धेर्द्धानावाच्य द्वारतः स्योजनी वाचन पू १४

ार् विष्क्षः आवि २ ६ १६५

ी४ सभी उन्नामं सुरास्ट्र. •

#### सुरस्ती यार्प

भार्षे महागिरि भने भार्षे सहस्ती ए व स्थूबमह स्वामीमा शिष्मो हता, पूर्मो महागिरि ए सहस्त्रोना स्वाप्याय हता आगमप्रोक

कावारपाइन माठे कार्ष महागिरि खूब आध्या इता नार्य सुदृश्यीना सावुमी राजा संप्रतिनो राजापित स्वोकारता इता नते

सुरुरवीना साबुमी राज। सप्रतिन्। राजपिङ स्वोक्सरता इता मने सुरुरती ए बस्त्र जामना देवा इता प सुरा छपर तेमनी भने सुरुरवी

## सोपार्क ]

धच्चे मतभेद थयो हतो, जेमां छेवटे सहस्तीए पोतानी भूलनो स्वीकार कर्यो हतो.

अर्थि महागिरिए गजाप्रपदमां अनशन कर्यु त्यारपछी आर्थे सुहस्ती पोताना शिष्यो साथे उज्जयिनी गया अने त्यां भदा नामे शेठाणीनी यानशाला—वाहनशालामां निवास कर्यो त्या भदानो अवित-सुकुमाल नामे पुत्र एमना शिष्य थयो हतो व

धार्य सुहंस्तीना नीचे प्रमाणे वार शिष्यो हताः आर्थ रोहण, भद्रयश, मेघ, कालर्वि, सुस्थित, सुप्रतिवुद्ध, रक्षित, रोहगुन्त, ऋषिगुप्त, श्रीगुप्त, ब्रह्मा अने सोम.

- १ जुंभो महागिरि सार्थ, सम्प्रति.
- २ जुओ शजायपस
- ३ जुओ अवन्तिसुकुमाछ.
- ४ किंक, प्र १६८

### सोपारक

मुबईनी उत्तरे थाणा जिल्हामां दरियाकिनारे आवेछं सोपारा.

आगमसाहित्यना उल्लेखो पण सोपारक समुद्र किनारे आवेलु होवानु कहे छे रयांनी सिंहगिरि राजा मल्लविद्यानी शोखीन हती.

सोपारक जैन धर्मनुं एक केन्द्र हतु आर्य समुद्र, आर्य मगूर अने वज्रस्वामीना शिप्य वज्रसेन जेवा आचार्योनी ए विहारमूमि हतुं, तथा नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृति अने विद्याधर—ए साधुओनी चार शाखाओ सोपारकथी प्रवर्ती हती.

प्रिपद्ध शिल्पी कोकास सोपारकनो वतनी हतो अने त्याथी पोतानुं नसीव अजमाववा माटे उम्जियनी अन्यो हतो ?

सोपारकमा कलालो वहिष्कृत गणाता नहि होय, केम के आर्थ समदना श्रावकोमा एक वैकटिक—दारू गाळनार पण हतो एवी २०८] [सोपारक

उन्छेख् छे । पडोराना महाराष्ट्रमा एण कराचे बहिष्कत नक्कोता अने तमनी साथे बीजाओं भोजन सर्व शक्तना ै एवा बग्म उन्छेखनी सुसना भा साथे करवा जेवी से

सापारक वरिवाधितागतुं नगर हाइ वेपारतुं केन्द्र इहुं परदेशकी प्रत्य भरीने बहुणो बावता (यां एक यार दुर्भिक्षतो सुमिश्च बयो हता ' निर्मायपूर्भिमा नाजयमा एक बनुष्टुति प्रमाणे, सोपारकर्यो वेपार्भिमा वांचसो बुदुबो हतां प्रता कर मान्य परेखो हतो, पण व्यांना राज्ञाण मत्रीना करेवाजो तेमनी पासे कर मान्यो, परन्तु 'प्रम करवाची पुत्रपीत्रादिए पण कर बापनी पदर्श' एम समझीन बपारीमीप ता पादा राज्ञाओ कर्षु के 'कर बापनी न होय हो आगनप्रवेश करी' सम्प्री पापमा य विनिक्षो पहाली द्योगो साथे अनिनक्षश्च करी' मरण पाच्या हता का वर्षाक्षोण भवात रोज्ञाता हती हो। ''

भा हो नो उच्यम कार्थिक-सामाजिक हविहासनी दृष्टिए पणो अगायनो ए गर्भाभी गुम्म लाटजो वरतुमा फिल्ड माम हे सोमारा वैवान्तु मोडु मयक होडूँ पमी वेपारीभानी परिस्ता चुर्डुबा हताँ प वर्मागोजोतु एक महानन हतुं महामन पण तभी पानानी कवरी करो जो माडूँ मनग्र हतुं जलो परिमा प्रतिश्रेभा हता, सर्वान शिप पनी दृष्टिए पण गनागुद्ध मारा प्रतिश्रोभा हता, सर्वान हिए पनी पान्नी प्रस्ता मारा करतां बगा परारोभा मारा पान्या, प बर्खु पण मार्नीन कृति भा (Quilds) ना संगठनना प्रतीक जेवी ए पिर्माणप्रभोनी पृतिस्ता महि पण सन्य भाष्यमा स्वस्त का सनुष्टुरि

भाषाकः पूर्णकः । उभोगाः पुरान्। अन बीद साहित्यमां तेम ज कोक मुगालव कार्या रन्न छ। जुला भुगुन्तां सूचारकः १ इभी य समुद्दतहे सीपारय नाम नगर । उने, पृ. ७९. वळी जुओ आचू, उत्तरभाग, पृ १५२

- २ जुओ अट्टण.
- ३ जुंभो समुद्र आर्य
- ४ जुओ मह्गू आर्य
- ५ जुओ घन्नसेन
- ६ जुओ जिनदत्त
- ७ जुंभो कोकास
- ८ जुओ समुद्र आर्थ.
- ५ जुओ महाराष्ट्
- े १० निभा, गा ५१३३—३४, निचू, भाग ५, पृ. १०२०.

वळी वृक्षक्षे, भाग ३, पृ ७०८

सौर्यपुर

जुओ शौरिपुर

सौराष्ट्र

जुओ सुराष्ट्

# सौराष्ट्रिका

सौराष्ट्रमां थती एक खास प्रकारनी माटीने 'सौराष्ट्रका' (प्रा. सोरिट्ठिया)कहेवामां आवे छे एनो जूनामा जूनो उल्लेख 'द्रावैकालिक स्त्र'मां छे.' एमांना 'सोरिट्ठिआ' शब्दनो अर्थ टीकाकार समयसुन्दर 'तुविरका' एवो पर्याय आपीने समजावे छे, परन्तु ते पण आजे तो अपिरिचत छे सिइसेननी 'जीतकल्पचूर्णि'मां पृष्टीकायना मेदोमां 'सोरिट्ठिया'नो उल्लेख कर्यो छे तथा ते उपरनी वृत्तिमा श्रीचन्द्रसूरिए 'त्विरका' नाम आप्युं छे. ' 'व्यवहार स्त्र'नी मलयगिरिनी वृत्तिमां पण 'सौरिष्ट्रिकी' शब्द छे श्रीचन्द्रस्रिए एने 'वर्णिका' कही छे ते उपरथी ए कटाच गोपीचदन जेवी रगीन माटी होय एवो तर्क थाय छे.

ato 1 ( स्टीरारिटका

र्षं हरगोनिन्ददासना 'पाइम-सर-महत्व्याने'मां 'सोरट्रिमाना एक सब 'करकरी' आपने से

- ९ गेवमविषयसैविक धोरद्रिक्षपिद्वकुस्तर्, दव ५--१-३४
- र धौरान्द्रिका द्वतरिका वृदय पु. ३

महिना-मोध-इरिनास-हिगुसन-एनोक्सि-श्रेयक स्रोग ऐस्प -वन्त्रिय-सेविय-सोर्टीय-सविद्याएं करमत्ते सम्बन्ध तुरिमहुई । एम पुड विस्तिक वे । बोदच प्र १५-१६

च ... प्रक्रेस्यदिना प्रचीकानो मत्तिकानकोवत्तवरिकामिकाविकामः।

शीक्ष्यमा १, ४७

५ .. तमः इत्तिकहिंगुअक्तमनःशिकाः अतीताः, श्रेतनं सीवी रामचावि अनमे सामुरावि, एते सवित्तपृतिनीकानमेवाः सप्तकस्थानगरात् देन शहरूपिनम्थगेरकमनिका सैन्दिका सौरतिपुननारयोऽपि सनिवादम्योदान मैदा- प्रतिपत्तम्बाः । स्थम ( प्रदम माग ) प्र ४३-४४

मौरीर

'कम्पस्त्र 'मी विविध टीकाभीमां आपेखां 'राज्यन्तानाम 'मां सीबीर पण छे ै

जुमो सिन्यु-सौरीर

े चनो ग्रह्मेर

स्कव्यिक भार्य

वाय श्वनित्व सवता स्वन्तिवाचार्यना वास्यव्यवना नीचे ईसवी बोबा सैकामों मधुरामां बैन मुखनी बाजना वई इती, वे माधुरी बाबना' सरीके प्रसिद्ध हे देवर्जिंगणि कमात्रमणे वक्रमीमां आगसी द्विरिवद कर्वी तेमां मा माधुरी बायनाने सुस्य बाबना करोडे स्त्रोधारी इसी

जमो देनचिंगणि समाधक्क-प्रचरा.

### स्थानक

मुनईनी उत्तरे आवेछं थाणा.

कोंकण देशना स्थानकपुरनो उल्छेखं 'द्रोणमुख '—अर्थात् जळ अने स्थळ एम बन्ने मार्गे जई शकाय एवा स्थान—तरीके करेलो छे '

'स्थान' पदान्तवाळा स्थळनामो-पंजाबनुं मूलस्थान (मुलतान), सौराष्ट्रनु थान तथा आ थाणानो संबंध भाषाशास्त्र तेम ज सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए विचारवा जेवो छे मूलस्थान अने थान तो सूर्यप्जानां प्राचीन केन्द्रो छे, थाणा विशे वधु संशोधन अपेक्षित छे

१ तस्यं वा द्रोणमुखं जर्ल्[स्थल] निर्गमप्रवेशम्। यथा कोङ्कण-देशे स्थानक नामक पुरम्। व्यम, भाग ३, पृ. १२७

अहीं कोंसमा मूकेलो 'स्थल' शब्द मुद्दित प्रतमा नथी व्यम नु ए सपादन हजारो अञ्चिद्धिशोधी मरेख छे बीजी तरफ 'द्रोणमुख 'नो उपर्युक्त अर्थ निश्चित छे (जुओ भरुकच्छमां टि २, तथा 'अभिघानराजेन्द्र मा दोणमुह ), एटळे आटलो सुधारो आवश्यक छे

### स्नपन

उज्जियनीनुं एक उद्यान त्या साधुओ ऊतरता हता '

स्तपन शब्दनुं प्राकृत रूप 'ण्हवण' छे, ए उपरथी त्या कोई जाहेर स्तानागार अथवा नाहवाधोवानी जग्या हुशे एवं अनुमान करी शकाय !

१ अवसीजणवए उज्जेणीगयरीए ण्ह्वणुज्जाणे साहुणो समोसरिया, वशा, पृ ४९-५०

# इरन्त-संनिवेश

समिताचार्य विहार करता एक वार हरंत सनिवेशमा गया हता.

हरंत संनिवेशनुं स्थान निश्चित थई शक्युं नथी, पण समिता-चार्यनी दिहारम्मि मुख्यत्वे माळवा अने कृष्णा तथा वेणाः स्थानकार ११२] [ इरन्त संतिवेध

प्रदेश के प्रसमये कामार देश तरीके कोळलातो हवा त्यां हवी, पटके हांस संनिवेश पण पटका प्रदेशमां क्यांक होया समय छ

जुमो भाभीर, प्रश्नद्वीप, समितायार्थ

इरिमद्रमृरि

याकिनी महण्यासूनु (याकिनी नामे साध्नेना पर्मेशुत्र) हरि महस्तरि भागमोना पदेखा संख्टा टीकाकार छ एमनो समय जायाँव विमनित्रयत्रीर स ७५० भी ८२७=ई स ७०१ भी ७७१ सुधीनो निश्चित कर्षो छे हरिसदम्हि पूर्वाधवसां वित्रकृतना समर्थे विद्यान श्राहण इसा. एसना परवागत हणान्त माने सुन्नो अमावफ-

क्टान बाह्मण इसा. प्रमता प्रयागत इतारत मारे सुक्रो अमावक-चरित मां ' हरिमत्रस्रिवरित ' भागमा उपराग हरिमत्रस्रिती संस्कृत टीकाओमां 'कावपक' वयविकासिक, ' प्रयागहर, तिसा 'नरिस्त्र' उपराग टीकाओ

युद्ध छ प्यत्नी टीकाकोता उनकेल कृते भाषार पद्धीना समसनी बागमटीकाभोमां अनेक स्थळे भाषतामां ज्ञामा छ जैन के— 'तत्वाचे स्व' उपरती हरिमनस्सिनी हरिमुं उदरण मध्यमीगिर जीवामिगम स्व' उपरती हरिमां आप्युं छे हरिमतनो 'अनुसेमाहार' टीकानो साधार पण महस्योगिर स्थातिकार्यकर हु हिमां भाष्यो

े बळी बहाकन्यसूत्र मा टीकाकार खेनकंतिंत हरिश्रम्स्यित्र स्वाप्त्रम्य स्वाप्त्रम्य स्वाप्त्रम्य स्वाप्त्रम्य स्वप्तान्त्रम्य स्वप्तान्त्रम्यस्य

सूत्र 'ना टेक्सकार यमसागर हरिनडहरू पंचायक 'तांची, अवतरण आपाँ के अने अन्यसूत्र 'ना बीजा टीकाकार वितर्गावकार्य 'वंबायक' उपरनी मर्वागाविकार अमस्पेदवसूरिनी टीकामी पण

भावार मान्यो छे इशिवदक्ष्य कवानक पूर्ताक्यान 'तुं बस्तु पण प्राचीनतर भागममाहित्यमां प्रक्ष वास के इरैनदनी पक्षी वयेषा 'वृहत्कलपस्त्र 'ना टीकाकारे कर्तानुं नाम लीधा सिवाय 'धूर्नाख्यान 'नो उल्लेख कर्यों छे सभव छे के तेमने हरिभद्रनी कृति उदिए हीय

जैन साहित्यना टितहाममां हरिभद्रस्रि एक असामान्य न्यक्ति छे आगमोनी टीकाओ ए तो तेमनी साहित्यप्रदृत्तिनो एक अशमात्र छे. न्याय, योग, धर्मकथा, औपरेशिक साहित्य आदि अनेक विषयोनी एमनी रचनाओ छे, अने 'पड्दर्शनसमुच्य ' जेवो कृतिमा—जे भारतीय साहित्यमां ए प्रकारनो पहेलो ज सम्रहम्रंथ छे तमाम भारतीय दर्भनोनो सार समर्थ रीते तेमण आप्यो छे परंपरा तो एमना उपर १४०० मन्योना कृतृत्वनुं आरोपण करे छे एमनी रचनाओनी समाल्योचना माटे जुओ 'समराइच्चकहा 'नी डा याकोबोकृत प्रस्तावना तथा 'जैन साहित्यनो संक्षित इतिहास,' पृ. १५३—१७०.

9 पहेली ओरियेन्टल मान्फरन्समा आचार्य जिनविजयजीना लेख ' हरिभदाचार्यस्य समयनिर्णय !

२ जुओ जिनभटाचार्य,

३ महत्तराया याविन्या धर्मपुत्रेण चिन्तिता । आचार्थहरिभद्रेण टीकेय शिष्यगेधिनी ॥

दवेंहा, पृ. २८६ (अते)

४ समाप्तेय शिष्यहिता नामानुयोगद्वारटीका, कृति सिताम्बराऽऽचार्य-इरिमदस्य ।

कृत्वा विवरणमेतात्प्राप्त चिकिष्विदिह मया कुशलम् । अनुयागपुरस्वरस्व लभतां भन्यो जनस्तेन ॥ अनुहा, पृ १२८

५ आ टीकानो उल्लेख मलयगिरिए 'निद्सूत्र ? उपरनी ृष्ट्तिमां कयों छे. जुओ जिस्को, पृ २०१.

६ भाह च तस्वार्थटीकाकारो हरिभद्रसूरि — नात्यन्त श्रीतायन्त्रमध नात्यन्तोष्णा सूर्याः किन्तु साधारणा द्वयोरपी 'ति, जीम, पृ ३४९ भा टोकानो उल्लेख 'प्रवचनसारोद्धार'ना टीकाकार सिद्धसेने (पृ ३३७), पण कर्यों छे प सुखलालजीना मत प्रमाणे ('तस्वार्थसूत्र', बीजी भावित, प्रस्तावना, पृ ५५-६५) तत्त्वार्थटोकाकार हरिभद्रसूरि ए याकिनी महत्तरासूनु ज छे, बीजा कोई हरिभद्र होवा समव नथी.

```
रे इतिमहस्ति
1  ]
```

**७ व्योक्स प्र ४**६ द बुध्से माग ९ ए. ३९६ ४८५

९ शापर प्र. १

१ कि. ए ६ १२

११ ब्रप्त १८ १ -११ शमी अभवद्यस्ति

१२ सुभी मूछदेव

## इर्पपुर

अजमेर पासेनु एक नगर, ज्यां सुमटपान राजा राज्य करती हतो. हर्वपुरमां ब्राक्षणो सञ्जमां बहरानो वस करता हता त्यार प्रिय-प्रभक्तरप् पोतानी मैत्रराष्ट्रियी मझराने वामा भर्पी, ब्राह्मणोने बीघ आप्यो हसो. पनी कमा छ ै

विकासना कशिकारमा सैद्धार्मा संयेश मेबाइना राजा कल्स् लवडा मछटनी राणी हरियदेवीण हर्षपुर वसान्यु हुतु कैमानो हर्न-परीय गण्ड में पाउळांगी महमार गण्ड सरीके मोळलायो से आ इप रर उपरथी भवो छे <sup>व</sup> ए ग<del>ण्ड</del>ना जगसिंहस्तरिमा शिव्य कमगढेउसरि वसर्मा मात्र एक व बास्त्राहो भने पछेडी सालता हता सेमन महिन वह अने

बेहरनाळा जोईने सिंदराचे (मतांसरे फर्णेंदने ) 'मसमारी ' निरूद काट्य कने त्यारभी एमनो गण्ड 'महनार गण्ड' कहनायो 1 ዓይ ይ ዛ ዓ.1 . ዓመር ይ 16%, መቻ ፵ 19/2-95 २ राजकृतिका इतिहास साम १ प्र.४२६०२८

a game & act see रस्तकरप

#### मणो इस्तिकस्य

र्दास्तकस्य

**क्षारवरीने दहन बमा पछ**े बस्साम समे कृष्ण त्योंको पूर्व तरफ भौडळीने इस्तिकस्य (प्रा इत्थिकस्य, इत्यकस्य) नगरमां कास्या हता त्याना राजा अच्छदंतने हरावी पछी दक्षिण तरफ जतां तेओ कोछुंबारण्य नामे अरण्यमां आवी पहोच्या हता दक्षिण मथुरामां वसता पांच पांडवो अरिष्टनेमि अरिहंत सुराष्ट्र जनपदमां विहार करे छे एम सामळीने सुराष्ट्र आव्या. त्यां हस्तकच्य नगर पासे एमणे सांभळचुं के अरिष्टनेमि गिरनार उपर निर्याण पाम्या छे.

भा उल्लेखो उपरथी स्पष्ट छे के हस्तकस्प के हस्तिकस्प नगर, सुराष्ट्रथी दक्षिण तरफ जवाना मार्गमां, पण सुराष्ट्रनी भृमि उपर ज आवेल्ल हतुं.

'पिंडिनिर्युक्ति' उपरनी मलयगिरिनी वृत्तिमा क्रोधिंडिना उदाहरणमा हस्तकल्प नगरमा एक वाद्यणना घरमा भिक्षार्थे गयेला जैन साधुनु कथानक छे 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपरनी शीलाचार्यनी वृत्तिमा उदाहृत करवामा आवेला एक हालरडामां वीजा नगरोनी साथे हस्तकल्पनो पण उल्लेख छे." 'जीतकल्प भाष्य'मा हस्तकल्प (प्रा. हत्थप्प, हत्थकप्प)नो निर्देश छे "

भावनगर पासेनु कोळियाक तालकानु 'हाथव' गाम ए ज आ हस्तकन्प होई शके. ' जीतकल्पभाष्य'मानु एनुं 'हत्थप्प' नाम एना अर्वाचीन उच्चारणने मळतुं ज छे. वलभीना दानपत्रोमां तेनुं 'हस्तवप्र' एषुं नाम मळे छे.

- १ उने, पृ ४० जुओ कोसुंघारण्य
- २ हाध, पृ २२६, भाचू, उत्तर भाग, पृ १९७
- ३ पिनिम, पृ १३४
- ४ स्कृशी, पृ ११९, अवतरण माटे जुओ कान्यकुट्ज
- ५ जीकमा, गा १३९४-९५
- ६ 'गुजरातना अतिहासिक छेखो, 'न २५, ६१, अहीं तळ इस्तवप्रनो उल्लेख छे बलमीना अन्य छेखोमां हस्तवप्रनो उल्लेख ए नामना आहार अथवा आहरणीना मुख्य शहेर तरीके छे ('गुजरातना वैतिहासिक छेखो, 'न १६, १७, १९, ३०, २१, २२, २३, ४१, ४५, २६ अ तथा ६१, ७०, ७९, ८०)

### इस्ति भित्र

उज्जीयनीना एक गाथापति—गृहस्य एमनु कथानक नोचे प्रमाण छ इस्तिमित्र गावापतिष, पोतानी प नी मरण पामतां पुत्र इस्तिपृति साथे दीला सीधी एक दार तेओ उज्जीवनीबी मोजकटक बना मारे नीइळया सार्गमां भटवीमां हरितमिश्ने पणे छाकद्वाना खूँटो बाम्यो, पुरके बीजा साधुकाने आध्रहमी विदास करी तेओ एक गिरिकदरामाँ भनशन करीन रक्षा इस्तिमृति क्षुल्छकने साधुओ पराणे स्वर्धे गया, पण त एमन निर्भम पसार्थीने पाठा पिता पासे आल्यो वेदनाने सीचे इस्सिनित्र ते अ दिवसं काक्षपमें पामौने देवकाइमां गया, पण तेमना पुत्र सो पिता गरण पान्या छे" ए समज्ञत्तो च नहोती आजी देव तेना पिताना शरीरमा प्रवेशीन तेनी साथे वालो करवा साम्या देवे **इ**स्टिन मृतिन कुला पास निका मारे जवा कही कुछो पासे अईने धर्मसाम कोतां पर्माधी सार्ककार हस्त नीकळीने भिक्षा बापवा सम्यो. भा प्रमाणे एक वर्ष बीती गयु बीजे वर्षे साजुको स्वां मान्या प्रमणे शहरूक ओर्थ तथा बुद्धना शुक्क शरीरने पण कोर्य व्यत तेओ सम-म्या के देवीए अनुक्रमा करी छे

१ क्षत्रि या. ४६ प्रका प्र ४५-४६ प्रजे प्र. १४ सम या. ४४५ मी एन मा स्वास्त्रका शारमागतु सुक्त हे.

#### हारिक बावफ

इतिस वाजकरूत व बैरायबाएक खोका 'उत्तरान्यसम' उपरनी शानितप्रीची एतिमां उद्देश करेका छे का हारिस बाषक कोग तथी क्यारे बया तथा प्रना कई रजनामांथी का उदाहरण आपवामां कारणां छे ए निधित करवानुं सायन मधी, खोको सामान्य बैरायबोशमा छ सन प्रभावी कर्तमा संप्रदास परने कई अनुसान करो शकाब मंदि परन्तु धावक 'पदबी छेसना बैनावनी सुक्क छे अलबत्त, पद्दावलीओ प्रमाणे एक हारिल नामे युगप्रधान आचार्य वीर स. १०५५ (वि स ५८५=ई. स ५२९)मां स्वर्गवासी थया हता ('प्रभावकचरित,' भाषान्तर, प्रस्तावना पृ ५४), तेमने आ हारिल वाचकथी अभिन्न गणवामां आवे तो हारिल वाचक ईसवी सनना पांचमा शतकना उत्तरार्घमां अने छड़ा शतकना प्रारंभमा विद्यमान हता एम गणी शकाय

१ प्रस्तुन उद्दरणो नीचे प्रमाणे छे:

तथा च हारिलवाचक ---

"चल राज्येश्वर्य धनकनकसार परिजनो नृपाद बाह्मभ्य च चलममरसौट्य च विपुलम्। चल रूपारोग्य चलमिह चर जीवितमिद जनो दृष्टो यो वै जनयति सुखं सोऽपि हि चल ॥" उशा, पृ. २८९, उने, पृ. १२६

तथा च हारिल --

वातोद्धतो दहित हुतसुग्देहमेक नराणां मत्तो नाग. कुपितसुजगद्धेकदेह तथैव । ज्ञान शील विनयविमवौदार्यविज्ञानदेहान् सर्वानर्थान् दहित विनताऽऽसुष्मिकानहिदास्य ॥

उशा, पृ २९७

बीजा एक अवतरण साथे जो के हारिल वाचकनु नाम आप्युं नथी, पण एनी रचनाशैली जोतां ए पण हारिलनु होय ए असंभवित नथी खास करीने एना शिखरिणीनी तुलना उपर टांकेला पहेला अवतरण साथे करवा जेवी छे

, तथा चाहु ---

भिवृत्री भूतानां परिणतिमनालोच्य नियता पुरा चव्यिकिश्रिद्धि**हित**मञ्जभ यौवनमदात् । पुन. प्रत्यासन्ने **मह**ति परलोकैकगमने तद्देवैक पुसा व्यथयति जराजीणैवपुपाम् ॥

उशा, पृ २४६

हिन्दुक देव

हिन्द्रभोनो देश-हिन्द्रस्तान

भेतो रक्नाकाळ खगमन इ.स. ना सातमा सैका जेटली जूनी हे ए 'निशीवपूर्णि'मां 'हिन्दुक देश 'नो प्रयोग हे उग्रविनीना राजा गर्वभिन्के एमनी बहेन सरस्वनीन हरण कर्यु होबाबी कालका-पार्य 'पारस कुछ 'मां जईने छन्न 'शादि ' राजानो-शह राजाने-बंधी एसना अभिराजा साहानुसाहि र (सर० छोहेनसाह) यी असेसा हता एमने हिन्दुक देश मां भाक्या मेरे छे. बाने सर्वने स्वीते सुराष्ट्रमा भागे पद्देशि छ

. जुमो कास्फाचार्य-२

१ साहिमा समित्-परमस्त्रिका होत्र एव अविश्वत व शरह। काकारजेच मनिष-एइ दिन्धगोर्थ क्रकामा । रूमा परिस्तुन । तरमान थ अलोसि नि प्रशासकतीए नाहिना समेडेन क्यारियाओ सुरेंडे वेटि चानो । तेन पुन्सिकेम इसा पेसिना-सा अप्यान सरिह । एइ वस्नामी हितुगदेरी। ते सम्बद्धति से प्रस्मागना । सनी व नरपामधी गर्छ। बरिधानके न दौरति गेर्दे । अन्यक्ष्यं महत्वात् करातिन स्मितित्रम् । वं बाबमञ्ज्ञो समस्त्रोची सो एक अविराद्य अनिहो । ताहे समर्थवो संप्याची ।

विष्, अस्य ३ प्र ५०१-४१

हेमक्द्र कछिकाससर्वे

गुवरातमा बारमा सैकामी भयना प्रतारी राजाओ सिदराज तथा

कुमारपाछना समञ्जादीत मा महान आबाबनो जीवन अने कार्य प्रसिद्ध छ ए मारे सुमा हो। ज्युमरहान 'साहपः भोषः इमयरशसीर्यः' भम्यापक रसिक्कल हो योजनी देमबन्द्रहर 'ब्राह्मानुशामन 'नी भैनेत्रो प्रस्तावना तदा थी समुम्दन मोदीहा हैमसमौधा इस्पादि

आवाम इंभवन्त्रती वही धयेवा शारामसाहित्यता टीकाकारी पमना विभिन्न अधान। भावामे प्रमा पार टीफे छ। उदाहरणब्दी पर्मानी

केटमाइना निर्देश क्यी इयों छ

- १ हेमचन्द्रकृत 'प्राकृत व्याकरण' जप्रशा, पृ. १३, २४, २६, ४१, १७७,
  - 'देशीनाममाला'. जप्रशा, पृ. १२४
  - ' अनेक्यिकोश. ' श्राप्तर, पृ. १७५
- 'त्रिपष्टिशलाकापुरुपचरित्र 'अतिगत 'ऋषमदेवचरित्र ' जप्रशा, पृ. १२७, १२४, १३६, 'शान्तिनाथचरित ' जप्रशा, पृ १९७, 'महाबोरचरित 'किक, पृ. १२५; 'परिशिष्टपर्व ' जप्रशा; पृ. २८८
- ' द्वाधिका ' किक, पृ १२५ ' अन्ययोगव्यवच्छेदद्वाविकिका '-माथी मलयगिरिए पण अग्तरण आप्यु छे, जे मलयगिरिनो समय नक्षी करनामां उपयोगी थाय छे ( जुओ मलयगिरि )

'योगशाह्न.' श्राप्नर, पृ. २०२

प्रभ्यनो नामोल्छेख' कर्या विना हेमचन्द्रमांथी अवतरण श्राप्रर, पृ. ४, ६२, १४९, इत्यादि

## हेमचन्द्र मलधारी

हषपुरीय (मलधार) गच्छना मुनिचन्द्रसुरिना शिष्य अभयदेवस्रिना शिष्य मलधारी राजशेखरस्रि स १'३८७=ई. स १'३३१मा
रचायेंली पोतानी प्राकृत 'ह्याप्रय 'वृत्तिमा जणावे लें तेम,
हैमचन्द्र पूर्वाश्रममा प्रशुम्न नामे राजसचिव हता अने तेमणे चार
स्रीओ स्यजीने अभयदेवस्रिना उपदेशथी तेमनी पासे दीक्षा लीधी
हेती मलधारी हेमचन्द्रकृत 'जीवसमासः' विवरण स.१'१'६८=ईः
स ११'०८ मा; 'भवमावनाम्त्र'' सं ११७७=ई. सं. ११९७ मां'
अने 'विशेषावश्यक भाष्य ' उपरनी बृहद्वृत्ति सं १९७५=ई
स ११९९ मा रचायेल होई तेओ ईसवी बीरमा शतंकना पूर्वाधमा
विद्यमान हता ए निश्चित लें हेमचन्द्रना जिष्य श्रीचंद्रसूरि पोताना
'मुनिसुव्रतचरित'ंनी प्रशस्तिमा जणावे ले ते प्रमाणे, राजा सिद्धराज
जयसिह सा साचाये प्रत्ये खूब मिक्तभाव राखतो हती अने घणी
वार तेमना दर्शन करवा माटे पोते ज तेमना उपाश्रयमा आवतो हती.

कागमोना नामांकित टीकाकरोमां मध्यारी हेमबन्दती पण गणना बाम छे 'कालस्वक स्व' कन 'नैतिस्व' उपर टिप्पण धवा 'कनुयोगदार स्व' कन विशेषावस्यक आप्य' उपरती बृचिमा ए का क्षेत्रमां प्रमाने मुस्य कान्त्रा छे विशेषाबस्यक आप्य' ने वृचिने रचनामां कैमणे पौताना साल सहायकोनां नाम आप्यां छे, वे प्यनग् शिप्यससुदाननी स्वफित्नो हाय एम बणाव छे अमयकुमारगणि, बनदेवगणि, विनमदगणि, स्वस्मारगणि, विवुष्यसद्धनि, तथा आर्नदवी महत्तरा कमे बीस्मती गणिनी ए वे सामांगो.

सम्बारी इसबान्त्रे 'किनेपादस्यक जावन' उपरानी इचिमां किनम्प्रपणि क्यासमणनी स्वोपन टीकानो उच्छेस कमो छे, पटले ए टीका भोकामां भोक्षुं बारमा नैका सुन्दी वो विवयन इटी व बजी मा सिवायनी पण बीजी वे प्राचीन टीकाभीना इकाम ठेमो सार्थ छ

रपर्युक्त श्रीवसमास ' वृत्तिनी सन्त्यारी हेसचन्द्रना हरतायर।
मां सन्तायेकी तावपरीस मत लैमातमा शान्तिनाचना मंदारमां छै
पट्टे सेशी वरतुपालनी चेस था प्रकांद विदानना हरतायर यग अनेक
शतायीकाना शेतर यही भाषणने चोना मछे छे सेशी बरतुपालना
इस्तायरोमां से १२९००ई स १२३४ मां सन्तायेकी 'धर्मान्यु वस' महाकास्मनी तावपरीस मति पण संमातमां ए ब मेदारसी छै

- १ सम्रो वर्षपुरः
- र नेबाद छ र४६-४०
- ३ ए क. एसना अन्य प्रन्थो साहै एक शुक्रो स्थ
- ४ वा स्थ्यमध्येत ते शास्त्र द्वपान्त्रसम्बद्धि का वर्ता है.
- भ केंद्रहा हा १४७
- < निवेचनसम्बद्धाः मानव नोकायरानंदस्यूरिकी प्रस्तासना, पू. ३ ए ए व.

## स्रचि

# [संस्कृत-प्राकृत अवतरणोमां आवतां विशेषनामोनो समावेश आ सूचिमां कर्यो नथी ]

अकवर १५८ अक्लक ६४ अक्रियावादी ६९ अक्षोम ८३ अखो ६२ अगडदत्त ३,४,५,२६,१७३ 'अगडदत्त पुराण' ४ अगियार अग १६३ अग्निकुमार देव ४६, ५६, ५७ अग्निप्जक वणिक ६६ <sup>अचल</sup> ८३,१४३,१४४,१४७ अचलग्राम ५ अचलपुर ५, २०, २६, १५६ अच्छदंत ५६, २१५ अजमेर ५ अजमेरु १०६, २१४ अजातशत्रु १३ अजितसेन ११७, ११८ षद्ग ६, ७, ८ **अहण म**छ २८, ६२, १०६, १११, १३७

षडोलिका ६५

भगहिल पत्तन ९७ अंणहिलेपाटक ९६ अणहिल भरवाड ८ अणहिल्वाड ९, ८६, १५०, १७६, १७९, १९५ अणहिलवाड पारण ८, ४७ 'अणा' १३५ अतिमुक्तक २४ **अनशन ७३, ८१, १३३,** १५५, १६३, १६४, १६६, २०७, २१६ 'अनुत्तरोपपातिकदशा' १० अनुयोग १५२ 'अनुयोगदार' टीका २१२ 'अनुयोगद्वारसूत्र' २८, ७३, ६७, १३४, १४१, १६८, २०३ँ,२१२, २२० 'अनेकार्थकोश' २१९ अनेषणा ३९, १३२ धनंगसेना ८७ ' े क अनतवीर्य ३७ 'अन्ययोगव्यवच्छेदद्वार्त्रिशिका '

१२७, :२१९

धिर्म \$\$\$ 1 भ**रत-**प्रतिमा १२० काबद्धिक ६९, १५२

পঠিবছ ৬८

मस्बद २१४

मस्य २१४

काम्बर ११९ अवधि १२०

सम्म भौन्दनी २०० क्षमयकुमार १०२,१०३ १७१ 'अस्कारमङ्ग' ११८ <del>जनपद्गमार</del>गणि ५२० 'कार्यकारसर्वस्य' १३६ भभगदेव ११. ७६

**अवदिक मर ७०** 

अभयदेवसरि ९, १०, १२, ४६, 86, 64, 66, 140, २१२, २१<del>४</del> २१९

समयवेजसूरि-मरिता ११. १२ क्षामध्यम्बद्धाणि १२६ असम्य ९०

व्यक्तिकद्ध ८३ मभियानसभिद्धः ४५ १०% १इइ, १४९ १५३.

१९४. २११ लगीव १६ १६,५० **अमहासाद ९०** अमोपरम ३

भरिष्टमर्गि ८० ९६, १५४ १७३,१७४,१९१ २१५ अरिष्टपर १४

शक्तियम १६ १५ अर्थेस्थमी १४ १५,१८

अर्थेडीरिका १५४ अर्थेमागच~षी १५~

अर्मेद पवत १५

243 भवन्तिवर्धन १६,१०० ⊁१७, 216 धवन्ति<u>सकुमास्य १६,</u> १७, <sup>छ३,</sup> १३१, २०४ व्यवन्तिसन १६,११८ बन्धबहारी १७८ ব্যৱহা ১৩

अधरेन गांचक १८

भशकरारिता १७, १८ वाशोक २५, ४३, ५२, १८%

भावन्ति १५ ७१, १००, १०२

भवन्ति जनमद २०५*२५ ४*९

228, 248, 2ªk

८०,१३८,१४0,१81,

महोक्तमी ४३ अधनोप ९५, २०<sup>०</sup> 'अश्वावबोध कल्प' ६१ अश्वावबोध तोर्थ ६०, ६१ अष्टोत्तरशतकृट १७४

अष्टोत्तरज्ञतक्**ट** १७४ अष्टांग महानिमित्त ३९

असदीन दीप ५३ असंयम विषय १९९

अरहमित्र ७८ अंग ६८, १०९

अगारवती १०१, १०४ 'अंतकृत् दशा' १०,८८, १५७

अधकवृष्णि ८३, ८६ अप्रेजी ६८

आकाशगामिनी विद्या ९५, १६४ आगमेतर साहित्य ४

आगमेत्तर साहित्य ४ आप्रा जिल्हो १७८

'आचारांग' ९, ११, ५५ ' आचारांग सूत्र' ६४, ६५, ६९, १६४, १७६

भाचार्य मलयगिरि ७५

आचार्य श्रीजिनविजयनी १७७, १९६, २१२, २१३

आजीवको ३९, ४० क्षातापना १२१, १४९ क्षानित ४९ आनंदपुर १४, १८, १६, २६,

ं ३२, े४२, ९१, ें९४, ९७,११४, ११५,१८८ आनैटथी महत्तरा २२०

आन्त्र १८७ आन्प्रवासी १३४ आन्त्रो १६०

आबु १५, ६१ आभीर २१, २६, ३२, ६८,

आभीर जाति १७, २०, आभीर देश ५, ७८, १०८,

१७१, १८४, २१२ आमीरी १९१, ्र ्र आम राजा ३६ आमदेव उपाच्याय ९५ १२५

सार्य देशो ५२ क्षार्य देशो ५२ क्षार्य धर्म ८४

सार्य क्षेत्र १५, ४८

आर्थ नागार्जुन ८३ ं आर्थ महागिरि ५७, ६४, १३२, १ १३३, १६९, १०६,

सिवि १२४ 1 'आवस्यकः मृखद्रीका' ७५. तर्वि मगु ११६,११७,१२२, 'भावत्यक पृथ्वि',१२९ १८4, १८६, २०७ 'आयश्यक सूत्र' ७, ३६, ५८, शर्म रक्तिस ८०, १०९, १२२, 40, 48, 48, 44 **840** ९६, १२०, १२२, मार्च रक्षितमूरि ६९, ८२, १२७, १२८, १२९, १५३, १६४ १४९, १६९, १८२, भार्न रक्षितसूरिवरितं १५३ १८९, २१२, २२० भार्य रोहण २०७ भार्य बन्न ५, २०, ८२, १०८, भाषाब २२, २५ १०९, १६३ बाबादमधि २२ धार्म स्याम १७९ काह्यरणी ६२, ३१०, २१५ वार्क समित २०, १८४, १८५ 'काहार' ६२, ११०, -२१५ शार्व समितस्ति १०८ भाडीर २१ भावे सध्य ११६, १८५ इक्षणहरूर . -१८६, २०७ इसर ११४ मार्च सुवर्गी ८४ 'इतिहासनी केंद्री' २९, ४९, मामै स€त्ती ५७, १३१, १३३, وي چي १८६, १८७, २०६ **'इन्डो-आर्यन के ड**िह्न्सी ४७ आर्व स्क्रीयस २१० इन्दर २४ ध्यमंस ७८ इन्दोर २४, १४३ बाधोधना १५३ EPA 80, 49, 844 भारसङ्गर्क ५ इन्दर्भ २३ श्वादसम संद्र' १७ इन्टब्स २३ श्वाबस्यक पूर्णिः ५१, ५३; इन्द्रदिम ८४ द्र ६९ ७६, ११०, इन्तपुर २३, २४, ११९ 224, 24

इन्डभूति १५२ इन्द्रमहोत्सव ३९ इभ्य २७, ४४ इपुवेगानदी १७० ईरान ३८ ईंखरी ७२, १६६, १६७ उपसेन २४, ८७, ९६,१५४, १९०, १९१ उज्जयन्त २४, २५, ६६, ६७, १५७ उज्जयन्तगिरि १८९ डज्जियिनी ३, ६, ७, १५, १६, २२, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३७, ३८, ३९, ४१. ४३, ४५, ५०, ५८, ६५. ७०, ७८, ८१, ४२, ८५, ९०, ९१, १८०, १०१, १०२, १०३, १०४, १०६, १०९, १११, ११५, ११७, ११८, १३१, १३३, १३७, १३८, ११४०, १४३, १४४, १४५, १५२, १५६, १५७, १५८, १६३, १६७.

२९

१७३, १८०, १८६, १८७, २०२, २०४, २०५, २०७, २११, २१६, २१८ 'उज्जयिनी इन एन्श्यन्ट लिटरेचर' २९ 'उज्जयिनीत्स्कर' १३८ उत्तर मथुरा १२२, १९५ 'उत्तराध्ययन' ५, ९, २६, ४०, ६२, २१६ 'उत्तराध्ययन' टीका १८ 'उत्तराय्ययन सूत्र' ३, ४, ३०, ३३, ३४,६४,७३,९६, १४४, १७३, १७५ उत्तरापथ ५२, ८९, १२० उदयगिरि ५२ उदयन १०४, १०५, १४८, १५१, १७३ उदायन १३, ३०, ३१, ४७, ५०, ८२, ८२, १०३, - १०४,--१७०,-२०० उद्योतनसूरि १७६ उनतायु १७५ 'उपमितिभवप्रयंचकथा' १९६ उपाच्याय घर्मसागर १५५,१७५ उपायाय मरेक्ट ६ .

विव ११४ 1 मार्थ मग् १२६,११७,१२२, 'बाबस्यक मुख्यीका' ७५

'कावत्यक वृत्ति',१२९

भाषांद २२, २५

मापादमृति २२

माधीर २१

इसग्रह २२

इस ११४

शहरणी ६२, ४१०, २१५

'बाहार' ६२, ११०, २१५

'इतिहासनी केही' २८, ४५,

प्रहो-मार्यम जेन्ड हिन्ही ४७

42, 40

'आवत्यक सत्र' ७, १६, ५८, £0, £2, 42, 44,

९३. १२०. १२२,

120, 126, 188,

१84, १६९, १८२

१८९, २१२ २२०

१८4, १८६, २०७ वार्ष रिवित ८० १००, १२२,

140

आर्थ रक्षितस्रि ६९, ८२, 141, 162 'भावें रक्षितसरिषरित' १५३

भार्य रोहण २०७ भाषे बन्न ५ २० ८२, १०८. \$08 843

मार्थे स्याम १७९ भावे समित २० १८४ १८५ भार्य समितसरि १०८

भावे समुद्र ११६, १८५, १८६, २०७ भाव संपर्ग ८४ भावे सहस्ती ५७ १३१, १३३,

१८६, १८७, २०६ धार्य स्क्रीदम २१० आर्थम ७८

भाषापना १५३ भाग्तरेर्फ ५

'माश्मय लेड १७

'मात्रत्यक पूर्णि' ५१, ५३,

5º, 5º 01, 110,

224 250

इन्दर्भ २४

इम्बोर २४, १४३ F 20, 43, 144 इन्द्रद्वीय २३ इष्ट्रका २३

स्मिदिय ८०

**柳野 マミ, マャ, そく**を

इन्द्रभृति १४२

इन्द्रमहोत्सव ३९

इन्य २७, ४४

इषुवेगानदी १७० ईरान ३८ ईंबरी ७२, १६६, १६७ उमसेन २४, ८७, ९६,१५४, १९०, १९१ उजयन्त २४, २५, ६६, ६७, १५७ उज्जयन्तगिरि १८९ उज्जयिनी ३, ६, ७, १५, १६, २२, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३७, ३८, ३९, ४१. ४३, ४५, ५०, ५८, ६५. ७०, ७८, ८१, ४२, ८५, ९०, ९१, १८०, १०१, १०२, १०३, १०४, १०६, १०९, १११, ११५, ११७, ११८, १३१, "१३३, १३७, १३८, -१४०, १४३, १४४, १४५, १५२, १५६, १५७, १५८, १६३, १०..

१७३, १८०, १८६, १८७, २०२, २०४, २०५, २०७, २११, २१६, २१८ ' 'उज्जयिनी इन एन्श्यन्ट लिटरेचर' २९ 'उज्जयिनीत्स्कर' १३८ उत्तर मथुरा १२२, १९५ 'उत्तराध्ययन' ५, ९, २६, ४४, ६२. २१६ 'उत्तराध्ययन' टीका १८ 'उत्तराध्ययन सूत्र' ३, ४, ३०, ३३, ३४,६४,७३,९६, १४४, १७३, १७५ उत्तरापथ ५२, ८९, १२० उदयगिरि ५२ उदयन १०४, १०५, १४८, १५१, १७३ उदायन १३, ३७, ३१,:४७, ५०, ८२, ८२, १०३, १०४, १७०,-२०० उद्योतनसूरि १७६ उनतायु १७५ . 'उपमितिभवप्रपंचकथा' १९५ उपाध्याय घर्मसागर १५५,१७५

[स्वि 224 ] 'चपासक दशा' १० पक्षकच्छ ३१, १२ ६४ उमाकान्त शाह १३४ एषकच्छ्य ८२, १६९ उवगांख ४९ प्रापाद १४५ उस्मानाबाद ७८ चितिहासिक संशोपन' १३४ र्वध्यक्ति ९५ पेरावस ६३, ६४ बनरानतीवेला २०३ 'ओधनिर्देशिक' १३८, १३९ **क्लग** १७५ 'भोपनिर्मुक्ति कृष्ति' ०, ८६ १२८ क्मो 'सरकञ्जूक' १२५ कोक्षा ६६ प्रस्पमदेव ९६ मोरिसा २७ 'ऋपमदेवचतित्र' २१९ ऋष्गित २०७ मीदीम्य देश १६१ ऋवितद्वाग २७ मीरवधिको मुद्रि १५७ ऋषिपास २७ जीपदेशिक साहित्य २१६ ক্ষণিসালিত বক্লাৰ ৭ং 'भौवपातिक टीका' १० पक्तातिकी प्रतिमा १९१ क्षक रेप २१, ३२, ३३ प्रकेरिय और ६९ 228 पस्छ ३२ भ नोट भीन भी कुत्रिकापण करके ४७ 'कट' पदान्स ४६ **२९ 8**9 भ नोट जाम भी वर्ष किराट~ करी १७ **प् विसीटफुस** मर्पट' २ २ **58** 80 ण न्यू वर्मन भें।फ या अगद्वत्त कभानुमीग १८३ 🔫 स्टोरी' ५ **क्रवासरिसागर' १**१७ 'पत्सन्ट इंग्डिया १५२ क्ष्मेंच १७४ 'पश्चन्ट टाउम्स भेग्द्र सिटीम कनकामर ७८ इन गुजरास मेग्ड भाठि कतैयासस्य वर्षे १९ १८८ क्तीब १६ माबाध ८९

कनड १३६ 'कन्याचोलक' १२५ कपर्दक ३४ कपर्दिनिवास १७४ कमलपुर २०४ कमलमेला १९० कमलसेना ३ कमलसंयम उपाच्याय ३३ क. मा मुनशो १४३ 'करकडचरिउ' ७८, ७९ करटक १४७ कर्णदेव २१४ कर्ण सोलंकी १२५ कर्णाटक ६८ कर्णीसुत १४७ 'कर्मविपाक' ८५ 'कर्मस्तव' ३३, ८५ कलाचार्य ३ कलाल २०७, २०८ कलांकुर १४७. कर्छिंग ६८ कर्लिंग देश ५१, ५२, १६४ कल्मिविजय ५२ 'कल्पलता' १८४ 'कल्पसूत्र' १८, २१, ४०, ४२,८ | 'कालक कथासप्रह' १७९ ६७, ७०, ८४. ९०. ि'कालकाचार्य कथा' ५० ०१

९१,९७,१२४,१४२, १५५, १५८, १६५, १६९, १७५, १७९, १८४, २०३, २१०, २१२

कल्याणकरक ४७ 'कल्याणमंदिरस्तोत्र' १९७ कल्याणविजयजी ३७,३८,१२२ कल्याणी ८ 'कविवर समयसुन्दर' १८४ कसेरूमती नदी ३४, १६६ कसेरूमान् ३४ कंडरीक १४६, १४८ कथारकुढंग १७ कंबल-संबल ३३, ३४, ७३ कंस ७. २४ काकवर्ण ५०, ५१ काकिणी ३४, ३५, ४३, ४४ काकिणीरत्न ३५ 'कादंबरी' १४७ काननद्वीप ३५, ९७ कान्यकुटन ३६, ६८ कार्तवीर्थ ३७, १४३ कालक ४०, ८४

[स्वि २२६ 1 'उपासक व्या' १० एक ६५४ ३१, ५२, ६४ उमाकान्स शाह ११४ वसक्ष्यपुर ८२, १६९ स्वयासि ४९ व्हानार १४५ उस्मानाबाद ७८ 'ऐतिहासिक संशोधन' १४४ বস্তুষ্টি ९५ वेरायत ६३. ६४ उबराबसीवेछा २०३ 'ओपनिर्मुकि' १३८, ११९ क्य १७५ 'कोबनिर्देखि बृचि' ९, ८६, १२४ उस्मो 'सरकचुक' **१**२५ जीका ३६ **प्र**पमदेव ९६ मोरिसा ४७ 'ऋपभदेवचरित्र' २१९ ऋषियस २०७ भौरीप्य देश १६१ ऋषितद्याग २७ मौत्पविको मुद्दि १५७ ऋषिपास २७ भौपनेशिक साहित्य २१६ ऋषिप्राणित तळाव ५१ 'भौपपातिक-टीका' १० धकरात्रिकी प्रतिमा १९१ कळ १५, २१, ३२ ६३ प्रके⊅त्रय सीव ६९ 2 2 8 वरछ ३२ 625 BO भ्रमष्ट भीन थी कुत्रिकारण **46ट**) पद्मिस ४६ २९, ४५ ध्य मोट बेंगन भी गई किराट-इसी १७ ए डिसीटफ्ड यर्कर' २ २ **43** 90 क्रमानुसीग १८३ 'ए न्यु बर्धन के।फ या कागहरूस स्टोरी' ५ **अधा**सरित्सागर<sup>5</sup> रे ६७७ 'प्रयन्ट इन्हिया १०२ कर्रव १७० 'प्रश्वन्द ठाउम्स भेन्द्र सिर्दाम कनकामर ७८ इन गुमरात मेग्ड फाठि क्तीयासम्बद्धे १९ १८८ क्रमोग्र १६ नाबाह्र ८९

कंजरावर्त ४२, ५५ कुंडलमेंठ ४४, ११० कुंमकर्ण ११८

कुंमकारकट ४६ कुंमकारप्रक्षेप ४८, १७० कुंभकारप्रक्षेप नगर १९९

कुंभराणा ११८ कुंभवती नगरी ४८ कृणिक १३

कुमदारक १०७ कृष १५९

कृष्ण ७, २०, २४, ५०, ५६, ८७, ९५, ९६, १०७, १७४, १८९, १९०,

१९१, २१४ कृष्ण वासुदेव ४९, ५६, ५७, ६३,७७,८०,८३,८६, ९०, १०६, १७३

कृष्णा ५, १०८, १८४, २११ 'कॅम्त्रिज हिस्ट्री छोफ इन्डिया'

१६, ३१

केवलज्ञान ६३, ७१,७७,१८१, १८९, १९७ केवलदर्शन १९७

केवली १९७

केशी १३, १४, ३१, ४८, ५०

कोऊइछ १४७ कोक्रास ५०, ५१, ५२, २०७

कोटिकगण ७३

कोटिनगर ६६ कोटिपताका ५४

कोटचर्क १४ कोटचाचार्य ११, ७४, ७५,

९३, १६४, १७७ कोडिनार ६६

कोपकट ४७

कोरंटक ५५ कोरंटक उद्यान ५५, ११०

कोमुइआ ५७

कोल्छकचकपरंपरा १३५ कोशावकानन ५७

कोसलवासी १३४ कोसंबवण काणण ५७

कोसंबा ५६, ५७ कोसंबी आहार ५७

कोसुंबारण्य ५६, १०७, ११३,

११४, २१५

कोसबाहार ५७ कोळियाक २१५ प

कोंकण ५२, ५३, ७६, १३४, १३७, १४१, १६४,

[ स्वि ૧૧૮ ] कोडापर्वत २५ कास्रकाषार्थ २६,३७,३८,३९ क्रीधपुर ३६, २०१ 20, 88, 40, 44, १०१, १०७, १३५, कुर्रवधा १७ १७९, १९२, २१८ ऋडेगेयर १७ काकाद्वीव ३५ ऋद्रगेसर १७ कासनगर १९, ४२ कुट्रक १३४, १५९, १८७ कालर्षि २०७ मुद्रंगसर १७ 'क्राष्ट्रज्ञान ' ९९ क्लांड २५, ४३ ११०, १८६, कासा ४२ 200€ कासमयवेशिपुत्र ७२ कुन्निकापण २६ २७ ४४,४५, काव्यितास १५८, १७१ १०२, १११, ११% कामोरसर्ग १६ १७ 'बुत्रिकापण - प्राचीन मान्त सम रम स्टार्स ? १९ ४९ कामोत्सर्ग प्यान ४२, ६३ काञ्चगोति ८९ 🕶 कृती ८३ काम्यमनोहर ११८ 'क्रमार १६८ कुमारपाझ ४६ १२७ २१८ फाल्यमहन ११८ काम्यमीमांसा १ १ ४ कुमारमुक्ति २५ ४३ कृष्यांनुशासन<sup>१</sup> १८०, १८१, करंटक १५ 'कुस्किक' १२६ 216 'कुवलयमाना,' माठमा सेकानी काशी १०५ कास्मीर ६८, यक जैन कवा ४८.१७६ क्रीपीपुर ८९ कुशस्त्रक १५ **कांटासरियो** ५५ कुसावर्त ४९, १७८ किरणावकी ' ९०, १५५ क्रम्रमपुर १२१

कुंगरको ९१

<del>ईक्</del>णा ५४

बिराट ११

फॉर्तिविश्वय १६९

गर्दमिल्ल २६, ३७, ३८, ६५, २१८ गर्दभीविद्या ३८ 'गल्लक' जाति १३७ गल्लार नदी १३६ गंगा नदी १९९ गंतुर १३६ 'गधर्वदत्ता छंभक' १७०, २०४, 304 'गंघहस्ती' ६४ गंघहस्ती 'महाभाष्य' ६४ गम्ता १७६ 'ग्लोरी घेंट वाझ गुर्जरदेश'-३६ गाथापति २१६ 'गाथासप्तराती' ९९ गान्धर्व विवाह १४३ गांधार १०३ गांमू ९, ६५, १७६ गिरनार २४, २३, ९६, १५७, 384 गिरिनगर ६६, ६७, १६८, २०३ गिरिपत्तन ३६, २०१ गिरियज्ञ ५३, १६०

म्रीक १५०

<sup>प्रीक</sup> भूगोळप्रन्थो २०८

गुजरात ५७ 'गुजरातना अतिहासिक छेखो ' ४७, २१५ 'गुजरातना स्थळनामो' ६७ 'गुजरातमां नैपधीयचरितनो प्र-चार तथा ते उपर छखा-येली टीकाओं १८२ गुजरात विद्यासभा ८ गडशक्षनगर ५९ गुणाढच ४, १८२ गुर्जर देश ७९ गुर्जरो ४८, ६७ गुलान २८ गोचरी ७७ गोदावरी ४६, १०१, १९२, १९३ गोपालक १६, १००, १०५ गोपालगिरि ६८, ७१ गोपीचंद २०९ गोपेन्द्रदत्त ७८ गोवालिय महत्तर ७३ गोविन्द ६८, ८४ गोविन्दाचार्य ११० 'गोविन्दिनिर्युक्ति' ६९ गोली १३६ गोल्छ १३६ गोल्छदेश १३५, १३६, १६१

230 1 া স্বৰি १८९, २०३, २११ सरक मधी १९३ कींकणक ५२ सरतर गण्ड १०. ३३, १८३ क्षीक्रवाक्रमाग्स ४३ ४४ सावर १९७, १९८ क्षेत्रणासाय ४३ स्वारवंश ५२ कोचर्षिइ २१ क्षेत्र ६१, ६२ कौमती १७५ सरकाहार ६२ कीमडी ' टीका ६७, ९७ सेगदार ६६ कीभोतकी गता ५७ सेड ६१ दोशस्ट खेडा ६१. ६२ कौशांबी ३ ७, २६ ३०, १०४, संइंदर ११७ ११८, १५१, लेकका ६१ 160 801 720 सहेगांव ६२ बीहाची साहप्र ५७ संदर्भ १०१ भवद्रश्रेण ७१ सहयाना पूर्वा १४५, १४६ **स्टरात**र्वेशी ९२, ९३ १९४ सैमात ७९,८५, १९९, २२० व्यविक्त १९४ संगातनो इतिहास १८०, १८८ हासक ९०, १३९ १५५ गण्डनिया १३२ १७२. २१६ गमसङ्गाम ६३ क्षेत्रसमास '१३० 'क्रे×समास'मीटीका १२९ गभावपद ६४ १३३, २०७ गमायपद तीर्व ६२,८२ १६९ क्षेमकीतिं १६ २५, ५७, ५९, ६९ १२६ १२८, २१२ गणवर १४२ गणराम्य १९२ क्षेमकर १८५ गणसचाह राज्य ३०,८७,१४० सनिय तेष १९६ 'गणिवसार' ३ ५ सप्रामार्थ ५९,६०,६१,६७ सरक १०३, १९२

गर्दमिल्ल २६, ३७, ३८, ६५, २१८ गर्दमीविद्या ३८ 'गल्लक' जाति १३७

गल्लक जात १३७ गल्लाह नदी १३६ गंगा नदी १९९ गंतुर १३६

गंतुर १३६ 'गघर्वदत्ता लभक' १७०, २०४, २०५ 'गघ्रहस्ती' ६४ गंघहस्ती 'महाभाष्य' ६४

गम्ता १७६
'ग्लोरी घॅट वाझ गुर्जरदेश' ३६
गाथापति २१६
'गाथासप्तशती' ९९
गान्धर्व विवाह १४३

गाधार १०३ गांमू ९, ६५, १७६ गिरनार २४, २३, ९६, १५७,

२१५ गिरिनगर ६६, ६७, ७७, १६८, २०३ गिरिपत्तन ३६, २०१ गिरियज ५३, १६०

१६८, २०२ गिरिपत्तन ३६, २०१ गिरियज ५३, १६० ग्रीक १५० ग्रीक भूगोळप्रन्थो २०८ गुजरात ५७ 'गुजरातना अतिहासिक छेखों' ४७, २१५

'गुजरातनां स्थळनामो' ६७ 'गुजरातमां नैपधीयचरितनो प्र-चार तथा ते उपर छखा-येली टीकाओ '१८२

गुजरात विद्यासभा ८ गुडशस्त्रनगर ५९ गुणाढच ४, १८२ गुर्जर देश ७९

गुलान २८ गोचरी ७७ गोदावरी ४६, १०१, १९२, १९३

गुर्जरो ४८, ६७

गोपालक १६, १००, १०५ ं गोपालगिरि ६८, ७१ गोपीचंद २०९ गोपेन्द्रदत्त ७८ गोवालिय महत्तर ७३ गोविन्ट ६८, ८४

गोविन्दाचार्य ११०

'गोविन्दिनियुक्ति' ६९ में गोली १३६ गोल्ड १३६ गोल्डदेश १३५, १३६, १६१

[सुवि ₹₹ ] गोष्प्रमाहिस ८२, १५३ भौनस्थान २०४ पीवर २०५ गोद ६८ गौतमकमार १७४ चुर्णि ४, ११, ४४, ५३, ५४, गोसमीपत्री शासकर्णि ९२, १९४ ७३. ७४७ ९९, १२९, 'गौरीपुत्रो' ७० 206 पणक १३६ पुर्णिकार २०३ वण्डप्रबोस ३०, ३१, ४४ ७१, चेटक ६०, ६१, १०१ चेटरजी १७ १०१, १११ कण्डक्रमामार्थे २५, ७०, ७१ भैरमपरिपाटी १०२ पस्चेदी १९. २१ बोरशास १४७ 'पन्दास्का' १२२ 'क्लिक' १२५, १२६ TE OR चोसपाक १५२ चम्ब्र**क्ष्य १७**९ पोछपद्यो २१४ पौर ६८ पन्त गच्छ १०, १५० पन्त्यापा ४३, १३६ भौत पर्वो ८१ 'चम्मस्रात' १८ चौद्धक्य ८, ७२, ८६ 'पर्म**म**स' १८० बोह्नस्य युग १६७ चाणक्य १६६ मोळक्यक्ती ४६, १९५ वामझेडा ६१ र्वपा १३ पास्त्र १७० २०४ र्चपामगरी ४६ नावकालंश ८ चंपुमेबन '११/ भितोड १३८ धारण १४९ क्तिके गढ ७१ बडणसेण १४९ विच्यित १४९ 'अञ्चार्षक' उपान १४९ मित्रकृट ६८, ७१, २१२ सकते २७ पीन ६८ षगण्यन्द्रसुरि ८५

जगदीशचन्द्र जैन ३२ नगनाथपुरी १६४ जमदग्नि ऋषि ३७ जमालि ४४ जयपुर ११९, १६९ जयशिखरो ४७ जयसिंह १५० जयसिंहसृरि ६१, १८८, २१४ जयंती श्रमणोपासिका ३० जराकुमार ५६, ११३, ११४ जरासंघ २४, ४९, ८७, १२२, १७३ 'जर्नल साफ धी सोरियेन्टल इन्स्टिट्यूट' १३४ जर्मन १०० जलपत्तन ३५, ८८, ९७ जवणालओ १२५ जवुण १४९ जहाल ६८ जळघोध २५ 'जबुद्वीपप्रज्ञित' ११८, १२८, १३०, १५४, १७५ जंबुस्वामी ८४, २०२ जातक ४८ जातिस्मरण १३३ जाबाछिपुर ४८ 30

जालि ४९ जाछोर ४८ जावा ४७ जाववती १८९, १९१ जितशत्रु राजा ३, ४२, १ जिनकल्प १३२ जिनचद्रसूरि १०, १८३ जिनचैत्य १८७ जिनदत्त ७२, १२०, १६: १६७, १८५ जिनदास ७३ जिनदासगणि ७३ जिनदासगणि महत्तर ७३ जिनदास श्रावक ३३ जिनदेव ११० जिनदेवसूरि १६८ जिनप्रभसूरि १४, ४२ জিনৰিৰ १८७ जिनभट १२९ जिनभटाचार्य ७४, ७५ जिनभद्र ११, ५५, ७६ जिनभद्रगणि ७५, २२० जिनभद्रगणि क्षमात्रमण १ १९७, २२० जिनभद्रसूरि ३३ जिनविजयजी ४८. ७५

म्बंड ]	( শ্বৰি
भिने <b>भरस्</b> रि <b>१०</b>	'दैन सादित्य सशोधक' ९०।
'बोतकस्य चूर्णि' २०९	<b>१००</b>
'जीतकृष्य भाष्य' २१५	बैन स्तूप १२०, १२१
सीतकस्य सूत्र <sup>†</sup> ९ ७४	ओम्बर्क्स ६७
१७७, १७९	'ज्याग्रीमस्य ज्ञाति सने महापुराण' ८
'क्षीतकस्य सूत्र ' उपरनी भूगिँ	'म्योतिफरेडक' ६९८, १ <b>१८</b> ,
\$0.5	१२९, १३०
बीगोंपान १४५	'अ्योतिकरंडक' इति २१२
चीवविभार' १८४	'ब्राताधर्मकथा' १०, १५७,
'बौबसमास' विवरण २१ <sup>०</sup>	163
'सीवसमास' इति <sup>३</sup> २०	'ट्रारम्स इन एक्सन्ट इन्डिमा'
मीर्नसमामी २५, ८१, १०६,	128
१३२, १३३ १३४, १८७	'हाइनेस्टिम बीफ म कवि एवं '
'बोबाभियम सूत्र १२८, १२९, २१२	10
' औराभिगमस्त्र ' उपरनी वृच्चि	शहस ६८
<b>२१२</b>	दोग ई६
जूनागड ६६ १६९	क्रिमाइ २ ४
कंमक देवसाओं ९५ १६३	हिंगरेसक ७६
जेहिस ८४	बोड २१
<b>बे</b> स <del>ख</del> मेर ९८	ह्या कळनेकर ८८
जेससमेर मेहार ७५ १२८	की म्युस्य २१८
देन गुफाधा ७८	हो याकोबी २१२
ञ्जेन गूर्वर कविमो ५	हैं। विग्टरिंगस १४६
जैन धुत ८३ २१०	द्वस १७४
जैन साहित्य भीर महाकान-	संस्मित्री ९०
सन्दिर 19७	दिस् १०७

हणमुनि ७७ हणा ७७ ंक ९९ धिवाहण ९२ ाहवाहण ९२ जगरा २०, ७७, ७८, १६८ तगरातट ७७. १६८ तगरा नगरी १५६ 'तत्त्ववोधविधायिनी' १२ 'तत्त्वार्थसूत्र' ६४, ६९, १२८, १२९, २१२, २१३ तपागच्छ ७२, ८५, ९०, १५४, १७५ 'तरंगवती' ९८, १०० 'तत्रोपाख्यान' ४७ तापस ८५, १८४ तामलुक ७९ तामिछ १३६ ताम्रहिप्ति ७९, ११०, १९९ ताराचन्द्र ५८ तालघ्वज १७४ 'तित्थोगाली' प्रकीणिक १०० 'तिलक्संजरी' ८९, १७६ . तोर्गा ७८ तीर्थेकर ९६

तीर्थराज १७४, २०१

तुम्बवनप्राम ८०, १६३ त्रुक्मणी ३७ तेजचन्द्र १७५ तेजपाल ६१ तेरा ७८ तेरापुर ७८ 'तैंलकेला' २०५ तोसलिनगर २७, ५२ तोसलिपुत्राचार्य ८०, १०९, १५२ ' त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र<sup>2</sup> ४**९**, ६१, १०७, १५२, २१९ थान २११ थाणा ५४, २११ थाणा जिल्लो २०७ थारापदीय गच्छ १७५ थावच्चा ८० थावच्चापुत्र ८१, १७४ यावच्चापुत्र अणगार १७८ दक्षिण मथुरा ५६, १२२, १९२, १९३, २१५ दक्षिणापथ २०,२५,३४, ५७, ८९, ११२, ११३, १४३, १६०, १८७, २०४ दत्त ३७ 'दशकुमारचरित ' १०८

(स्रों **414** ] दशपुर २०, ६५, ८०, ८१, वीद ८८, ८९, ९७ 'बीमनिष' १९३, १९३ 62, 200, 242, 263 व्यक्ति पुष्पित्र ६५, १५३ ब्हापूर्वयर १६३ दश पूर्वी १६६ दुर्मुख १०७ 'वशनेकाश्विक सन्न<sup>1</sup> १३५, व्योपन ७ दुम्पगणि ८३, ८४। १८४, २०९, २१२ दशार्णकर पर्वत ६२, ८२ दुष्पाणि क्षमाध्रमण १०८ बबार्णेवर ३१, ६२, ६३, ६४, रहनेवि १५४ c3, १६३ दक्षित्राद् ४०, १०९ दशारीभव ८२ देक्कुश ९२ दशाही १०, ८३, ११२२ देवनामूर्ति प्रकरण बान रूप नंदन १ ११९ दसर ८३, ८७, ९६ देश भगगार १६९ दैक्त्सा २८, १०४, १४४, 'देश्ड' १८४ 208 200 वंडकारण्य ४६ 'दैवनिर्मित स्तूप' १२०, १२' र्वस्को १६ देवर्षिंगणि ८३ ८६, ९४, १०८ रंही १९८ देवचिंगणि श्वमाश्रमण' १२२ वाक्षिणमोक उद्योधनसूरि ४८ **⊃ ? \*** द्यामपत्री २१५ दैवसेना १४६ विरोधर सामाम ७८ दैवेग्द्रगणि ९६ विगंबर परंपरा ०० बेबेन्द्रसरि ११७ दिगवर समदाब ६४ देनिसास्त ८५ विनेशक्त सरकार ५४ देवीदुत्र र ७० दिन ८४ देशना १०४ विमरगढ २१ देशीनाभगामा ११२५ १३० धीपका '१८४ ₹₹

देहोत्सर्गनुं तीर्थ ११४ दोहिंड श्रेण्ठी ९, ९६ द्रम्म १८० द्मविह १८७ दाविड प्रदेश ८९ दाविडो १६० मोणमुख ७९, ११०, २११ होणाचार्य ९, १०, १३८ 'द्र्याश्रय' महाकाव्य १२५, १२६ द्वारका १०, २४, ५६, ६३, ७७, ८०, ८६, ८७, ९०, १०७, १५१, १५४, १५७, १७८, २०३ द्याखती २४, ४९,८६,११३,

१७३, १७८, १९०, २०२, २१४ 'द्दात्रिंशिकाओ' १९७, २१९ द्वीप ८८, ९७ द्देपायन ५६, ८७ धनगिरि ८०, ८४, १६३ धनचन्द्र १७५

धनदेव १९०, १९१

धनदेवगणि २२०

धनमित्र ९० धनशर्मा ९० धनेश्वरसृरि १७९ ध-वन्तरि ९० धरण ८३ धर्म ८४ धर्मकथा ९८, २१३ धर्मयश मुनि १६७ धर्मसागर ९१, २१२ 'धर्मसंप्रहणि टीका' १२९ धर्मान्वग ७८ 'धर्माम्युदय' २२० धारावासनगर ३८ घारिणी ११७, ११८ धुंधुमार १०१ 'धूर्तीख्यान' १४५, १४६, १४८, २१२, २१३ धूर्ती १४५, १४६ ध्रवसेन राजा १८, ४२, ९१ नकपुर ३६, २०१ नक्षत्र ८४ नगाधिराज १७४ े -नट २८, ३० 🕟 नटपिटक ९१, १११ 'नटमुत्र रोहक अने राजा' ३० घनपाल ८९, ५०, १३०, १७६, १७८ | नडपिडस ९१

ि स्रविष २३८ 1 १७२. २१२, २१३, नमोबाहन २३, ९२, १०१, २२० १११, १६५, १६६ १९२, १९४ नाग ८४ 'नमोवाहन माई' ९२ मागरा १३८ मागविश्व ९४ नमस्कार मन्न २०५ नागगह ९१, ११) नवप्रम ५८ मादैव ५८ नागपना ९४ नागमद बीको ३६ नरहरि ५५ र्मियानवी ९३ १८३ नागहरती ८४ नवागरि हाथी १०३ नागार्जुन ८४, ९४ 'मन्दिमीगुन्म' भष्ययन १६ मागार्जनीय बाचना ९४, १६७ नागेत्र ७२, २०७ नवकार १२० सबताव १८४ 'नाटघशास' १०५ मबांगी वृत्तिकार ९ १०, १०, नामपाछा 거 १३० ८६, २१२ नार ६६ मय्य इक्रीसभा ८५ नागद ९५ नारदम्नि १९० महपान ९२ १९४ मैर्य १५ २०२ नाशिक ९६ नासिश्य २०१ मर्मशन ८६ १५७ मासिक्य नगर ९५ मक्तरन उदान २०३ नासौंक २०१ नेश १७१ नेदागाभी 🤋 🤉 निगम्बा जीवो ३७ निगोदम्बान्यता १७९ 449 CV निरमुण' एक ७३ ८३,८४ ो 'नियेंद्र भारती' ५५ ५६ १०८ ११६ १२८, निर्पेड़ीय ५६ १२५, १५२ १५८ | निमित्रात्र ४०

स्चि]

नरंगण ७ नेर्प्रन्थनामित ६० निर्प्रन्थो २०५ निर्यामक १०९ निर्वृक्ति १८, १७, १८९ 'निर्वाणकलिका' ९९, १०० निर्वृति ७२, २०७ निर्दितकुल १० निल्यश्रेष्ठी १८५ निपढ १०७, १९० 'निशीयचूणिं १५७, ११३, १३५, १३८, १४६, १६०, १८०, १९७, १९८, २०८, २१८ 'निशीथ सूत्र' ७३, ८८, १४५ १९७, २०८ निह्नव ६९, ८२, १५३ 'निह्वववाद' ७०

'निशीथ सूत्र' ७३, ८८, १४६ १९७, २०८ निह्नव ६९, ८२, १५३ 'निह्नवाद' ७० 'नीवि' १२५ नेपाल ६८ नेमिचन्द्र ३, ४, ९, २६, ६२, ९६, ९८, १४४, १७३ नेमिनाथ २४, ४९, ५६, ६३, ७७, ८३, ९६, १०७, १५४, १८९, २०४

नेलक ८९ 'नैपधीयचरित ' १८१ नार्मन बाउन ४१ न्याय २१३ 'न्यायावतारवार्त्तिक वृत्ति ' १७६ 'न्यायावतार मृत्र' १९७ 'न्यू इन्डियन एन्टिक्वेरी' ५ पहण ९७, ११० पट्टन ९७, ११० पद्दावलि ८४, २१७ पत्तन ९७, ११०, ११९ पत्तनपत्तन ९७ पदाचन्द्र ५८ 'प्राप्रामृतक भाण ' १४६ पद्मस्थल १४, १५ पद्मावती ९२, १६५, १६६ परशुराम ३७ ' परिशिष्ट पर्व' १७, ५७, १५३, १६५, २१९

पर्युषण १०१, १०३

पवनचड ३

पर्युवण पर्व ३७, १९२

पश्चिम खानदेश ५४

पश्चिम घाट १८९

पश्चिम पंजाव २००

```
वि
 २४० 1
पहेरी भौरिये रख केल्फरस
                          पात्रपोपगमन १७४, १८६
     198 213
                          पावस्मितपुर ९८, ९९
पेकि वहार ६१
                           'पावस्थितस्रिचरित्त' ६७, ९९
'पैचकरप' भाष्य ३९,४०,
                          पादक्षिमानाय ७९, ९८, ९९
      162
                          पारसङ्ख ३८, ६६, २१८,
'र्वपर्वत्र' २२, ४७ १४७
                          'पारीपम जम्म ' १८१
'पैचवस्तुक' २१२
                          पाजिंदर ३०
'पैपाययान' १४७
पंचाराक ३०. २१२
                          पाश्चनाम ९६, १७३
पेबासर २७
                          पार्श्वापस ४२
पेजाव १४०
                           पाष्टक १६, १००, १०५,
पेडिस परिपन ८६
                                220
वं बेबरवास ६४ १७९
                           पासक राजा १६, १५७
 पे भगवानदास ७५ ७६
                           'पाकि प्रापर नेम्स' १४ .. ३१
 वे मसकारबी ६४, १०८,
                           पाछि साहित्य १४, ३०
     213
 वै इसगोविन्द्रशास २१०
                           पाञीतामा ९८
  पाइम टीका '१७५
                           पाँच दिम्म १४४
  पाइमस्पीनाममाना '१३०
                           पांचमी गुकराती साहित्य परिपर
 'पक्षजसदमहल्लाको ५५
                               $48
      24 . 220
                           पोनाम १४
  पालिकस्त्र ९ १५०
                           पोंडरो २४. ५६
                                            204
 वारण ९, ३५ ४७ ६५
                            १७४ २१ ।
      90 104 16
                           योड मधरा २४
 वारसिप्त २७ ५० ८२ ८९.
                        वाइसेन १०५
        c $25 385
                           विज्ञासद्भुम २०१
       122 142
```

पिपासा परीपह ९० -'पिडनिर्देक्ति' १९, १२८, १२९, २१५ प्रण्यसागर १२८ पुरंदरयशा ४६ पुराण ३०, १८९ 'पुरातनप्रबन्धसंप्रह्' ७६, ७७ पुरिकापुरी १४३, १६४ पुरी १६४ पुष्यगिरि ८४ पुष्यमित्र ७८ पुरुषसेन ४९ पुंडरीक ८१, १०४ पूरण ८३ पूर्णभद्र मुनि १४७ पूर्वो ८२, १०९, १५२ पृथ्वी १९४ पेरलाद ६६ पैठण १०१ पैशाची प्राकृत १८२ पोतनपुर १४३ 'पोछिटिकिल हिस्टरी ऑफ ॲन्स्य-न्ट इन्डिया' ९३ प्रज्ञप्तिविद्या ९५, १९० 'प्रज्ञापनासूत्र' १०, ४०, १२८, १२९,-१३६, १७९

प्रजा परीपह ३९ प्रजापति १४३ ' प्रजावंधु-गुजरात समाचार ' 30, 846 'प्रतिज्ञायीगंधरायण' १५२ ' प्रतिभामृतिं सिद्धसेन दिवाकर ' प्रतिमा ४२ प्रतिवासुदेव ४९, ८७, १-७३, प्रतिष्ठान ३९, ९१, ९**२, १०१**-, २०७, १**११** प्रतिष्ठानपुर ९९ प्रतिष्ठाविधि ९९ 🕠 🍃 प्रतिहारवंशीय ३६ प्रथमादरी १७५ प्रथमानुयोग ४० 🕝 प्रधम्न ४९, ५७, १९०, १९२, 389 प्रदोत १६, २६, ३०, ५८, ७१, ८२, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १३१, १५१, १६३, १७३ प्रपात २५ प्रबन्ध २३

'प्रबन्धकोश'६८, १९६

[ समि १४१ ] 'प्राचीन भारतमां विमान' ५२ प्रमवस्वामी ८० प्राचीनवाहिनी सरस्वती १९ प्रभाचन्द्रसूरि ७९, १६५, १७७ 'प्राचीन साहित्यमां चोरशाम' 'प्रशासकमरित' ११,१२,३६, 1888 ३७, १४, ६०, ७९, ९९, १५२, १५३, प्राप्तक ९० व्रियप्रम्थसूरि ५, १०६, २१४ 144, 164, 165. १८0, १९4, **१**९८, प्रो स्पुनेन १०० फ़रही ८, १०६ २१२, २१७ फुल्हीसस्य ६,६२,१११, प्रमानती ३१ 1 3 3 प्रमास ११४ प्रमास सीर्ष १५, १०५, १०६ प्रस्पुमित्र ८४ प्रमेगरनर्मभूषा 1 १७५ फ्रमारक्षित १५२ प्रवक्ता १४७ षटेषर १७८ 'प्रवचनसारोदार ' २१३ बनारस २०१ 'प्रकथकास' ९९ बनास नदी १०६ <sup>1</sup> प्रकल्पाकरण <sup>1</sup> १० बनासा १०७ 'प्रमन्गकरण' पृति १४ बप्पमद्विस्तरि ३६ 'प्रश्रम्यकरण सत्र' १३<sub>२</sub> 'बणमहिसरिवरित' ३९ प्रसनिवत १७१ वर्षर २०४ प्रस्थान' २१ वसरेब ८६ ८७ १०७ माक्टा २३ ९८, ९९ १०६ 280 530 प्राह्मत टीकामी ७३ ब्रह्मम् १०७ ब्रह्मसन् १९ १०७ प्राक्त दयाश्रय हित २१९ बक्रमित्र ६८ ६० १०७, १११ <sup>4</sup> प्राकृत स्थाकरण <sup>3</sup> २१९ प्राचीन कर्मिक्वो ८५ वसीमत्र-मानुमित्र ६०

प्राचीन तीर्वमाळा '२०१

बसराम ७ ५६ ८७, २१४

बिहस्सह ८४ वंग ६८ वंगाल ६८, ७९ बंगाली १३९ ' वंधस्वामित्व ' ८५ बंधुदत्त ३ बाण १४७ बापालाल ग वैद्य ५५ बारमुं गुज. साहित्य-समेछन ३५ बालतप ८७ 🗸 वाल्हिक ५२ बाहुबली १७४ विन्दुसार ४३ विंव १८७ वीरवल १५८ बुद्ध ३१, ५९, ९५, २०२ वुद्धनी मूर्ति ६० बुद्धिसागरसूरि १० 'बुद्धिस्ट इन्डिया ' ३० बुलंदशहर २४ बृहच्चूर्णि १७९ 'बृहत्कथा' ४, १८२, १८३ 'वृहत् कथ,कोग' ७८, ७९, १७२ 'बृहक्तरप भाष्य' १८२

'बहत्कल्पसूत्र' ५७, ५८, ६.९, १०६, १२६, १२८, १२९, १८६, २१२, २१३ 'बहत्कल्पसूत्र' वृत्ति २७ 'बृहत् संप्रहणि' १३० बृहद् गच्छ ९५ वेटवा नदी १६८,,१७१ बेण्णायड १७१ वेनायड १७१ वेस १६८ वेसनगर १६८ बेसली नदी १६८ बोङ्कि ३५ बोडी ३५ बोध १२३ बोधिक १०८, १**२**१, १२३, १३८, १३९, १४१ 'बोम्बे गेझेटियर' १८०, बौद्ध १६४ बौद्धधर्म १९५ वौद्ध भिक्षु ६८, १७२

बौर्द्यमत १९५, १९६

चौद्ध साम<del>ञ्जे २ . .</del>

it desi-T TOTAL चौद्दें सोहित्य २०८ मदमश २०७ नीब स्तूप ६० मजा १६, ३७ १४३ बोद्याचार्य ५९ मद्रा शंठाणी २०७ चौद्यों ११०, १२०, १२१, भरत १०५ १२५, १७१, १९५, मरस पक्रवर्ची १२ १७६ २०५ मरुष्टच्छ ६, २६ २७, ३१, 38, 36, 89 88 मधी ११४ २०७ 44, 40, 44, 40, मसदीप भ, १८% १८५ 40 05 97 77, महादीपक १८५ १०१, १०६, ११०७ क्सदीपक शास्त्रा ५, १०८,१८८ ₹₹0, ₹₹₹, **₹**₹₹, नदादीपक सिंह ८४ १०८ ११५, ११६ , १4¢, म्कपन १३२ ः 264 297 मगवती १ १०, १२८ 'मगवती इति' ११ मरुक्क भाइरणी ६२ 'सगवती सूत्र' ४२ १७९ महमच्छ ११२ 👌 🔞 मगोरभ १७० महत्र भए, ६०, ११० १४६ महि १०९ मन्सीगृह ५७, ११२, ११२, महि मार्चार्य १०८ 448 'मॅडिकाम्पे' १०९ मन्त्रकेषर ११४ मर्वतिमंत्र ११० मक्द्च ३०२ मद ८४ मनदेव २०२ मङ्गुप्त ८० 'सबसाबना सुष' २१९ मद्रगुपमृहि १५२ मम्ब ९० मद्रगुशायार्थं २५, १०९ १६३ मंद्रीर उपान ११९ मदबाह्य ७५, ८४ भद्रीर यद्य ७२ १०९ ११७ भेड़ीर बधनी यात्रा ३३ भद्रबाहुस्वामी १०१

'भीमप्रिय' १८० ′

भागवत ७, ११३ मागवत संप्रदाय ११२ भाण १४७ भानु ४९, १९२ भान राजा १८१ मानुमित्र ३८, ३९, १०७, 338 भानुश्री ३९ 'भारतीय विद्या' २२, ७६ भारतीय विद्या, ' सिंघी स्मृति ग्रन्थ १८२, १९८ भारकच्छ ११२ भालकुं ११४ भावनगर ५६, २१५ भावना ७७ भावविजयगणि ७२, १६९ 'भावशतक' १८४ भाष्य २०८ भाष्यप्रन्थो १८२ भास १५२ भारवामी ६४ भिक्षाको ७० भिन्नमाल १८० भिन्नसा १६८ 'भिल्लमाल' १३९, १८० भोमदेव पहेलो ८६

मुवड ४७ भुवनसुन्दरसूरि १५४ मृतगुहा १२२ मृततडाग २७, ११२, ११५, १२६ भूतदिन ८४ भूमिदाह १६० मृलिस्सर ११४, ११५ मूलेखर ११४ ११५ भूस्तरीय परिवर्तनो ८८ मृगुकच्छ ११०, ११२ मेरा गाम १७० भोगकट ४७ भोज ८९, ९०, १५८, १७६ भोजकटक २१६ भोजराजा १७५ भोजवृष्णि २४ भोट ६८ मगध ९, १३, ५२, १६४, २०३ मणिप्रभ ११७, ११८ मणिलाल मृ. मिस्नी १४९ मति १०५ मत्तवाल-संखिडि १६० 'मत्तविछास प्रहसन' १४८

tve j िस्र मग्रमदेश ११९, १६९ मयासि २० मस्यार गच्छ २१४ मधुरा १४, १८, ११, -३५, मसभारी २१० ४२, ६९, ७१, ८७, मस्पारी राजशेखरसूरि २१९ 98,93, 209, 228 ११९, १२०, १२१, मक्रमारी क्रेसमें ब्र. ६०,७५ १२२, १४९, १५०, २१९. २२० १९२, २१० मध्यगिरि ९, १६, ५८, ९८, 'मधुरा मंगू ' ११७ ११२, १२७, १२५, मधराहार ६३ १२० १६ , २०५, २१२, मदनसमरी ३ २१३, २१५, २१९ मदरा १२२. १९२ मकाट १३१ मधुसदन मोदी २१८ मकाक्ष्मेकर १८, ३१ मध्यप्रदेश १६१ 'मक्षपराण' ८ महसुद् ६, ७, ८ मझनिया ७, ८, २०७ 'मक्रमिनोद' ८ महिकार्भुम ७६ महाकाम १७ १३२ महागिरि २५, १२, ८४ १८७ महाजन २०८

मसह्य १३४, १३६ मराठी १३५ मङ १२४ सरकेड १२७ मस्तीस १२६, १२७ मरुदेव १७४ मस्त्रेश १२४ १२६ मध्ममि १२४ मध्येष्ट १२५ मक्रियम १२४, १२५ महरबंध ६८ १२४ १२५, व्यक्तम् १२५

' महाराभि शैसंबर ' १७४ ' महापरिज्ञा ' सम्ययन १६० 'महामारत' ७ १२३ महाराष्ट्र १४, ६२, ९२ १०१ tas, tas tet.

१५९, १६०, १८७, २०३. २०८ महाराष्ट्री १३४, १५९ महावीर १३, १६, ३१, ३३, ५०, ८१, ८४, ८७, ९६, १००, १०३, १०४, १०५, १२२, १४२, १७०, १७८ 'महावीरचरित' ९६, २१९ महाचीन ६८ ' महावीर जैन विद्यालय रजत महोत्सव प्रन्थ ' ६० महावीरस्वामी ४४, ६३ महासेन ३१ महास्थल १५ महिरावण ७६ महेन्द्रविक्रमवर्मा १४८ महेन्द्रसिंह ४८ महेश १४३ महेश्वर १४३ मंगल चैय १२० मंगू ८४ मंडन ११८ ' मडन प्रन्थसप्रह ' ११९ मंडपद्री ११८ मडळ २०३

मंडिक १४४, १४५ मंत्रशक्ति ९८ मंथिनिकाशुद्धि २१ मदसोर ८१ मंज ८९ मागध १३४, १४१ माघ १८० मात्रक १५३, १८५ माहिस्यक ८ मास्यिक-माछी मह ६, १०६ मादी ८३ माथुरी वाचना ८३, ९४, १२२ २१० माच्यमिका १३७, १३८ ' मानसोछास ' ८ मान्धाता १४३ मारवाड १२४ माछ १३९ 'माल' जाति १३९ मालमुमि १३९ मालव २८, ६८, १०८, १२३, १३४, १३८, १३९, १४१, १४२, २०३ मालवक १३८, १४१ मालव जाति २८, १३८ मालव देश १००

सम्बद्धा पर्वेस १३८ मासन मसेप्स्रो १३८ शास्त्र सबरो १३९ शासव स्तेन १३९ भारती १३५, १५० मालवा कष्ण ३३ 'मासोड' १४० माडिप्पती ३६, १४३ माहेमर १४३, १८० माद्रेवरी २८. १४६ माहेकरी नगरी १६६ माळग १५,८९, १११ ११८ १४१ १**५५, १६४,** 19c, 101, 901, 211 मोडण ११८ मोड १०८ मिधिला १४ मिष्यासतो ६९ मकिनियम १७४ महमग्रेपपुर ४२ मनकी ५६ र्मान क्ष्याणविज्ञयंत्री ६०, ८४ 244 24V. 20#

109

मनिचन्त्र ९६ , मुनिषण्डसरि २१९ मुनि बयन्तविजयजी ६१, १७४ मृति प्ररंपरविश्वयत्री ७० । मनिज्ञी पण्यविज्ञयाजी ६९.९८. 123 'मनि सुक्तपरित' २१९ मुनि सम्त्रकेष ६१ मनि सम्तस्यामी ५५ मुनि सुवतस्थामीन कैय ११० मध्यसमा ९८. ९९ मुख्तान १४०, २००, २११ 'मधिब्माऋण' १२७, १२८ संबर्ध १२१, ५११ 'मय टीका ' ७५, १२९ मुख्येष २८, ११९ १४४, 184, 280, 286, 101 (सक्तेदी: १४७ मुख 'प्रवसानुषीत' ४० मसमत्र १८७ ममभी १६७ मुम्रस्थान २११ प्रापन उदान १७० बगायती २९ १०४, १४३ केव २०७

स्चि ]

मेधकुमार ४५ 'मेघदूत' १७१ मेवाड ११८, १४९, २१४ मोढेरक १४९ मोढेरकाशर ६३, १४९ मोदेश ३६, १४९ 'मोढेसा' १४९ मोथ तहेसीछ ३२ मोहनलाल द. देसाई १८४ मोहेरक १४९ मौर्यवंशी १८६ म्बेच्छ १३४ म्लेच्छदेश १३८ यक्ष २०३ यक्षनं मंदिर ५९ यक्षपूजा १९, ९४ यक्षायतन १२०, १२२ यज्ञदत्त ९४ यज्ञयश तापस ९४ यदु १५१ यद्कुळ ९ यमुन १५० यमुना नदी ४९, १०४, १५०,

209

्यवन १५०. २०४

यवद्यीप २०४

यवन विषय ९९ यवनालक १२५ यवनो १२५ यवराजा ६५ यगश्रद ११ यजोदेवसूरि ९, १५१ यशोधर मुनि ५ यशोधरा २१ यशोभद्र ८४ यत्रकपोत ५० यंत्रप्रतिमा ९८ यंत्रविद्या ९८ याकिन २१२ याकिनी महत्तरासूनु ७१, ७४, २१२, २१३ यादव १९२ यादवकुळ ९६ यादवो ४९, १७८ यांत्रिक ५० यात्रिक गरुड ५० युगप्रवान धाचार्य ८४, २१७ युगप्रधान पहावलीओ १६४ योग २१३ योगराज २१

'योगशास्त्र' २१९

```
[स्र
२६० ]
योजी २१
                           'राप्रपुताने का इतिहास ' ३५,
'योनिप्रामृत' शास्त्र १९७
                                2 $ 2
यौगंपरायण १५१
                           'रामप्रशीय' १२८ थी १३०
                           रामशेखर ३०
रकपट २६, १२१
                           राबस्यान ११८
82 28
                           राजिमसी २४, ९६, १५४
रक्षित २२, २५, ८४, २०७
रक्षितसूरि १५२
                           राग्यवधन १६, १००, ११७
                           राठाड १५६
रानच्या १७५
                           राम भाषाये ७७, १५६
रानशेसरस्रि ७४, ८९, ११७,
                           रायनपुर ९०, १५५, १७५
     १२०, १५४, १६८,
                           राम ३७
     १८१, १९५, २१२
                           रामनिषय पेढित १६९
रष ८४
                           'रामायण' १२३
रथनेमि १५४
                           रामचीपरी ९३
रमयात्रा १६६ १८७
                           'रावणवप ' १०९
रभावते गरि ४२, १५५, १६४,
                           गण्डहर १५६
      244
                           साद्ध्यमेन १६, १००, ११७
 रसिष्ट्रमञ्जूषो परीस २१८
                          विषद्भ १४, १५७
 राश्चापा १२
                           डक्मिणो ८७, ९५
                           क्त्र ६१ ७१, १०६
 शक्रमुद्ध २६, ३४, ३५
      १●? १०३, १७१.
                           रवनदास्य १८८
                          ं कदसोमा १५२
      १७३
                           उपाक १३६
 राज्ञपत्यपुर ९० १५५, १७५
  संबर्धिद्व' ५५
                           इदाक १९, ३४ ३५ ८५
                               २०४
 राष्ट्रविष्ट १८७ २०६
                            क्रपमंडन ११८
 राषपशाना १८६
```

रूपा ने। णुं १८० रेणुका ३.७ रेवती नक्षत्र ८४ रैवतक ६६, ८६, ९१, १५७ रैवतक उद्यान ९६, १५४, १९० 'रैवतकल्प ११५७ रोहक १५८, २०१ रोहगुप्त २०७ लदमणगणि २२० रुब्धि ७७ ' लिलितविस्तरा ' वृत्ति १९५, १९६ छवण समुद्र १०६ ' लाइफ इन ए स्यन्ट इन्डिया ' ३२, १२४, १३६, १६५, १७१, १७९ 'लाइफ धाफ हेमचन्द्राचार्य' २१८ छाक्खाराम ८ लाट २६, ३८, ६०, ६८, १६०, १६२ छाटदेशं ६७, १५८, १६१ छ।टवासी ४८, १५९, १६० छाटाचार्य १६२ लाडकाणा १५८

टारखाना १५८

लिन्छवी ८७ लिपिकला १७५ ' लीलावई कहा ' १४७ 'लेखपद्रति ' १८१ ' लोकप्रकाश ' १६९ होकप्रचलित पद्य २०५ लोच ७० लेहजघ १११ लीहित्य ८४, १७४ वज्जी ८७ वज् ८४ वज्रभृति आचार्ये ३४, ९२, १११, १६५, १६६ र्वजूशाखा ७३, १६४ 🕝 🥛 वजूसेन ५८, ७२, १६६, १६७, २०७ वज्रवाभी ७२, ८,०; १४३, १५२, १५४, -१५५, १६३ थी ु१६६. . १८४, २०७ 'वज्रस्तामी चरित १ १६५ वडनगर १४, १९ वढवाण ७८ 🐪 🗓 🙃 विदयोर १७४ वत्थगा नदी ३२ 🕒 🕢

242 ] स्वि बत्सदेश १०, १०४ 300, १८२, १८**३**, बसराज २१, ३०, १४८, १९२ २००, २०५ १५१ 'बसुदेव--विंही ' (मापान्तर) बनराब ८, १७६ १७१, १८६, २०२ 'बन्डारु वृत्ति ' ५८, ८५ बम्म्ति १३२ बरवात्तर १६१ बरतुपाछ २३ ८५, १८१, बराट निषय १७२ २२० नराहमिहिर १०१ बस<u>्त</u>पास-तेजपाल ६१ वर्षा १६१ 'वरसुपाछ—तेज्ञपाछ प्रशस्ति '६ १ बम्मस्रात १८० 'बस्तुपासनुं विद्यामहळ भने बीजा पर्मशत १८० छेलो ' १८२ वर्मेडासप्रिय १८० 'वस्तुपासन् साहित्यमंडळ सने बस्मी ६२ ८३ ९४ १०९ संस्कृत साहित्यमं तेनी १२२, २१ , २१५ ष्यद्ये । १७७ बस्नमीपुर १६७ बद्धा १६७ रेशक्य १७ बसमी मापना ८३ ९४ मझमोव रा १६७ वैक्ष्यउण १५० बसलि १६२ १६६ बराक्ट्रध्य १७ वसम्बद्धाः १८५ शामक १८ बसन्द रजतमहोत्सव स्मारकप्रय ' बायक पदवी २१६ बाषक निमस्दर्व ७२ 86 बसुरेब ८६ नाचनाचार्य १६३ बसदेव-परिष्ठ १८२ बाभिम्य कुछ ७३ 'बम्रदेव-हिंडो' ४ ५ १४ बात्रक मदी १७१ 28 40, 41 44 बार ६८ ६९ 48 48 8+4, 846. 'बादमहाणद १२

वादि देवसूरि ५५ वादिवेताल १७६ 'वादिवेताल शान्तिसृरि चरित '

१७५

वानमंतर ११४ वायुयान ५१ वाराणसी ३ वालभी वाचना १६७

वासक्षेप १८५ वासवदत्ता ३०, १०५, १५१, १७३

वासिष्टीपुत्र पुळुमायी ९३ वासुदेव ७७, ८१, ११३,

११४, १९१ वासुदेव कृष्ण १७३

वासुदेवो ४९, ५६ वास्तुशास्त्र ११८

'वास्तुसार' ११८ वाहरिगणि १७६

विक्रमराजा १४४

'विक्रमस्मृतिप्रथ' १७ विक्रमादित्य १४७, १९७

'विक्रम वाल्युम' १९८

िनय २६, ९१, १११ विजयगिग १६९ विजयचंदसरि ५८, ८५ विजयसिंह १७५

विजयसिंहसृरि ७४, १६८

विजयसेनसृरि १७५ विजयानंदसृरि ७२

विट १४४

विदिशा ३२, ६४,७७,१५५, १६१, १६९, १७१

विण्या नदी १७२ विद्याधर ७२, २०७

विनयविजय १६९, २१२

विन्टर्गित्स १९८ विन्ध्य १९

भिन्ध्याटवी १९, १४७

विन्यातटपुर १७२ विपाक १०

विदुल १४७

'विपाकसूत्र' १२२, १३७ विवुधचन्द्र मुनि २२०

विवुधचन्द्र सान २२० विमलहर्षे वाचक १६९

विमलाचरण छै। २९, २१३ विमलादि १७४

विराटनगर १६९

'विविध तीर्थक्षल्प' १४, १७,

६१, १५०, १५७, १७३, १७४

ा स्र€ 249 1 ' विशेषवृणि' ११, ४४, ५१, बीरपेन १८, ४९, ८७ 48, 200 धीरस्पर १० 'विशेशवस्य इ.मान्य' ५ , ७४, वीस बढेव २३ ७५, ९३, १२८, १७७, बोम्रह्मिय १८० 220 **44** 69 ' भिरोपास्यक मत्य' बहद्रचि ब्रहर म्पेतर ५९, ६७ २१९ पूर्व समागण्ड ५८ विश्वविद्या १६९ 'बदवादिचरित' १९८ ' विषमपत स्मास्या ' १७९ 'श्ववादि-सिद्धसेनस्रि प्रवन्प ? विद्या ५७, ८४ १९८ ' दिर्व्यापमीतर पुराण ' १०५ बदयाती ६० बीमायन्सराज २० द्विशिवय ७२ बीत मय १३, ३१ कृष्णिदशा ' १५७ बीरमयनगर १७. ८१ बेदिन १८ बीतिमय १७० વેળાય, ૨૦. ૭૭, ૧૦૮, श्रीनेसंबतगर २०० १६८, १७१, १७२, খান ৬৫ **१८8. २११** बीरगणि १५० बेणास्टक १७ बीधनिर्शाम ९४ बेणानट २०, ७७, ११९ 'बी(निर्शाण संत्रत भीर जैन 188, 196, 103 इत्रगामा '८४, ८५, वेपानह १७१ ९७ १२४, १५५ वेबदमी १६८, १७० १७१ केश्मि गमा १६८ बोरमा १८ that Sc वैद्यादक १८६, २०७ कात्मकी गरिनी २२० देश्चित स<sup>्</sup>था २०२ वैताम ९० कानि १८

वैताढच पर्वत १७० वेदिशनगर ७७, १६८ वैद्यकशास्त्र ५० वैमार २५ वैराटनगर ११९, १६९ वैशाली ३०, ३१ व्यवहार क्रिया-प्रवर्तक ७८ 'ब्यवहार भाष्य ' १८२ 'च्यवहार सूत्र' १२८, १३४, १४५, २०९ व्यवहारी ७८ व्यंतरगृह १२२ व्यतरो ५९, ११४ न्याकरणकान्य १०९ व्याजस्तुति अलंकार १३६ शैक ३८, ६५ राज-क्षत्रप ९२, ९६, १९४ शक राजा २१८ शक छोको २६ -शकुनिकाविहार ६१ शकुन्त १०१, १७३ शतपत्र १०४-शतानीक ३०, १०४. शत्रुंजय ८१, ९९, १७४

शब्दानुशासन ' १२७, १२८, 129 शय्यातर १६२, १६३ गर्यंभव ८४ गश १४५, १४७ 'राखपरिजा' अय्ययन ६४, ६९ शंखपुर ३, १७३, १७४ 'रंखपुर पार्श्वकलप ' १७४ शंबिश्वर १७३, १७४ । शाकैभरी १८३, १९२ शातकर्णि ९३ शान्तिचन्द्र १५, ११८, १२८, १३०, १५४ शान्तिनाथ ९६ े 'शान्तिनाथचरित ' २१९ शान्तिनाथनो भेडार २२० शान्तिसागुर ९७ शान्तिसूरि ३, ४, ९, १८, ३४, ६२, ६४, १४४, १७५, १७६, २१६-शान्त्याचार्य ३० . शार्कीटे काउझे १९७ शालवाहन १९२ शालिभद्र ४४ शालिबाहन १९२ , ्रेशालिबाहन राजा १९३

[ समि 444 ] शासनदेवी ११ रीस्कपर ८१, १७८ 'शक्ति' राम्राओ २१८ रीएकराजा ८१. १७८ **फोमन ८९** शाहिल्म ८४ 'गोमनस्तुति ' १७८ शिला ११८ शौपमुक्क प्रवचन ८१ किंब ११४ নিবন্ধীয়ন ৬৫ वॉौरिपुर ९, ६६, ४८, ४९, शिगमृति ८४ 98, 242, 248, शिवादेवी ९६, १०१, १५४ १७८, २०१, २०₹ शिविराज्य रेक्ट घौरि राजा ९, ४९ 'शिद्यपस्त्रमः' १८० ममण ११६ अध्यक्तीरी ८० ' झमण भगवान म**हाबी**र <sup>१</sup> १७०७ धीसस्माम १५७ १७९ वीसमदसरि १७९ करणपुत्रा उत्सव १३५ शीक्षाचार्ये ११, १६, ५५, भगणोपासक ८१, १७८ 48, 44, 44, 244, 'माद्रप्रतिक्रमण सूत्र' ७४ १७६, १७८, २१९ 64, 69 220, 280 होशिंक ११, १७६, १७७ १48, १६८, १८१, वीडांकदेव २१, २०१ १८२, १९५, २१२ बीधांकाचार्य ९ भावकी ४६ भीकाषक-कवासीमङ्ग ४१ श्रद्ध ८१ मीरण ४९, ६३, ११४ श्चक्रसम्बद्धः ब्रीगप्त २०७ इदोदनमुख ५९ बोचग्रसरि ९, १५० १७५ प्रक्रमान ६६ शहरू करि १४६ २०९, २१५ बीमास् ९८, ६८ 181 श्चासेना अनपद ११९ 109, 160 ध्यपंत्र २०८

श्रीमालना द्रम्म १८१

श्रीमालनी टंकशाळा १८१

श्रीमाछी वणिक ११८ श्रीस्थल १८१ श्रीहर्ष १८१ श्रुत १२२ श्रुतज्ञान ४० श्रुतधर ६ ४ श्रुतसागर १७५ श्रेणिक ४४, ४५, १०२, १०३, १७१ श्रेणी २०८ श्रेयांसनाथ २०१ श्याम ४० स्यामाचार्य ८४ श्वेतांवर १७२ म्वेतावर संप्रदाय ६४ 'पट्स्थानक' १० ' पहशीति ' ८५ ' पड्दर्शनसमुच्चय ' २१३ सक्लचन्द्र १८३ सकलचन्द्र वाचक १७५ सचित ९० सन्कार-पुरस्कार परिपह २३ सत्यनेमि १५८

सत्यमामा १९२

'सन्मतितर्क' १२, ६४, ६५, ES. 08. 890 'सन्मतिप्रकरण' १९८ सपादलक्ष १८३, १९२ सभागृह २०८ समयसुन्दर १८४, २०९ 'समराइच्चकहा' २१३ 'समवायांग' १० समितसूरि ५ समिताचार्य १८४, २११ समीपनाम ७७ समुद्र ८४ समुद्रगुप्त १९७ समुद्रविजय १०, ८३, ८७, ९६, १५४ सम्यक्त्व ६९ सरस्वती ८, १९, २६, ३८, ६५, १८८, २१८ सरम्वतीनो पूर्वाभिमुख प्रवाह 866 'सरस्वतीपुराण' १८८, १८९ सरस्वतीयात्रा १८८

सर्वज्ञ १७२

सर्वार्थसिद्धि ३३

सहस्रकमल १७४

सहस्रपत्र १७०

**२५**£ ) विवि सहस्रयोधी मह ५८ साहीययीस यामदेखी १ ५, ३८ सहचार्जुन ६६ CE, 225, 749, सहस्रानीक ३० ₹७८ १८७, २००, सद्यपर्वत ५३, १८९ 201 सातमी भस्तिम मारत प्राप्यविधा ससिक्षि १६, १९, ४४, १०६, 111, 166 परिषद ४५ संबेहा ६१ साहमी मोरियेग्टस र्श्वदासगणि ४, ३९, ४०, कोम्फरमा २९ चीतकाइम ३९, ५६ १९२, 163 सक्तासगणि वाचक १८२ **१९३, १९४** सप्तवश्वन बंग १९४ संघपास्ति ८४ साप्तदासी ७३ र्धनिवेश २०४ मामस्क ८९ संपरिसमय ८४ सामासिक भव्ययन ७६ सप्रति २५, १७, ५७, १३३, सारण ९० 180, 160, 208 सारामाई मवाब ४१ २०६ सार्वमागी २७ ११९ संमितिविषय ८४ सामेंबाह २७ ६६ संकेसमा १०९ साम्मीजका २०८ संचेतरंगसाम ' १० सामग्रहन ९१, ९२ १०१ साकेस २ अ 222 242 tes १० प्रमान सास्माहत वंश ९२ समारचन्त्र १९० १९१ शास्त्रवाहत ९३ सागरसम्प ३९ सावध भीवम ९० सागरानंबस्री २२० संबक्ष्यपर २० सक्षानुसाई २१८ साम्रात्म पूर्वे १६४

सांकेतिक भाषा १४७ सांव ४९, ५६, ८७, १९०, १९१, १९२ सांभर १८३, १९२

सॉमर १८३, १९२ सांमरिनु छवण १९२ सामोगिक १३३ सिकदर १४०

सिद्रनागार्जुन ९९ सिद्रपुर १९, १८८

सिद्धराज २१४, २१८ सिद्धराज जयसिंह १९५, २१९

सिद्धविं १९५, १९६ 'सिद्धविंचिति' १९६ सिद्धसाधु १९५

सिद्धसेन ६४, १९७, १९८, २०८, २१३

पद्धसेनगणि ७४, १९६

सिद्धसेन दिवाकर ६४

'सिद्धसेन दिवाकर जैन्ड विक्रमीं दिखीं' १९८

'सिद्धांतसारोद्धारं' सम्यक्ते

टिप्पन ३३ सिद्धि ८५

सिद्धिक्षेत्र १७४ सिद्धिपर्वत १७४ े सिद्धिविनिश्चय' ६४ सिनिविष्ठ १७४

सिन्ध १९९, २००

सिन्ध देश १९९

सिन्धवासी १९९

सिन्धु ७९, १५८, **१**९९ सिन्धु—सीवीर १**३**, ३१, ४७,

40, 203, 200,

सिप्रा २०१

'सिछेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स' २४, ९३

सिंह ८४ सिंहगिरि ६, ८४, १६३

सिंहगिरि राजा २०७

सिंहपुर ३६

सिंहपुरी २०१ सिंहछ ६८, २०४

तिहरू ५७, ८०० सिंहसूरि ६४

सीहोर २०१

सुकोशल मुनि ७१

' सुखावबोघा ' १५१ सुदर्शन ८१

सुदर्शन तळाव २५

मुदर्शन यक्ष ११९

'सुदरीनाचरित्र' ८५

सुनंदा ८०, १६३

ां संचि 710] 'सुपान्वनाश्वयति' २२० मुरियम-मुप्रतिनुष ८४, १०६ सुप्रतिबुद्ध २०७ सुरियत स्थिति १७४

सुप्रमदेष १८० सहस्ती १६, २५, ८४ 'सुवाधिका' १६९ सवर ३

सुमटपास ५, २१४। सुक्ररी ९५, २०१, २०२ सुमदा १० म्रंबरीनम्ब ९५, २०१, २०२

सुम्म ३७ म्रेसुमारपुर १०१ सुमति १०५ 'स्त्रक्तांग चूर्णि' २०३ सुमुख १०७ 'स्वक्रांग स्व' ९ ११ २१, मुख्द २०६

३६, ५५ ५६, ७९, मुरद्रा २०३, २०६ १०८ १२१, १७६-मुरप्रिय उदान ८० १७८ २०१, २१५

सुरप्रिय यश्च ८६ १५७ सुत्रधार ११८ मुरमिपुर ३३ सूत्रपौरुषी १६२ सगष्ट्र ६ २४, २५, २६ स्रमाम २१

RC, 49 46 46. सुग्यपुर १७८ C4 204, 200 स्रव ५४ २०३, २०४, २०५, यर्गपर १७८

सुर्वपृत्रा २११ २१५ सुराष्ट्रा २०५ 'सूर्यप्रकृति । १२८, १२९ मुख्य १८१ मुक्रमेगुक्तिका १०३

सेक्ट्रेड बुक्स भेएक महत्त्व १५ सोपारक ६ ५०, ७२ १०६, मुक्णभूमि ३९ २०३ ११६, १३१, १३७ 254 250 20% मुबीर ४९ २०७, २०८ मृरिषत २०७ मुरिभततेव १ ६ सोगरकवाच्य मंगू ११७

सोपारा २०७, २०८
सोम २०७
सोमदेव ८२, १५२
सोमदेव भट्ट १४७
सोमयश ९५
सोमयश ९५
सोमसुन्दरस्रि १५४
सोमल ६३
सोर्राहुया २०९, २१०
सौर्गाधिकानगरी ८१
'सौन्दरानन्द'काव्य ९५,२०२
सौराष्ट्र ६७, ६८, ८८, ९७,
९९, १०५, १३४,

रे११
मौराष्ट्र (सौराष्ट्रना) २०३
सौराष्ट्रिका २०९
सौराष्ट्रिका २०९
सौर्याष्ट्रकी २०९
सौर्याव्यतसक उद्यान १७८
सौर्वाणिक नेमिचन्द्र ९, १५०
सौर्वार ६८, २००, २१०
स्कन्द १०६
स्कन्दगुप्त २४
स्कन्दगुराण १७
स्कन्दराजा ४६

१७८, २०५, २०९,

स्फन्दिल ७८ स्कन्दिलाचार्य ८२, ९४, १२१, २१० 'स्टोरो ऑफ कालक ' ४१ स्तिमित ८३ स्तेयशास १४७ स्तूप ५९, १२०, १२१ स्तमतीर्थ ७९, १८४ स्थलपत्तन १८, ३५, ९७, ११९ स्थविरावली ४१, ८४, **१**१६, ११७, १५२ स्थविरो ८१ स्थानकपुर २११ 'स्थानाग' १० 'स्थानागवृत्ति ', ११ 'स्थानागसूत्र' १६० स्थूलमद ८४, १३२, २०६ स्नपन उद्यान २६, ७०' स्नानागार २११ 'स्याद्वादरत्नाकर' ५५ स्वाति ८४

स्वामी समैतभद्र ६४

इतशत्रु ४२

हत्थप २१५

**444** j र श्रांच इत्थकप २१४ २१५ इस्तिभृति २१६ इत्थिक्य २१४ हायब ४६, २१५ 'ईंग्मीर्मदमर्दन' नारक १८८ हार्थागुफा ५२ इस व सनिवेश १८५, २११, हास्मि २१७ २१२ हारिस्थापक २१६ इरिमद्र ७६, १२९, २१३ इरिमदस्रि ९, १०, ७१, ७४, इस्ट ९९ हास्यु ६६, २०१, २१५ १२८, १६५, १६६, हिम्बेस ८४ १४८, १७६, १९५, विभवान ८इ १९६ २१२ दिमास्य १९इ 'हरिमदस्सिचरित' २१२ दिलक्षेश १८ २१८ ' हरिमशाषार्यश्य समयनिर्णयः १ व्हिरद्री **बो**ग्फ इन्डियन सिटर्श्वर<sup>1</sup> १९६, २१३ हरियोगी २१० 186. 196 इरिषश ' ७ दीरविश्वयसारि ९०, १६९ इरिपेणावार्य ७, ८ १७२ हिंदिक १२० इन्प्रस् १०६ २१४ हेमबन्द्र १७, ३५, ५५,७६ इपेपुरीय गच्छ २१४ १२५, १२७, १२८, हर्नेपुरीय (मसमारी) राष्ट्र ११९ **?**₹0, १५२, १६4 इस्टकस्य ३६, ५६ २०१, रेदर, २१८, २१९ बेमपन्द्राचार्यवस्ति । ७९ २१५ देमक्कावार्व समा ११९ इरतक्रम २१५ हैदरागद ७८ इस्ति ८४ हैमसमीक्षा २१८ इरिसक्टिय २१४ २१५

हरिसनापुर १६

Erzahlungen in Maha

